नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नमः

On Line – आगममंजूषा

[३] ठाणं

* संकलन एवं प्रस्तुतकर्ता *

मुनि दीपरत्नसागर [M.Com., M.Ed., Ph.D.]

||किंचित् प्रास्ताविकम्||

ये आगम-मंजूषा का संपादन आजसे ७० वर्ष पूर्व अर्थात् वीर संवत २४६८, विक्रम संवत-१९९८, ई.स.1942 के दौरान हुआ था, जिनका संपादन पूज्य आगमोद्धारक आचार्यश्री आनंदसागरसूरिजी म.सा.ने किया था| आज तक उन्ही के प्रस्थापित-मार्ग की रोशनी में सब अपनी-अपनी दिशाएँ ढूंढते आगे बढ़ रहे हैं|

हम ७० साल के बाद आज ई.स.-2012,विक्रम संवत-२०६८,वीर संवत-२५३८ में वो ही आगम-मंजूषा को कुछ उपयोगी परिवर्तनों के साथ इंटरनेट के माध्यम से सर्वथा सर्वप्रथम “ OnLine-**आगममंजूषा** ” नाम से प्रस्तुत कर रहे हैं|

* मूल आगम-मंजूषा के संपादन की किंचित् भिन्नता का स्वीकार *

[१]आवश्यक सूत्र-(आगम-४०) में केवल मूल सूत्र नहीं है, मूल सूत्रों के साथ निर्युक्ति भी सामिल की गई है|

[२]जीतकल्प सूत्र-(आगम-३८) में भी केवल मूल सूत्र नहीं है, मूलसूत्रों के साथ भाष्य भी सामिल किया है|

[३]जीतकल्प सूत्र-(आगम-३८) का वैकल्पिक सूत्र जो “पंचकल्प” है, उनके भाष्य को यहाँ सामिल किया गया है|

[४] “ओघनिर्युक्ति”-(आगम-४१) के वैकल्पिक आगम “पिंडनिर्युक्ति” को यहाँ समाविष्ट तो किया है, लेकिन उनका मुद्रण-स्थान बदल गया है|

[५] “कल्प(बारसा)सूत्र” को भी मूल आगममंजूषा में सामिल किया गया है| -मुनि दीपरत्नसागर

: Address:-

Mnui Deepratnasagar,
MangalDeep society, Opp.DholeshwarMandir,
POST:- THANGADH Dist.surendranagar.
Mobile:-9825967397 jainmunideepratnasagar@gmail.com

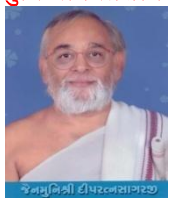

सुयं मे आउसं! तेणं भगवता एवमक्खायं। १। एगे आया। २। एगे दंडे। ३। एगा किरिया। ४। एगे लोए। ५। एगे अलोए। ६। एगे धम्मे। ७। एगे अधम्मे। ८। एगे बंधे। ९। एगे मोक्खे। १०। एगे पुण्णे। ११। एगे पावे। १२। एगे आसवे। १३। एगे संवरे। १४। एगा वेयणा। १५। एगा निज्जरा। १६। एगे जीवे पाडिक्कएणं (पडिक्कएणं पा०) सरीरएणं। १७। एगा जीवाणं अपरिआइत्ता विगुव्वणा। १८। एगे मणे। १९। एगा वई। २०। एगे कायवायामे। २१। एगा उप्पा। २२। एगा वियती। २३। एगा वियच्चा। २४। एगा गती। २५। एगा आगती। २६। एगे चयणे। २७। एगे उववाए। २८। एगा तक्का। २९। एगा सन्ना। ३०। एगा मन्ना। ३१। एगा विन्नू। ३२। एगा वेयणा। ३३। एगा छेयणा (प्र० णे)। ३४। एगा भेयणा (प्र० णे)। ३५। एगे मरणे अंतिमसारीरियाणं। ३६। एगे संसुद्धे अहाभूए पत्ते। ३७। एग(प्र० गे)दुक्खे (एगहक्खे पा०) जीवाणं एग(प्र० गे)भूए। ३८। एगा अहम्मपडिमा जं से आया (जंसि आया पा०) परिकिलेसति। ३९। एगा धम्मपडिमा जं से आया पज्जवजाए। ४०। एगे मणे देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि, एगा वइ० एगे कायवायामे०। ४१। एगे उट्ठाणकम्मबलवीरियपुरिसकारपरक्कमे देवासुरमणुयाणं तंसि २ समयंसि। ४२। एगे नाणे, एगे दंसणे, एगे चरित्ते। ४३। एगे समए। ४४। एगे पएसे, एगे परमाणू। ४५। एगा सिद्धी, एगे सिद्धे, एगे परिनिव्वाणे, एगे परिनिव्वुए। ४६। एगे सद्दे, एगे रूवे, एगे गंधे, एगे रसे, एगे फासे, एगे सुब्भिसद्दे, एगे दुब्भिसद्दे, एगे सुरूवे, एगे दुरूवे, एगे दीहे, एगे हस्से (प्र० रहस्से), एगे वट्टे, एगे तंसे, एगे चउरंसे, एगे पिहुले, एगे परिमंडले, एगे किण्हे, एगे णीले, एगे लोहिए, एगे हलिद्दे, एगे सुक्किल्ले, एगे सुब्भिगंधे, एगे दुब्भिगंधे, एगे तित्ते, एगे कडुए, एगे कसाए, एगे अंबिले, एगे महुरे, एगे कक्खडे जाव लुक्खे। ४७। एगे पाणातिवाए जाव एगे परिग्गहे, एगे कोधे जाव लोभे, एगे पेज्जे एगे दोसे जाव एगे परपरिवाए, एगा अरतिरती, एगे मायामोसे, एगे मिच्छादंसणसल्ले। ४८। एगे पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे, एगे कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे। ४९। एगा ओसप्पिणी, एगा सुसमसुसमा जाव एगा दूसमदूसमा, एगा उस्सप्पिणी एगा दुस्समदुस्समा जाव एगा सुसमसुसमा। ५०। एगा नेरइयाणं वग्गणा, एगा असुरकुमाराणं वग्गणा, चउवीसादंडओ जाव वेमाणियाणं वग्गणा १, एगा भवसिद्धीयाणं वग्गणा एगा अभवसिद्धीयाणं वग्गणा एगा भवसिद्धिनेरइयाणं वग्गणा एगा अभवसिद्धियाणं णेरतियाणं वग्गणा, एवं जाव एगा भवसिद्धियाणं वेमाणियाणं वग्गणा एगा अभवसिद्धियाणं वेमाणियाणं वग्गणा २, एगा सम्मद्दिट्ठियाणं वग्गणा एगा मिच्छद्दिट्ठियाणं वग्गणा एगा सम्मामिच्छद्दिट्ठियाणं वग्गणा, एगा सम्मद्दिट्ठियाणं णेरइयाणं वग्गणा एगा मिच्छद्दिट्ठियाणं णेरइयाणं वग्गणा एगा सम्मामिच्छद्दिट्ठियाणं णेरइयाणं वग्गणा, एवं जाव थणियकुमाराणं वग्गणा, एगा मिच्छादिट्ठियाणं पुढविक्काइयाणं वग्गणा एवं जाव वणस्सइकाइयाणं, एगा सम्मद्दिट्ठियाणं बेइंदियाणं वग्गणा एगा मिच्छद्दिट्ठियाणं बेइंदियाणं वग्गणा, एवं तेइंदियाणंपि चउरिंदियाणवि, सेसा जहा नेरइया जाव एगा सम्मामिच्छद्दिट्ठियाणं वेमाणियाणं वग्गणा ३, एगा कण्हपक्खियाणं वग्गणा एगा सुक्कपक्खियाणं वग्गणा एगा कण्हपक्खियाणं णेरइयाणं वग्गणा एगा सुक्कपक्खियाणं णेरइयाणं वग्गणा एवं चउवीसादंडओ भाणियव्वो ४, एगा कण्हलेसाणं वग्गणा एगा नीललेसाणं वग्गणा एवं जाव सुक्कलेसाणं वग्गणा एगा कण्हलेसाणं नेरइयाणं वग्गणा जाव काउलेसाणं णेरइयाणं वग्गणा, एवं जस्स जइ लेसाओ, भवणवइवाणमंतरपुढविआउवणस्सइकाइयाणं च चत्तारि लेसाओ

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेउवाउबेइंदियतेइंदिअचउरिंदियाणं तिन्नि लेसाओ, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं छल्लेसाओ, जोतिसियाणं एगा तेऊलेसा, वेमाणियाणं तिन्नि उवरिमलेसाओ ५, एगा कण्ह-लेसाणं भवसिद्धियाणं वग्गणा एगा कण्हलेसाणं अभवसिद्धियाणं वग्गणा एवं छसुवि लेसासु दो दो पयाणि भाणियव्वाणि, एगा कण्हलेसाणं भवसिद्धियाणं नेरइयाणं वग्गणा एगा कण्हलेसाणं अभवसिद्धिआणं णेरइयाणं वग्गणा एवं जस्स जति लेसाओ तस्स तति (प्र० याओ) भाणियव्वाओ जाव वेमाणियाणं ६, एगा कण्हलेसाणं सम्मद्दिट्ठिआणं वग्गणा एगा कण्हलेसाणं मिच्छद्दिट्ठियाणं वग्गणा एगा कण्हलेसाणं सम्मामिच्छद्दिट्ठियाणं वग्गणा, एवं छसुवि लेसासु जाव वेमाणियाणं जेसिं जदि दिट्ठीओ ७, एगा कण्हलेसाणं कण्हपक्खियाणं वग्गणा एगा कण्हलेसाणं सुक्कपक्खियाणं वग्गणा जाव वेमाणियाणं जस्स जति लेसाओ ८, एए अट्ठ चउवीसदंडया, एगा तित्थसिद्धाणं वग्गणा एवं जाव एगा एक्कसिद्धाणं वग्गणा एगा अणिक्कसिद्धाणं वग्गणा एगा पढमसमयसिद्धाणं (अपढमसमयसिद्धाणं पा०) वग्गणा एवं जाव अणंतसमयसिद्धाणं वग्गणा, एगा परमाणुपोग्गलाणं वग्गणा एवं जाव एगा अणं-तपएसियाणं खंधाणं वग्गणा, एगा एगपएसोगाढाणं पोग्गलाणं वग्गणा जाव एगा असंखेज्जपएसोगाढाणं पोग्गलाणं वग्गणा, एगा एगसमयठितियाणं पोग्गलाणं वग्गणा जाव असंखे-ज्जसमयठितियाणं पोग्गलाणं वग्गणा, एगा एगगुणकालगाणं पोग्गलाणं वग्गणा जाव एगा असंखेज्ज० एगा अणंतगुणकालगाणं पोग्गलाणं वग्गणा, एवं वण्णा गंधा रसा फासा भाणियव्वा जाव एगा अणंतगुणलुक्खाणं पोग्गलाणं वग्गणा, एगा जहन्नपएसियाणं खंधाणं वग्गणा एगा उक्कस्सपएसियाणं खंधाणं वग्गणा एगा अजहन्नुक्कस्सपएसियाणं खंधाणं वग्गणा एवं जहन्नोगाहणयाणं उक्कोसोगाहणगाणं अजहन्नुक्कोसोगाहणगाणं जहन्नठितियाणं उक्कस्सठितीयाणं अजहन्नुक्कोसठितियाणं जहन्नगुणकालगाणं उक्कस्सगुणकालयाणं अजहन्नुक्कस्स-गुणकालगाणं एवं वण्णगंधरसफासाणं वग्गणा भाणियव्वा जाव एगा अजहन्नुक्कस्सगुणलुक्खाणं पोग्गलाणं वग्गणा।५१। एगे जंबुद्दीवे २ सव्वदीवसमुद्दाणं जाव अद्धंगुलगं च किंचि-विससाहिए परिक्खेवेणं।५२। एगे समणे भगवं महावीरे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसाए तित्थगराणं चरमतित्थयरे सिद्धे बुद्धे मुत्ते जाव सव्वदुक्खप्पहीणे।५३। अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं एगा रयणी उड्ढंउच्चत्तेणं पन्नत्ता।५४। अद्दाणक्खत्ते एगतारे पन्नत्ते चित्ताणक्खत्ते एगतारे पं० सातीणक्खत्ते एगतारे पं०।५५। एगपदेसोगाढा पोग्गला अणंता पन्नत्ता, एवमेगसमयठितिया एगगुणकालगा पोग्गला अणंता पन्नत्ता जाव एगगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पन्नत्ता।५६। एकस्थानकाध्ययनम् १॥ जदत्थि (जहत्थि च पा०) णं लोगे तं सव्वं दुपओआरं (दुपडोयारं पा०) तं०-जीवच्चेव अजीवच्चेव। तसे चेव थावरे चेव १, सजोणियच्चेव अजोणियच्चेव २, साउयच्चेव अणाउय चेव ३, सइंदियच्चेव (च्चेय पा०) अणिंदिए चेव ४, सवेयगा चेव अवेयगा चेव ५, सरूवि चेव अरूवि चेव ६, सपोग्गला चेव अपोग्गला चेव ७, संसारसमावन्नगा चेव असंसारसमावन्नगा चेव ८, सासया चेव असासया चेव ९।५७। आगासा चेव नोआगासा चेव, धम्मे चेव अधम्मे चेव।५८। बंधे चेव मोक्खे चेव १ पुन्ने चेव पावे चेव २ आसवे चेव संवरे चेव ३ वेयणा चेव निज्जरा चेव ४।५९। दो किरियाओ पन्नत्ताओ, तंजहा-जीवकिरिया चेव अजीवकिरिया चेव (चिय पा०) १, जीवकिरिया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-सम्मत्तकिरिया चेव मिच्छत्तकिरिया चेव २, अजीवकिरिया दुविहा पन्नत्ता, तं०-ईरियावहिया चेव संपराइया चेव ३, दो किरियाओ पं० तं०-काइया चेव अहिगरणिया चेव ४, काइया किरिया दुविहा पन्नत्ता तं०-अणुवरयकायकिरिया चेव दुप्पउत्त-कायकिरिया चेव ५, अहिकरणिया किरिया दुविहा पन्नत्ता, तं०-संजोयणाधिकरणिया चेव णिव्वत्तणाधिकरणिया चेव ६, दो किरियाओ पं० तं०-पाउसिया चेव पारियावणिया चेव ७, पाउसिया किरिया दुविहा पं० तं०-जीवपाउसिया चेव अजीवपाउसिया चेव ८, पारियावणिया किरिया दुविहा पं० तं०-सहत्थपारियावणिया चेव परहत्थपारियावणिया चेव ९, दो किरियाओ पं० तं०-पाणातिवायकिरिया चेव अपच्चक्खाणकिरिया चेव १०, पाणातिवायकिरिया दुविहा पं० तं०-सहत्थपाणातिवायकिरिया चेव परहत्थपाणातिवायकिरिया चेव ११, अपच्चक्खाणकिरिया दुविहा पं० तं०-जीवअपच्चक्खाणकिरिया चेव अजीवअपच्चक्खाणकिरिया चेव १२, दो किरियाओ पं० तं०-आरंभिया चेव परिग्गहिया चेव १३, आरंभिया किरिया दुविहा पं० तं०-जीवआरंभिया चेव अजीवआरंभिया चेव १४, एवं परिग्गहियावि १५, दो किरियाओ पं० तं०-मायावत्तिआ चेव मिच्छादंसणवत्तिया चेव १६, मायावत्तिया किरिया दुविहा पं० तं०-आयभाववंकणता चेव परभाववंकणता चेव १७, मिच्छादंसणवत्तिया किरिया दुविहा पं० तं०-ऊणाइरित्तमिच्छादंसणवत्तिया चेव तव्वइरित्तमिच्छादंसणवत्तिया चेव १८, दो किरियाओ पं० तं०-दिट्ठिया चेव पुट्ठिया चेव १९, दिट्ठिया किरिया दुविहा पं० तं०-जीवदिट्ठिया चेव अजीवदिट्ठिया चेव २०, एवं पुट्ठियावि २१, दो किरियाओ पं० तं०-पाडु-च्चिया चेव सामंतोवणिवाइया चेव २२, पाडुच्चिया किरिया दुविहा पं० तं०-जीवपाडुच्चिया चेव अजीवपाडुच्चिया चेव २३, एवं सामंतोवणिवाइयावि २४, दो किरियाओ पं०तं०-साह-त्थिया चेव णेसत्थिया चेव २५, साहत्थिया किरिया दुविहा पं० तं०-जीवसाहत्थिया चेव अजीवसाहत्थिया चेव २६, एवं णेसत्थियावि २७, दो किरियाओ पं० तं०-आणवणिया चेव

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेयारणिया चेव २८, जहेव णेसत्थियाओ २९-३०, दो किरियाओ पं० तं०-अणाभोगवत्तिया चेव अणवकंखवत्तिया चेव ३१, अणाभोगवत्तिया किरिया दुविहा पं० तं०-अणाउत्त-आइयणता चेव अणाउत्तपमज्जणता चेव ३२, अणवकंखवत्तिया किरिया दुविहा पं० तं०-आयसरीरअणवकंखवत्तिया चेव परसरीरअणवकंखवत्तिया चेव ३३, दो किरियाओ पं० तं०-पिज्जवत्तिया चेव दोसवत्तिया चेव ३४, पेज्जवत्तिया किरिया दुविहा पं० तं०-मायावत्तिया चेव लोभवत्तिया चेव ३५, दोसवत्तिया किरिया दुविहा पं० तं०-कोहे चेव माणे चेव ३६ ।६०। दुविहा गरिहा पं० तं०-मणसा वेगे (मणसाऽवेगे पा०) गरहति, वयसा वेगे गरहति, अहवा गरहा दुविहा पं० तं०-दीहं वे(प्र० पे)गे अद्धं गरहति, रहस्सं वेगे अद्धं गरहति ।६१। दुविहे पच्चक्खाणे पं० तं०-मणसा वेगे पच्चक्खाति वयसा वेगे पच्चक्खाति, अहवा पच्चक्खाणे दुविहे पं० तं०-दीहं वेगे अद्धं पच्चक्खाति रहस्सं वेगे अद्धं पच्चक्खाति ।६२। दोहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अणाइयं अणवयग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं वीतिवतेज्जा, तंजहा-विज्जाए चेव चरणेणं चेव ।६३। दो ठाणाइं अपरियाणित्ता आया णो केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, तं०-आरंभे चेव परिग्गहे चेव १, दो ठाणाइं अपरियादित्ता आया णो केवलं बोधिं बुज्झेज्जा तं०-आरंभे चेव परिग्गहे चेव २, दो ठाणाइं अपरियाइत्ता आया नो केवलं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइज्जा, तं०-आरंभे चेव परिग्गहे चेव ३, एवं णो केवलं बंभचेरवासमावसेज्जा ४, णो केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा ५, नो केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा ६, नो केवलमाभिणिबोहियणाणं उप्पाडेज्जा ७, एवं सुयनाणं ८ ओहिनाणं ९ मणपज्जवनाणं १० केवलनाणं ११ ।६४। दो ठाणाइं परियादित्ता आया केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, तं०-आरंभे चेव परिग्गहे चेव, एवं जाव केवलनाणमुप्पाडेज्जा ।६५। दोहिं ठाणेहिं आया केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, तं०-सोच्च चेव अभिसमेच्च चेव जाव केवलनाणं उप्पाडेज्जा। ६६। दो समाओ पन्नत्ताओ, तं०-ओसप्पिणी समा चेव उस्सप्पिणी समा चेव ।६७। दुविहे उम्माए पं०, तं०-जक्खावेसे चेव मोह-णिज्जस्स चेव कम्मस्स उदएणं, तत्थ णं जे से जक्खावेसे से णं सुहवेयतराए चेव सुहविमोयतराए चेव, तत्थ णं जे से मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं से णं दुहवेयतराए चेव दुहवि-मोययराए चेव ।६८। दो दंडा पं० तं०-अट्ठादंडे चेव अणट्ठादंडे चेव, नेरइयाणं दो दंडा पं० तं०-अट्ठादंडे य अणट्ठादंडे य, एवं चउवीसादंडओ जाव वेमाणियाणं ।६९। दुविहे दंसणे पन्नत्ते, तं०-सम्मद्दंसणे चेव मिच्छादंसणे चेव १, सम्मद्दंसणे दुविहे पं०, तं०-णिसग्गसम्मद्दंसणे चेव अभिगमसम्मद्दंसणे चेव २, णिसग्गसम्मद्दंसणे दुविहे पं० तं०-पडिवाई चेव अप-डिवाई चेव ३, अभिगमसम्मदंसणे दुविहे पं० तं०-पडिवाई चेव अप्पडिवाई चेव ४, मिच्छादंसणे दुविहे पं० तं०-अभिग्गहियमिच्छादंसणे चेव अणभिगहियमिच्छादंसणे चेव ५, अभिग्गहियमिच्छादंसणे दुविहे पं० तं०-सपज्जवसिते चेव अपज्जवसिते चेव ६, एवमणभिगहितमिच्छादंसणेऽवि ७ ।७०। दुविहे नाणे पं० तं०-पच्चक्खे चेव परोक्खे चेव १, पच्चक्खे नाणे दुविहे पन्नत्ते तं०-केवलनाणे चेव णोकेवलनाणे चेव २, केवलणाणे दुविहे पं० तं०-भवत्थकेवलनाणे चेव सिद्धकेवलणाणे चेव ३, भवत्थकेवलणाणे दुविहे पं० तं०-सजोगिभवत्थ-केवलणाणे चेव अजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव ४, सजोगिभवत्थकेवलणाणे दुविहे पं० तं०-पढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव अपढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव ५, अहवा चरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव अचरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणे चेव ६, एवं अजोगिभवत्थकेवलनाणेऽवि ७-८, सिद्धकेवलणाणे दुविहे पं० तं०-अणंतरसिद्धकेवलणाणे चेव परंपरसिद्धकेवलनाणे चेव ९, अणंतरसिद्धकेवलनाणे दुविहे पं० तं०-एक्काणंतरसिद्धकेवलणाणे चेव अणेक्काणंतरसिद्धकेवलणाणे चेव, १०, परंपरसिद्धकेवलणाणे दुविहे पं० तं०-एक्कपरंपरसिद्धकेवलणाणे चेव अणेक्कपरंपरसिद्धकेवलणाणे चेव ११, णोकेवलणाणे दुविहे पं० तं०-ओहिणाणे चेव मणपज्जवणाणे चेव १२, ओहिणाणे दुविहे पं० तं०-भवपच्चइए चेव खओवसमिए चेव १३, दोण्हं भवपच्चइए पन्नत्ते, तं०-देवाणं चेव नेरइयाणं चेव १४, दोण्हं खओवसमिए पं० तं०-मणुस्साणं चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं चेव १५, मणपज्जवणाणे दुविहे पं० तं०-उज्जुमति चेव विउलमति चेव १६, परोक्खे णाणे दुविहे पन्नत्ते, तं० आभिणिबोहियणाणे चेव सुयनाणे चेव १७, आभिणिबोहियणाणे दुविहे पं० तं०-सुयनिस्सिए चेव असुयनिस्सिए चेव १८, सुयनिस्सिए दुविहे पं० तं०-अत्थोग्गहे चेव वंजणोग्गहे चेव १९, असुयनिस्सितेऽवि एमेव २०, सुयनाणे दुविहे पं० तं०-अंगपविट्ठे चेव अंगबाहिरे चेव २१, अंगबाहिरे दुविहे पं० तं०-आवस्सए चेव आवस्सयवइरित्ते चेव २२, आवस्सयवतिरित्ते दुविहे पं० तं०-कालिए चेव उक्कालिए चेव २३ ।७१। दुविहे धम्मे पं० तं०-सुयधम्मे चेव चरित्तधम्मे चेव, सुयधम्मे दुविहे पं० तं०-सुत्तसुयधम्मे चेव अत्थसुयधम्मे चेव, चरित्तधम्मे दुविहे पं० तं०-अगारचरित्तधम्मे चेव अणगारचरित्तधम्मे चेव, दुविहे संजमे पं० तं०-सरागसंजमे चेव वीतरागसंजमे चेव, सरागसंजमे दुविहे पं० तं०-सुहुमसंपरायसरागसंजमे चेव बादरसंपरायसरागसंजमे चेव, सुहुमसंपरायसरागसंजमे दुविहे पन्नत्ते, तं०-पढमसम-यसुहुमसंपरायसरागसंजमे चेव अपढमसमयसु०, अथवा चरमसमयसु० अचरमसमयसु०, अहवा सुहुमसंपरायसरागसंजमे दुविहे पं० तं०-संकिलेसमाणए चेव विसुज्झमाणए चेव,

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बादरसंपरायसरागसंजमे दुविहे पं० तं०-पढमसमयबादर० अपढमसमयबादरसं०, अहवा चरिमसमय० अचरिमसमय०, अहवा बायरसंपरायसरागसंजमे दुविहे पं० तं०-पडिवाति चेव अपडिवाति चेव, वीयरागसंजमे दुविहे पं० तं०-उवसंतकसायवीयरागसंजमे चेव खीणकसायवीयरागसंजमे चेव, उवसंतकसायवीयरागसंजमे दुविहे पं० तं०-पढमसमयउवसंतकसायवीतरागसंजमे चेव अपढमसमयउव०, अहवा चरिमसमयउव० अचरिमसमयउव०, खीणकसायवीतरागसंजमे दुविहे पं० तं०-छउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे चेव केवलिखीणकसायवीयरागसंजमे चेव, छउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे दुविहे पं० तं०-सयंबुद्धछउमत्थखीणकसाय० बुद्धबोहियछउमत्थ०, सयंबुद्धछउमत्थ० दुविहे पं० तं०-पढमसमय० अपढमसमय० अहवा चरिमसमय० अचरिमसमय०, बुद्धबोहियछउमत्थखीण० दुविहे पं० तं०-पढमसमय० अपढमसमय०, अहवा चरिमसमय० अचरिमसमय०, केवलिखीणकसायवीतरागसंजमे दुविहे पं०तं०-सजोगकेवलिखीणकसाय०संजमे अजोगिकेवलि०, सजोगिकेवलिखीणकसाय०संजमे दुविहे पं०तं०-पढमसमय० अपढमसमय०,अहवा चरिमसमय० अचरिमसमय०, अजोगिकेवलिखीणकसाय०संजमे दुविहे पं० तं०-पढमसमय० अपढमसमय० अहवा चरिमसमय० अचरिमसमय०। ७२। दुविहा पुढवीकाइया पं० तं०-सुहुमा चेव बायरा चेव १, एवं जाव दुविहा वणस्सइकाइया पं० तं०-सुहुमा चेव बायरा चेव ५, दुविहा पुढवीकाइया पं० तं०-पज्जत्तगा चेव अपज्जत्तगा चेव ९, एवं जाव वणस्सइकाइया १०, दुविहा पुढवीकाइया पं० तं०-परिणया चेव अपरिणया चेव ११, एवं जाव वणस्सइकाइया १५, दुविहा दव्वा पं० तं०-परिणता चेव अपरिणता चेव १६, दुविहा पुढवीकाइया पं० तं०-गतिसमावन्नगा चेव अगइसमावन्नगा चेव १७, एवं जाव वणस्सइकाइया २१, दुविहा दव्वा पं० तं०-गतिसमावन्नगा चेव अगतिसमावन्नगा चेव २२, दुविहा पुढवीकाइया पं० तं०-अणंतरोगाढा चेव परंपरोगाढा चेव २३, जाव दव्वा० २८ ।७३। दुविहे काले पं० तं०-ओसप्पिणीकाले चेव उस्सप्पिणीकाले चेव, दुविहे आगासे पं०तं०-लोगागासे चेव अलोगागासे चेव ।७४। णेरइयाणं दो सरीरगा पं० तं०-अब्भंतरगे चेव बाहिरगे चेव, अब्भंतरए कम्मए बाहिरए वेउव्विए, एवं देवाणं भाणियव्वं, पुढवीकाइयाणं दो सरीरगा पं० तं०-अब्भंतरगे चेव बाहिरगे चेव, अब्भंतरगे कम्मए बाहिरगे ओरालियगे, जाव वणस्सइकाइयाणं, बेइंदियाणं दो सरीरा पं० तं०-अब्भंतरए चेव बाहिरए चेव, अब्भंतरगे कम्मए अट्ठिमंससोणितबद्धे बाहिरए ओरालिए, जाव चउरिंदियाणं, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं दो सरीरगा पं० तं०-अब्भंतरगे चेव बाहिरगे चेव, अब्भंतरगे कम्मए अट्ठिमंससोणियण्हारुछिरावद्धे बाहिरए ओरालिए, मणुस्साणवि एवं चेव। विग्गहगइसमावन्नगाणं नेरइयाणं दो सरीरगा पं० तं०-तेयए चेव कम्मए चेव, निरन्तरं जाव वेमाणियाणं, नेरइयाणं दोहिं ठाणेहिं सरीरुप्पत्ती सिया, तं०-रागेण चेव दोसेण चेव, जाव वेमाणियाणं, नेरइयाणं दुट्ठाणनिव्वतिए सरीरगे पं० तं०-रागनिव्वत्तिए चेव दोसनिव्वत्तिए चेव, जाव वेमाणियाणं, दो काया पं० तं०-तसकाए चेव थावरकाए चेव, तसकाए दुविहे पं० तं०-भवसिद्धिए चेव अभवसिद्धिए चेव, एवं थावरकाएऽवि। ७५। दो दिसाओ अभिगिज्झ कप्पति णिग्गंथाणं वा णिग्गंथीण वा पव्वावित्तए-पाईणं चेव उदीणं चेव, एवं मुंडावित्तए सिक्खावित्तए उवट्ठावित्तए संभुंजित्तए संवसित्तए सज्झायमुद्दिसित्तए सज्झायं समुद्दिसित्तए सज्झायमणुजाणित्तए आलोइत्तए पडिक्कमित्तए निंदित्तए गरहित्तए विउट्टित्तए विसोहित्तए अकरणयाए अब्भुट्टित्तए आहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जित्तए, दो दिसातो अभिगिज्झ कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा अपच्छिममारणंतियसंलेहणाजूसणाजूसियाणं भत्तपाणपडियाइक्खिताणं पाओवगताणं कालं अणवकंखमाणाणं विहरित्तए, तंजहा-पाईणं चेव उदीणं चेव ।७६। अ० २ उ० १॥ जे देवा उड्ढोववन्नगा कप्पोववन्नगा विमाणोववन्नगा चारोववन्नगा चारट्ठितीया गतिरतिया गतिसमावन्नगा तेसिं णं देवाणं सता समितं जे पावे कम्मे कज्जति तत्थगतावि एगतिया वेदणं वेदेंति अन्नत्थगतावि एगतिया वेअणं वेदेंति, णेरइयाणं सता समियं जे पावे कम्मे कज्जति तत्थगतावि एगतिया वेयणं वेदेंति अन्नत्थगतावि एगतिआ वेयणं वेदेंति, जाव पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं, मणुस्साणं सता समितं जे पावे कम्मे कज्जति इहगतावि एगतिता वेयणं वेयंति अन्नत्थगतावि एगतिया वेयणं वेयंति, मणुस्सवज्जा सेसा एक्कगमा ।७७। नेरतिता दुगतिया दुयागतिया पं०तं०-नेरइए णेरइएसु उववज्जमाणे मणुस्सेहिंतो वा पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो वा उववज्जेज्जा, से चेव णं से नेरइए णेरइयत्तं विप्पजहमाणे मणुस्सत्ताए वा पंचेंदियतिरिक्खजोणियत्ताए वा गच्छेज्जा, एवं असुरकुमारावि, णवरं से चेव णं से असुरकुमारे असुरकुमारत्तं विप्पजहमाणे मणुस्सत्ताए वा तिरिक्खजोणियत्ताए वा गच्छिज्जा, एवं सव्वदेवा, पुढवीकाइया दुगतिया दुआगतिया पं० तं०-पुढवीकाइए पुढवीकाइएसु उववज्जमाणे पुढवीकाइएहिंतो वा णोपुढवीकाइएहिंतो वा उववज्जेज्जा, से चेव णं से पुढवीकाइए पुढवीकाइयत्तं विप्पजहमाणे पुढवीकाइयत्ताए वा णोपुढवीकाइयत्ताए वा गच्छेज्जा, एवं जाव मणुस्सा।७८। दुविहा नेरइया पन्नत्ता, तंजहा-भवसिद्धिया चेव अभवसिद्धिया चेव, जाव वेमाणिया १, दुविहा नेरइया पं० तं०-अणंतरोववन्नगा चेव परंपरोववन्नगा चेव जाव वेमाणिया २, दुविहा णेरइया पं० तं०-गतिसमावन्नगा चेव अगतिसमावन्नगा चेव, जाव वेमाणिया ३, दुविहा नेरइया पं० तं०-पढमसमओववन्नगा चेव अपढमसमओववन्नगा चेव जाव वेमाणिया ४, दुविहा नेरइया पं० तं०-आहारगा चेव अणाहारगा चेव, (१९)

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं जाव वेमाणिया ५, दुविहा णेरइया पं० तं०-उस्सासगा चेव णोउस्सासगा चेव जाव वेमाणिया ६, दुविहा नेरइया पं० तं०-सइंदिया चेव अणिंदिया चेव, जाव वेमाणिया ७, दुविहा नेरइया पं० तं०-पज्जत्तगा चेव अपज्जत्तगा चेव, जाव वेमाणिआ ८, दुविहा नेरइया पं० तं०-सन्नी चेव असन्नी चेव, एवं पंचेंदिया सव्वे विगलिंदियवज्जा, जाव वाणमंतरा (वेमाणिया) ९, दुविहा नेरइया पं० तं०-भासगा चेव अभासगा चेव, एवंमेगिंदियवज्जा सव्वे १०, दुविहा नेरइया पं० तं०-सम्मद्दिट्ठीया चेव मिच्छद्दिट्ठीया चेव, एगिंदियवज्जा सव्वे ११, दुविहा नेरइया पं० तं०-परित्तसंसारिता चेव अणंतसंसारिया चेव, जाव वेमाणिया १२, दुविहा नेरइया पं० तं०-संखेज्जकालसमयट्ठितीया (संखेज्जकालठिइया पा०) चेव असंखेज्जकालसमयट्ठितीया चेव, एवं पंचेंदिया एगिंदियविगलिंदियवज्जा जाव वाणमंतरा १३, दुविहा नेरइया पं० तं०-सुलभबोधिया चेव दुल्लभबोधिया चेव, जाव वेमाणिया १४, दुविहा नेरइया पं० तं०-कण्हपक्खिया चेव सुक्कपक्खिया चेव, जाव वेमाणिया १५, दुविहा नेरइया पं०तं०-चरिमा चेव अचरिमा चेव, जाव वेमाणिया १६ ।७९। दोहिं ठाणेहिं आया अधोलोगं जाणइ पासइ तं०-समोहतेणं चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ पासइ असमोहतेणं चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ पासइ, आधोहि समोहतासमोहतेणं चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ पासइ, एवं तिरियलोगं २ उड्ढलोगं ३ केवलकप्पं लोगं ४, दोहिं ठाणेहिं आया अधोलोगं जाणइ पासइ, तं०-विउव्वितेण चेव अप्पाणेणं आता अधोलोगं जाणइ पासइ अविउव्वितेणं चेव अप्पाणेणं आता अधोलोगं जाणइ पासइ आहोधि विउव्वियाविउव्वितेण चेव अप्पाणेणं आता अधोलोगं जाणइ(पासइ) १, एवं तिरियलोगं० ४, दोहिं ठाणेहिं आया सद्दाइं सुणेइ, तं०-देसेणवि आया सद्दाइं सुणेइ सव्वेणवि आया सद्दाइं सुणेति, एवं रूवाइं पासइ, गंधाइं अग्घाति, रसाइं आसादेति, फासाइं पडिसंवेदेति ५, दोहिं ठाणेहिं आया ओभासइ, तं०-देसेणवि आया ओभासइ सव्वेणवि आया ओभासति, एवं पभासति विकुव्वति परियारेति भासं भासति आहारेति परिणामेति वेदेति निज्जरेति ९, दोहिं ठाणेहिं देवे सद्दाइं सुणेइ, तं०-देसेणवि देवे सद्दाइं सुणेति सव्वेणवि देवे सद्दाइं सुणेइ जाव निज्जरेति १४, मरुया देवा दुविहा पं० तं०-एगसरीरे चेव बिसरीरे चेव, एवं किन्नरा किंपुरिसा गंधव्वा णागकुमारा सुवन्नकुमारा अग्गिकुमारा वायुकुमारा ८, देवा दुविहा पं० तं०-एगसरीरे चेव बिसरीरे चेव ।८०। अ० २ उ० २॥ दुविहे सद्दे पं० तं०-भासासद्दे चेव णोभासासद्दे चेव, भासासद्दे दुविहे पं० तं०-अक्खरसंबद्धे चेव नोअक्खरसंबद्धे चेव, णोभासासद्दे दुविहे पन्नत्ते तं०-आउज्जसद्दे चेव णोआउज्जसद्दे चेव, आउज्जसद्दे दुविहे पं० तं०-तते चेव वितते चेव, तते दुविहे पं० तं०-घणे चेव झुसिरे चेव, एवं विततेऽवि, णोआउज्जसद्दे दुविहे पं० तं०-भूसणसद्दे चेव नोभूसणसद्दे चेव, नोभूसणसद्दे दुविहे पं० तं०-तालसद्दे चेव लत्तिआसद्दे चेव, दोहिं ठाणेहिं सद्दुप्पाते सिया, तंजहा-साहन्नंताणं चेव पुग्गलाणं सद्दुप्पाए सिया भिज्जंताणं चेव पोग्गलाणं सद्दुपाए सिया।८१। दोहिं ठाणेहिं पोग्गला साहण्णंति, तं०-सइं वा पोग्गला साहन्नंति १ परेण वा पोग्गला साहण्णंति १, दोहिं ठाणेहिं पोग्गला भिज्जंति तं०-सइं वा पोग्गला भिज्जंति परेण वा पोग्गला भिज्जंति २, दोहिं ठाणेहिं पोग्गला परिसडंति, तं०-सइं वा पोग्गला परिसडंति परेण वा पोग्गला परिसाडिज्जंति ३, एवं परिवडंति ४ विद्धंसंति ५, दुविहा पोग्गला पं० तं०-भिन्ना चेव अभिन्ना चेव १, दुविहा पोग्गला पं० तं०-भेउरधम्मा चेव नोभेउरधम्मा चेव २, दुविहा पोग्गला पं० तं०-परमाणुपोग्गला चेव नोपरमाणुपोग्गला चेव ३, दुविहा पोग्गला पं०तं०-सुहुमा चेव बायरा चेव ४, दुविहा पोग्गला पं० तं०-बद्धपासपुट्ठा चेव नोबद्धपासपुट्ठा चेव ५, दुविहा पोग्गला पन्नत्ता तं०-परियादितच्चेव अपरियादितच्चेव ६, दुविहा पोग्गला पन्नत्ता तं०-अत्ता चेव अणत्ता चेव ७, दुविहा पोग्गला पं० तं०-इट्ठा चेव अणिट्ठा चेव ८, एवं कंता ९ पिया १० मणुन्ना ११ मणामा १२ ।८२। दुविहा सद्दा पन्नत्ता तं०-अत्ता चेव अणत्ता चेव १ एवमिट्ठा जाव मणामा ६, दुविहा रूवा पं० तं०-अत्ता चेव अणत्ता चेव, जाव मणामा, एवं गंधा रसा फासा, एवमिक्किक्के छ आलावगा भाणियव्वा ।८३। दुविहे आयारे पं० तं०-णाणायारे चेव नोनाणायारे चेव १, नोनाणायारे दुविहे पं० तं०-दंसणायारे चेव नोदंसणायारे चेव २, नोदंसणायारे दुविहे पं० तं०-चरित्तायारे चेव नोचरित्तायारे चेव ३, णोचरित्तायारे दुविहे पं० तं०-तवायारे चेव वीरियायारे चेव ४, दो पडिमाओ पं० तं०-समाहिपडिमा चेव उवहाणपडिमा चेव १, दो पडिमाओ पं० तं०-विवेगपडिमा चेव विउसग्गपडिमा चेव २, दो पडिमाओ पं० तंजहा-भद्दा चेव सुभद्दा चेव ३, दो पडिमाओ पं० तं०-महाभद्दा चेव सव्वतोभद्दा चेव ४, दो पडिमाओ पं०तं०-खुड्डिया चेव मोयपडिमा महल्लिया चेव मोयपडिमा ५, दो पडिमाओ पं०तं०-जवमज्झा चेव चंदपडिमा वइरमज्झा चेव चंदपडिमा ६, दुविहे सामाइए पं० तं०-अगारसामाइए चेव अणगारसामाइए चेव ।८४। दोण्हं उववाए पं० तं०-देवाण चेव नेरइयाण चेव १ दोण्हं उव्वट्टणा पं० तं०-णेरइयाण चेव भवणवासीण चेव २ दोण्हं चयणे पं० तं०-जोइसियाण चेव वेमाणियाण चेव ३ दोण्हं गब्भवक्कंती पं०तं०-मणुस्साण चेव पंचेंदियतिरिक्खजोणियाण चेव ४ दोण्हं गब्भत्थाणं आहारे पं० तं०-मणुस्साण चेव पंचेंदियतिरिक्खजोणियाण चेव ५, दोण्हं गब्भत्थाणं वुड्ढी पं० तं०-मणुस्साण चेव पंचेंदियतिरिक्खजोणियाण चेव ६ एवं निव्वुड्ढी ७ विगुव्वणा ८ गति-

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परियाए ९ समुग्घाते १० कालसंजोगे ११ आयाती १२ मरणे १३ दोण्हं छविपव्वा (छवियत्ता पा०, छविपत्ता पा०) पं० तं०-मणुस्साण चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण चेव १४ दो सुक्कसोणितसंभवा पं० तं०-मणुस्सा चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणिया चेव १५ दुविहा ठिती पं० तं०-कायट्ठिती चेव भवट्ठिती चेव १६ दोण्हं कायट्ठिती पं० तं०-मणुस्साण चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण चेव १७ दोण्हं भवट्ठिती पं० तं०-देवाण चेव नेरइयाण चेव १८ दुविहे आउए पं० तं०-अद्धाउए चेव भवाउए चेव १९ दोण्हं अद्धाउए पं० तं०-मणुस्साण चेव पंचेंदियतिरिक्खजोणियाण चेव २० दोण्हं भवाउए पं० तं०-देवाण चेव णेरइयाण चेव २१ दुविहे कम्मे पं० तं०-पदेसकम्मे चेव अणुभावकम्मे चेव २२ दो अहाउयं पालेंति तं०-देवच्चेव नेरइयच्चेव २३ दोण्हं आउयसंवट्टए पं० तं०-मणुस्साण चेव पंचेंदियतिरिक्खजोणियाण चेव २४।८५। जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वासा बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अन्नमन्नं णातिवट्टंति आयामविक्खंभसंठाणपरिणाहेणं, तं०-भरहे चेव एरवए चेव, एवमेएणमहिलावेणं हिमवए चेव हेरन्नवते चेव, हरिवासे चेव रम्मयवासे चेव, जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमपच्चत्थिमेणं दो खित्ता बहुसमतुल्ला अविसेस जाव पुव्वविदेहे चेव अवरविदेहे चेव, जंबूमंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो कुराओ बहुसमतुल्लाओ जाव देवकुरा चेव उत्तरकुरा चेव, तत्थ णं दो महतिमहालया महादुमा बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अन्नमन्नं णाइवट्टंति आयामविक्खंभुच्चत्तोव्वेहसंठाणपरिणाहेणं, तं०-कूडसामली चेव जंबू चेव सुदंसणा, तत्थ णं दो देवा महिड्ढिया जाव महासोक्खा (महेसक्खा पा०) पलिओवमट्ठितीया परिवसन्ति, तं०-गरुले चेव वेणुदेवे अणाढिते चेव जंबुद्दीवाहिवती।८६। जंबू०मंदरस्स पव्वयस्स य उत्तरदाहिणेणं दो वासहरपव्वया बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अन्नमन्नं णातिवट्टंति आयामविक्खंभुच्चत्तोव्वेहसंठाणपरिणाहेणं, तंजहा-चुल्लहिमवंते चेव सिहरिच्चेव, एवं महाहिमवंते चेव रुप्पिच्चेव, एवं णिसढे चेव णीलवंते चेव, जबूमंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं हेमवंतेरण्णवतेसु वासेसु दो वट्टवेतड्ढपव्वता बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता जाव सद्दावाती चेव वियडावाती चेव, तत्थ णं दो देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितिया परिवसंति तं०-साती चेव पभासे चेव, जंबूमंदरस्स उत्तरदाहिणेणं हरिवासरम्मतेसु वासेसु दो वट्टवेयड्ढपव्वया बहुसम० जाव गंधावती चेव मालवंतपरियाए चेव, तत्थ णं दो देवा महिड्ढिया महज्जुईया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं०-अरुणे चेव पउमे चेव, जंबूमंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं देवकुराए पुव्वावरे पासे एत्थ णं आसक्खंधगसरिसा अद्धचंदसंठाणसंठिया (अवद्धचंदसंठाणसंठिया पा०) दो वक्खारपव्वया बहुसमा जाव सोमणसे चेव विज्जुप्पभे चेव, जंबूमंदर० उत्तरेणं उत्तरकुराए पुव्वावरे पासे एत्थ णं आसक्खंधगसरिसा अद्धचंदसंठाणसंठिया दो वक्खारपव्वया बहु० जाव गंधमायणे चेव मालवंते चेव, जंबूमंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो दीहवेयड्ढपव्वया बहुसमतुल्ला जाव भारहे चेव दीहवेयड्ढे एरावते चेव दीहवेयड्ढे, भारहए णं दीहवेयड्ढे दो गुहाओ बहुसमतुल्लाओ अविसेसमणाणत्ताओ अन्नमन्नं णातिवट्टंति आयामविक्खंभुच्चत्तसंठाणपरिणाहेणं, तं०-तिमिसगुहा चेव खंडगप्पवायगुहा चेव, तत्थ णं दो देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं०-कयमालए चेव नट्टमालए चेव, एरावयए णं दीहवेयड्ढे दो गुहाओ बहुसम जाव कयमालए चेव नट्टमालए चेव, जंबूमंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंते वासहरपव्वए दो कूडा बहुसमतुल्ला जाव विक्खंभुच्चत्तसंठाणपरिणाहेणं, तं०-चुल्लहिमवंतकूडे चेव वेसमणकूडे चेव, जंबूमंदरदाहिणेणं महाहिमवंते वासहरपव्वए दो कूडा बहुसम० जाव महाहिमवन्तकूडे चेव वेरुलियकूडे चेव, एवं निसढे वासहरपव्वए दो कूडा बहुसम० जाव निसढकूडे चेव रुयगप्पभे चेव, जंबूमंदर० उत्तरेणं नीलवंते वासहरपव्वए दो कूडा बहुसम० जाव तं०-नीलवंतकूडे चेव उवदंसणकूडे चेव, एवं रुप्पिंमि वासहरपव्वए दो कूडा बहुसम० जाव तं०-रुप्पिकूडे चेव मणिकंचणकूडे चेव, एवं सिहरिंमि वासहरपव्वते दो कूडा बहुसम० जाव तं०-सिहरिकूडे चेव तिगिंछिकूडे चेव।८७। जंबूमंदर० उत्तरदाहिणेणं चुल्लहिमवंतसिहरीसु वासहरपव्वयेसु दो महद्दहा बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अण्णमण्णं णातिवट्टंति आयामविक्खंभउव्वेहसंठाणपरिणाहेणं, तं०-पउमद्दहे चेव पुंडरीयद्दहे चेव, तत्थ णं दो देवयाओ महड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठितीयाओ परिवसंति, तं०-सिरी चेव लच्छी चेव, एवं महाहिमवंतरुप्पीसु वासहरपव्वएसु दो महद्दहा बहुसम० जाव तं०-महापउमद्दहे चेव महापोंडरीयद्दहे चेव, देवताओ हिरिच्चेव बुद्धिच्चेव, एवं निसढनीलवंतेसु तिगिंछिद्दहे चेव केसरिद्दहे चेव, देवताओ धिती चेव कित्तिच्चेव, जंबूमंदर० दाहिणेणं महाहिमवंताओ वासहरपव्वयाओ महापउमद्दहाओ दो महाणईओ पवहंति, तं०-रोहियच्चेव हरिकंतच्चेव, एवं निसढाओ वासहरपव्वताओ तिगिंछिद्दहाओ दो म० तं०-हरिच्चेव सीओअच्चेव, जंबूमंदर० उत्तरेणं नीलवंताओ वासहरपव्वताओ केसरिद्दहाओ दो महानईओ पवहंति, तं०-सीता चेव नारीकंता चेव, एवं रुप्पीओ वासहरपव्वताओ महापोंडरीयद्दहाओ दो महानईओ पवहंति, तं०-नरकंता चेव रुप्पकूला चेव, जंबूमंदरदाहिणेणं भरहे वासे दो पवायद्दहा बहुसम० तं०-गंगप्पवातद्दहे चेव सिंधुप्पवायद्दहे चेव, एवं हिमवए वासे दो पवायद्दहा बहु० तं०-रोहियप्पवातद्दहे चेव रोहियंसप्पवातद्दहे चेव, जंबूमंदरदाहिणेणं हरिवासे दो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पवायद्दहा बहुसम० तं०-हरिपवातद्दहे चेव हरिकंतपवातद्दहे चेव, जंबूमंदरउत्तरदाहिणेणं महाविदेहवासे दो पवायद्दहा बहुसम० जाव सीअप्पवातद्दहे चेव सीतोदप्पवायदहे चेव, जंबू-मंदरस्स उत्तरेणं रम्मए वासे दो पवायद्दहा बहु० जाव नरकंतप्पवायद्दहे चेव णारीकंतप्पवायद्दहे चेव, एवं हेरन्नवते वासे दो पवायद्दहा सुवन्नकूलप्पवायद्दहे चेव रुप्पकूलप्पवायद्दहे चेव, जंबूमंदरउत्तरेणं एरवए वासे दो पवायद्दहा बहु० जाव रत्तप्पवायद्दहे चेव रत्तावइप्पवायद्दहे चेव, जंबूमंदरदाहिणेणं भरहे वासे दो महानईओ बहु० जाव गंगा चेव सिंधू चेव, एवं जधा पवातद्दहा एवं णईओवि भाणियव्वाओ जाव एरवए वासे दो महानईओ बहुसमतुल्लाओ जाव रत्ता चेव रत्तवती चेव ।८८। जंबुदीवे २ भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसमदूसमाए समाए दो सागरोवमकोडाकोडीओ काले होत्था १, एवमिमीसे ओसप्पिणीए जाव पन्नत्ते २, एवं आगमिस्साए उस्सप्पिणीए जाव भविस्सति ३, जंबुद्दीवे दीवे भरहे-रवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसमाए समाए मणुया दो गाउयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था ४, दोन्नि य पलिओवमाइं परमाउं पालइत्था ५, एवमिमीसे ओसप्पिणीए जाव पाल-इत्था ६, एवमागमेस्साते उस्सप्पिणीए जाव पालिस्संति ७, जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमये एगजुगे (एगजुगे एगसमये पा०) दो अरिहंतवंसा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा ८, एवं चक्कवट्टिवंसा ९, दसारवंसा १०, जंबूभरहेरवएसु० एगसमते दो अरहंता उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा ११, एवं चक्कवट्टिणो १२, एवं बलदेवा एवं वासुदेवा (दसारवंसा) जाव उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा १३, जंबू० दोसु कुरासु मणुआ सया सुसमसुसममुत्तमिड्ढिं पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तं०-देवकुराए चेव उत्तरकुराए चेव १४, जंबुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया सया सुसमुत्तमं इड्ढिं पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तं०-हरिवासे चेव रम्मगवासे चेव १५, जंबू० दोसु वासेसु मणुया सया सुसम(प्र० दुस)मुत्तममिड्ढिं पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरंति तं०-हेमवए चेव एरन्नवए चेव १६, जंबुद्दीवे दीवे दोसु खित्तेसु मणुया सया दूसमसुसममुत्तममिड्ढिं पत्ता पच्चणुब्भव-माणा विहरंति, तं०-पुव्वविदेहे चेव अवरविदेहे चेव १७, जंबूदीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया छव्विहंपि कालं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तं०-भरहे चेव एरवते चेव १८ ।८९। जंबुद्दीवे दीवे दो चंदा पभासिंसु वा पभासंति वा पभासिस्संति वा, दो सूरिआ तविंसु वा तवंति वा तविस्संति वा, दो कत्तिया, दो रोहिणीओ, दो मग्गसिराओ, दो अद्दाओ, एवं भाणियव्वं, "कत्तिय (१) रोहिणि (२) मगसिर (३) अद्दा (४) य पुणव्वसू (५) अ पूसो (६) य । तत्तोऽवि अस्सलेसा (७) महा (८) य दो फग्गुणीओ (९-१०) य॥ १॥ हत्थो (११) चित्ता (१२) साई (१३) विसाहा (१४) तहय होति अणुराहा (१५)। जेट्ठा (१६) मूलो (१७) पुव्वा (१८) य आसाढा उत्तरा (१९) चेव॥ २॥ अभिइ (२०) सवण (२१) धणिट्ठा (२२) सयभिसया (२३) दो य होंति भद्दवया (२४-२५)। रेवति (२६) अस्सिणि (२७) भरणी (२८) नेतव्वा आणुपुव्वीए ॥ ३॥ एवं गाहाणुसारेणं णेयव्वं जाव दो भरणीओ । दो अग्गी दो पयावती दो सोमा दो रुद्दा दो अदिती दो बहस्सती दो सप्पी दो पिती दो भगा दो अज्जमा १० दो सविता दो तट्ठा दो वाऊ दो इंदग्गी दो मित्ता दो इंदा दो निरती दो आऊ दो विसा दो बम्हा २० दो विण्हू दो वसू दो वरुणा दो अया दो विविद्धी दो पुस्सा दो अस्सा दो यमा २८। दो इंगालगा दो वियालगा दो लोहितक्खा दो सणिच्चरा दो आहुणिया दो पाहुणिया दो कणा दो कणगा दो कणकणगा दो कणगविताणगा १० दो कणगसंताणगा दो सोमा दो सहिया दो असासणा दो कज्जोवगा दो कब्बडगा दो अयकरगा दो दुंदुभगा दो संखा दो संखवन्ना २० दो संखवन्नाभा दो कंसा दो कंसवन्ना दो कंसवन्नाभा दो रुप्पी दो रुप्पाभासा दो णीला दो णीलोभासा दो भासा दो भासरासी ३० दो तिला दो तिल-पुप्फवण्णा दो दगा दो दगपंचवन्ना दो काका दो ककंधा दो इंदग्गी दो धूमकेऊ दो हरी दो पिंगला ४० दो बुद्धा दो सुक्का दो बहस्सती दो राहू दो अगत्थी दो माणवगा दो कासा दो फासा दो धुरा दो पमुहा ५० दो वियडा दो विसंधी दो नियल्ला दो पइल्ला दो जडियाइलगा दो अरुणा दो अग्गिल्ला दो काला दो महाकालगा दो सोत्थिया ६० दो सोवत्थिया दो वद्धमाणगा [दो पूसमाणगा दो अंकुसा] दो पलंबा दो निच्चालोगा दो णिच्चुज्जोता दो सयंपभा दो ओभासा दो सेयंकरा दो खेमंकरा दो आभंकरा ७० दो पभंकरा दो अपराजिता दो अरया दो असोगा दो विगतसोगा दो विमला दो वितत्ता दो वितत्था दो विसाला दो साला ८० दो सुव्वता दो अणियट्टा दो एगजडी दो दुजडी दो करकरिंगा दो रायग्गला दो पुप्फकेतू दो भावकेऊ ८८ ।९०। जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स वेइआ दो गाउयाइं उद्धंउच्चत्तेणं पन्नत्ता, लवणे णं समुद्दे दो जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पन्नत्ते। लवणस्स णं समुद्दस्स वेतिया दो गाउयाइ उद्धंउच्चत्तेणं पन्नत्ता ।९१। धायइसंडे दीवे पुरच्छिमद्धेणं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वासा बहुसमतुल्ला जाव भरहे चेव एरवए चेव, एवं जहा जंबुद्दीवे तहा एत्थवि भाणियव्वं जाव दोसु वासेसु मणुया छव्विहंपि कालं पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं०-भरहे चेव एरवते चेव, णवरं कूडसामली चेव धायइरुक्खे चेव, देवा गरुले चेव वेणुदेवे सुदंसणे चेव, धाततीसंडदीवपच्चच्छिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वासा बहु० जाव भरहे चेव एरवए चेव जाव छव्विहंपि कालं पच्चणुभवमाणा विहरंति भरहे

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चेव एरवए चेव णवरं कूडसामली चेव महाधायतीरुक्खे चेव, देवा गरुले चेव वेणुदेवे पियदंसणे चेव, धाइयसंडे णं दीवे दो भरहाइं दो एरवयाइं दो हेमवयाइं दो हेरन्नवयाइं दो हरिवासाइं दो रम्मगवासाइं दो पुव्वविदेहाइं दो अवरविदेहाइं दो देवकुराओ दो देवकुरुमहद्दुमा दो देवकुरुमहद्दुमवासी देवा दो उत्तरकुराओ दो उत्तरकुरुमहद्दुमा दो उत्तरकुरुमहद्दुमवासी देवा दो चुल्लहिमवंता दो महाहिमवंता दो निसहा दो नीलवंता दो रुप्पी दो सिहरी दो सद्दावाती दो सद्दावातवासी साती देवा दो वियडावाती दो वियडावातिवासी पभासा देवा दो गंधावाती दो गंधावातिवासी अरुणा देवा दो मालवंतपरियागा दो मालवंतपरियागावासी पउमा देवा दो मालवंता दो चित्तकूडा दो पउमकूडा दो नलिणकूडा दो एगसेला दो तिकूडा दो वेसमणकूडा दो अंजणा दो मातंजणा दो सोमणसा दो विज्जुप्पभा दो अंकावती दो पम्हावती दो आसीविसा दो सुहावहा दो चंदपव्वता दो सूरपव्वता दो णागपव्वता दो देवपव्वया दो गंधमायणा दो उसुगारपव्वया दो चुल्लहिमवंतकूडा दो वेसमणकूडा दो महाहिमवंतकूडा दो वेरुलियकूडा दो निसहकूडा दो रुयगकूडा दो नीलवंतकूडा दो उवदंसणकूडा दो रुप्पिकूडा दो मणिकंचणकूडा दो सिहरिकूडा दो तिगिच्छिकूडा दो पउमद्दहा दो पउमद्दहवासिणीओ सिरीदेवीओ दो महापउमद्दहा दो महापउमद्दहवासिणीओ हिरीतो देवीओ एवं जाव दो पुंडरीयद्दहा दो पोंडरीयद्दहवासिणीओ लच्छीदेवीओ, दो गंगापवायद्दहा जाव दो रत्तवतिपवातद्दहा दो रोहियाओ जाव दो रुप्पकूलातो दो गाहवतीओ दो दहवतीओ दो पंकवतीओ (वेगवतीओ पा०) दो तत्तजलाओ दो मत्तजलाओ दो उम्मत्तजलाओ दो खीरोयाओ (खारोदाओ पा०) दो सीहसोताओ (सीयासोताओ पा०) दो अंतोवाहिणीओ दो उम्मिमालिणीओ दो फेणमालिणीओ दो गंभीरमालिणीओ दो कच्छा दो सुकच्छा दो महाकच्छा दो कच्छगावती दो आवत्ता दो मंगलावत्ता दो पुक्खला दो पुक्खलावई दो वच्छा दो सुवच्छा दो महावच्छा दो वच्छगावती दो रम्मा दो रम्मगा दो रमणिज्जा दो मंगलावती दो पम्हा दो सुपम्हा दो महपम्हा दो पम्हगावती दो संखा दो णलिणा दो कुमुया दो स(ण)लि-ला(णा)वती दो वप्पा दो सुवप्पा दो महावप्पा दो वप्पगावती दो वग्गू दो सुवग्गू दो गंधिला दो गंधिलावती ३२ दो खेमाओ दो खेमपुरीओ दो रिट्ठाओ दो रिट्ठपुरीओ दो खग्गातो दो मंजुसाओ दो ओसधीओ दो पोंडरीगिणीओ दो सुसीमाओ दो कुंडलाओ दो अपराजियाओ दो पभंकराओ दो अंकावईओ दो पम्हावईओ दो सुभाओ दो रयणसंचयाओ दो आसपुराओ दो सीहपुराओ दो महापुराओ दो विजयपुराओ दो अपराजिताओ दो अवराओ दो असोयाओ दो विगयसोगाओ दो विजयातो दो वेजयंतीओ दो जयंतीओ दो अपराजियाओ दो चक्कपुराओ दो खग्गपुराओ दो अवज्झाओ दो अउज्झाओ ३२ दो भद्दसालवणा दो णंदणवणा दो सोमणसवणा दो पंडगवणाइं दो पंडुकंबलसिलाओ दो अतिपंडुकंबलसिलाओ दो रत्तकंबलसिलाओ दो अइरत्तकंबलसिलाओ दो मंदरा दो मंदरचूलिताओ, धायतिसंडस्स णं दीवस्स वेदिया दो गाउयाइं उद्धमुच्चत्तेणं पन्नत्ता।९२। कालोदस्स णं समुद्दस्स वेइया दो गाउयाइं उद्दढंउच्चत्तेणं पन्नत्ता, पुक्खरवरदीवड्ढपुरच्छिमद्धेणं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वासा बहुसमतुल्ला जाव भरहे चेव एरवए चेव तहेव जाव दो कुराओ पं० देवकुरा चेव उत्तरकुरा चेव, तत्थ णं दो महतिमहालता महद्दुमा पं० तं०-कूडसामली चेव पउमरुक्खे चेव, देवा गरुले चेव वेणुदेवे पउमे चेव, जाव छव्विहंपि कालं पच्चणुभवमाणा विहरंति, पुक्खरवरदीवड्ढपच्चच्छिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वासा पं० तं० तहेव णाणत्तं कूडसामली चेव महापउमरुक्खे चेव, देवा गरुले चेव वेणुदेवे पुंडरीए चेव, पुक्खरव-रदीवड्ढे णं दीवे दो भरहाइं दो एरवयाइं जाव दो मंदरा दो मंदरचूलियाओ, पुक्खरवरस्स णं दीवस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढमुच्चत्तेणं पन्नत्ता, सव्वेसिंपि णं दीवसमुद्दाणं वेदियाओ दो गाउयाइं उड्ढमुच्चत्तेणं पण्णत्ताओ।९३। दो असुरकुमारिंदा पन्नत्ता, तं०-चमरे चेव बली चेव १ दो णागकुमारिंदा पण्णत्ता, तं०-धरणे चेव भूयाणंदे चेव २ दो सुवन्नकुमारिंदा पं० तं०-वेणुदेवे चेव वेणुदाली चेव ३ दो विज्जुकुमारिंदा पं०तं०-हरिच्चेव हरिस्सहे चेव ४, दो अग्गिकुमारिंदा पन्नत्ता तं०-अग्गिसिहे चेव अग्गिमाणवे चेव ५ दो दीवकुमारिंदा पं०तं०-पुन्ने चेव विसिट्ठे चेव ६ दो उदहिकुमारिंदा पं०तं०-जलकंते चेव जलप्पभे चेव ७ दो दिसाकुमारिंदा पं०तं०-अमियगती चेव अमितवाहणे चेव ८ दो वातकुमारिंदा पं०तं०-वेलंबे चेव पभंजणे चेव ९ दो थणियकुमारिंदा पण्णत्ता, तं०-घोसे चेव महाघोसे चेव १० दो पिसाइंदा पन्नत्ता, तं०-काले चेव महाकाले चेव १ दो भूइंदा पं० तं०-सुरूवे चेव पडिरूवे चेव २ दो ज-क्खिंदा पन्नत्ता, तं०-पुन्नभद्दे चेव माणिभद्दे चेव ३ दो रक्खसिंदा पन्नत्ता, तं०-भीमे चेव महाभीमे चेव ४ दो किन्नरिंदा पन्नत्ता, तं०-किन्नरे चेव किंपुरिसे चेव ५ दो किंपुरिसिंदा पं० तं०-सप्पुरिसे चेव महापुरिसे चेव ६ दो महोरगिंदा पं० तं०-अतिकाए चेव महाकाए चेव ७ दो गंधव्विंदा पं०, तं०-गीतरती चेव गीयजसे चेव ८ दो अणपन्निंदा पं०, तं०-संनि-हिए चेव सामण्णे चेव ९ दो पणपन्निंदा पं०, तं०-धाए चेव विहाए चेव १० दो इसिवाइंदा पं०, तं०-इसिच्चेव इसिवालए चेव ११, दो भूतवाइंदा पन्नत्ता, तं०-इस्सरे चेव महिस्सरे चेव १२ दो कंदिदा पं० तं०-सुवच्छे चेव विसाले चेव १३ दो महाकंदिदा पन्नत्ता, तं०-हस्से चेव हस्सरती चेव १४ दो कुभंडिंदा पं० तं०-सेए चेव महासेए चेव १५, दो पतइंदा पं० तं०-पतए चेव पतयवई चेव १६ जोइसियाणं देवाणं दो इंदा पन्नत्ता, तं०-चंदे चेव सूरे चेव, सोहम्मीसाणेसु णं कप्पेसु दो इंदा पं०, तं०-सक्के चेव ईसाणे चेव, एवं सणंकुमा-(२०)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org
मुनि दीपरत्नसागर

रमाहिंदेसु कप्पेसु दो इंदा पं०, तं०-सणंकुमारे चेव माहिंदे चेव, बंभलोगलंतएसु णं कप्पेसु दो इंदा पं०, तं०-बंभे चेव लंतए चेव, महासुक्कसहस्सारेसु णं कप्पेसु दो इंदा पन्नत्ता, तं०-महासुक्के चेव सहस्सारे चेव, आणयपाणतारणच्चुतेसु णं कप्पेसु दो इंदा पं० तं०-पाणते चेव अच्चुते चेव, महासुक्कसहस्सारेसु णं कप्पेसु विमाणा दुवण्णा पं०, तं०-हालिद्दा चेव सुक्किल्ला चेव, गेविज्जगा णं देवा णं दो रयणीओ उड्ढमुच्चत्तेणं पन्नत्ता।९४। अ० २ उ० ३॥ समयाति वा आवलियाति वा जीवाति या अजीवाति या पवुच्चति १ आणापाणाति वा थोवेति वा जीवाति या अजीवाति या पवुच्चति २, खणाति वा लवाति वा जीवाति या अजीवाति या पवुच्चति ३, एवं मुहुत्ताति वा अहोरत्ताति वा ४, पक्खाति वा मासाति वा ५, उडूति वा अयणाति वा ६, संवच्छराति वा जुगाति वा ७, वाससयाति वा वाससहस्साइ वा ८, वाससतसहस्साइ वा वासकोडीइ वा ९, पुव्वंगाति वा पुव्वाति वा १०, तुडियंगाति वा तुडियाति वा ११, अडडंगाति वा अडडाति वा १२, अववंगाति वा अववाति वा १३, हूहूअंगाति वा हूहूयाति वा १४, उप्पलंगाति वा उप्पलाति वा १५, पउमंगाइ वा पउमाति वा १६, णलिणंगाति वा णलिणाति वा १७, अच्छणिकुरंगाति वा अच्छणिउराति वा १८, अउअंगाति वा अउआति वा १९, णउअंगाति वा णउआति वा २०, पउतंगाति वा पउताति वा २१, चूलितंगाति वा चूलिताति वा २२, सीसपहेलियंगाति वा सीसपहेलियाति वा २३, पलिओवमाति वा सागरोवमाति वा २४, उस्सप्पिणीति वा ओसप्पिणीति वा जीवाति या अजीवाति या पवुच्चति २५, गामाति वा णगराति वा निगमाति वा रायहाणीति वा खेडाति वा कब्बडाति वा मडंबाति वा दोणमुहाति वा पट्टणाति वा आगराति वा आसमाति वा संबाहाति वा संनिवेसाइ वा घोसाइ वा आरामाइ वा उज्जाणाति वा वणाति वा वणसंडाति वा वावीइ वा पुक्खरणीति वा १० सराति वा सरपंतीति वा अगडाति वा तलागाति वा दहाति वा णदीति वा पुढवीति वा उदहीति वा वातखंधाति वा उवासंतराति वा वलताति वा विग्गहाति वा दीवाति वा समुद्दाइ वा वेलाति वा वेतिताति वा दाराति वा तोरणाति वा णेरतिताति वा णेरतिता-वासाति वा २० जाव वेमाणियाइ वा वेमाणियावासाति वा ४३ कप्पाति वा कप्पविमाणावासाति वा वासाति वा वासधरपव्वताति वा कूडाति वा कूडागाराति वा विजयाति वा रायहाणीइ वा जीवाति या अजीवाति या पवुच्चति ४७ छाताति वा आतवाति वा दोसिणाति वा अन्धगाराति वा ओमाणाति वा उम्माणाति वा अतिताणगिहाति वा उज्जाणगिहाति वा अवलिंबाति वा सणिप्पवाताति वा जीवाति या अजीवाति या पवुच्चइ, दो रासी पं० तं०-जीवरासी चेव अजीवरासी चेव। ९५। दुविहे बंधे पं०, तं०-पेज्जबंधे चेव दोसबंधे चेव, जीवा णं दोहिं ठाणेहिं पावं कम्मं बंधंति, तं०-रागेण चेव दोसेण चेव, जीवा णं दोहिं ठाणेहिं पावं कम्मं उदीरेंति, तं०-अब्भोवगमिताते चेव वेतणाते उवक्कमिताते चेव वेयणाते, एवं वेदेंति एवं णिज्जरेंति-अब्भोवगमिताते चेव वेयणाते उवक्कमिताते चेव वेयणाते।९६। दोहिं ठाणेहिं आता सरीरं फुसित्ताणं णिज्जाति, तं०-देसेणवि आता सरीरं फुसित्ताणं णिज्जाति सव्वेणवि आया सरीरगं फुसित्ताणं णिज्जाति, एवं फुरित्ताणं एवं फुडित्ता एवं संवट्टतित्ता एवं निव्वट्टतित्ता।९७। दोहिं ठाणेहिं आता केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणताते, तं०-खतेण चेव उवसमेण चेव, एवं जाव मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा तं०-खतेण चेव उवसमेण चेव।९८। दुविहे अद्धोवमिए पन्नत्ते तं०-पलिओवमे चेव सागरोवमे चेव, से किं तं पलिओवमे?, पलिओवमे-जं जोयणविच्छिन्नं पल्लं एगाहियप्परूढाणं। होज्ज निरंतरणिचितं भरितं वालग्गकोडीणं॥४॥ वाससए वाससए एक्केक्के अवहडंमि जो कालो। सो कालो बोद्धव्वो उवमा एगस्स पल्लस्स॥५॥ एएसिं पल्लाणं कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिता। तं सागरोवमस्स उ एगस्स भवे परीमाणं॥६॥९९। दुविहे कोहे पन्नत्ते तं०-आयपइट्ठिते चेव परपइट्ठिए चेव, एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं, एवं जाव मिच्छादंसणसल्ले।१००। दुविहा संसारसमावन्नगा जीवा पं० तं०-तसा चेव थावरा चेव, दुविहा सव्वजीवा पं०तं०-सिद्धा चेव असिद्धा चेव, दुविहा सव्वजीवा पण्णत्ता तं०-सइंदिया चेव अणिंदिया चेव, एवं एसा गाहा फासेतव्वा जाव ससरीरी चेव असरीरी चेव-'सिद्धसइंदियकाए जोगे वेए कसाय लेसा य। णाणुवओगाहारे भासग चरिमे य ससरीरी॥७॥'।१०१। दो मरणाइं समणेणं भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णो णिच्चं वन्नियाइं णो णिच्चं कित्तियाइं णो णिच्चं पूइयाइं (बुइयाइं पा०) णो णिच्चं पसत्थाइं णो णिच्चं अब्भणुन्नायाइं भवंति, तंजहा-वलायमरणे चेव वसट्टमरणे चेव १ एवं णियाणमरणे चेव तब्भवमरणे चेव २ गिरिपडणे चेव तरुपडणे चेव ३ जलप्पवेसे चेव जलणप्पवेसे चेव ४ विस-भक्खणे चेव सत्थोवाडणे चेव ५ दो मरणाइं जाव णो णिच्चं अब्भणुन्नायाइं भवंति, कारणेणं पुण अप्पडिकुट्ठाइं, तं०-वेहाणसे चेव गिद्धपट्ठे चेव ६, दो मरणाइं समणेणं भगवया महा-वीरेणं समणाणं निग्गंथाणं णिच्चं वन्नियाइं जाव अब्भणुन्नाताइं भवंति, तं०-पाओवगमणे चेव भत्तपच्चक्खाणे चेव ७ पाओवगमणे दुविहे पं०तं०-णीहारिमे चेव अनीहारिमे चेव णियमं अपडिक्कमे ८ भत्तपच्चक्खाणे दुविहे पं० तं०-णीहारिमे चेव अणीहारिमे चेव णियमं सपडिक्कमे ९।१०२। के अयं लोगे?, जीवच्चेव अजीवच्चेव, के अणंता लोए?, जीवच्चेव अजी-वच्चेव, के सासया लोगे?, जीवच्चेव अजीवच्चेव।१०३। दुविहा बोधी पं० तं०-णाणबोधी चेव दंसणबोधी चेव, दुविहा बुद्धा पं० तं०-णाणबुद्धा चेव दंसणबुद्धा चेव, एवं मोहे, मूढा।१०४।

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णाणावरणिज्जे कम्मे दुविहे पं० तं०-देसनाणावरणिज्जे चेव सव्वणाणावरणिज्जे चेव, दरिसणावरणिज्जे कम्मे एवं चेव, वेयणिज्जे कम्मे दुविहे पं०तं०-सातावेयणिज्जे चेव असातावेयणिज्जे चेव, मोहणिज्जे कम्मे दुविहे पं० तं०-दंसणमोहणिज्जे चेव चरित्तमोहणिज्जे चेव, आउए कम्मे दुविहे पं० तं०-अद्धाउए चेव भवाउए चेव, णामे कम्मे दुविहे पन्नत्ते तं०-सुभणामे चेव असुभणामे चेव, गोत्ते कम्मे दुविहे पं० तं०-उच्चागोते चेव णीयागोते चेव, अंतराइए कम्मे दुविहे पं० तं०-पडु(च्चु पा०)प्पन्नविणासिए चेव पिहितआगामिपहं (आगामिपहे आगमपहं पा०) ।१०५। दुविहा मुच्छा पं० तं०-पेज्जवत्तिता चेव दोसवत्तिया चेव, पेज्जवत्तिया मुच्छा दुविहा पं० तं०-माए चेव लोभे चेव, दोसवत्तिया मुच्छा दुविहा पं० तं०-कोहे चेव माणे चेव।१०६। दुविहा आराहणा पं० तं०-धम्मिताराहणा चेव केवलिआराहणा चेव, धम्मियाराहणा दुविहा पं० तं०-सुयधम्माराहणा चेव चरित्तधम्माराहणा चेव, केवलिआराहणा दुविहा पं० तं०-अंतकिरिया चेव कप्पविमाणोववत्तिया चेव।१०७। दो तित्थगरा नीलुप्पलसमा वन्नेणं पं० तं०-मुणिसुव्वए चेव अरिट्ठनेमी चेव, दो तित्थयरा पियंगुसामा वन्नेणं पं० तं०-मल्ली चेव पासे चेव, दो तित्थयरा पउमगोरा वन्नेणं पं० तं०-पउमप्पहे चेव वासुपुज्जे चेव, दो तित्थगरा चंदगोरा वन्नेणं पं० तं०-चंदप्पभे चेव पुप्फदंते चेव ।१०८। सच्चप्पवायपुव्वस्स णं दुवे वत्थू ।१०९। पुव्वाभद्दवयाणक्खत्ते दुतारे पन्नत्ते, उत्तरभद्दवयाणक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते, एवं पुव्वफग्गुणी उत्तराफग्गुणी ।११०। अंतो णं मणुस्सखेत्तस्स दो समुद्दा पं० तं०-लवणे चेव कालोदे चेव ।१११। दो चक्कवट्टी अपरिचित्तकामभोगा कालमासे कालं किच्चा अहेसत्तमाए पुढवीए अप्पतिट्ठाणे णरए नेरइतत्ताए उववन्ना तं०-सुभूमे चेव बंभदत्ते चेव ।११२। असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं ठिती पन्नत्ता, सोहम्मे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता, ईसाणे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता, सणंकुमारे कप्पे देवाणं जहन्नेणं दो सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता, माहिंदे कप्पे देवाणं जहन्नेणं साइरेगाइं दो सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता ।११३। दोसु कप्पेसु कप्पत्थियाओ पन्नत्ताओ, तं०-सोहम्मे चेव ईसाणे चेव ।११४। दोसु कप्पेसु देवा तेउलेस्सा पन्नत्ता, तं०-सोहम्मे चेव ईसाणे चेव ।११५। दोसु कप्पेसु देवा कायपरियारगा पं० तं०-सोहम्मे चेव ईसाणे चेव, दोसु कप्पेसु देवा फासपरियारगा पं० तं०-सणंकुमारे चेव माहिंदे चेव, दोसु कप्पेसु देवा रूवपरियारगा पं० तं०-बंभलोगे चेव लंतगे चेव, दोसु कप्पेसु देवा सद्दपरियारगा पं० तं०-महासुक्के चेव सहस्सारे चेव, दो इंदा मणपरियारगा पं० तं०-पाणए चेव अच्चुए चेव ।११६। जीवा णं दुट्ठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा, तं०-तसकायनिव्वत्तिए चेव थावरकायनिव्वत्तिए चेव, एवं उवचिणिंसु वा उवचिणंति वा उवचिणिस्संति वा, बंधिंसु वा बंधंति वा बंधिस्संति वा, उदीरिंसु वा उदीरेंति वा उदीरिस्संति वा, वेदेंसु वा वेदेंति वा वेदिस्संति वा, णिज्जरिंसु वा णिज्जरंति वा णिज्जरिस्संति वा ।११७। दुपएसिता खंधा अणंता पन्नत्ता दुपदेसोगाढा पोग्गला अणंता पन्नत्ता एवं जाव दुगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पन्नत्ता ।११८। उ० ४ द्विस्थानकाध्ययनं २॥ तओ इंदा पण्णत्ता तं०-णामिंदे ठवणिंदे दव्विंदे, तओ इंदा पं० तं०-णाणिंदे दंसणिंदे चरित्तिंदे, तओ इंदा पं० तं०-देविंदे असुरिंदे मणुस्सिंदे ।११९। तिविहा विउव्वणा पं० तं०-बाहिरते पोग्गलए परियातित्ता एगा विकुव्वणा बाहिरए पोग्गले अपरियादित्ता एगा विकुव्वणा बाहिरए पोग्गले परियादित्तावि अपरियादित्तावि एगा विकुव्वणा, तिविहा विगुव्वणा पं० तं०-अब्भंतरए पोग्गले परियातित्ता० अपरि० परियाइत्ता अपरितादित्तावि एगा विकुव्वणा, तिविहा विकुव्वणा पं० तं०-बाहिरब्भंतरए पोग्गले परियाइत्ता एगा विकुव्वणा बाहिरब्भंतरए पोग्गले अपरियाइत्ता एगा विगुव्वणा बाहिरब्भंतरए पोग्गले परियाइत्तावि अपरियाइत्तावि एगा विउव्वणा।१२०। तिविहा नेरइया पन्नत्ता तं०-कतिसंचिता अकतिसंचिता अवत्तव्वगसंचिता, एवमेगिंदियवज्जा जाव वेमाणिया ।१२१। तिविहा परियारणा पं० तं०-एगे देवे अन्ने देवे अन्नेसिं देवाणं देवीओ अ अभिजुंजिय २ परियारेति, अप्पणिज्जिआओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेति, अप्पाणमेव अप्पणा विउव्विय २ परियारेति १, एगे देवे णो अन्ने देवा णो अण्णेसिं देवाणं देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेइ अप्पणिज्जियाओ देवीओ अभिजुंजिय २ परि०२ अप्पाणमेव अप्पणा विउव्विय२ परियारेति २, एगे देवे णो अन्ने देवा णो अण्णेसिं देवाणं देवीओ अभिजुंजिय २ परितारेति णो अप्पणिज्जिताओ देवीओ अभिजुंजिय २ परितारेति अप्पाणमेव अप्पणा विउव्विय २ परितारेति ३ ।१२२। तिविहे मेहुणे पं० तं०-दिव्वे माणुस्सते तिरिक्खजोणिते, तओ मेहुणं गच्छंति तं०-देवा मणुस्सा तिरिक्खजोणिता, ततो मेहुणं सेवंति, तं०-इत्थी पुरिसा णपुंसगा ।१२३। तिविहे जोगे पं० तं०-मणजोगे वतिजोगे कायजोगे, एवं णेरतिताणं विगलिंदियवज्जाणं जाव वेमाणियाणं, तिविहे पओगे पं० तं०-मणपओगे वतिपओगे कायपयोगे जहा जोगो विगलिंदियवज्जाणं तधा पओगोऽवि, तिविहे करणे पं०, तं०-मणकरणे वतिकरणे कायकरणे, एवं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं, तिविहे करणे पं० तं०-आरंभकरणे संरंभकरणे समारंभकरणे, निरंतरं जाव वेमाणियाणं ।१२४। तिहिं ठाणेहिं जीवा अप्पाउअत्ताते कम्मं पगरिंति, तं०-पाणे अतिवातित्ता भवति मुसं वइत्ता भवइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अफा-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुएणं अणेसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभित्ता भवइ, इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा अप्पाउअत्ताते कम्मं पगरेंति, तिहिं ठाणेहिं जीवा दीहाउअत्ताते कम्मं पगरेंति. तं०-णो पाणे अतिवातित्ता भवइ णो मुसं वत्तिता भवति तथारूवं समणं वा माहणं वा फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता भवइ, इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पगरेंति, तिहिं ठाणेहिं जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्मं पगरेंति, तंजधा-पाणे अतिवातिता भवइ मुसं वइता भवइ (पाणे अतिवायित्ता मुसं वयित्ता पा०) तहारूवं समणं वा माहणं वा हीलेत्ता णिंदित्ता खिंसेत्ता गरहित्ता अवमाणित्ता अन्नयरेणं अमणुन्नेणं अपीतिकारतेणं असण० पडिलाभेत्ता भवइ, इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा असुभदीहाउअत्ताए कम्मं पगरेंति, तिहिं ठाणेहिं जीवा सुभदीहाउअत्ताते कम्मं पगरेंति, तं०-णो पाणे अतिवातित्ता भवइ णो मुसं वदित्ता भवइ तहारूवं समणं वा माहणं वा वंदित्ता नमंसित्ता सक्कारित्ता संमाणेत्ता कल्लाणं मंगलं देवतं चेतितं पज्जुवासेत्ता मणुन्नेणं पीतिकारएणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभित्ता भवइ, इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा सुहदीहाउतत्ताते कम्मं पगरेंति ।१२५। ततो गुत्तीतो पन्नत्ताओ, तं०-मणगुत्ती वतिगुत्ती कायगुत्ती, संजयमणुस्साणं ततो गुत्तीओ पं०, तं०-मण० वइ० काय०, तओ अगुत्तीओ पं०,तं०-मणअगुत्ती वइअगुत्ती कायअगुत्ती, एवं नेरइताणं जाव थणियकुमाराणं, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं असंजतमणुस्साणं वाणमंतराणं जोइसियाणं वेमाणियाणं। ततो दंडा पं०, तं०-मणदंडे वइदंडे कायदंडे, नेरइयाणं तओ दंडा पण्णत्ता, तं०-मणदंडे वइदंडे कायदंडे, विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं ।१२६। तिविहा गरहा पं०तं०-मणसा वेगे गरहति वयसा वेगे गरहति कायसा वेगे गरहति, पावाणं कम्माणं अकरणयाए, अथवा गरहा तिविहा पं० तं०-दीहंपेगे अद्धं गरहति रहस्संपेगे अद्धं गरहति कायंपेगे पडिसाहरति पावाणं कम्माणं अकरणयाए, तिविहे पच्चक्खाणे पं० तं०-मणसा वेगे पच्चक्खाति वयसा वेगे पच्चक्खाति कायसा वेगे पच्चक्खाइ, एवं जहा गरहा तहा पच्चखाणेवि दो आलावगा भाणियव्वा ।१२७। ततो रुक्खा पं० तं०-पत्तोवते पुप्फोवते फलोवते १ एवामेव तओ पुरिसजाता पं० तं०-पत्तोवारुक्खसामाणा पुप्फोवारुक्खसामाणा फलोवारुक्खसामाणा २ ततो पुरिसज्जाया पं० तं०-नामपुरिसे ठवणपुरिसे दव्वपुरिसे ३, तओ पुरिसज्जाया पं०, तं०-नाणपुरिसे दंसणपुरिसे चरित्तपुरिसे ४ तओ पुरिसज्जाया पं० तं०-वेदपुरिसे चिंधपुरिसे अभिलावपुरिसे ५, तिविहा पुरिसजाया पं० तं०-उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा जहन्नपुरिसा ६, उत्तमपुरिसा तिविहा पं० तं०-धम्मपुरिसा भोगपुरिसा कम्मपुरिसा, धम्मपुरिसा अरिहंता भोगपुरिसा चक्कवट्टी कम्मपुरिसा वासुदेवा ७, मज्झिमपुरिसा तिविहा पं० तं०-उग्गा भोगा रायन्ना ८, जहन्नपुरिसा तिविहा पं० तं०-दासा भयगा भातिल्लगा ९ । १२८। तिविहा मच्छा पं० तं०-अंडया पोअया संमुच्छिमा १, अंडगा मच्छा तिविहा पं० तं०-इत्थी पुरिसा णपुंसगा २, पोतया मच्छा तिविहा पं० तं०-इत्थी पुरिसा णपुंसगा ३, तिविहा पक्खी पं० तं०-अंडया पोअया संमुच्छिमा १, अंडया पक्खी तिविहा पं० तं०-इत्थी पुरिसा णपुंसगा २, पोतजा पक्खी तिविहा पं० तं०-इत्थी पुरिसा णपुंसगा ३-६, एवमेतेणं अभिलावेणं उरपरिसप्पावि ३-९ भाणियव्वा, भुजपरिसप्पावि ३-१२, भाणियव्वा ९ । १२९। एवं चेव तिविहा इत्थीओ पं० तं०-तिरिक्खजोणित्थीओ (प्र० जोणियाओ) मणुस्सित्थीओ देवित्थीओ १, तिरिक्खजोणीओ इत्थीओ तिविहाओ पं० तं०-जलचरीओ थलचरीओ खहचरीओ २, मणुस्सित्थीओ तिविहाओ पं० तं०-कम्मभूमिआओ अकम्मभूमियाओ अंतरदीविगाओ ३, तिविहा पुरिसा पं० तं०-तिरिक्खजोणीपुरिसा मणुस्सपुरिसा देवपुरिसा १, तिरिक्खजोणिपुरिसा तिविहा पं० तं०-जलचरा थलचरा खेचरा २, मणुस्सपुरिसा तिविहा पं० तं०-कम्मभूमिगा अकम्मभूमिगा अंतरदीवगा ३-६, तिविहा नपुंसगा पं० तं०-णेरतियनपुंसगा तिरिक्खजोणियण० मणुस्स(प्र० जोणिय)नपुंसगा १, तिरिक्खजोणियनपुंसगा तिविहा पं०तं०-जलयरा थलयरा खहयरा २, मणुस्सनपुंसगा तिविधा पं० तं०-कम्मभूमिगा अकम्मभूमिगा अंतरदीवगा ३-९। १३०। तिविहा तिरिक्खजोणिया पं० तं०-इत्थी पुरिसा नपुंसगा। १३१। नेरइयाणं तओ लेसाओ पं० तं०-कण्हलेसा नीललेसा काउलेसा १, असुरकुमाराणं तओ लेसाओ संकिलिट्ठाओ पं०, तं०-कण्हलेसा नीललेसा काउलेसा २, एवं जाव थणियकुमाराणं ११, एवं पुढविकाइयाणं १२ आउवणस्सतिकाइयाणवि १३-१४ तेउकाइयाणं १५ वाउकाइयाणं १६ बेंदियाणं १७ तेंदियाणं १८ चउरिंदिआणवि १९ तओ लेस्सा जहा नेरइयाणं, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं तओ लेसाओ संकिलिट्ठाओ पं० तं०-कण्हलेसा नीललेसा काउलेसा २०, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं तओ लेसाओ असंकिलिट्ठाओ पं० तं०-तेउलेसा पम्हलेसा सुक्कलेसा २१, एवं मणुस्साणवि २२, वाणमंतराणं जहा असुरकुमाराणं २३, वेमाणियाणं तओ लेस्साओ पं० तं०-तेउलेसा पम्हलेसा सुक्कलेसा २४। १३२। तिहिं ठाणेहिं तारारूवे चलिज्जा तं०-विकुव्वमाणे वा परियारेमाणे वा ठाणाओ वा ठाणं संकममाणे तारारूवे चलेज्जा, तिहिं ठाणेहिं देवे विज्जुतारं करेज्जा तं०-विकुव्वमाणे वा परियारेमाणे वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा इड्ढिं जुत्तिं जसं बलं वीरियं पुरिसक्कारपरक्कमं उवदंसेमाणे देवे विज्जुतारं करेज्जा, तिहिं ठाणेहिं देवे थणियसद्दं करेज्जा तं०-विकुव्वमाणे, एवं जहा विज्जुतारं तहेव थणियसद्दंपि। १३३। तिहिं

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ठाणेहिं लोगंधयारे सिया तं०-अरिहंतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं अरिहंतपन्नत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे पुव्वगते वोच्छिज्जमाणे १, तिहिं ठाणेहिं लोगुज्जोते सिया तं०-अरहंतेहिं जायमाणेहिं अरहंतेसु पव्वयमाणेसु अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु २ तिहिं ठाणेहिं देवंधकारे सिया तं०-अरहंतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं अरहंतपन्नत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे पुव्वगते वोच्छिज्जमाणे ३, तिहिं ठाणेहिं देवुज्जोते सिया तं०-अरहंतेहिं जायमाणेहिं अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु ४, तिहिं ठाणेहिं देवसंनिवाए सिया तं०-अरिहंतेहिं जायमाणेहिं अरिहंतेहिं पव्वयमाणेहिं अरिहंताणं नाणुप्पायमहिमासु ५, एवं देवुक्कलिया ६, देवकहकहए ७, तिहिं ठाणेहिं देविंदा माणुसं लोगं हव्वमागच्छंति तं०-अरहंतेहिं जायमाणेहिं अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु ८, एवं सामाणिया ९, तायत्तीसगा १० लोगपाला देवा ११ अग्गमहिसीओ देवीओ १२ परिसोववन्नगा देवा १३ अणियाहिवई देवा १४ आयरक्खा देवा १५ माणुसं लोगं हव्वमागच्छंति। तिहिं ठाणेहिं देवा अब्भुट्ठिज्जा, तं०-अरहंतेहिं जायमाणेहिं जाव तं चेव १, एवमासणाइं चलेज्जा २, सीहणातं करेज्जा ३, चेलुक्खेवं करेज्जा ४, तिहिं ठाणेहिं देवाणं चेइयरुक्खा चलेज्जा तं०-अरहंतेहिं० तं चेव ५, तिहिं ठाणेहिं लोगंतिया देवा माणुसं लोगं हव्वमागच्छिज्जा, तं०-अरहंतेहिं जायमाणेहिं अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु।१३४। तिण्हं दुप्पडियारं समणाउसो! तं०-अम्मापिउणो १ भट्टिस्स २ धम्मायरियस्स ३, संपातोऽवि य णं केइ पुरिसे अम्मापियरं सयपागसहस्सपागेहिं तिल्लेहिं अब्भंगेत्ता सुरभिणा गंधट्टएणं उव्वट्टित्ता तिहिं उदगेहिं मज्जावित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेत्ता मणुन्नं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाउलं भोयणं भोयावेत्ता जावज्जीवं पिट्ठिवडेंसियाए परिवहेज्जा, तेणावि तस्स अम्मापिउस्स दुप्पडियारं भवइ, अहे णं से तं अम्मापियरं केवलिपन्नत्ते धम्मे आघवइत्ता पन्नवित्ता परूवित्ता ठावित्ता भवति, तेणामेव तस्स अम्मापिउस्स सुप्पडितारं भवति समणाउसो! १, केइ महच्चे दरिद्दं समुक्कसेज्जा, तए णं से दरिद्दे समुक्किट्ठे समाणे पच्छा पुरं च णं विउलभोगसमितिसमन्नागते यावि विहरेज्जा, तए णं से महच्चे अन्नया कयाइ दरिद्दीहूए समाणे तस्स दरिद्दस्स अंतिए हव्वमागच्छेज्जा, तए णं से दरिद्दे तस्स भट्टिस्स सव्वस्समवि दलयमाणे तेणावि तस्स दुप्पडियारं भवति, अहे णं से तं भट्टिं केवलिपन्नत्ते धम्मे आघवइत्ता पन्नवइत्ता परूवइत्ता ठावइत्ता भवति तेणामेव तस्स भट्टिस्स सुप्पडियारं भवति २, केति तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आयरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने, तए णं से देवे तं धम्मायरियं दुब्भिक्खातो वा देसातो सुभिक्खं देसं साहरेज्जा, कंताराओ वा णिक्कंतारं करेज्जा, दीहकालिएणं वा रोगातंकेणं अभिभूतं समाणं विमोएज्जा, तेणावि तस्स धम्मायरियस्स दुप्पडियारं भवति, अधे णं से तं धम्मायरियं केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भट्ठं समाणं भुज्जोवि केवलिपन्नत्ते धम्मे आघवतित्ता जाव ठावतित्ता भवति तेणामेव तस्स धम्मायरियस्स सुप्पडियारं भवति ३।१३५। तिहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं वीईवएज्जा, तं०-अणिदाणयाए दिट्ठिसंपन्नयाए जोगवाहियाए।१३६। तिविहा ओसप्पिणी पं० तं०-उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना १ एवं छप्पि समाओ भाणियव्वाओ जाव दूसमदूसमा ७, तिविहा उस्सप्पिणी पं० तं०-उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना ८, एवं छप्पि समाओ भाणियव्वाओ जाव सुसमसुसमा १४।१३७। तिहिं ठाणेहिं अच्छिन्ने पोग्गले चलेज्जा तं०-आहारिज्जमाणे वा पोग्गले चलेज्जा, विउव्वमाणे० ठाणाओ वा ठाणं संकामिज्जमाणे०, तिविहे उवधी पं० तं०-कम्मोवही सरीरोवही बाहिरभंडमत्तोवही, एवं असुरकुमाराणं भाणियव्वं, एवं एगिंदियनेरइयवज्जं जाव वेमाणियाणं १, अहवा तिविहे उवधी पं० तं०-सच्चित्ते अचित्ते मीसए, एवं णेरइआणं, निरंतरं जाव वेमाणियाणं २, तिविहे परिग्गहे पं०तं०-कम्मपरिग्गहे सरीरपरिग्गहे बाहिरभंडमत्तपरिग्गहे, एवं असुरकुमाराणं, एवं एगिंदियनेरतियवज्जं जाव वेमाणियाणं ३, अहवा तिविहे परिग्गहे पं० तं०-सचित्ते अचित्ते मीसए, एवं नेरतियाणं, निरंतरं जाव वेमाणियाणं ४।१३८। तिविहे पणिहाणे पं० तं०-मणपणिहाणे वयपणिहाणे कायपणिहाणे, एवं पंचिंदियाणं जाव वेमाणियाणं, तिविहे सुप्पणिहाणे पं० तं०-मणसुप्पणिहाणे वयसुप्पणिहाणे कायसुप्पणिहाणे, संजयमणुस्साणं तिविहे सुप्पणिहाणे पन्नत्ते तं०-मणसुप्पणिहाणे वइसुप्पणिहाणे कायसुप्पणिहाणे, तिविहे दुप्पणिहाणे पं० तं०-मणदुप्पणिहाणे वइदुप्पणिहाणे कायदुप्पणिहाणे, एवं पंचिंदियाणं जाव वेमाणियाणं।१३९। तिविहा जोणी पं० तं०-सीता उसिणा सीओसिणा, एवं एगिंदियाणं विगलिंदियाणं तेउकाइयवज्जाणं संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं संमुच्छिममणुस्साण य, तिविहा जोणी पं० तं०-सचित्ता अचित्ता मीसिया, एवं एगिंदियाणं विगलिंदियाणं संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं संमुच्छिममणुस्साण य, तिविधा जोणी पं० तं०-संवुडा वियडा संवुडवियडा, तिविहा जोणी पं० तं०-कुम्मुन्नया संखावत्ता वंसीपत्तिया, कुम्मुन्नया णं जोणी उत्तमपुरिसमाऊणं, कुम्मुन्नयाते णं जोणीए तिविहा उत्तमपुरिसा गब्भं वक्कमंति तं०-अरहंता चक्कवट्टी बलदेववासुदेवा, संखावत्ता जोणी इत्थीरयणस्स, संखावत्ताए णं जोणीए बहवे जीवा य पोग्गला य वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति नो चेव णं निप्फज्जंति, वंसीपत्तिता णं जोणी पिहज्जणस्स, वंसीपत्तिताए णं जोणीए बहवे पिहज्जणे गब्भं वक्कमंति।१४०। तिविहा तणवणस्सइकाइया पं० तं०-संखेज्जजीविता असंखेज्जजीविता अणंतजीविया।१४१। जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे तओ तित्था पं० (२१)

Jain Education International For Private & Personal Use Only मुनि दीपरत्नसागर www.jainelibrary.org

तं०-मागहे वरदामे पभासे, एवं एरवएवि, जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे एगमेगे चक्कवट्टिविजये ततो तित्था पं० तं०-मागहे वरदामे पभासे ३, एवं धायइसंडे दीवे पुरच्छिमद्धेवि ६, पच्चत्थिमद्धेवि ९, पुक्खरवरदीवद्धपुरच्छिमद्धेवि १२ पच्चत्थिमद्धेवि १५। १४२। जंबुद्दीवे २ भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीते सुसमाए समाए तिन्नि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो हुत्था १, एवं ओसप्पिणीए नवरं पन्नत्ते २, आगमिस्साते उस्सप्पिणीए भविस्सति ३, एवं धायइसंडे पुरच्छिमद्धे पच्चत्थिमद्धेवि ९, एवं पुक्खरवरदीवद्धपुरच्छिमद्धे पच्चत्थिमद्धेवि कालो भाणियव्वो १५। जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताते उस्सप्पिणीते सुसमसुसमाते समाए मणुया तिण्णि गाउयाइं उद्धंउच्चत्तेणं तिन्नि पलिओवमाइं परमाउं पालइत्था १, एवं इमीसे ओसप्पिणीते २ आगमिस्साए उस्सप्पिणीए ३, जंबुद्दीवे दीवे देवकुरुउत्तरकुरासु मणुया तिण्णि गाउआइं उद्धंउच्चत्तेणं पं०, तिन्नि पलिओवमाइं परमाउं पालयंति ४, एवं जाव पुक्खरवरदीवद्धपच्चत्थिमद्धे २०। जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगमेगाते ओसप्पिणिउस्सप्पिणीए तओ वंसाओ उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा तं०-अरहंतवंसे चक्कवट्टिवंसे दसारवंसे २१, एवं जाव पुक्खरवरदीवद्धपच्चत्थिमद्धे २५। जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगमेगाए ओसप्पिणीउस्सप्पिणीए तओ उत्तमपुरिसा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा तं०-अरहंता चक्कवट्टी बलदेववासुदेवा २६ एवं जाव पुक्खरवरदीवद्धपच्चत्थिमद्धे ३०, तओ अहाउयं पालयंति तं०-अरहंता चक्कवट्टी बलदेववासुदेवा ३१, तओ मज्झिममाउयं पालयंति तं०-अरहंता चक्कवट्टी बलदेववासुदेवा ३२। १४३। बायरतेउकाइयाणं उक्कोसेणं तिन्नि राइंदियाइं ठिती पन्नत्ता, बायरवाउकाइयाणं उक्कोसेणं तिन्नि वाससहस्साइं ठिती पं०। १४४। अह भंते! सालीणं वीहीणं गोधूमाणं जवाणं जवजवाणं एतेसिं णं धन्नाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं मंचाउत्ताणं मालाउत्ताणं ओलित्ताणं लित्ताणं लंछियाणं मुद्दियाणं पिहिताणं केवइयं कालं जोणी संचिट्ठति?, (× गोयमा!) जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि संवच्छराइं, तेण परं जोणी पमिलायति, तेण परं जोणी पविद्धंसति, तेण परं जोणी विद्धंसति, तेण परं बीए अबीए भवति, तेण परं जोणीवोच्छेदो पं०। १४५। दोच्चाए णं सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइयाणं उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिती पं० १, तच्चाए णं वालुयप्पभाए पुढवीए जहन्नेणं णेरइयाणं तिन्नि सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता २। १४६। पंचमाए णं धूमप्पभाए पुढवीए तिन्नि निरयावाससयसहस्सा पं०, तिसु णं पुढवीसु णेरइयाणं उसिणवेयणा पन्नत्ता तं०-पढमाए दोच्चाए तच्चाए, तिसुणं पुढवीसु णेरइया उसिणवेयणं पच्चणुभवमाणा विहरंति-पढमाए दोच्चाए तच्चाए। १४७। ततो लोगे समा सपक्खिं सपडिदिसिं पं० तं०-अप्पइट्ठाणे णरए जबुंद्दीवे दीवे सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे, तओ लोगे समा सपक्खिं सपडिदिसिं पं० तं०-सीमंतए णं णरए समयक्खेत्ते ईसीपब्भारा पुढवी। १४८। तओ समुद्दा पगईए उदगरसेणं पं० तं०-कालोदे पुक्खरोदे सयंभुरमणे, तओ समुद्दा बहुमच्छकच्छभाइण्णा पं० तं०-लवणे कालोदे सयंभुरमणे। १४९। तओ लोगे णिस्सीला णिव्वता णिग्गुणा निम्मेरा णिप्पच्चक्खाणपोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए अप्पतिट्ठाणे णरए णेरइयत्ताए उववज्जंति, तं०-रायाणो मंडलीया जे य महारंभा कोडुंबी, तओ लोए सुसीला सुव्वया सग्गुणा समेरा सपच्चक्खाणपोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तं०-रायाणो परिचत्तकामभोगा सेणावती पसत्थारो। १५०। बंभलोगलंतएसु णं कप्पेसु विमाणा तिवण्णा पं० तं०-किण्हा नीला लोहिया, आणयपाणयारणच्चुतेसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जसरीरा उक्कोसेणं तिण्णि रयणीओ उद्धंउच्चत्तेणं पण्णत्ता। १५१। तओ पन्नत्तीओ कालेणं अहिज्जंति, तं०-चंदपन्नत्ती सूरपन्नत्ती दीवसागरपन्नत्ती। १५२। अ० ३ उ० १॥ तिविहे लोगे पं० तं०-णामलोगे ठवणलोगे दव्वलोगे, तिविधे लोगे पं० तं०-णाणलोगे दंसणलोगे चरित्तलोगे, तिविहे लोगे पं० तं०-उड्ढलोगे अहोलोगे तिरियलोगे। १५३। चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो ततो परिसातो पं० तं०-समिता चंडा जाया, अब्भितरिता समिता मज्झिमता चंडा बाहिरता जाया, चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सामाणिताणं देवाणं ततो परिसातो पं० तं०-समिता जहेव चमरस्स, एवं तायत्तीसगाणवि, लोगपालाणं तुंबा तुडिया पव्वा, एवं अग्गमहिसीणवि, बलिस्सवि एवं चेव जाव अग्गमहिसीणं, धरणस्स य सामाणियतायत्तीसगाणं च समिता चंडा जाता, लोगपालाणं अग्गमहिसीणं ईसा तुडिया दढरहा, जहा धरणस्स तहा सेसाणं भवणवासीणं, कालस्स णं पिसाइंदस्स पिसायरण्णो तओ परिसाओ पं० तं०-ईसा तुडिया दढरहा, एवं सामाणियअग्गमहिसीणं, एवं जाव गीयरतिगीयजसाणं, चंदस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरन्नो ततो परिसातो पं० तं०-तुंबा तुडिया पव्वा, एवं सामाणियअग्गमहिसीणं, एवं सूरस्सवि, सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो ततो परिसाओ पं० तं०-समिता चंडा जाया, एवं जहा चमरस्स जाव अग्गमहिसीणं, एवं जाव अच्चुतस्स लोगपालाणं। १५४। ततो जामा पं० तं०-पढमे जामे मज्झिमे जामे पच्छिमे जामे, तिहिं जामेहिं आता केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणताते-पढमे जामे मज्झिमे जामे पच्छिमे जामे, एवं जाव केवलनाणं उपाडेज्जा पढमे जामे मज्झिमे जामे पच्छिमे जामे, ततो वया पं० तं०-पढमे वते मज्झिमे वते पच्छिमे वए, तिहिं वतेहिं आया केवलिपन्नत्तं

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

धम्मं लभेज्ज सवणयाए, तं०-पढमे वते मज्झिमे वते पच्छिमे वते, एसो चेव गमो णेयव्वो जाव केवलनाणंति । १५५। तिविधा बोधी पं० तं०-णाणबोधी दंसणबोधी चरित्तबोधी १ तिविहा बुद्धा पं० तं०-णाणबुद्धा दंसणबुद्धा चरित्तबुद्धा २ एवं मोहे ३ मूढा ४ । १५६। तिविहा पव्वज्जा पं० तं०-इहलोगपडिबद्धा परलोकपडिबद्धा दुहतोपडिबद्धा, तिविहा पव्वज्जा पं० तं०-पुरतो पडिबद्धा मग्गतो पडिबद्धा दुहओ पडिबद्धा, तिविहा पव्वज्जा पं० तं०-तुयावइत्ता पुयावइत्ता बुआवइत्ता, तिविहा पव्वज्जा पं० तं०-उवातपव्वज्जा अक्खातपव्वज्जा संगारपव्वज्जा । १५७। तओ णियंठा णोसण्णोवउत्ता पं० तं०-पुलाए णियंठे सिणाए १ ततो णियंठा सन्नणोसण्णोवउत्ता पं० तं०-बउसे पडिसेवणाकुसीले कसायकुसीले २ । १५८। तओ सेहभूमीओ पं० तं०-उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना, उक्कोसा छम्मासा, मज्झिमा चउमासा, जहन्ना सत्तराइंदिया, ततो थेरभूमीओ पं० तं०-जाइथेरे सुत्तथेरे परियायथेरे, सट्ठिवासजाए समणे णिग्गंथे जातिथेरे, ठाणंग(प्र० ठाण)समवायधरे णं समणे णिग्गंथे सुयथेरे, वीसवासपरियाए णं समणे णिग्गंथे परियायथेरे । १५९। ततो पुरिसजाया पं० तं०-सुमणे दुम्मणे णोसुमणेणोदुम्मणे १ ततो पुरिसजाया पं० तं०-गंता णामेगे सुमणे भवति, गंता णामेगे दुम्मणे भवति, गंता णामेगे णोसुमणेणोदुम्मणे भवति २, तओ पुरिसजाया पं० तं०-जामीतेगे सुमणे भवति, जामीतेगे दुम्मणे भवति, जामीतेगे णोसुमणेणोदुम्मणे भवति ३, एवं जाइस्सामीतेगे सुमणे भवति ३,४, ततो पुरिसजाया पं० तं०-अगंता णामेगे सुमणे भवति ३,५, ततो पुरिसजाता पं० तं०-ण जामि एगे सुमणे भवति ३,६, ततो पुरिसजाया पं० तं०-ण जाइस्सामि एगे सुमणे भवति ३,७, एवं आगंता णामेगे सुमणे भवति ३,८, एमितेगे सु० ३ एस्सामीति एगे सुमणे भवति ३ एवं एएणं अभिलावेणं-'गंता य अगंता(य) १ आगंता खलु तधा अणागंता २। चिट्ठित्तमचिट्ठित्ता ३, णिसितित्ता चेव नो चेव ४॥८॥ हंता य अहंता य ५ छिंदित्ता खलु तहा अछिंदित्ता ६। बूतित्ता अबूतित्ता ७ भासित्ता चेव णो चेव ८॥९॥ दच्चा य अदच्चा य ९ भुंजित्ता खलु तधा अभुंजित्ता १०। लंभित्ता अलंभित्ता ११ पिइत्ता चेव नो चेव १२॥१०॥ सुतित्ता असुतित्ता १३ जुज्झित्ता खलु तहा अजुज्झित्ता १४। जतित्ता अजयित्ता य १५ पराजिणित्ता य नो चेव १६ ॥११॥ सद्दा १७ रूवा १८ गंधा १९ रसा य २० फासा २१ (२१×६=१२६+१=१२७) तहेव ठाणा य। निस्सीलस्स गरहिता पसत्थ पुण सीलवंतस्स ॥ १२ ॥ एवमिक्केके तिन्नि उ तिन्नि उ आलावगा भाणियव्वा, सद्दं सुणेत्ता णामेगे सुमणे भवति ३ एवं सुणेमीति ३ सुणिस्सामीति ३, एवं असुणेत्ता णामेगे सुमणे भवति ३ न सुणेमीति ३ ण सुणिस्सामीति ३, एवं रूवाइं गंधाइं रसाइं फासाइं, एक्केके छ छ आलावगा भाणियव्वा १२७ आलावगा भवंति । १६०। तओ ठाणा णिस्सीलस्स निव्वयस्स णिग्गुणस्स णिम्मेरस्स णिप्पच्चक्खाणपोसहोववासस्स गरहिता भवंति तं०-अस्सिं लोगे गरहिते भवइ उववाते गरहिए भवइ आयाती गरहिता भवति, ततो ठाणा सुसीलस्स सुव्वयस्स सगुणस्स सुमेरस्स सपच्चक्खाणपोसहोववासस्स पसत्था भवंति, तं०- अस्सिं लोगे पसत्थे भवति उववाए पसत्थे भवति आजाती पसत्था भवति । १६१। तिविधा संसारसमावन्नगा जीवा पं० तं०-इत्थी पुरिसा नपुंसगा, तिविहा सव्वजीवा पं० तं०- सम्मद्दिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी य, अहवा तिविहा सव्वजीवा पं० तं०-पज्जत्तगा अपज्जत्तगा णोपज्जत्तगाणोऽपज्जत्तगा, एवं-सम्मद्दिट्ठि परित्ता पज्जत्तग सुहुम सन्नि भविया य।१६२। तिविधा लोगठिती पं० तं०-आगासपइट्ठिए वाते वातपतिट्ठिए उदही उदहिपतिट्ठिया पुढवी, तओ दिसाओ पं० तं०-उद्धा अहा तिरिया १, तिहिं दिसाहिं जीवाणं गती पवत्तति, उड्ढाए अहाते तिरियाते २, एवं आगती ३ वक्कंती ४ आहारे ५ वुड्ढी ६ णिवुड्ढी ७ गतिपरियाते ८ समुग्घाते ९ कालसंजोगे १० दंसणाभिगमे ११, णाणाभिगमे १२, जीवाभिगमे १३, तिहिं दिसाहिं जीवाणं अजीवाभिगमे पं०तं०-उड्ढाते अहाते तिरियाते १४, एवं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं, एवं मणुस्साणवि।१६३। तिविहा तसा पं०तं०-तेउकाइया वाउकाइया उराला तसा पाणा, तिविधा थावरा पं०तं०-पुढविकाइया आउकाइया वणस्सइकाइया ।१६४। ततो अच्छेज्जा पं०तं०-समये पदेसे परमाणू १, एवमभेज्जा २ अडज्झा ३ अगिज्झा ४ अणड्ढा ५ अमज्झा ६ अपएसा ७, ततो अविभातिमा पं० तं०-समते पएसे परमाणू ८ । १६५। अज्जोति समणे भगवं महावीरे गोतमादी समणे णिग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी-किंभया पाणा? समणाउसो!, गोयमाती समणा णिग्गंथा समणं भगवं महावीरं उवसंकमंति उवसंकमित्ता वंदंति नमंसंति वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-णो खलु वयं देवाणुप्पिया! एयमट्ठं जाणामो वा पासामो वा, तं जदि णं देवाणुप्पिया एयमट्ठं णो गिलायंति परिकहित्तते तमिच्छामो णं देवाणुप्पियाणं अंतिए एयमट्ठं जाणित्तए, अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे गोयमाती समणे निग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी-दुक्खभया पाणा समणाउसो! १, से णं भंते! दुक्खे केण कडे?, जीवेणं कडे पमादेण २, से णं भंते! दुक्खे कहं वेइज्जति?, अप्पमाएणं ३ । १६६। अन्नउत्थिता णं भंते! एवं आतिक्खंति एवं भासंति एवं पन्नवेंति एवं परूविंति-कहन्नं समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जति?, तत्थ जा सा कडा कज्जइ नो तं पुच्छंति, तत्थ जा सा कडा नो कज्जति नो तं पुच्छति, तत्थ जा सा अकडा नो कज्जति नो तं पुच्छंति, तत्थ जा सा अकडा कज्जति तं

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुच्छंति, से एवं वत्तव्वं सिता ?-अकिच्चं दुक्खं अफुसं दुक्खं अकज्जमाणकडं दुक्खं अकट्टु अकट्टु पाणा भूया जीवा सत्ता वेयणं वेदेंतित्ति वत्तव्वं, जे ते एवमाहंसु मिच्छा ते एवमाहंसु, अहं पुण एवमाइक्खामि एवं भासामि एवं पन्नवेमि एवं परूवेमि-किच्चं दुक्खं फुस्सं दुक्खं कज्जमाणकडं दुक्खं कट्टु २ पाणा भूया जीवा सत्ता वेयणं वेयंतित्ति वत्तव्वं सिया । १६७। अ० ३ उ० २ ॥ तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु णो आलोतेज्जा णो पडिक्कमेज्जा णो णिंदिज्जा णो गरहिज्जा णो विउट्टेज्जा णो विसोहेज्जा णो अकरणाते अब्भुट्टेज्जा णो अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जेज्जा, तं०-अकरिंसु वाऽहं करेमि वाऽहं करिस्सामि वाऽहं १, तिहिं ठाणेहिं माथी मायं कट्टु णो आलोतेज्जा णो पडिक्कमिज्जा जाव णो पडिवज्जेज्जा-अकित्ती वा मे सिता अवण्णे वा मे सिया अविणते वा मे सिता २, तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु णो आलोएज्जा जाव नो पडिवज्जेज्जा तं०-कित्ती वा मे परिहातिस्सति जसो वा मे परिहातिस्सति पूयासक्कारे वा मे परिहातिस्सति ३, तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा पडिक्कमेज्जा जाव पडिवज्जेज्जा तं०-मायिस्स णं अस्सिं लोगे गरहिते भवति उववाए गरहिए भवति आयाती गरहिया भवति ४, तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा तं०-अमायिस्स णं अस्सिं लोगे पसत्थे भवति उववाते पसत्थे भवइ आयाई पसत्था भवति ५, तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा, तं०-णाणट्ठताते दंसणट्ठयाते चरित्तट्ठयाते ६ । १६८। ततो पुरिसजाया पं० तं०-सुत्तधरे अत्थधरे तदुभयधरे । १६९। कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा ततो वत्थाइं धारित्तए वा परिहरित्तते वा, तं०-जंगिते भंगिते खोमिते १, कप्पइ णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा ततो पायाइं धारित्तते वा परिहरित्तते वा, तं०-लाउयपादे वा दारुपादे वा मट्टियापादे वा २।१७०। तिहिं ठाणेहिं वत्थं धरेज्जा, तं०-हिरिपत्तितं दुगुंछापत्तियं परीसहवत्तियं।१७१। तओ आयरक्खा पं० तं०-धम्मियाते पडिचोयणाते पडिचोएत्ता भवति तुसिणीतो वा सिता उट्ठित्ता वा आताते एगंतमंतमवक्कमेज्जा, णिग्गंथस्स णं गिलायमाणस्स कप्पंति ततो वियडदत्तीओ पडिग्गाहित्तते, तं०-उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना । १७२। तिहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे साहम्मियं संभोगियं विसंभोगियं करेमाणे णातिक्कमति, तं०-सतं वा दट्टुं, सड्ढस्स वा निसम्म, तच्चं मोसं आउट्टति चउत्थं नाउट्टति । १७३ । तिविधा अणुन्ना पं० तं०-आयरियत्ताए उवज्झायत्ताए गणित्ताते, तिविधा समणुन्ना पं० तं०-आयरियत्ताते उवज्झायत्ताते गणित्ताते, एवं उवसंपया, एवं विजहणा ।१७४। तिविहे वयणे पं० तं०-तव्वयणे तदन्नवयणे णोवयणे, तिविहे अवयणे पं० तं०-णोतव्वयणे अणोतदन्नवयणे अवयणे, तिविहे मणे पं० तं०-तम्मणे तयन्नमणे णोअमणे, तिविहे अमणे पं० तं०-णोतंमणे णोतयन्नमणे अमणे । १७५ । तिहिं ठाणेहिं अप्पवुट्ठीकाते सिता, तं०-तस्सिं च णं देसंसि वा पदेसंसि वा णो बहवे उदगजोणिया जीवा य पोग्गला य उदगत्ताते वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति, देवा णागा जक्खा भूता णो सम्ममाराहिता भवंति तत्थ समुट्ठियं उदगपोग्गलं परिणतं वासितुकामं अण्णं देसं साहरंति, अब्भवद्दलगं च णं समुट्ठितं परिणतं वासितुकामं वाउकाए विधुणति, इच्चेतेहिं ठाणेहिं अप्पवुट्ठिगाते सिता १, तिहिं ठाणेहिं महावुट्ठीकाते सिता, तंजहा-तंसि च णं देसंसि वा पतेसंसि वा बहवे उदगजोणिता जीवा य पोग्गला य उदगत्ताते वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति, देवा जक्खा नागा भूता सम्ममाराहिता भवंति अन्नत्थ समुट्ठितं उदगपोग्गलं परिणयं वासिउकामं तं देसं साहरंति, अब्भवद्दलगं च णं समुट्ठितं परिणयं वासितुकामं णो वाउआतो विधुणति, इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं महावुट्ठिकाए सिआ २ । १७६। तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्ज माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छित्तते, णो चेव णं संचातेति हव्वमागच्छित्तए, तं०-अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते गिद्धे गढिते अज्झोववन्ने से णं माणुस्सते कामभोगे णो आढाति णो परियाणाति णो अट्ठं बंधति णो नियाणं पगरेति णो ठिइपकप्पं पकरेति, अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते गिद्धे गढिते अज्झोववन्ने तस्स णं माणुस्सए पेम्मे वोच्छिण्णे दिव्वे संकंते भवति, अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते जाव अज्झोववन्ने तस्स णं एवं भवति-इयण्हिं न गच्छं मुहुत्तं गच्छं, तेणं कालेणमप्पाउया मणुस्सा कालधम्मुणा संजुत्ता भवंति, इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचातेति हव्वमागच्छित्तते ३ तिहिं ठाणेहिं देवे अहुणोववन्ने देवलोगेसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, संचातेइ हव्वमागच्छित्तते-अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिते अगिद्धे अगढिते अणज्झोववन्ने तस्स णमेवं भवति-अत्थि णं मम माणुस्सते भवे आयरितेति वा उवज्झातेति वा पवत्तीति वा थेरेति वा गणीति वा गणधरेति वा गणावच्छेदेति वा जेसिं पभावेणं मते इमा एतारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुती दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागते तं गच्छामि णं ते भगवंते वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि, अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिए जाव अणज्झोववन्ने तस्स णं एवं भवति-एस णं माणुस्सते भवे णाणीति वा तवस्सीति वा अतिदुक्करदुक्करकारगे तं गच्छामि णं भगवंतं वंदामि णमंसामि जाव पज्जुवासामि, अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु जाव अणज्झोववन्ने तस्स णमेवं भवति-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्थि णं मम माणुस्सते भवे माताति वा जाव सुण्हाति वा तं गच्छामि णं तेसिमंतियं पाउब्भवामि पासंतु ता मे इमं एतारूवं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुतिं दिव्वं देवाणुभावं लद्धं पत्तं अभिसमन्नागयं, इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तते संचातेति हव्वमागच्छित्तते ४। १७७। ततो ठाणाइं देवे पीहेज्जा तं०-माणुस्सं (प्र० सगं) भवं १ आरिते खेत्ते जम्मं २ सुकुलपच्चायातिं ३, ५, तिहिं ठाणेहिं देवे परितप्पेज्जा, तं०-अहो णं मते संते बले संते वीरिए संते पुरिसक्कारपरक्कमे खेमंसि सुभिक्खंसि आयरियउवज्झातेहिं विज्जमाणेहिं कल्लसरीरेणं णो बहुते सुते अहीते १ अहो णं मते इहलोगपडिबद्धेणं परलोगपरंमुहेणं विसयतिसितेणं णो दीहे सामन्नपरिताते अणुपालिते २ अहो णं मते इड्ढिरससायगरुएणं भोगामि(स पा०)सगिद्धेणं णो विसुद्धे चरित्ते फासिते ३, इच्चेतेहिं० ६। १७८। तिहिं ठाणेहिं देवे चतिस्सामित्ति जाणइ, तंजहा-विमाणाभरणाइं णिप्पभाइं पासित्ता १ कप्परुक्खगं मिलायमाणं पासित्ता २ अप्पणो तेयलेस्सं परिहायमाणिं जाणित्ता ३ इच्चेएहिं० ७, तिहिं ठाणेहिं देवे उव्वेगमागच्छेज्जा, तं०-अहो णं मए इमातो एतारूवातो दिव्वातो देविड्ढीओ दिव्वाओ देवजुतीतो दिव्वाओ देवाणुभावाओ पत्तातो लद्धातो अभिसमण्णागततातो चतियव्वं भविस्सति १ अहो णं मते माउओयं पिउसुक्कं तं तदुभयसंसट्ठं तप्पढमयाते (×आहारो) आहारेयव्वो भविस्सति २ अहो णं मते कलमलजंबालाते असुतीते उव्वेयणिताते भीमाते गब्भवसहीते वसियव्वं भविस्सइ ३ इच्चेएहिं तिहिं० ८। १७९। तिसंठिया विमाणा पं० तं०-वट्टा तंसा चउरंसा, तत्थ णं जे ते वट्टा विमाणा ते णं पुक्खरकन्नियासंठाणसंठिता सव्वओ समंता पागारपरिक्खित्ता एगदुवारा पन्नत्ता, तत्थ णं जे ते तंसा विमाणा ते णं सिंघाडगसंठाणसंठिता दुहतो पागारपरिक्खित्ता एगतो वेतितापरिक्खित्ता तिदुवारा पन्नत्ता, तत्थ णं जे ते चउरंसविमाणा ते णं अक्खाडगसंठाणसंठिता सव्वतो समंता वेतितापरिक्खित्ता चउदुवारा पं०, तिपतिट्ठिया विमाणा पं० तं०-घणोदधिपतिट्ठिता घणवातपइट्ठिया ओवासंतरपइट्ठिता, तिविधा विमाणा पं०तं०-अवट्ठिया वेउव्विता परिजाणिता। १८०। तिविधा नेरइया पं० तं०-सम्मादिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी, एवं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं १६। ततो दुग्गतीतो पं० तं०-णेरइयदुग्गती तिरिक्खजोणीयदुग्गती मणुयदुग्गती १, ततो सुगतीतो पं० तं०-सिद्धिसोगती देवसोगती मणुस्ससोगती २, ततो दुग्गता पं० तं०-णेरतितदुग्गता तिरिक्खजोणितदुग्गया मणुस्सदुग्गता ३, ततो सुगता पं० तं०-सिद्धिसोगता देवसोगता मणुस्ससुग्गता ४। १८१। चउत्थभत्तितस्स णं भिक्खुस्स कप्पंति तओ पाणगाइं पडिगाहित्तए, तं०-उस्सेतिमे संसेतिमे चाउलधोवणे १, छट्ठभत्तितस्स णं भिक्खुस्स कप्पंति तओ पाणगाइं पडिगाहित्तए तं०-तिलोदए तुसोदए जवोदए २, अट्ठमभत्तियस्स णं भिक्खुस्स कप्पंति ततो पाणगाइं पडिगाहित्तए, तं०-आयामते सोवीरते सुद्धवियडे ३, तिविहे उवहडे पं० तं०-फलिओवहडे सुद्धोवहडे संसट्ठोवहडे ४, तिविहे उग्गहिते पं० तं०-जं च ओगिण्हति जं च साहरति जं च आसगंसि पक्खिवति ५, तिविधा ओमोयरिया पं० तं०-उवगरणोमोदरिता भत्तपाणोमोदरिता भावोमोदरिता ६, उवगरणोमोदरिता तिविहा पं० तं०-एगे वत्थे एगे पाते चियत्तोवहिसातिज्जणता ७, ततो ठाणा णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा अहियाते असुभाते अक्खमाते अणिस्सेयसाए अणाणुगामियत्ताए भवंति, तं०-कूअणता कक्करणता अवज्झाणता ८, ततो ठाणा णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा हिताते सुहाते खमाते णिस्सेयसाते आणुगामिअत्ताते भवंति, तं०-अकूअणता अकक्करणता अणवज्झाणया ९, ततो सल्ला पं० तं०-मायासल्ले णियाणसल्ले मिच्छादंसणसल्ले १०, तिहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे संखित्तविउलतेउलेस्से भवति, तं०-आयावणताते १ खंतिखमाते २ अपाणगेणं तवोकम्मेणं ३, ११। तिमासितं णं भिक्खुपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स कप्पंति ततो दत्तीओ भोअणस्स पडिगाहेत्तए ततो पाणगस्स १२, एगरातियं भिक्खुपडिमं सम्मं अणणुपालेमाणस्स अणगारस्स इमे ततो ठाणा अहिताते असुभाते अखमाते अणिस्सेयसाते अणाणुगामित्ताते भवंति, तं०-उम्मायं वा लभिज्जा १ दीहकालियं वा रोगायंकं पाउणेज्जा २ केवलिपन्नत्तातो वा धम्मातो भंसेज्जा ३, १३, एगरातियं भिक्खुपडिमं सम्मं अणुपालेमाणस्स अणगारस्स ततो ठाणा हिताते सुभाते खमाते णिस्सेसाते आणुगामितत्ताए भवंति, तं०-ओहिणाणे वा से समुप्पज्जेज्जा १ मणपज्जवनाणे वा से समुप्पज्जेज्जा २ केवलणाणे वा से समुप्पज्जेज्जा ३, १४। १८२। जंबुद्दीवे २ ततो कम्मभूमिओ पं० तं०-भरहे एरवते महाविदेहे, एवं धायइसंडे दीवे पुरच्छिमद्धे जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे ५। १८३। तिविहे दंसणे पं० तं०-सम्मद्दंसणे मिच्छादंसणे सम्मामिच्छादंसणे १, तिविधा रुती पं० तं०-सम्मरुती मिच्छरुती सम्मामिच्छरुई २, तिविधे पओगे पं० तं०-सम्मपओगे मिच्छपओगे सम्मामिच्छपओगे ३। १८४। तिविहे ववसाए पं० तं०-धम्मिते ववसाते अधम्मिए ववसाते धम्मियाधम्मिए ववसाते ४, अथवा तिविधे ववसाते पं० तं०-पच्चक्खे पच्चतिते आणुगामिए ५, अहवा तिविधे ववसाते पं० तं०-इहलोइए परलोइए इहलोगितपरलोगिते ६, इहलोगिते ववसाते तिविहे पं० तं०-लोगिते वेतिते सामतिते ७, लोगिते ववसाते तिविधे पं० तं०-अत्थे धम्मे कामे ८, वेतिगे ववसाते तिविधे पं० तं०-रिउव्वेदे जउव्वेदे सामवेदे ९, सामइते ववसाते तिविधे पं० तं०-णाणे दंसणे चरित्ते १०, तिविधा अत्थजोणी पं० तं०-सामे दंडे भेदे ११। १८५। तिविहा पोग्गला पं० तं०-पओगपरिणता मीसापरिणता वीससापरिणता, तिपतिट्ठिया णरगा पं० तं० (२२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुढवीपतिट्ठिता आगासपतिट्ठिता आयपइट्ठिआ, णेगमसंगहववहाराणं पुढवीपइट्ठिया उज्जुसुतस्स आगासपतिट्ठिया तिण्हं सद्दणताणं आयपतिट्ठिया।१८६। तिविधे मिच्छत्ते पं० तं०- अकिरिता अविणते अन्नाणे १, अकिरिया तिविधा पं० तं०-पओगकिरिया समुदाणकिरिया अन्नाणकिरिया २, पओगकिरिया तिविधा पं० तं०-मणपओगकिरिया वइपओगकिरिया कायपओगकिरिया ३, समुदाणकिरिया तिविधा पं० तं०-अणंतरसमुदाणकिरिया परंपरसमुदाणकिरिया तदुभयसमुदाणकिरिता ४, अन्नाणकिरिता तिविधा पं० तं०-मतिअन्नाणकिरिया सुतअन्नाणकिरिया विभंगअन्नाणकिरिया ५, अविणते तिविहे पं० तं०-देसच्चाती निरालंबणता नाणापेज्जदोसे ६, अन्नाणे तिविधे पं० तं०-देसण्णाणे सव्वण्णाणे भावन्नाणे ७।१८७। तिविहे धम्मे पं० तं०-सुयधम्मे चरित्तधम्मे अत्थिकायधम्मे, तिविधे उवक्कमे पं० तं०-धम्मिते उवक्कमे अधम्मिते उवक्कमे धम्मिताधम्मिते उवक्कमे १, अहवा तिविधे उवक्कमे पं० तं०- आओवक्कमे परोवक्कमे तदुभयोवक्कमे २, एवं वेयावच्चे ३, अणुग्गहे ४, अणुसट्ठी ५, उवालंभं ६, एवमेक्केक्के तिन्नि २ आलावगा जहेव उवक्कमे।१८८। तिविहा कहा पं० तं०-अत्थ- कहा धम्मकहा कामकहा ७, तिविहे विणिच्छते पं० तं०-अत्थविणिच्छते धम्मविणिच्छते कामविणि० ८।१८९। तहारूवं णं भंते! समणं वा माहणं वा पज्जुवासमाणस्स किंफला पज्जुवासणता ?, सवणफला, से णं भंते! सवणे किंफले ?, णाणफले, से णं भंते! णाणे किंफले ?, विण्णाणफले, एवमेतेणं अभिलावेणं इमा गाधा अणुगंतव्वा-सवणे णाणे य विन्नाणे पच्चक्खाणे य संजमे। अणण्हते तवे चेव वोदाणे अकिरिय निव्वाणे ॥ १३ ॥ जाव से णं भंते! अकिरिया किंफला ?, निव्वाणफला, से णं भंते! निव्वाणे किंफले ?, सिद्धिगइगमणपज्ज- वसाणफले पन्नत्ते समणाउसो!।१९०। अ०३ उ०३॥ पडिमापडिवन्नस्स अणगारस्स कप्पंति तओ उवस्सया पडिलेहित्तए, तं०-अहे आगमणगिहंसि वा अहे वियडगिहंसि वा अहे रुक्ख- मूलगिहंसि वा, एवमणुन्नवित्तते, उवातिणित्तते, पडिमापडिवन्नस्स अणगारस्स कप्पंति तओ संथारगा पडिलेहित्तते, तं०-पुढवीसिला कट्ठसिला अहासंथडमेव, एवं अणुण्णवित्तए, उवाइ- णित्तए।१९१। तिविहे काले पण्णत्ते तं०-तीए पडुप्पण्णे अणागए, तिविहे समए पं० तं०-तीते पडुप्पन्ने अणागए, एवं आवलिया आणापाणू थोवे लवे मुहुत्ते अहोरत्ते जाव वाससतसहस्से पुव्वंगे पुव्वे जाव ओसप्पिणी, तिविधे पोग्गलपरियट्टे पं० तं०-तीते पडुप्पन्ने अणागते।१९२। तिविहे वयणे पं० तं०-एगवयणे दुवयणे बहुवयणे, अहवा तिविहे वयणे पं० तं०-इत्थिवयणे पुंवयणे नपुंसगवयणे, अहवा तिविहे वयणे पं०तं०-तीतवयणे पडुप्पन्नवयणे अणागयवयणे।१९३। तिविहा पन्नवणा पं०तं०-णाणपन्नवणा दंसणपन्नवणा चरित्तपन्नवणा १, तिविधे सम्मे पं० तं०-नाणसम्मे दंसणसम्मे चरित्तसम्मे २, तिविधे उवघाते पं० तं०-उग्गमोवघाते उप्पायणोवघाते एसणोवघाते ३, एवं विसोही ४।१९४। तिविहा आराहणा पं० तं०-णाणाराहणा दंसणाराहणा चरित्ताराहणा ५, णाणाराहणा तिविहा पं० तं०-उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना ६, एवं दंसणाराहणाऽवि ७, चरित्ताराहणाऽवि ८, तिविधे संकिलेसे पं० तं०-नाणसंकिलेसे दंसण- संकिलेसे चरित्तसंकिलेसे ९, एवं असंकिलेसेऽवि १०, एवमतिक्कमेऽवि ११, वइक्कमेऽवि १२, अइयारेऽवि १३, अणायारेऽवि १४। तिण्हमतिक्कमाणं आलोएज्जा पडिक्कमेज्जा निंदिज्जा गरहिज्जा जाव पडिवज्जिज्जा, तं०-णाणातिक्कमस्स दंसणातिक्कमस्स चरित्तातिक्कमस्स १५, एवं वइक्कमाणऽवि १६, अतिचाराणं १७, अणायाराणं १८।१९५। तिविधे पायच्छित्ते पं० तं०-आलोयणारिहे पडिक्कमणारिहे तदुभयारिहे १९।१९६। जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं ततो अकम्मभूमिओ पं० तं०-हेमवते हरिवासे देवकुरा, जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं तओ अकम्मभूमीओ पं०तं०-उत्तरकुरा रम्मगवासे एरण्णवए, जंबूमंदरस्स दाहिणेणं ततो वासा पं० तं०-भरहे हेमवए हरिवासे, जंबूमंदरस्स उत्तरेणं ततो वासा पं० तं०-रम्मगवासे हेरन्नवते एरवए, जंबूमंदरदाहिणेणं ततो वासहरपव्वता पं० तं०-चुल्लहिमवंते महाहिमवंते णिसढे, जंबूमंदरउत्तरेणं तओ वासहरपव्वता पं० तं०-णीलवंते रुप्पी सिहरी, जंबूमंदरदाहिणेणं तओ महादहा पं० तं०-पउमदहे महापउमदहे तिगिंछदहे, तत्थ णं ततो देवताओ महिड्ढियातो जाव पलिओवमट्ठितीताओ परिवसंति, तं०-सिरी हिरी धिती, एवं उत्तरेणवि, णवरं केसरिदहे महापोंडरीयदहे पोंडरीयदहे, देवतातो कित्ती बुद्धी लच्छी, जंबूमंदरदाहिणेणं चुल्लहिमवंतातो वासधरपव्वतातो पउमदहाओ महादहातो ततो महाणतीओ पवहंति, तं०-गंगा सिंधू रोहितंसा, जंबूमंदरउत्तरेणं सिहरीओ वासहरपव्वतातो पोंडरीयद्दहाओ महादहाओ तओ महानदीओ पवहंति, तं०-सुवन्नकूला रत्ता रत्तवती, जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीताए महाणतीते उत्तरेणं ततो अंतरणतीतो पं० तं०-गाहावती दहवती पंकवती, जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीताते महाणतीते दाहिणेणं ततो अंतरणतीतो पं० तं०-तत्तजला मत्तजला उम्मत्तजला, जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं सीओदाते महाणईए दाहिणेणं ततो अंतरणतीतो पं० तं०-खी(प्र० खा)रोदा सीतसोता अंतोवाहिणी, जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं सीतोदाए महाणदीए उत्तरेणं तओ अंतरणदीतो पं० तं०-उम्मिमालिणी फेणमालिणी गंभीरमालिनी-एवं धायइसंडे दीवे पुरच्छिमद्धेवि अकम्मभूमीतो आढवेत्ता जाव अंतरनदीओत्ति णिरवसेसं भाणियव्वं, जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे तहेव निरवसेसं भाणियव्वं।१९७। तिहिं ठाणेहिं देसे पुढवीए चलेज्जा, तं०-अधे णमिमीसे रयणप्पभाते पुढवीते उराला पोग्गला णिवतेज्जा, तते णं ते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उरालं पोग्गलं णिवतमाणा देसं पुढवीए चलेज्जा १ महोरते वा महिड्ढीए जाव महेसक्खे इमीसे रयणप्पभाते पुढवीते अहे उम्मज्जणिमज्जियं करेमाणे देसं पुढवीते चलेज्जा २ णागसुवन्ना(देवासुरा)ण वा संगामंसि वट्टमाणंसि देसं पुढवीते चलेज्जा ३, इच्चेतेहिं तिहिं०, तिहिं ठाणेहिं केवलकप्पा पुढवी चलेज्जा, तं०-अधे णं इमीसे रतणप्पभाते पुढवीते घणवाते गुप्पेज्जा, तए णं से घणवाते गुविते समाणे घणोदहिमेएज्जा, तए णं से घणोदही एइए समाणे केवलकप्पं पुढविं चालेज्जा, देवे वा महिड्ढिते जाव महेसक्खे तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा इड्ढिं जुतिं जसं बलं वीरितं पुरिसक्कारपरक्कमं उवदंसेमाणे केवलकप्पं पुढविं चालिज्जा, देवासुरसंगामंसि वा वट्टमाणंसि केवलकप्पा पुढवी चलेज्जा, इच्चेतेहिं तिहिं० ।१९८। तिविधा देवकिब्बिसिया पं० तं०-तिपलिओवमट्ठितीता १ तिसागरोवमट्ठितीता २ तेरससागरोवमट्ठितीया ३, कहिं णं भंते! तिपलिओवमट्ठितीता देवकिब्बिसिया परिवसंति?, उप्पिं जोइसियाणं हिट्ठिं सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु एत्थ णं तिपलिओवमट्ठितीया देवा किब्बिसिया परिवसंति १ कहिं णं भंते! तिसागरोवमट्ठितीता देवा किब्बिसिया परिवसंति?, उप्पिं सोहंमीसाणाणं कप्पाणं हेट्ठिं सणंकुमारमाहिंदे कप्पे एत्थ णं तिसागरोवमट्ठितीया देवकिब्बिसिया परिवसंति २ कहिं णं भंते! तेरससागरोवमट्ठितीया देवकिब्बिसिता परिवसंति?, उप्पिं बंभलोगस्स कप्पस्स हिट्ठिं लंतगे कप्पे एत्थ णं तेरससागरोवमट्ठितीता देवकिब्बिसिया परिवसंति ३ ।१९९। सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो बाहिरपरिसाते देवाणं तिन्नि पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता, सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो अब्भिंतरपरिसाते देवीणं तिन्नि पलिओवमाइं ठिती पं०, ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो बाहिरपरिसाते देवीणं तिन्नि पलिओवमाइं ठिती पं० ।२००। तिविहे पायच्छित्ते पं० तं०-णाणपायच्छित्ते दंसणपायच्छित्ते चरित्तपायच्छित्ते, ततो अणुग्घातिमा पं० तं०-हत्थकम्मं करेमाणे मेहुणं (प्र० परि) सेवेमाणे राईभोयणं (प्र० परि)भुंजमाणे, तओ पारंचिता पं० तं०-दुट्ठपारंचिते पमत्तपारंचिते अन्नमन्नं करेमाणे पारंचिते, ततो अणवट्ठप्पा पं० तं०-साहंमियाणं तेणं करेमाणे, अन्नधम्मियाणं तेणं करेमाणे, हत्थातालं दलयमाणे (अत्थायाणं दलमाणो पा०)।२०१। ततो णो कप्पंति पव्वावेत्तए, तं०-पंडए वातिते (वाहिये पा०) कीवे १, एवं मुंडावित्तए २, सिक्खावित्तए ३, उवट्ठावित्तए ४, संभुंजित्तते ५, संवासित्तते ६ ।२०२। ततो अवायणिज्जा पं० तं०-अविणीए विगतीपडिबद्धे अविओसितपाहुडे, तओ कप्पंति वातित्तते, तं०-विणीए अविगतीपडिबद्धे विउसियपाहुडे। तओ दुसन्नप्पा पं० तं०-दुट्ठे मूढे वुग्गाहिते, तओ सुसन्नप्पा पं० तं०-अदुट्ठे अमूढे अवुग्गाहिते । २०३। ततो मंडलिया पव्वता पं० तं०-माणुसुत्तरे कुंडलवरे रुअगवरे ।२०४। ततो महतिमहालया पं० तं०-जंबुद्दीवे मंदरे मंदरेसु सयंभुरमणे समुद्दे समुद्देसु बंभलोए कप्पे कप्पेसु।२०५। तिविधा कप्पठिती पं० तं०-सामाइयकप्पठिती १ छेदोवट्ठावणियकप्पट्ठिती २ निव्विसमाणकप्पट्ठिती ३, अहवा तिविहा कप्पट्ठिती पं० तं०-णिव्विट्ठकप्पट्ठिती १ जिणकप्पठिती २ थेरकप्पठिती ३ ।२०६। नेरइयाणं ततो सरीरगा पं० तं०-वेउव्विते तेयए कम्मए, असुरकुमाराणं ततो सरीरगा पं० तं०-एवं चेव, एवं सव्वेसिं देवाणं, पुढवीकाइयाणं ततो सरीरगा पं० तं०-ओरालिते तेयए कम्मते, एवं वाउकाइयवज्जाणं जाव चउरिंदियाणं ।२०७। गुरुं पडुच्च ततो पडिणीता पं० तं०-आयरियपडिणीते उवज्झायपडिणीते थेरपडिणीते १ गतिं पडुच्च ततो पडिणीया पं० तं०-इहलोगपडिणीए परलोगपडिणीए दुहओ (प्र० उभओ) लोगपडिणीए २ समूहं पडुच्च ततो पडिणीता पं० तं०-कुलपडिणीए गणपडिणीए संघपडिणीते ३ अणुकंपं पडुच्च ततो पडिणीया पं० तं०-तवस्सिपडिणीए गिलाणपडिणीए सेहपडिणीए ४ भावं पडुच्च ततो पडिणीता पं० तं०-णाणपडिणीए दंसणपडिणीए चरित्तपडिणीए ५, सुयं पडुच्च ततो पडिणीता पं० तं०-सुत्तपडिणीते अत्थपडिणीते तदुभयपडिणीए ६ । २०८। ततो पितियंगा पं० तं०-अट्ठी अट्ठिमिंजा केसमंसुरोमनहे (प्र० नहरोमे)। तओ माउयंगा पं० तं०-मंसे सोणिते मत्थुलिंगे ।२०९। तिहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवति, तं०-कया णं अहं अप्पं वा बहुयं वा सुयं अहिज्जिस्सामि? कया णमहमेकल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरिस्सामि? कया णमहमपच्छिममारणंतितसंलेहणाझूसणाझूसिते भत्तपाणपडियाइक्खिते पाओवगते कालं अणवकंखमाणे विहरिस्सामि?, एवं समणसा सवयसा सकायसा पागडेमाणे (पहारेमाणे पा०) स० निग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवति, तिहिं ठाणेहिं समणोवासते महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवति, तं०-कया णमहमप्पं वा बहुयं वा परिग्गहं परिचइस्सामि ? १ कया णं अहं मुंडे भवित्ता आगारातो अणगारितं पव्वइस्सामि ? २ कया णं अहं अपच्छिममारणंतियसंलेहणाझूसणाझूसिते भत्तपाणपडियातिक्खते पाओवगते कालं अणवकंखमाणे विहरिस्सामि? ३, एवं समणसा सवयसा सकायसा पागडेमाणे [जागरमाणे] समणोवासते महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवति ।२१०। तिविहे पोग्गलपडिघाते पं० तं०-परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलं पप्प पडिहन्निज्जा लुक्खत्ताते वा पडिहण्णिज्जा लोगंते वा पडिहन्निज्जा ।२११। तिविहे चक्खू पं० तं०-एगचक्खू बिचक्खू तिचक्खू, छउमत्थे णं मणुस्से एगचक्खू देवे बिचक्खू तहारूवे समणे वा माहणे वा उप्पन्ननाणदंसणधरे से णं तिचक्खुत्ति वत्तव्वं सिता । २१२। तिविधे अभिसमागमे पं० तं०-उड्ढं अहं तिरियं, जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पज्जति से णं

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तप्पदमताते उड्ढमभिसमेति ततो तिरितं ततो पच्छा अहे, अहोलोगे णं दुरभिगमे पन्नत्ते समणाउसो! ।२१३। तिविधा इड्ढी पं० तं०-देविड्ढी राइड्ढी गणिड्ढी १ देविड्ढी तिविहा पं० तं०-विमाणिड्ढी विगुव्वणिड्ढी परियारणिड्ढी २ अहवा देविड्ढी तिविहा पं० तं०-सचित्ता अचित्ता मीसिता ३ राइड्ढी तिविधा पं० तं०-रन्नो अतियाणिड्ढी रन्नो निज्जाणिड्ढी रण्णो बलवाहणकोसकोट्ठागारिड्ढी ४ अहवा रातिड्ढी तिविहा पं० तं०-सचित्ता अचित्ता मीसिता ५ गणिड्ढी तिविहा पं० तं०-णाणिड्ढी दंसणिड्ढी चरित्तिड्ढी ६ अहवा गणिड्ढी तिविहा पं० तं०-सचित्ता अचित्ता मीसिया ७।२१४। ततो गारवा पं० तं०-इड्ढीगारवे रसगारवे सातागारवे।२१५। तिविधे करणे पं० तं०-धम्मिते करणे अधम्मिए करणे धम्मिताधम्मिए करणे ।२१६। तिविहे भगवता धम्मे पं० तं०-सुअधिज्झिते सुज्झातिते सुतवस्सिते, जया सुअधिज्झितं भवति तदा सुज्झातियं भवति, जया सुज्झातितं भवति तया सुतवस्सियं भवति, से सुअधिज्झिते सुज्झातिते सुतवस्सिते सुतक्खाते णं भगवता धम्मे पण्णत्ते ।२१७। तिविधा वावत्ती पं० तं०-जाणू अजाणू वितिगिच्छा, एवमज्झोववज्जणा परियावज्जणा।२१८। तिविधे अंते पं० तं०-लोगंते वेयंते समयंते ।२१९। ततो जिणा पं० तं०-ओहिणाणजिणे मणपज्जवणाणजिणे केवलणाणजिणे १, ततो केवली पं० तं०-ओहिनाणकेवली मणपज्जवनाणकेवली केवलनाणकेवली २, तओ अरहा पं० तं०-ओहिनाणअरहा मणपज्जवनाणअरहा केवलनाणअरहा ३ ।२२०। ततो लेसाओ दुब्भिगंधाओ पं० तं०-कण्हलेसा णीललेसा काउलेसा १, तओ लेसाओ सुब्भिगंधातो पं० तं०-तेऊ० पम्ह० सुक्कलेसा २ एवं दोग्गतिगामिणीओ ३ सोगतिगामिणीओ ४ संकिलिट्ठाओ ५ असंकिलिट्ठाओ ६ अमणुन्नाओ ७ मणुन्नाओ ८ अविसुद्धाओ ९ विसुद्धाओ १० अप्पसत्थाओ ११ पसत्थाओ १२ सीतलुक्खाओ १३ णिद्धुण्हाओ १४।२२१। तिविहे मरणे पं० तं०-बालमरणे पंडियमरणे बालपंडियमरणे, बालमरणे तिविहे पं० तं०-ठितलेसे संकिलिट्ठलेसे पज्जवजातलेसे, पंडियमरणे तिविहे पं० तं०-ठितलेसे असंकिलिट्ठलेसे पज्जवजातलेसे ३, बालपंडितमरणे तिविधे पं० तं०-ठितलेसे असंकिलिट्ठलेसे अपज्जवजातलेसे ४ ।२२२। ततो ठाणा अव्ववसितस्स अहिताते असुभाते अखमाते अणिस्सेसाते अणाणुगामियत्ताते भवंति, तं०-से णं मुंडे भवित्ता अगारातो अणगारियं पव्वतिते णिग्गंथे पावयणे संकिते कंखिते वितिगिच्छिते भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने निग्गंथं पावयणं णो सद्दहति णो पत्तियति णो रोअति तं परिस्सहा अभिजुंजिय २ अभिभवंति, णो से परिस्सहे अभिजुंजिय २ अभिभवइ १, से णं मुंडे भवित्ता अगारातो अणगारितं पव्वतिते पंचहिं महव्वएहिं संकिते जाव कलुससमावन्ने पंच महव्वताइं नो सद्दहति जाव णो से परिस्सहे अभिजुंजिय २ अभिभवति, से णं मुंडे भवित्ता अगारातो अणगारियं पव्वतिते छहिं जीवनिकाएहिं जाव अभिभवइ ३, ततो ठाणा ववसियस्स हिताते जाव आणुगामितत्ताते भवंति, तं०-से णं मुंडे भवित्ता अगारातो अणगारियं पव्वतिते णिग्गंथे पावयणे णिस्संकिते णिक्कंखिते जाव नो कलुससमावन्ने णिग्गंथं पावयणं सद्दहति पत्तियति रोतेति से परिस्सहे अभिजुंजिय २ अभिभवति, नो तं परिस्सहा अभिजुंजिय २ अभिभवंति १ से णं मुंडे भवित्ता अगारातो अणगारियं पव्वतिते समाणे पंचहिं महव्वएहिं णिस्संकिए णिक्कंखिए जाव परिस्सहे अभिजुंजिय २ अभिभवइ, नो तं परिस्सहा अभिजुंजिय २ अभिभवंति २ से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए छहिं जीवनिकाएहिं णिस्संकिते जाव परिस्सहे अभिजुंजिय २ अभिभवति, नो तं परिस्सहा अभिजुंजिअ २ अभिभवंति ३ ।२२३। एगमेगा णं पुढवी तिहिं वलएहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता, तं०-घणोदधिवलएणं घणवातवलएणं तणुवायवलतेणं ।२२४। णेरइया णं उक्कोसेणं तिसमतितेणं विग्गहेणं उववज्जंति, एगिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं ।२२५। खीणमोहस्स णं अरहओ ततो कम्मंसा जुगवं खिज्जंति तं०-नाणावरणिज्जं दंसणावरणिज्जं अंतरातियं।२२६। अभितीणक्खत्ते तितारे पं० १ एवं सवणो २ अस्सिणी ३ भरणी ४ मगसिरे ५ पूसे ६ जेट्ठा ७ ।२२७। धम्मातो णं अरहाओ संती अरहा तिहिं सागरोवमेहिं तिचउब्भागपलिओवमऊणएहिं वीतिक्कंतेहिं समुप्पन्ने। २२८। समणस्स णं भगवओ महावीरस्स जाव तच्चाओ पुरिसजुगाओ जुगंतकरभूमी, मल्ली णं अरहा तिहिं पुरिससएहिं सद्धिं मुंडे भवित्ता जाव पव्वतिते, एवं पासेऽवि ।२२९। समणस्स णं भगवतो महावीरस्स तिन्नि सया चउद्दसपुव्वीणं अजिणाणं जिणसंकासाणं सव्वक्खरसन्निवातीणं जिण इव अवितहवागरमाणाणं उक्कोसिया चउद्दसपुव्विसंपया हुत्था। २३०। तओ तित्थयरा चक्कवट्टी होत्था तं०-संती कुंथू अरो । २३१। ततो गेविज्जविमाणपत्थडा पन्नत्ता तं०-हिट्ठिमगेविज्जविमाणपत्थडे मज्झिमगेविज्जविमाणपत्थडे उवरिमगेविज्जविमाणपत्थडे, हिट्ठिमगेविज्जविमाणपत्थडे तिविहे पं० तं०-हेट्ठिम २ गेविज्जविमाणपत्थडे हेट्ठिममज्झिमगेविज्जविमाणपत्थडे हेट्ठिमउवरिमगेविज्जविमाणपत्थडे, मज्झिमगेविज्जविमाणपत्थडे तिविहे पं०तं०-मज्झिमहेट्ठिमगेवेज्जविमाणपत्थडे मज्झिम२गेविज्ज० मज्झिमउवरिमगेविज्ज०, उवरिमगेविज्जविमाणपत्थडे तिविहे पं० तं०-उवरिमहेट्ठिमगेविज्ज० उवरिममज्झिमगेविज्ज० उवरिम२गेविज्जविमाणपत्थडे । २३२। जीवाणं तिट्ठाणणिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताते चिणिंसु वा चिणिंति वा चिणिस्संति वा, तं०-इत्थिणिव्वत्तिते पुरिसनिव्वत्तिए णपुंसगनिव्वत्तिते, एवं चिणउवचिणबंधउदीरवेद तह णिज्जरा चेव । २३३। तिपतेसिता खंधा अणंता पण्णत्ता,

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं जाव तिगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पन्नत्ता। २३४। उ०४ त्रिस्थानकाध्ययनम् ३॥ चत्तारि अंतकिरियातो पं० तं०-तत्थ खलु पढमा इमा अंतकिरिया-अप्पकम्मपच्चायाते यावि भवति, से णं मुंडे भवित्ता अगारातो अणगारियं पव्वतिते संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले लूहे तीरट्ठी उवहाणवं दुक्खक्खवे तवस्सी तस्स णं णो तहप्पगारे तवे भवति णो तहप्पगारा वेयणा भवति तहप्पगारे पुरिसज्जाते दीहेणं परितातेणं सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणिव्वाति सव्वदुक्खाणमंतं करेइ, जहा से भरहे राया चाउरंतचक्कवट्टी, पढमा अंतकिरिया १ अहावरा दोच्चा अंतकिरिया-महाकम्मे पच्चाजाते यावि भवति, से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वतिते संजमबहुले संवरबहुले जाव उवहाणवं दुक्खक्खवे तवस्सी तस्स णं तहप्पगारे तवे भवति तहप्पगारा वेयणा भवति तहप्पगारे पुरिसजाते निरुद्धेणं परितातेणं सिज्झति जाव अंतं करेति जहा से गतसूमाले अणगारे, दोच्चा अंतकिरिया २ अहावरा तच्चा अंतकिरिया-महाकम्मे पच्चायाते यावि भवति, से णं मुंडे भवित्ता अगारातो अणगारियं पव्वतिते, जहा दोच्चा नवरं दीहेणं परितातेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेति, जहा से सणंकुमारे राया चाउरंतचक्कवट्टी, तच्चा अंतकिरिया ३ अहावरा चउत्था अंतकिरिया-अप्पकम्मे पच्चायाते यावि भवति, से णं मुंडे भवित्ता जाव पव्वतिते संजमबहुले जाव तस्स णं णो तहप्पगारे तवे भवति णो तहप्पगारा वेयणा भवति तहप्पगारे पुरिसजाए णिरुद्धेणं परितातेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेति, जहा सा मरुदेवा भगवती, चउत्था अंतकिरिया ४ ।२३५। चत्तारि रुक्खा पं० तं०-उन्नए नाममेगे उन्नए १ उन्नते नाममेगे पणते २ पणते नाममेगे उन्नते ३ पणते नाममेगे पणते ४,१, एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं०तं०-उन्नते नामेगे उन्नते, तहेव जाव पणते नामेगे पणते २, चत्तारि रुक्खा पं० तं०-उन्नते नाममेगे उन्नतपरिणए १ उण्णए नाममेगे पणतपरिणते २ पणते णाममेगे उन्नतपरिणते ३ पणए नाममेगे पणयपरिणए ४, ३ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-उन्नते नाममेगे उन्नयपरिणते चउभंगो (प्र० चत्तारि भंगा) ४, ४ चत्तारि रुक्खा पं० तं०-उन्नते नामेगे उन्नतरूवे तहेव चउभंगो ४, ५ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-उन्नए नाम० ४, ६, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-उन्नते नाममेगे उन्नतमणे उन्न० ४, ७ एवं संकप्पे ८ पन्ने ९ दिट्ठी १० सीलायारे (सीले आयारे पा०) ११ ववहारे १२ परक्कमे १३ एगे पुरिसजाए पडिवक्खो नत्थि, चत्तारि रुक्खा पं० तं०-उज्जू नाममेगे उज्जू, उज्जू नाममेगे वंके, चउभंगो ४, एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-उज्जू नाममेगे ४, एवं जहा उन्नतपणतेहिं गमो तहा उज्जुवंकेहिवि भाणियव्वो, जाव परक्कमे २६। २३६। पडिमापडिवन्नस्स णमणगारस्स कप्पंति चत्तारि भासातो भासित्तए, तं०-जायणी पुच्छणी अणुन्नवणी पुट्ठस्स वागरणी ।२३७। चत्तारि भासाजाता पं० तं०-सच्चमेगं भासज्जायं बीयं मोसं तईयं सच्चमोसं चउत्थं असच्चमोसं ४ ।२३८। चत्तारि वत्था पं० तं०-सुद्धे णामं एगे सुद्धे १ सुद्धे णामं एगे असुद्धे २ असुद्धे णामं एगे सुद्धे ३ असुद्धे णामं एगे असुद्धे ४, एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-सुद्धे णामं एगे सुद्धे चउभंगो ४, एवं परिणतरूवे वत्था सपडिवक्खा, चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-सुद्धे णामं एगे सुद्धमणे चउभंगो ४, एवं संकप्पे जाव परक्कमे ।२३९। चत्तारि सुता पं० तं०-अतिजाते अणुजाते अवजाते कुलिंगाले ।२४०। चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-सच्चे नामं एगे सच्चे, सच्चे नामं एगे असच्चे ४, एवं परिणते जाव परक्कमे, चत्तारि वत्था पं० तं०-सुती नामं एगे सुती, सुई नामं एगे असुई, चउभंगो ४, एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-सुती णामं एगे सुती चउभंगो, एवं जहेव सुइणा वत्थेणं भणितं तहेव सुद्धेणावि जाव परक्कमे ।२४१। चत्तारि कोरवा पं० तं०-अंबपलंबकोरवे तालपलंबकोरवे वल्लिपलंबकोरवे मेंढविसाणकोरवे, एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-अंबपलंबकोरवसमाणे तालपलंबकोरवसमाणे वल्लिपलंबकोरवसमाणे मेंढविसाणकोरवसमाणे।२४२। चत्तारि घुणा पं० तं०-तयक्खाते छल्लिक्खाते कट्ठक्खाते सारक्खाते, एवामेव चत्तारि भिक्खागा पं० तं० तयक्खायसमाणे जाव सारक्खायसमाणे, तयक्खातसमाणस्स णं भिक्खागस्स सारक्खातसमाणे तवे पण्णत्ते, सारक्खायसमाणस्स णं भिक्खागस्स तयक्खातसमाणे तवे पण्णत्ते, छल्लिक्खायसमाणस्स णं भिक्खागस्स कट्ठक्खायसमाणे तवे पण्णत्ते, कट्ठक्खायसमाणस्स णं भिक्खागस्स छल्लिक्खायसमाणे तवे पण्णत्ते ।२४३। चउव्विहा तणवणस्सतिकातिता पं० तं०-अग्गबीया मूलबीया पोरबीया खंधबीया ।२४४। चउहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे णेरइए णेरइयलोगंसि इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तते, णो चेव णं संचातेइ हव्वमागच्छित्तते, अहुणोववण्णे नेरइए णिरयलोगंसि समुब्भूयं (सम्मुहभूयं समहब्भूयं पा०) वेयणं वेयमाणे इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तते णो चेव णं संचातेति हव्वमागच्छित्तते १, अहुणोववन्ने णेरइए निरतलोगंसि णिरयपालेहिं भुज्जो २ अहिट्ठिज्जमाणे इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तते, णो चेव णं संचातेति हव्वमागच्छित्तते २, अहुणोववन्ने णेरइए णिरतवेयणिज्जंसि कम्मंसि अक्खीणंसि अवेतितंसि अणिज्जिन्नंसि इच्छेज्जा० नो चेव णं संचाएइ ३, एवं णिरयाउअंसि कम्मंसि अक्खीणंसि जाव नो चेव णं संचातेति हव्वमागच्छित्तते ४, इच्चेतेहिं चउहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने नेरतिते जाव नो चेव णं संचातेति हव्वमागच्छित्तए ।२४५। कप्पंति णिग्गंथीणं चत्तारि संघाडीओ धारित्तए वा परिहरित्तते वा, तं०-एगं दुहत्थवित्थारं दो तिहत्थवित्थारा एगं चउहत्थवित्थारं ।२४६। चत्तारि झाणा पं० तं०-अट्टे झाणे रोद्दे झाणे धम्मे झाणे सुक्के झाणे, अट्टे झाणे चउव्विहे पं० तं०-अम(सम० पा०) णुन्नसंपओगसंपउत्ते तस्स विप्पओगसतिसमण्णागते यावि (२३)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागर

भवति १ मणुन्नसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओगसतिसमण्णागते यावि भवति २ आयंकसंपओगसंपउत्ते तस्स विप्पओगसतिसमण्णागए यावि भवति ३ परिजुसितकामभोगसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओगसतिसमण्णागते यावि भवइ ४, अट्टस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पं० तं०-कंदणता सोतणता तिप्पणता परिदेवणता, रोद्दे झाणे चउव्विहे पं० तं०-हिंसाणुबंधि मोसाणुबंधि तेणाणुबंधि सारक्खणाणुबंधि, रुद्दस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पं० तं०-ओसण्णदोसे बहुदोसे अन्नाण(नाणाविह पा०)दोसे आमरणंतदोसे, धम्मे झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे (यावयारे पा०) पं० तं०-आणाविजते अवायविजते विवागविजते संठाणविजते, धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पं० तं०-आणारुई निसग्गरुई सुत्तरुई ओगाढरुती, धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पं० तं०-वायणा पडिपुच्छणा परियट्टणा अणुप्पेहा, धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पं० तं०-एगाणुप्पेहा अणिच्चाणुप्पेहा असरणाणुप्पेहा संसाराणुप्पेहा, सुक्के झाणे चउव्विहे चउप्पडोआरे पं० तं०-पुहुत्तवितक्के सवियारी १ एगत्तवितक्के अवियारी २ सुहुमकिरिते अणियट्टी ३, समुच्छिन्नकिरिए अप्पडिवाती ४, सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पं० तं०-अव्वहे असम्मोहे विवेगे विउस्सग्गे, सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पं० तं०-खंती मुत्ती मद्दवे अज्जवे, सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पं० तं०-अणंतवत्तियाणुप्पेहा विप्परिणामाणुप्पेहा असुभाणुप्पेहा अवायाणुप्पेहा ।२४७। चउव्विहा देवाण ठिती पं० तं०-देवे णाममेगे १ देवसिणाते नाममेगे २ देवपुरोहिते नाममेगे ३ देवपज्जलणे नाममेगे ४, चउव्विधे संवासे पं० तं०-देवे णाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छेज्जा, देवे णाममेगे छवीए सद्धिं संवासं गच्छेज्जा, छवी णाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छेज्जा, छवी णाममेगे छवीते सद्धिं संवासे गच्छेज्जा ।२४८। चत्तारि कसाया पं० तं०-कोहकसाए माणकसाए मायाकसाए लोभकसाए, एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं २४, चउपतिट्ठिते कोहे पं० तं०-आतपइट्ठिते परपतिट्ठिए तदुभयपइट्ठिते अपतिट्ठिए, एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं २४, एवं जाव लोभे, वेमाणियाणं २४, चउहिं ठाणेहिं कोधुप्पत्ती सिता, तं०-खेत्तं पडुच्चा वत्थुं पडुच्चा सरीरं पडुच्चा उवहिं पडुच्चा, एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं २४, चउव्विधे कोहे पं० तं०-अणंताणुबंधिकोहे अपच्चक्खाणकोहे पच्चक्खाणावरणकोहे संजलणकोहे, एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं २४, एवं जाव लोभे वेमाणियाणं २४, चउव्विहे कोहे पं० तं०-आभोगणिव्वत्तिए अणाभोगणिव्वत्तिते उवसंते अणुवसंते, एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं २४, एवं जाव लोभे जाव वेमाणियाणं २४ ।२४९। जीवा णं चउहिं ठाणेहिं अट्ठ कम्मपगडीओ चिणिंसु, तं०-कोहेणं माणेणं मायाए लोभेणं, एवं जाव वेमाणियाणं २४, एवं चिणंति एस दंडओ, एवं चिणिस्संति एस दंडओ, एवमेतेणं तिन्नि दंडगा, एवं उवचिणिंसु उवचिणंति उवचिणिस्संति बंधिंसु ३ उदीरिंसु ३ वेदेंसु ३ निज्जरेंसु निज्जरंति निज्जरिस्संति जाव वेमाणियाणं, एवमेक्केक्के पदे तिन्नि २ दंडगा भाणियव्वा, जाव निज्जरिस्संति ।२५०। चत्तारि पडिमाओ पं० तं०-समाहिपडिमा उवहाणपडिमा विवेगपडिमा विउस्सग्गपडिमा, चत्तारि पडिमाओ पं० तं०-भद्दा सुभद्दा महाभद्दा सव्वतोभद्दा, चत्तारि पडिमातो पं० तं०-खुड्डिया मोयपडिमा महल्लिया मोयपडिमा जवमज्झा वइरमज्झा ।२५१। चत्तारि अत्थिकाया अजीवकाया पं० तं०-धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए, चत्तारि अत्थिकाया अरूविकाया पं० तं०-धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए ।२५२। चत्तारि फला पं० तं०-आमे णामं एगे आममहुरे १ आमे णाममेगे पक्कमहुरे २ पक्के णाममेगे आममहुरे ३ पक्के णाममेगे पक्कमहुरे ४, एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-आमे णाममेगे आममहुरफलसमाणे ४।२५३। चउव्विहे सच्चे पं० तं०-काउज्जुयया भासुज्जुयया भावुज्जुयया अविसंवायणाजोगे, चउव्विहे मोसे पं० तं०-कायअणुज्जुयया भासअणुज्जुयया भावअणुज्जुयया विसंवादणाजोगे, चउव्विहे पणिहाणे पं० तं०-मणपणिहाणे वइपणिहाणे कायपणिहाणे उवकरणपणिहाणे, एवं णेरइयाणं पंचिंदियाणं जाव वेमाणियाणं २४, चउव्विहे सुप्पणिहाणे पं० तं०-मणसुप्पणिहाणे जाव उवगरणसुप्पणिहाणे, एवं संजयमणुस्साणऽवि, चउव्विहे दुप्पणिहाणे पं० तं०-मणदुप्पणिहाणे जाव उवकरणदुप्पणिहाणे, एवं पंचिंदियाणं जाव वेमाणियाणं २४।२५४। चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-आवातभद्दते णाममेगे णो संवासभद्दते १ संवासभद्दए णाममेगे णो आवातभद्दए २ एगे आवातभद्दतेऽवि संवासभद्दतेऽवि ३ एगे णो आवायभद्दते नो वा संवासभद्दए ४, १, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-अप्पणो नाममेगे वज्जं पासति णो परस्स, परस्स णाममेगे वज्जं पासति ४, २, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-अप्पणो णाममेगे वज्जं उदीरइ णो परस्स ४, ३, अप्पणो नाममेगे वज्जं उवसामेति णो परस्स ४, ४, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-अब्भुट्ठेइ नाममेगे णो अब्भुट्ठावेति, ५, एवं वंदति णाममेगे णो वंदावेइ ६, एवं सक्कारेइ ७ सम्माणेति ८ पूएइ ९ वाएइ १० पडिपुच्छति (प्र० पडिच्छइ) ११ पुच्छइ १२ वागरेति १३, सुत्तधरे णाममेगे णो अत्थधरे अत्थधरे नाममेगे णो सुत्तधरे १४।२५५। चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो चत्तारि लोगपाला पं० तं०-सोमे जमे वरुणे वेसमणे, एवं बलिस्सवि सोमे जमे वेसमणे वरुणे, धरणस्स कालपाले कोलपाले सेलपाले संखपाले, एवं भूयाणंदस्स चत्तारि कालपाले कोलपाले संखपाले सेलपाले,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेणुदेवस्स चित्ते विचित्ते चित्तपक्खे विचित्तपक्खे, वेणुदालिस्स चित्ते विचित्ते विचित्तपकुखे चित्तपक्खे, हरिकंतस्स पभे सुप्पभे पमकंते सुप्पमकंते, हरिस्सहस्स पभे सुप्पभे सुप्पभकंते पभकंते, अग्गिसिहस्स तेऊ तेउसिहे तेउकंते तेउप्पभे, अग्गिमाणवस्स तेऊ तेउसिहे तेउपभे तेउकंते, पुन्नस्स रूए रूयंसे रूदकंते रूदप्पभे, एवं विसिट्ठस्स रूते रूतंसे रूतप्पभे रूयकंते, जलकंतस्स जले जलरते जलकंते जलप्पभे, जलप्पहस्स जले जलरते जलप्पहे जलकंते, अमितगतिस्स तुरियगती खिप्पगती सीहगती सीहविक्कमगती, अमितवाहणस्स तुरियगती खिप्पगती सीहविक्कमगती सीहगती, वेलंबस्स काले महाकाले अंजणे रिट्ठे, पभंजणस्स काले महाकाले रिट्ठे अंजणे, घोसस्स आवत्ते वियावत्ते णंदियावत्ते महाणंदियावत्ते, महाघोसस्स आवत्ते वियावत्ते महाणंदियावत्ते णंदियावत्ते २०, सक्कस्स सोमे जमे वरुणे वेसमणे, ईसाणस्स सोमे जमे वेसमणे वरुणे, एवं एगंतरिता जावऽच्चुतस्स, चउव्विहा वाउकुमारा० पं० तं०-काले महाकाले वेलंबे पभंजणे। २५६। चउव्विहा देवा पं० तं०-भवणवासी वाणमंतरा जोइसिया विमाणवासी । २५७। चउव्विहे पमाणे पं० तं०-दव्वप्पमाणे खेत्तप्पमाणे कालप्पमाणे भावप्पमाणे। २५८। चत्तारि दिसाकुमारीमहत्तरियाओ पं० तं०-रूया रूयंसा सुरूवा रूयावती, चत्तारि विज्जुकुमारीमहत्तरियाओ पं० तं०-चित्ता चित्तकणगा सतेरा सोतामणी ।२५९। सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो मज्झिमपरिसाते देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पं०, ईसाणस्स देविंदस्स देवरन्नो मज्झिमपरिसाए देवीणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पं० । २६०। चउव्विहे संसारे पं० तं०-दव्वसंसारे खेत्तसंसारे कालसंसारे भावसंसारे।२६१। चउविहे दिट्ठिवाए पं० तं०-परिकम्मं सुत्ताइं पुव्वगए अणुजोगे। २६२। चउविहे पायच्छित्ते पं० तं०-णाणपायच्छित्ते दंसणपायच्छित्ते चरित्तपायच्छित्ते चि(वि० पा०)यत्तकिच्चपायच्छित्ते १, चउव्विहे पायच्छित्ते पं० तं०-परिसेवणापायच्छित्ते संजोयणापायच्छित्ते आरोअणापायच्छित्ते पलिउंचणापायच्छित्ते २।२६३। चउव्विहे काले पं० तं०-पमाणकाले अहाउयनिव्वत्तिकाले मरणकाले अद्धाकाले।२६४। चउव्विहे पोग्गलपरिणामे पन्नत्ते तं०-वन्नपरिणामे गंधपरिणामे रसपरिणामे फासपरिणामे ।२६५। भरहेरवएसु णं वासेसु पुरिमपच्छिमवज्जा मज्झिमगा बावीसं अरहंता भगवंतो चाउज्जामं धम्मं पण्णवेंति तं०-सव्वातो पाणातिवायाओ वेरमणं एवं मुसावायाओ वेरमणं सव्वातो अदिन्नादाणाओ वेरमणं सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं, सव्वेसु णं महाविदेहेसु अरहंता भगवंतो चाउज्जामं धम्मं पण्णवयंति, तं०-सव्वातो पाणातिवायाओ वेरमणं जाव सव्वातो बहिद्धादाणाओ वेरमणं ।२६६। चत्तारि दुग्गतीतो पं० तं०-णेरइयदुग्गती तिरिक्खजोणियदुग्गती मणुस्सदुग्गती देवदुग्गई १, चत्तारि सोग्गईओ पं० तं०-सिद्धसोगती देवसोग्गती मणुयसोग्गती सुकुलपच्चायाती २, चत्तारि दुग्गता पं० तं०-नेरइयदुग्गया तिरिक्खजोणियदुग्गता मणुयदुग्गता देवदुग्गता ३, चत्तारि सुग्गता पं० तं०-सिद्धसुगता जाव सुकुलपच्चायाया ४।२६७। पढमसमयजिणस्स णं चत्तारि कम्मंसा खीणा भवंति तं०-णाणावरणिज्जं दंसणावरणिज्जं मोहणिज्जं अंतरातितं १, उप्पन्ननाणदंसणधरे णं अरहा जिणे केवली चत्तारि कम्मंसे वेदेति तं०-वेदणिज्जं आउयं णामं गोतं २, पढमसमयसिद्धस्स णं चत्तारि कम्मंसा जुगवं खिज्जंति तं०-वेयणिज्जं आउयं णामं गोतं ३ । २६८। चउहिं ठाणेहिं हासुप्पत्ती सिता तं०-पासित्ता भासेत्ता सुणेत्ता संभरेत्ता । २६९। चउव्विहे अंतरे पं० तं०-कट्ठंतरे पम्हंतरे लोहंतरे पत्थरंतरे, एवामेव इत्थीए वा पुरिसस्स वा चउव्विहे अंतरे पं० तं०-कट्ठंतरसमाणे पम्हंतरसमाणे लोहंतरसमाणे पत्थरंतरसमाणे। २७० । चत्तारि भयगा पं० तं०-दिवसभयते जत्ताभयते उच्चत्तभयते कब्बालभयते । २७१। चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-संपागडपडिसेवी णामेगे णो पच्छन्नपडिसेवी पच्छन्नपडिसेवी णामेगे णो संपागडपडिसेवी एगे संपागडपडिसेवीवि पच्छन्नपडिसेवीवि एगे नो संपागडपडिसेवी णो पच्छन्नपडिसेवी।२७२। चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सोमस्स महारन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पं० तं०-कणगा कणगलता चित्तगुत्ता वसुंधरा, एवं जमस्स वरुणस्स वेसमणस्स, बलिस्स णं वतिरोयणिंदस्स वतिरोयणरन्नो सोमस्स महारन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पं० तं०-मित्तगा सुभद्दा विज्जुता असणी, एवं जमस्स वेसमणस्स वरुणस्स, धरणस्स णं नागकुमारिंदस्स णागकुमाररन्नो कालवालस्स महारन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पं० तं०-असोगा विमला सुप्पभा सुदंसणा, एवं जाव संखवालस्स, भूताणंदस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररन्नो कालवालस्स महारन्नो चत्तारि अग्ग० पं० तं०-सुणंदा सुभद्दा सुजाता सुमणा, एवं जाव सेलवालस्स, जहा धरणस्स एवं सव्वेसिं दाहिणिंदलोगपालाणं जाव घोसस्स, जहा भूताणंदस्स एवं जाव महाघोसस्स लोगपालाणं, कालस्स णं पिसाइंदस्स पिसायरन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पं० तं०-कमला कमलप्पभा उप्पला सुदंसणा, एवं महाकालस्सवि, सुरूवस्स णं भूतिंदस्स भूतरन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पं०तं०-रूववती बहुरूवा सुरूवा सुभगा, एवं पडिरूवस्सवि, पुण्णभद्दस्स णं जक्खिंदस्स जक्खरन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पं० तं०-पुत्ता बहुपुत्तिता उत्तमा तारगा, एवं माणिभद्दस्सवि, भीमस्स णं रक्खसिंदस्स रक्खसरन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पं० तं०-पउमा वसुमती कणगा रतणप्पभा, एवं महाभीमस्सवि, किंनरस्स णं किन्नरिंदस्स० चत्तारि अग्ग० पं० तं०-वडेंसा केतुमती रतिसेणा रतिप्पभा, एवं किंपुरिसस्सवि, सप्पुरिसस्स णं किंपुरिसिंदस्स० चत्तारि अग्गमहिसीओ पं० तं०-

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रोहिणी णवमिता हिरी पुप्फवती, एवं महापुरिसस्सवि, अतिकायस्स णं महोरगिंदस्स० चत्तारि अग्गमहिसीओ पं० तं०-भुयगा भुयगवती महाकच्छा फुडा, एवं महाकायस्सवि, गीत-रतिस्स णं गंधव्विंदस्स० चत्तारि अग्ग० पं० तं०-सुघोसा विमला सुस्सरा सरस्वती, एवं गीयजसस्सवि, चंदस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पं० तं०-चंदप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभंकरा, एवं सूरस्सवि, णवरं सूरप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभंकरा, इंगालस्स णं महागहस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पं० तं०-विजया वेजयंती जयंती अपरा-जिया, एवं सव्वेसिं महग्गहाणं जाव भावकेउस्स, सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सोमस्स महारन्नो चत्तारि अग्ग० पं० तं०-रोहिणी मयणा चित्ता सोमा, एवं जाव वेसमणस्स, ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सोमस्स महारन्नो चत्तारि अग्ग० पं०तं०-पुढवी राती रयणा विज्जू, एवं जाव वरुणस्स ।२७३। चत्तारि गोरसविगतीओ पं०तं०-खीरं दहिं सप्पिं णवणीतं, चत्तारि सिणेहविगतीओ पं० तं०-तेल्लं घयं वसा णवणीतं, चत्तारि महाविगतीओ पं० तं०-महुं मंसं मज्जं णवणीतं ।२७४। चत्तारि कूडागारा पं० तं०-गुत्ते णामं एगे गुत्ते गुत्ते णामं एगे अगुत्ते अगुत्ते णामं एगे गुत्ते अगुत्ते णामं एगे अगुत्ते, एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं०तं०-गुत्ते णाममेगे गुत्ते ४, चत्तारि कूडागारसालाओ पं० तं०-गुत्ता णाममेगा गुत्तदुवारा गुत्ता णाममेगा अगुत्तदुवारा अगुत्ता णाममेगा गुत्तदुवारा अगुत्ता णाममेगा अगुत्तदुवारा, एवामेव चत्तारित्थीओ पं० तं०-गुत्ता नाममेगा गुत्तिंदिता गुत्ता णाममेगा अगुत्तिंदिआ ४ ।२७५। चउविहा ओगाहणा पं० तं०-दव्वोगाहणा खेत्तोगाहणा कालोगाहणा भावोगाहणा। २७६। चत्तारि पन्नत्तीओ अंगबाहिरियातो पं० तं०-चंदपन्नत्ती सूरपन्नत्ती जंबुद्दीवपन्नत्ती दीवसागरपन्नत्ती ।२७७। अ० ४ उ० १॥ चत्तारि पडिसंलीणा पं० तं०-कोहपडिसंलीणे माणपडिसंलीणे मायापडिसंलीणे लोभपडिसंलीणे १, चत्तारि अपडिसंलीणा पं० तं०-कोहअपडिसंलीणे जाव लोभअपडिसंलीणे २, चत्तारि पडिसंलीणा पं० तं०-मणपडिसंलीणे वतिपडिसंलीणे कायपडिसंलीणे इंदियपडिसंलीणे ३, चत्तारि अपडिसंलीणा पं० तं०-मणअपडिसंलीणे जाव इंदियअपडिसंलीणे ४ ।२७८। चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-दीणे णाममेगे दीणे दीणे णाममेगे अदीणे अदीणे णाममेगे दीणे अदीणे णाममेगे अदीणे १, चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-दीणे णाममेगे दीणपरिणते दीणे णामं एगे अदीणपरिणते अदीणे णामं एगे दीणपरिणते अदीणे णाममेगे अदीणपरिणते २, चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-दीणे णाममेगे दीणरूवे ह्र-४, ३, एवं दीणमणे ४-४, दीणसंकप्पे ४-५, दीणपन्ने ४-६, दीणदिट्ठी ४-७, दीणसीलाचारे ४-८, दीणववहारे ४-९, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-दीणे णाममेगे दीणपरक्कमे, दीणे णाममेगे अदीण० ह्र-४,१०, एवं सव्वेसिं चउभंगो भाणियव्वो, चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-दीणे णाममेगे दीणवित्ती ४-११, एवं दीणजाती १२, दीणभासी १३, दीणोभासी १४, चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-दीणे णाममेगे दीणसेवी ह्र-४, १५, एवं दीणे णाममेगे दीणपरियाए ४,१६, दीणे णाममेगे दीणपरियाले ह्र-४, १७, सव्वत्थ चउभंगो । २७९। चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-अज्जे णाममेगे अज्जे ४,१, चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-अज्जे णाममेगे अज्जपरिणए ४, २ एवं अज्जरूवे ३ अज्जमणे ४ अज्जसंकप्पे ५ अज्जपन्ने ६ अज्जदिट्ठी ७ अज्जसीलाचारे ८ अज्जववहारे ९ अज्जपरक्कमे १० अज्जवित्ती ११ अज्जजाती १२ अज्जभासी १३ अज्जओभासी १४ अज्जसेवी १५ अज्जपरियाए १६ अज्जपरियाले १७ एवं सत्तर आलावगा १७ जहा दीणेणं भणिया तहा अज्जेणवि भाणियव्वा, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-अज्जे णाममेगे अज्जभावे अज्जे नाममेगे अणज्जभावे अणज्जे नाममेगे अज्ज-भावे अणज्जे नाममेगे अणज्जभावे १८ ।२८०। चत्तारि उसभा पं० तं०-जातिसंपन्ने कुलसंपन्ने बलसंपन्ने रूवसंपन्ने, एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-जातिसंपन्ने जाव रूव-संपन्ने १, चत्तारि उसभा पं० तं०-जातिसंपन्ने णामं एगे नो कुलसंपण्णे, कुलसंपण्णे नामं एगे नो जाइसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेऽवि कुलसंपण्णेऽवि, एगे नो जातिसंपण्णे नो कुलसं-पन्ने, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-जातिसंपन्ने नाममेगे ४,२, चत्तारि उसभा पन्नत्ता तं०-जातिसंपन्ने नामं एगे नो बलसंपन्ने, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं०तं०-जाति-संपन्ने ४, ३, चत्तारि उसभा पं० तं०-जाइसंपन्ने नामं एगे नो रूवसंपन्ने ४, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-जातिसंपन्ने नामं एगे नो रूवसंपन्ने रूवसंपन्ने णाममेगे ४, ४, चत्तारि उसभा पं० तं०-कुलसंपन्ने नामं एगे नो बलसंपन्ने ४ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-कुलसंपन्ने नाममेगे नो बलसंपन्ने ४, ५, चत्तारि उसभा पं० तं०-कुलसंपन्ने णाममेगे णो रूवसंपन्ने, ४, एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-कुल० ४, ६, चत्तारि उसभा पं०तं०-बलसंपन्ने णामं एगे नो रूवसंपण्णे ४ एवामेव चत्तारि पुरिसज़ाया पण्णत्ता तं०-बलसंपण्णे नाममेगे ४, ७। चत्तारि हत्थी पं० तं०-भद्दे मंदे मिते संकिन्ने, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-भद्दे मंदे मिते संकिन्ने, चत्तारि हत्थी पं० तं०-भद्दे णाममेगे भद्दमणे, भद्दे णाममेगे मंदमणे, भद्दे णाममेगे मियमणे, भद्दे णाममेगे संकिन्नमणे, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-भद्दे णाममेगे भद्दमणे भद्दे णाममेगे मंदमणे भद्दे णाममेगे मियमणे भद्दे णाममेगे संकिन्नमणे, चत्तारि हत्थी पं० तं०-मंदे णाममेगे भद्दमणे मंदे नाममेगे मंदमणे मंदे णाममेगे मियमणे मंदे णाममेगे संकिन्नमणे, एवामेव चत्तारि पुरिसजाता,

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पं० तं०-मंदे णाममेगे भद्दमणे तं चेव, चत्तारि हत्थी पं० तं०-मिते णाममेगे भद्दमणे मिते णाममेगे मंदमणे मिते णाममेगे मियमणे मिते णाममेगे संकिन्नमणे, एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-मिते णाममेगे भद्दमणे तं चेव, चत्तारि हत्थी पं० तं०-संकिण्णे नाममेगे भद्दमणे संकिन्ने नाममेगे मंदमणे संकिन्ने नाममेगे मियमणे संकिन्ने णाममेगे संकिन्नमणे, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-संकिन्ने नाममेगे भद्दमणे तं चेव जाव संकिन्ने नाममेगे संकिन्नमणे 'मधुगुलियपिंगलक्खो अणुपुव्वसुजायदीहणंगूलो। पुरओ उदग्गधीरो सव्वंग-समाधितो भद्दो ॥ १४॥ चलबहलविसमचम्मो थूलसिरो थूलएण पेएण। थूलणहदंतवालो हरिपिंगललोयणो मंदो ॥१५॥ तणुओ तणुतग्गीवो तणुयतो तणुयदंतणहवालो। भीरू तत्थु-व्विग्गो तासी य भवे मिते णामं ॥१६॥ एतेसिं हत्थीणं थोवं थोवं तु जो हरति हत्थी। रूवेण व सीलेण व सो संकिन्नोति नायव्वो ॥१७॥ भद्दो मज्जइ सरए मंदो उण मज्जते वसंतंमि। मिउ मज्जति हेमंते संकिन्नो सव्वकालंमि॥ १८॥ २८१। चत्तारि विकहातो पं० तं०-इत्थिकहा भत्तकहा देसकहा रायकहा, इत्थिकहा चउव्विहा पं० तं०-इत्थीणं जाइकहा इत्थीणं कुलकहा इत्थीणं रूवकहा इत्थीणं णेवत्थकहा, भत्तकहा चउव्विहा पं० तं०-भत्तस्स आवावकहा भत्तस्स णिव्वावकहा भत्तस्स आरंभकहा भत्तस्स निट्ठाणकहा, देसकहा चउव्विहा पं० तं०-देस-विहिकहा देसविकप्पकहा देसच्छंदकहा देसनेवत्थकहा, रायकहा चउव्विहा पं० तं०-रन्नो अतिताणकहा रन्नो निज्जाणकहा रन्नो बलवाहणकहा रन्नो कोसकोट्ठागारकहा, चउव्विहा धम्मकहा पं० तं०-अक्खेवणी विक्खेवणी संवेयणी निव्वेगणी, अक्खेवणी कहा चउव्विहा पं० तं०-आयारअक्खेवणी ववहारअक्खेवणी पन्नत्तिअक्खेवणी दिट्ठीवायअक्खेवणी, विक्खे-वणी कहा चउव्विहा पं० तं०-ससमयं कहेइ ससमयं कहित्ता परसमयं कहेइ १ परसमयं कहेत्ता ससमयं ठावतित्ता भवति २ सम्मावातं कहेइ सम्मावातं कहेत्ता मिच्छावातं कहेइ ३ मिच्छावातं कहेत्ता सम्मावातं ठावइत्ता भवति ४, संवेगणी कथा चउव्विहा पं० तं०-इहलोगसंवेगणी परलोगसंवेगणी आतसरीरसंवेगणी परसरीरसंवेगणी, णिव्वेगणीकहा चउव्विहा पं० तं०-इहलोगे दुच्चिन्ना कम्मा इहलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति १ इहलोगे दुच्चिन्ना कम्मा परलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति २ परलोगे दुच्चिन्ना कम्मा इहलोगे दुहफलविवागसं-जुत्ता भवंति ३ परलोगे दुच्चिन्ना कम्मा परलोये दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति ४, इहलोगे सुच्चिन्ना कम्मा इहलोगे सुहफलविवागसंजुत्ता भवंति १ इहलोगे सुचिन्ना कम्मा परलोगे सुहफलविवागसंजुत्ता भवंति २ एवं चउभंगो तहेव।२८२। चत्तारि पुरिसजाया पं०तं०-किसे णाममेगे किसे किसे णाममेगे दढे दढे णाममेगे किसे दढे णाममेगे दढे, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-किसे णाममेगे किससरीरे किसे णाममेगे दढसरीरे दढे णाममेगे किससरीरे दढे णाममेगे दढसरीरे ४, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-किससरीरस्स नाममेगस्स णाणदंसणे समुप्पज्जति णो दढसरीरस्स दढसरीरस्स णाम एगस्स णाणदंसणे समुप्पज्जति णो किससरीरस्स एगस्स किससरीरस्सवि णाणदंसणे समुप्पज्जति दढसरीरस्सवि एगस्स नो किससरीरस्स णाणदंसणे समुप्पज्जति णो दढसरीरस्स ।२८३। चउहिं ठाणेहिं निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अस्सिं समयंसि अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पज्जिउकामेऽवि न समुप्पज्जेज्जा, तं०-अभिक्खणं अभिक्खणमित्थिकहं भत्तकहं देसकहं रायकहं कहेत्ता भवति १ विवेगेण विउस्सग्गेणं णो सम्ममप्पाणं भावित्ता भवति २ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि णो धम्मजागरितं जागरतित्ता भवति ३ फासुयस्स एसणिज्जस्स उंछस्स सामुदाणियस्स णो सम्मं गवेसित्ता भवति ४, इच्चेतेहिं चउहिं ठाणेहिं निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा जाव नो समुप्पज्जेज्जा, चउहिं ठाणेहिं निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पज्जिउकामे समुप्पज्जेज्जा, तं०-इत्थीकहं भत्तकहं देसकहं रायकहं नो कहेत्ता भवति १ विवेगेण विउस्सग्गेणं सम्ममप्पाणं भावेत्ता भवति २ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरतित्ता भवति ३ फासुयस्स एसणिज्जस्स उंछस्स सामुदाणियस्स सम्मं गवेसिया भवति, इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा जाव समुप्पज्जेज्जा। २८४। नो कप्पति निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा चउहिं महापडिवएहिं सज्झायं करेत्तए, तं०-आसाढपाडिवए इंदमहपाडिवए कत्तियपाडिवए सुगिम्हपाडिवए १, णो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा चउहिं संझाहिं सज्झायं करेत्तए, तं०-पढमाते पच्छिमाते मज्झण्हे अड्ढरत्ते २, कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा चाउक्कालं सज्झायं करेत्तए, तं०-पुव्वण्हे अवरण्हे पओसे पच्चूसे ।२८५। चउव्विहा लोगट्ठिती पं० तं०-आगासपतिट्ठिए वाते वातपतिट्ठिए उदधी उदधिपतिट्ठिया पुढवी पुढवीपइट्ठिया तसा थावरा पाणा ४।२८६। चत्तारि पुरिसजाता पं०तं०-तहे नाममेगे नोतहे नाममेगे सोवत्थी नाममेगे पधाणे नाममेगे ४, चत्तारि पुरिसजाया पं०तं०-आयंतकरे नाममेगे णो परंतकरे १ परंतकरे णाममेगे णो आतंतकरे २ एगे आतंतकरेवि परंतकरेवि ३ एगे णो आतंतकरे णो परंतकरे ४,२, चत्तारि पुरिसजाता पं०तं०-आतंतमे नाममेगे नो परंतमे, परंतमे नो ४,३, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-आयंदमे नाममेगे णो परंदमे ४,४, । २८७। चउव्विधा गरहा पं० तं०-उवसंपज्जामित्तेगा गरहा वितिगिच्छामित्तेगा गरहा जंकिंचिमिच्छामीत्तेगा गरहा एवंपि पन्नत्तेगा गरहा ।२८८। चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-अप्पणो नाममेगे अलमंथू भवति णो परस्स परस्स नाममेगे अलमंथू भवति णो अप्पणो एगे अप्पणोऽवि अलमंथू भवति परस्सवि एगे नो अप्पणो अलमंथू भवति णो परस्स १, चत्तारि मग्गा पं० तं०-उज्जू नाममेगे उज्जू उज्जू नाममेगे वंके वंके नाममेगे उज्जू वंके नाममेगे वंके २, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० (२४)

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं०-उज्जू नाममेगे उज्जू ४,३, चत्तारि मग्गा पं०तं०-खेमे नाममेगे खेमे खेमे णाममेगे अखेमे ४,४, एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं०तं०-खेमे णाममेगे खेमे, ४,५, चत्तारि मग्गा पं० तं०-खेमे णाममेगे खेमरूवे, खेमे णाममेगे अखेमरूवे ४, ६, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-खेमे नाममेगे खेमरूवे ४, ७, चत्तारि संवुक्का पं० तं०-वामे नाममेगे वामावत्ते वामे नाममेगे दाहिणावत्ते दाहिणे नाममेगे वामावत्ते दाहिणे नाममेगे दाहिणावत्ते ८, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-वामे नाममेगे वामावत्ते, ४, ९, चत्तारि धूमसिहाओ पं० तं०-वामा नाममेगा वामावत्ता ४, १०, एवामेव चत्तारित्थीओ पं० तं०-वामा णाममेगा वामावत्ता ४, ११, चत्तारि अग्गिसिहाओ पं० तं०-वामा णाममेगा वामावत्ता ४, १२, एवामेव चत्तारित्थीओ पं० तं०-वामा णा० ४,१३, चत्तारि वायमंडलिया पं० तं०-वामा णाममेगा वामावत्ता ४, १४, एवामेव चत्तारित्थीओ पं० तं०-वामा णाममेगा वामावत्ता ४, १५, चत्तारि वणसंडा पं० तं०-वामे नाममेगे वामावत्ते ४, १६, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-वामे णाममेगे वामावत्ते ४, १७। २८९। चउहिं ठाणेहिं णिग्गंथे णिग्गंथिं आलवमाणे वा संलवमाणे वा णातिक्कमति तं०-पंथं पुच्छमाणे वा १ पंथं देसेमाणे वा २ असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दलेमाणे वा ३ दलावेमाणे वा ४। २९०। तमुक्कायस्स णं चत्तारि नामधेज्जा पं० तं०-तमिति वा तमुक्कातेति वा अंधकारेति वा महंधकारेति वा, तमुक्कायस्स णं चत्तारि णामधेज्जा पं० तं०-लोगंधगारेति वा लोगतमसेति वा देवंधगारेति वा देवतमसेति वा, तमुकायस्स णं चत्तारि नामधेज्जा पं० तं०-वातफलिहेति वा वातफलिहखोभेति वा देवरन्नेति वा देववूढे(प्र० हे)ति वा, तमुक्काते णं चत्तारि कप्पे आवरित्ता चिट्ठति तं०-सोधम्मीसाणं सणंकुमारमाहिंदं। २९१। चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-संपागडपडिसेवी णाममेगे पच्छन्नपडिसेवी णाममेगे पडुप्पन्ननंदी (सेवी पा०) नाममेगे णिस्सरणणंदी णाममेगे १, चत्तारि सेणाओ पं० तं०-जतित्ता णाममेगे णो पराजिणित्ता पराजिणित्ता णाममेगे णो जतित्ता एगा जतित्तावि पराजिणित्तावि एगा नो जतित्ता नो पराजिणित्ता २, एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-जतित्ता नाममेगे नो पराजिणित्ता ४, ३, चत्तारि सेणाओ पं० तं०-जतित्ता णामं एगा जयई जइत्ता णाममेगा पराजिणति पराजिणित्ता णाममेगा जयति पराजिणित्ता नाममेगा पराजिणति ४,४, एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-जइत्ता नाममेगे जयति ४, ५।२९२। (चत्तारि राइओ पन्नत्ताओ तं०-पव्वयराई पुढवीराई रेणुराई जलराई, एवामेव चउव्विहे कोहे० पा०) चत्तारि केतणा पं० तं०-वंसीमूलकेतणते मेंढविसाणकेतणते गोमुत्तिकेतणते अवलेहणितकेतणते, एवामेव चउविधा माया पं० तं०-वंसीमूलकेतणासमाणा जाव अवलेहणितासमाणा, वंसीमूलकेतणासमाणं मायं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेति णेरइएसु उववज्जति, मेंढविसाणकेतणासमाणं मायमणुप्पविट्ठे जीवे कालं करेति तिरिक्खजोणितेसु उववज्जति, गोमुत्ति० जाव कालं करेति मणुस्सेसु उववज्जति, अवलेहणिता जाव देवेसु उववज्जति, चत्तारि थंभा पं० तं०-सेलथंभे अट्ठिथंभे दारुथंभे तिणिसलताथंभे, एवामेव चउव्विधे माणे पं० तं०-सेलथंभसमाणे जाव तिणिसलताथंभसमाणे, सेलथंभसमाणं माणं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेति नेरतिएसु उववज्जति, एवं जाव तिणिसलताथंभसमाणं माणं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेति देवेसु उववज्जति, चत्तारि वत्था पं० तं०-किमिरागरत्ते कद्दमरागरत्ते खंजणरागरत्ते हलिद्दरागरत्ते, एवामेव चउव्विधे लोभे पं० तं०-किमिरागरत्तवत्थसमाणे कद्दमरागरत्तवत्थसमाणे खंजणरागरत्तवत्थसमाणे हलिद्दरागरत्तवत्थसमाणे, किमिरागरत्तवत्थसमाणं लोभमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ नेरइएसु उववज्जइ, तहेव जाव हलिद्दरागरत्तवत्थसमाणं लोभमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ देवेसु उववज्जति। २९३। चउव्विहे संसारे पं० तं०-णेरतियसंसारे जाव देवसंसारे, चउव्विहे आउते पं० तं०-णेरतिआउते जाव देवाउते, चउव्विहे भवे पं० तं०-नेरतियभवे जाव देवभवे। २९४। चउव्विहे आहारे पं० तं०-असणे पाणे खाइमे साइमे, चउव्विहे आहारे पं० तं०-उवक्खरसंपन्ने (नोउवक्खरसंपन्ने पा०) उवक्खडसंपन्ने सभावसंपन्ने परिजुसियसंपन्ने। २९५। चउव्विहे बंधे पं० तं०-पगतिबंधे ठितीबंधे अणुभावबंधे पदेसबंधे, चउव्विहे उवक्कमे पं०तं०-बंधणोवक्कमे उदीरणोवक्कमे उवसमणोवक्कमे विप्परिणामणोवक्कमे, बंधणोवक्कमे चउव्विहे पं० तं०-पगतिबंधणोवक्कमे ठितिबंधणोवक्कमे अणुभावबंधणोवक्कमे पदेसबंधणोवक्कमे, उदीरणोवक्कमे चउव्विहे पं० तं०-पगतीउदीरणोवक्कमे ठितीउदीरणोवक्कमे अणुभावउदीरणोवक्कमे पदेसउदीरणोवक्कमे, उवसमणोवक्कमे चउव्विहे पं० तं०-पगतिउवसामणोवक्कमे ठिति० अणु० पतेसुवसामणोवक्कमे, विप्परिणामणोवक्कमे चउव्विहे पं० तं०-पगति० ठिती० अणु० पतेसविप्प०, चउव्विहे अप्पाबहुए पं० तं०-पगतिअप्पाबहुए ठिति० अणु० पतेसप्पाबहुते, चउव्विहे संकमे पं० तं०-पगतिसंकमे ठिती० अणु० पएससंकमे, चउव्विहे णिधत्ते पं० तं०-पगतिणिधत्ते ठिती० अणु० पएसणिधत्ते, चउव्विहे णिकायिते पं० तं०-पगतिणिकायिते ठिती०अणु० पएसणिकायिते। २९६। चत्तारि एक्का पं० तं०-दविएक्कते माउपएक्कते पज्जतेक्कते संगहेक्कते। २९७। चत्तारि कती पं० तं०-दवितकती माउयपयकती पज्जवकती संगहकती। २९८। चत्तारि सव्वा पं० तं०-नामसव्वए ठवणसव्वए आएससव्वते निरवसेससव्वते। २९९। माणुसुत्तरस्स णं पव्वयस्स चउदिसिं चत्तारि कूडा पं० तं०-रयणे रतणुच्चते सव्वरयणे रतणसंचये। ३००। जंबुद्दीवे २

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भरहेरवतेसु वासेसु तीताते उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो हुत्था, जंबुद्दीवे २ भरहेरवते इमीसे ओसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो हुत्था, जंबुद्दीवे २ भरहेरवएसु वासेसु आगमेस्साते उस्सप्पिणीते सुसमसुसमाते समाए चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो भविस्सइ।३०१। जंबुद्दीवे २ देवकुरुउत्तरकुरुवज्जाओ चत्तारि अकम्मभूमीओ पं० तं०-हेमवते हेरन्नवते हरिवस्से रम्मगवासे, चत्तारि वट्टवेयड्ढपव्वता पं० तं०-सद्दावई वियडावई गंधावई मालवंतपरियाते, तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढितीया जाव पलिओवमट्ठितीता परिवसंति, तं०-साती पभासे अरुणे पउमे, जंबुद्दीवे २ महाविदेहे वासे चउव्विहे पं० तं०-पुव्वविदेहे अवरविदेहे देवकुरा उत्तरकुरा, सव्वेऽवि णं णिसढणीलवंतवासहरपव्वता चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं चत्तारि गाउयसयाइं उव्वेहेणं पं०, जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं सीताए महानदीए उत्तरकूले चत्तारि वक्खारपव्वया पं० तं०-चित्तकूडे पम्हकूडे णलिणकूडे एगसेले, जंबू०मंदर०पुर०सीताए महानदीए दाहिणकूले चत्तारि वक्खारपव्वया पं० तं०-तिकूडे वेसमणकूडे अंजणे मातंजणे, जंबू० मंदर० पच्चत्थिमेणं सीओदाए महानतीए दाहिणकूले चत्तारि वक्खारपव्वता पं० तं०-अंकावती पम्हावती आसीविसे सुहावहे, जंबू०मंदर०पच्च०सीओदाए महाणतीते उत्तरकूले चत्तारि वक्खारपव्वया पं० तं०-चंदपव्वते सूरपव्वते देवपव्वते णागपव्वते, जंबू०मंदरस्स पव्वयस्स चउसु विदिसासु चत्तारि वक्खारपव्वया पं० तं०-सोमणसे विज्जुपभे गंधमायणे मालवंते, जंबुद्दीवे २ महाविदेहे वासे जहन्नपते चत्तारि अरहंता चत्तारि चक्कवट्टी चत्तारि बलदेवा चत्तारि वासुदेवा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा, जंबुद्दीवे २ मंदरपव्वते चत्तारि वणा पं० तं०-भद्दसालवणे नंदणवणे सोमणसवणे पंडगवणे, जंबू०मन्दरे पव्वए पंडगवणे चत्तारि अभिसेगसिलाओ पं० तं०-पंडुकंबलसिला अइपंडुकंबलसिला रत्तकंबलसिला अतिरत्तकंबलसिला, मंदरचूलिया णं उवरिं चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं पन्नत्ता, एवं धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धेऽवि कालं आदिं करेत्ता जाव मंदरचूलियत्ति, एवं जाव पुक्खरवरदीवपच्चच्छिमद्धे जाव मंदरचूलियत्ति-जंबूद्दीवग(वे जं पा०)आवस्सगं तु कालाओ चूलिया जाव। धायइसंडे पुक्खरवरे य पुव्वावरे पासे॥१९॥३०२। जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स चत्तारि दारा पं० तं०-विजये वेजयंते जयंते अपराजिते, ते णं दारा चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं तावतितं चेव पवेसेणं पं०, तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढीया जाव पलिओवमट्ठितीता परिवसंति-विजते वेजयंते जयंते अपराजिते।३०३। जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं तिन्नि २ जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पं० तं०-एगूरूयदीवे आभासियदीवे वेसाणितदीवे णंगूलियदीवे, तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसंति, तं०-एगूरूता आभासिता वेसाणिता णंगोलिया, तेसिं णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं चत्तारि २ जोयणसयाइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पं० तं०-हयकन्नदीवे गयकन्नदीवे गोकन्नदीवे संकुलिकन्नदीवे, तेसु णं दीवेसु चउव्विधा मणुस्सा परिवसंति तं०-हयकन्ना गयकन्ना गोकन्ना संकुलिकन्ना, तेसिं णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं पंच २ जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पं० तं०-आयंसमुहदीवे मेंढमुहदीवे अओमुहदीवे गोमुहदीवे, तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा भाणियव्वा, तेसिं णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं छ छ जोयणसयाइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पं० तं०-आसमुहदीवे हत्थिमुहदीवे सीहमुहदीवे वग्घमुहदीवे, तेसु णं दीवेसु मणुस्सा भाणियव्वा, तेसिं णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं सत्त सत्त जोयणसयाइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पं०तं०-आसकन्नदीवे हत्थिकन्नदीवे अकन्नदीवे कन्नपाउरणदीवे, तेसु णं दीवेसु मणुया भाणियव्वा, तेसिं णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं अट्ठट्ठ जोयणसयाइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पं० तं०-उक्कामुहदीवे मेहमुहदीवे विज्जुमुहदीवे विज्जुदंतदीवे, तेसु णं दीवेसु मणुस्सा भाणियव्वा, तेसिं णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं णव णव जोयणसयाइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पं०तं०-घणदंतदीवे लट्ठदंतदीवे गूढदंतदीवे सुद्धदंतदीवे, तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसंति, तं०-घणदंता लट्ठदंता गूढदंता सुद्धदंता, जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं सिहरिस्स वासहरपव्वयस्स चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं तिन्नि २ जोयणसयाइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पं० तं०-एगूरूयदीवे सेसं तदेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव सुद्धदंता।३०४। जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेतितंताओ चउदिसिं लवणसमुद्दं पंचाणउइं जोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता एत्थ णं महतिमहालता महालंजरसंठाणसंठिता चत्तारि महापायाला पं० तं०-वलतामुहे केउते जूवए ईसरे, एत्थ (प्र० तत्थ) णं चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीता परिवसंति, तं०-काले महाकाले वेलंबे पभंजणे, जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेतितंताओ चउदिसिं लवणसमुद्दं बायालीसं २ जोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चउण्हं वेलंधरनागराईणं चत्तारि आवासपव्वता पं० तं०-गोथूभे उदयभासे संखे दगसीमे, तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीता परिवसंति तं०-गोथूभे सिवए संखे मणोसिलाते, जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयंताओ चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं बायालीसं २ जोयणसहस्साइं ओगा-

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हेत्ता एत्थ णं चउण्हं अणुवेलंधरणागरातीणं चत्तारि आवासपव्वता पं० तं०-ककोडए विज्जुप्पभे केलासे अरुणप्पभे, तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीता परिवसंति, तं०-ककोडए कद्दमए केलासे अरुणप्पभे, लवणे णं समुद्दे णं चत्तारि चंदा पभासिंसु वा पभासंति वा पभासिस्संति वा, चत्तारि सूरिता तविंसु वा तवंति वा तविस्संति वा, चत्तारि कत्तियाओ जाव चत्तारि भरणीओ, चत्तारि अग्गी जाव चत्तारि जमा, चत्तारि अंगारा जाव चत्तारि भावकेऊ, लवणस्स णं समुद्दस्स चत्तारि दारा पं० तं०-विजए विजयंते जयंते अपराजिते, ते णं दारा णं चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं तावतितं चेव पवेसेणं पं०, तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितिया परिवसंति-विजये वेजयंते जयंते अपराजिए ।३०५। धायइसंडे दीवे चत्तारि जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पं०, जंबुदीवस्स णं दीवस्स बहिया चत्तारि भरहाइं चत्तारि एरवयाइं, एवं जहा सहुद्देसते तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव चत्तारि मंदरा चत्तारि मन्दरचूलिआओ ।३०६। [अथ नन्दीश्वरविचारः] णंदीसरवरस्स णं दीवस्स चक्कवालविक्खंभस्स बहुमज्झदेसभागे चउद्दिसिं चत्तारि अंजणगपव्वता पं० तं०-पुरत्थिमिल्ले अंजणगपव्वते दाहिणिल्ले अंजणगपव्वए पच्चत्थिमिल्ले अंजणगपव्वते उत्तरिल्ले अंजणगपव्वते, ते णं अंजणगपव्वता चउरासीतिं जोयणसहस्साइं उड्ढंउच्चत्तेणं (सहस्सं) उव्वेहेणं मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं तदणंतरं च णं मायाए २ परिहातेमाणा २ उवरिमेगं जोयणसहस्सं विक्खंभेणं पण्णत्ता, मूले इक्कतीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोयणसते एगं जोयणसहस्सं परिक्खेवेणं, उपरिं तिन्नि २ जोयणसहस्साइं एगं च छावट्ठं जोयणसतं परिक्खेवेणं, मूले विच्छिन्ना मज्झे संखेत्ता उप्पिं तणुया गोपुच्छसंठाणसंठिता सव्वअंजणमया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा समिरीया सउज्जोया पासाईया दरिसणीया अभिरूवा पडिरूवा, तेसिं णं अंजणगपव्वयाणं उवरिं बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा पं०, तेसिं णं बहुसमरमणिज्जभूमिभागाणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि सिद्धाययणा पण्णत्ता, ते णं सिद्धाययणा एगं जोयणसयं आयामेणं पण्णत्ता पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं बावत्तरि जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं, तेसिं सिद्धाययणाणं चउदिसिं चत्तारि दारा पं० तं०-देवदारे असुरदारे णागदारे सुवन्नदारे, तेसु णं दारेसु चउव्विहा देवा परिवसंति, तं०-देवा असुरा नागा सुवण्णा, तेसिं णं दाराणं पुरतो चत्तारि मुहमंडवा पं०, तेसिं णं मुहमंडवाणं पुरओ चत्तारि पेच्छाघरमंडवा पं०, तेसिं णं पेच्छाघरमंडवाणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि वइरामया अक्खाडगा पं०, तेसिं णं वइरामयाणं अक्खाडगाणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि मणिपेढियातो पं०, तासिं णं मणिपेढिताणं उवरिं चत्तारि सीहासणा पं०, तेसिं णं सीहासणाणं उवरिं चत्तारि विजयदूसा पन्नत्ता, तेसिं णं विजयदूसगाणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि वइरामता अंकुसा पं०, तेसु णं वतिरामतेसु अंकुसेसु चत्तारि कुंभिका मुत्तादामा पं०, ते णं कुंभिका मुत्तादामा पत्तेयं २ अन्नेहिं तदद्धउच्चत्तपमाणमित्तेहिं चउहिं अद्धकुंभिकेहिं मुत्तादामेहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता, तेसिं णं पेच्छाघरमंडवाणं पुरओ चत्तारि मणिपेढिताओ पण्णत्ताओ, तासिं णं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि २ चेतितथूभा पण्णत्ता, तासिं णं चेतितथूभाणं पत्तेयं २ चउद्दिसिं चत्तारि मणिपेढियातो पं०, तासिं णं मणिपेढिताणं उवरिं चत्तारि जिणपडिमाओ सव्वरयणामईतो संपलियंकणिसन्नाओ थूभाभिमुहीओ चिट्ठंति, तं०-रिसभा वद्धमाणा चंदाणणा वारिसेणा, तेसिं णं चेतितथूभाणं पुरतो चत्तारि मणिपेढिताओ पं०, तासिं णं मणिपेढिताणं उवरिं चत्तारि चेतितरुक्खा पं०, तेसिं णं चेतितरुक्खाणं पुरओ चत्तारि मणिपेढियाओ पं०, तासिं णं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि महिंदज्झया पं०, तेसिं णं महिंदज्झताणं पुरओ चत्तारि णंदातो पुक्खरिणीओ पं०, तासिं णं पुक्खरिणीणं पत्तेयं २ चउदिसिं चत्तारि वणसंडा पं० तं०-पुरच्छिमेणं दाहिणेणं पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं-पुव्वेण असोगवणं दाहिणओ होइ सत्तवण्णवणं। अवरेण चंपगवणं चूतवणं उत्तरे पासे ॥२०॥ तत्थ णं जे से पुरच्छिमिल्ले अंजणगपव्वते तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि णंदाओ पुक्खरिणीतो पं० तं०-णंदुत्तरा णंदा आणंदा नंदिवद्धणा, ताओ णंदाओ पुक्खरिणीओ एगं जोयणसयसहस्सं आयामेणं पन्नासं जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं दस जोयणसताइं उव्वेहेणं, तासिं णं पुक्खरिणीणं पत्तेयं २ चउद्दिसिं चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा, तेसिं णं तिसोवाणपडिरूवगाणं पुरतो चत्तारि तोरणा पं० तं०-पुरच्छिमेणं दाहिणेणं पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं, तासिं णं पुक्खरणीणं पत्तेयं २ चउद्दिसिं चत्तारि वणसंडा पं० तं०-पुरतो दाहिण० पच्च० उत्तरेणं, पुव्वेणं असोगवणं जाव चूयवणं उत्तरे पासे, तासिं णं पुक्खरिणीणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि दधिमुहगपव्वया पं०, ते णं दधिमुहगपव्वया चउसट्ठिं जोयणसहस्साइं उड्ढंउच्चत्तेणं एगं जोयणसहस्सं उव्वेहेणं सव्वत्थ समा पल्लगसंठाणसंठिता दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं एक्कतीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोयणसते परिक्खेवेणं सव्वरयणामता अच्छा जाव पडिरूवा, तेसिं णं दधिमुहगपव्वताणं उवरिं बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा पं०, सेसं जहेव अंजणगपव्वताणं तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव चूतवणं उत्तरे पासे, तत्थ णं जे से दाहिणिल्ले अंजणगपव्वते तस्स णं चउदिसिं चत्तारि णंदाओ पुक्खरिणीओ पं० तं०-भद्दा विसाला कुमुदा पुंडरीगिणी, तातो णंदातो० एगं जोयणसयसहस्सं सेसं तं चेव जाव दधिमुहगपव्वता जाव वणसंडा, तत्थ णं जे से पच्चत्थिमिल्ले अंजणगपव्वते तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि णंदाओ पुक्खरिणीओ पं० तं०-णंदिसेणा अमोहा

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोथूभा सुदंसणा, सेसं तं चेव, तहेव दधिमुहगपव्वता तहेव सिद्धाययणा जाव वणसंडा, तत्थ णं जे से उत्तरिल्ले अंजणगपव्वते तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि णंदाओ पुक्खरिणीओ पं० तं०-विजया वेजयंती जयंती अपराजिता, तातो णं पुक्खरिणीओ एगं जोयणसयसहस्सं तं चेव पमाणं तहेव दधिमुहगपव्वता तहेव सिद्धाययणा जाव वणसंडा, णंदीसरवरस्स णं दीवस्स चक्कवालविक्खंभस्स बहुमज्झदेसभागे चउसु विदिसासु चत्तारि रतिकरगपव्वता पं० तं०-उत्तरपुरच्छिमिल्ले रतिकरगपव्वते दाहिणपुरच्छिमिल्ले रइकरगपव्वए दाहिणपच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वते उत्तरपच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वए, ते णं रतिकरगपव्वता दस जोयणसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं दस गाउतसताइं उव्वेहेणं सव्वत्थ समा झल्लरिसंठाणसंठिता दस जोयणसहस्साइं विक्खभेणं एक्कतीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोयणसते परिक्खेवेणं सव्वरयणामता अच्छा जाव पडिरूवा, तत्थ णं जे से उत्तरपुरच्छिमिल्ले रतिकरगपव्वते तस्स णं चउदिसिं ईसाणस्स देविंदस्स देवरन्नो चउण्हमग्गमहिसीणं जबुद्दीवपमाणाओ चत्तारि रायहाणीओ पं० तं०-णंदुत्तरा णंदा उत्तरकुरा देवकुरा, कण्हाते कण्हरातीते रामाए रामरक्खियाते, तत्थ णं जे से दाहिणपुरच्छिमिल्ले रतिकरगपव्वते तस्स णं चउद्दिसिं सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुद्दीवपमाणातो चत्तारि रायहाणीओ पं० तं०-समणा सोमणसा अच्चिमाली मणोरमा, पउमाते सिवाते सतीते अंजूए, तत्थ णं जे से दाहिणपच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वते तत्थ णं चउद्दिसिं सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुद्दीवपमाणमेत्तातो चत्तारि रायहाणीओ पं० तं०-भूता भूतवडेंसा गोथूभा सुदंसणा, अमलाते अच्छराते णवमितीते रोहिणीते, तत्थ णं जे से उत्तरपच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वते तस्स णं चउदिसिमीसाणस्स देविंदस्स देवरन्नो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुद्दीवप्पमाणमित्तातो चत्तारि रायहाणीओ पं०तं०-रयणा रतणुच्चता सव्वरतणा रतणसंचया, वसूते वसुगुत्ताते वसुमित्ताते वसुंधराए।३०७। चउव्विहे सच्चे पं० तं०-णामसच्चे ठवणसच्चे दव्वसच्चे भावसच्चे।३०८। आजीवियाणं चउव्विहे तवे पं० तं०-उग्गतवे (ओरालतवे पा०) घोरतवे रसणिज्जूहणता जिब्भिदियपडिसंलीणता।३०९। चउव्विहे संजमे पं० तं०-मणसंजमे वतिसंजमे कायसंजमे उवगरणसंजमे, चउव्विधे चिताते पं० तं०-मणचिताये वतिचियाते कायचियाते उवगरणचियाते, चउव्विहा अकिंचणता पं० तं०-मणअकिंचणता वतिअकिंचणता कायअकिंचणता उवगरणअकिंचणता।३१०॥ अ० ४ उ० २॥ चत्तारि रातीओ पं० तं०-पव्वयराती पुढवीराती वालुयराती उदगराती, एवामेव चउव्विहे कोहे पं० तं०-पव्वयरातिसमाणे पुढवीरातिसमाणे वालुयरातिसमाणे उदगरातिसमाणे, पव्वयरातिसमाणं कोहं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ णेरइतेसु उववज्जति, पुढवीरातिसमाणं कोहमणुप्पविट्ठे० तिरिक्खजोणितेसु उववज्जति, वालुयरातिसमाणं कोहं अणुपविट्ठे समाणे० मणुस्सेसु उववज्जति, उदगरातिसमाणं कोहमणुपविट्ठे समाणे० देवेसु उववज्जति १। चत्तारि उदगा पं० तं०-कद्दमोदए खंजणोदए वालुओदए सेलोदए, एवामेव चउव्विहे भावे पं० तं०-कद्दमोदगसमाणे खंजणोदगसमाणे वालुओदगसमाणे सेलोदगसमाणे, कद्दमोदगसमाणं भावमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ णेरइएसु उववज्जति, एवं जाव सेलोदगसमाणं भावमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ देवेसु उववज्जइ।३११। चत्तारि पक्खी पं०तं०-रुयसंपन्ने नाममेगे णो रूवसंपन्ने रूवसंपन्ने नाममेगे नो रुतसंपन्ने एगे रूवसंपन्नेऽवि रुतसंपन्नेवि नो रुतसंपन्ने णो रूवसंपन्ने, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-रुयसंपन्ने नाममेगे णो रूवसंपन्ने० ४, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-पत्तियं करेमीतेगे पत्तियं करेइ पत्तियं करेमीतेगे अपत्तितं करेति अप्पत्तियं करेमीतेगे पत्तितं करेइ अप्पत्तियं करेमीतेगे अप्पत्तितं करेति, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-अप्पणो णाममेगे पत्तितं करेति णो परस्स परस्स नाममेगे पत्तियं करेति णो अप्पणो० ४, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-पत्तियं पवेसाग्गीतेगे पत्तितं पवेसेइ पत्तियं पवेसामीतेगे अप्पत्तितं पवेसेति० ४, चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-अप्पणो नाममेगे पत्तितं पवेसेइ णो परस्स परस्स० ४।३१२। चत्तारि रुक्खा पं० तं०-पत्तोवए पुप्फोवए फलोवए छायोवए, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-पत्तोवारुक्खसमाणे पुप्फोवारुक्खसमाणे फलोवारुक्खसमाणे छातोवारुक्खसमाणे।३१३। भारण्णं वहमाणस्स चत्तारि आसासा पन्नत्ता, तं०-जत्थ णं अंसातो अंसं साहरइ तत्थऽविय से एगे आसासे पण्णत्ते १ जत्थऽविय णं उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठावेति तत्थऽविय से एगे आसासे पण्णत्ते २ जत्थऽविय णं णागकुमारावासंसि वा सुवन्नकुमारावासंसि वा वासं उवेति तत्थऽविय से एगे आसासे पन्नत्ते ३ जत्थऽविय णं आवकधाते चिट्ठति तत्थऽविय से एगे आसासे पन्नत्ते ४, एवामेव समणोवासगस्स चत्तारि आसासा पं० तं०-जत्थ णं सीलव्वतगुणव्वतवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासाइं पडिवज्जेति तत्थऽविअ से एगे आसासे पण्णत्ते १ जत्थऽविय णं सामाइयं देसावगासियं सम्ममणुपालेइ तत्थऽविय से एगे आसासे पं० २ जत्थऽविय णं चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुन्नमासिणीसु पडिपुन्नं पोसहं सम्मं अणुपालेइ तत्थऽविय से एगे आसासे पण्णत्ते ३ जत्थऽवि य णं अपच्छिममारणंतितसंलेहणाजूसणाजूसिते भत्तपाणपडितातिक्खिते पाओवगते कालमणवकंखमाणे विहरति तत्थऽविय से एगे आसासे पन्नत्ते।३१४। चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-उदितोदिते णाममेगे उदितत्थमिते णाममेगे अत्थमितोदिते णाममेगे अत्थमियत्थमिते णाममेगे, भरहे राया चाउरंतचक्कवट्टी णं उदितोदिते १ बंभदत्ते णं राया चाउरंतचक्कवट्टी उदिअत्थमिते २ हरितेसबले णमणगारे णमत्थमिओदिते ३ काले णं सोयरिये अत्थमितत्थमिते ४।३१५। चत्तारि जुम्मा पं०तं०-कडजुम्मे तेयोए (२५)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org
मुनि दीपरत्नसागर

दावरजुम्मे कलिओए, नेरतिताणं चत्तारि जुम्मा पं० तं०-कडजुम्मे तेओए दावरजुम्मे कलितोए, एवं असुरकुमाराणं जाव थणियकुमाराणं, एवं पुढवीकाइयाणं आउ० तेउ० वाउ० वणस्सति० बेंदिताणं तेंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं वाणमंतराणं जोइसियाणं वेमाणियाणं सव्वेसिं जहा णेरइयाणं। ३१६। चत्तारि सूरा पं० तं०-खंतिसूरे तवसूरे दाणसूरे जुद्धसूरे, खंतिसूरा अरहंता तवसूरा अणगारा दाणसूरे वेसमणे जुद्धसूरे वासुदेवे।३१७। चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-उच्चे णाममेगे उच्चच्छंदे उच्चे णाममेगे णीतच्छंदे णीते णाममेगे उच्चच्छंदे नीए णाममेगे णीयच्छंदे। ३१८। असुरकुमाराणं चत्तारि लेसातो पं० तं०-कण्हलेसा णीललेसा काउलेसा तेउलेसा, एवं जाव थणियकुमाराणं, एवं पुढवीकाइयाणं आउवणस्सइकाइयाणं वाणमंतराणं सव्वेसिं जहा असुरकुमाराणं। ३१९। चत्तारि जाणा पं० तं०-जुत्ते णाममेगे जुत्ते जुत्ते नाममेगे अजुत्ते अजुत्ते नाममेगे जुत्ते अजुत्ते णाममेगे अजुत्ते, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-जुत्ते णाममेगे जुत्ते जुत्ते णाममेगे अजुत्ते० ४, चत्तारि जाणा पं० तं०-जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते जुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते०, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं०तं०-जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते० ४, चत्तारि जाणा पं०तं०-जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे जुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे अजुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे० ४, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं०तं०-जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे० ४, चत्तारि जाणा पं०तं०-जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे० ४, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं०तं०-जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे० ४, चत्तारि जुग्गा पं०तं०-जुत्ते नाममेगे जुत्ते० ४, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं०तं०-जुत्ते णाममेगे जुत्ते० ४, एवं जधा जाणेण चत्तारि आलावगा तथा जुग्गेणवि, पडिपक्खो तहेव पुरिसजाता जाव सोभेत्ति। चत्तारि सारही पं० तं०-जोयावइत्ता णामं एगे नो विजोयावइत्ता विजोयावइत्ता नामं एगे नो जोयावइत्ता एगे जोयावइत्तावि विजोयावइत्तावि एगे नो जोयावइत्ता नो विजोयावइत्ता, एवामेव चत्तारि हया पं० तं०-जुत्ते णामं एगे जुत्ते जुत्ते णाममेगे अजुत्ते० ४, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-जुत्ते णाममेगे जुत्ते० ४ एवं जुत्तपरिणते जुत्तरूवे जुत्तसोभे सव्वेसिं पडिवक्खो पुरिसजाता। चत्तारि गया पं०तं०-जुत्ते णाममेगे जुत्ते० ४, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं०तं०-जुत्ते णाममेगे जुत्ते० ४, एवं जहा हयाणं तहा गयाणऽवि भाणियव्वं, पडिवक्खा तहेव पुरिसजाया। चत्तारि जुग्गारिता पं० तं०-पंथजाती णाममेगे णो उप्पहजाती उप्पथजाती णाममेगे णो पंथजाती एगे पंथजातीऽवि उप्पहजातीऽवि एगे णो पंथजाती णो उप्पहजाती, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया। चत्तारि पुप्फा पं० तं०-रूवसंपन्ने नाममेगे णो गंधसंपन्ने गंधसंपन्ने णाममेगे नो रूवसंपन्ने एगे रूवसंपन्नेऽवि गंधसंपन्नेऽवि एगे णो रूवसंपन्ने णो गंधसंपन्ने, एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-रूवसंपन्ने णाममेगे णो सीलसंपन्ने० ४, चत्तारि पुरिसजाया पं०तं०-जातिसंपन्ने नाममेगे नो कुलसंपन्ने० ४, १, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-जातिसंपण्णे नामं एगे णो बलसंपन्ने बलसंपन्ने नामं एगे णो जातिसंपन्ने० ४,२, एवं जातीते रूवेण चत्तारि आलावगा ३, एवं जातीते सुएण ४, ४, एवं जातीते सीलेण ४, ५, एवं जातीते चरित्तेण ४, ६, एवं कुलेण बलेण ४, ७, एवं कुलेण रूवेण ४, ८, कुलेण सुतेण ४, ९, कुलेण सीलेण ४, १०, कुलेण चरित्तेण ४, ११, चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-बलसंपण्णे नाममेगे णो रूवसंपन्ने० ४,१२, एवं बलेण सुतेण ४,१३, एवं बलेण सीलेण ४,१४, एवं बलेण चरित्तेण ४, १५, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-रूवसंपन्ने नाममेगे णो सुयसंपण्णे० ४, १६, एवं रूवेण सीलेण ४,१७, रूवेण चरित्तेण ४,१८, चत्तारि पुरिसजाता पं०तं०-सुयसंपन्ने नाममेगे णो सीलसंपन्ने० ४,१९, एवं सुतेण चरित्तेण य ४,२०, चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-सीलसंपन्ने नाममेगे नो चरित्तसंपन्ने० ४,२१, एते एक्कवीसं भंगा भाणितव्वा, चत्तारि फला पं०तं०-आमलगमहुरे मुद्दितामहुरे खीरमहुरे खंडमहुरे, एवामेव चत्तारि आयरिया पं० तं०-आमलगमहुरफलसमाणे जाव खंडमहुरफलसमाणे, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-आतवेतावच्चकरे नाममेगे नो परवेतावच्चकरे० ४, चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-करेति नाममेगे वेयावच्चं णो पडिच्छइ पडिच्छइ नाममेगे वेयावच्चं नो करेइ० ४, चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-अट्ठकरे णाममेगे णो माणकरे माणकरे णाममेगे णो अट्ठकरे एगे अट्ठकरेऽवि माणकरेऽवि एगे णो अट्ठकरे णो माणकरे, चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-गणट्ठकरे णाममेगे णो माणकरे० ४, चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-गणसंगहकरे णाममेगे णो माणकरे० ४, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-गणसोभकरे णामं एगं णो माणकरे० ४, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-गणसोहिकरे णाममेगे नो माणकरे० ४, चत्तारि पुरिसजाया पं०तं०-रूवं नाममेगे जहति नो धम्मं धम्मं नाममेगे जहति नो रूवं एगे रूवंपि जहति धम्मंपि जहति एगे नो रूवं जहति नो धम्मं, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-धम्मं नाममेगे जहति नो गणसंठितिं० ४, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-पियधम्मे नाममेगे नो दढधम्मे दढधम्मे नाममेगे नो पितधम्मे एगे पियधम्मेऽवि दढधम्मेऽवि एगे नो पियधम्मे नो दढधम्मे, चत्तारि आयरिया पं० तं०-पव्वायणायरिते नाममेगे णो उवट्ठावणायरिते उवट्ठावणायरिए णाममेगे णो पव्वायणायरिए एगे पव्वायणातरितेऽवि उवट्ठावणातरितेऽवि एगे नो पव्वायणातरिते नो उट्ठावणातरिते धम्मायरिए ४, चत्तारि आयरिया पं० तं०-उद्देसणायरिए णाममेगे णो वायणायरिए० धम्मायरिए ४, चत्तारि अंतेवासी पं० तं०-पव्वायणंतेवासी नामं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगे णो उवट्टावणंतेवासी० धम्मंतेवासी ४, चत्तारि अंतेवासी पं० तं०-उद्देसणंतेवासी नामं एगे नो वायणंतेवासी० धम्मंतेवासी ४, चत्तारि निग्गंथा पं० तं०-रातिणिये समणे निग्गंथे महाकम्मे महाकिरिए अणायावी असमिते धम्मस्स अणाराधते भवति १ राइणिते समणे निग्गंथे अप्पकम्मे अप्पकिरिते आतावी समिए धम्मस्स आराहते भवति २ ओमरातिणिते समणे निग्गंथे महाकम्मे महाकिरिते अणातावी असमिते धम्मस्स अणाराहते भवति ३ ओमरातिणिते समणे निग्गंथे अप्पकम्मे अप्पकिरिते आतावी समिते धम्मस्स आराहते भवति ४, चत्तारि णिग्गंथीओ पं० तं०-रातिणिया समणी निग्गंथी० एवं चेव ४, चत्तारि समणोवासगा पं० तं०-रायणिते समणोवासए महाकम्मे० तहेव ४, चत्तारि समणोवासिताओ पं० तं०-राइणिया समणोवासिता महाकम्मा० तहेव चत्तारि गमा।३२०। चत्तारि समणोवासगा पं० तं०-अम्मापितिसमाणे भातिसमाणे मित्तसमाणे सवत्तिसमाणे, चत्तारि समणोवासगा पं० तं०-अद्दागसमाणे पडागसमाणे खाणुसमाणे खरकंटयसमाणे ।३२१। समणस्स णं भगवतो महावीरस्स समणोवासगाणं सोधम्मकप्पे अरुणाभे विमाणे चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पन्नत्ता।३२२। चउहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तते णो चेव णं संचातेति हव्वमागच्छित्तते, तं०-अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते गिद्धे गढिते अज्झोववन्ने से णं माणुस्सए कामभोगे नो आढाइ नो परियाणाति णो अट्ठं बंधइ णो णिताणं पगरेति णो ठितिपगप्पं पगरेति १ अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते० तस्स णं माणुस्सते पेम्मे वोच्छिन्ने दिव्वे संकंते भवति २ अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते० तस्स णं एवं भवति-इण्हिं गच्छं मुहुत्तेणं गच्छं तेणं कालेणमप्पाउया मणुस्सा कालधम्मुणा संजुत्ता भवंति ३ अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते० तस्स णं माणुस्सए गंधे पडिकूले पडिलोमे तावि भवति, उड्ढंपिय णं माणुस्सए गंधे जाव चत्तारि पंच जोयणसताइं हव्वमागच्छति ४, इच्चेतेहिं चउहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचातेति हव्वमागच्छित्तए। चउहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तते संचाएइ हव्वमागच्छित्तए, तं०-अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिते जाव अणज्झोववन्ने तस्स णं एवं भवति-अत्थि खलु मम माणुस्सए भवे आयरितेति वा उवज्झाएति वा पवत्तीति वा थेरेति वा गणीति वा गणधरेति वा गणावच्छेएति वा जेसिं पभावेणं मए इमा एतारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुत्ती लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया, तं गच्छामि णं ते भगवंते वंदामि जाव पज्जुवासामि १ अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु जाव अणज्झोववन्ने तस्स णमेवं भवति-एस णं माणुस्सए भवे णाणीति वा तवस्सीति वा अइदुक्करदुक्करकारते तं गच्छामि णं ते भगवंते वंदामि जाव पज्जुवासामि २ अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु जाव अणज्झोववन्ने तस्स णमेवं भवति-अत्थि णं मम माणुस्सए भवे मातीति वा जाव सुण्हाति वा तं गच्छामि णं तेसिमंतितं पाउब्भवामि पासंतु ता मे (इमे पा०) इममेतारूवं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुत्तिं लद्धं पत्तं अभिसमन्नागतं ३ अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु जाव अणज्झोववन्ने तस्स णमेवं भवति-अत्थि णं मम माणुस्सए भवे मित्तेति वा सहीति वा सुहीति वा सहाएति वा संगएति वा तेसिं च णं अम्हे अन्नमन्नस्स संगारे पडिसुते भवति जो मे पुव्विं चयति से संबोहेतव्वे, इच्चेतेहिं जाव संचातेति हव्वमागच्छित्तते ४।३२३। चउहिं ठाणेहिं लोगंधगारे सिया, तं०-अरहंतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं १ अरहंतपन्नत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे २ पुव्वगते वोच्छिज्जमाणे ३ जायतेते वोच्छिज्जमाणे ४। चउहिं ठाणेहिं लोउज्जोते सिता, तं०-अरहंतेहिं जायमाणेहिं १ अरहंतेहिं पव्वतमाणेहिं २ अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु ३ अरहंताणं परिनिव्वाणमहिमासु ४, एवं देवंधगारे देवुज्जोते देवसन्निवाते देवुक्कलिताते देवकहकहते, चउहिं ठाणेहिं देविंदा माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छंति एवं जहा तिठाणे जाव लोगंतिता देवा माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छेज्जा, तं०-अरहंतेहिं जायमाणेहिं जाव अरिहंताणं परिनिव्वाणमहिमासु।३२४। चत्तारि दुहसेज्जाओ पं०, तत्थ खलु इमा पढमा दुहसेज्जा तं०-से णं मुंडे भवित्ता अगारातो अणगारियं पव्वतिते निग्गंथे पावयणे संकिते कंखिते वितिगिच्छिते भेयसमावन्ने कलुससमावन्ने निग्गंथं पावयणं णो सद्दहति णो पत्तियति णो रोएइ, निग्गंथं पावयणं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे मणं उच्चावतं नियच्छति विणिघातमावज्जति पढमा दुहसेज्जा १ अहावरा दुच्चा दुहसेज्जा-से णं मुंडे भवित्ता आगारातो जाव पव्वतिते सएणं लाभेणं णो तुस्सति परस्स लाभमासाएति पीहेति पत्थेति अभिलसति परस्स लाभमासाएमाणे जाव अभिलसमाणे मणं उच्चावयं नियच्छइ विणिघातमावज्जति दोच्चा दुहसेज्जा २ अहावरा तच्चा दुहसेज्जा-से णं मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए दिव्वमाणुस्सए कामभोगे आसाएइ जाव अभिलसति दिव्वमाणुस्सए कामभोगे आसाएमाणे जाव अभिलसमाणे मणं उच्चावयं नियच्छति विणिघातमावज्जति तच्चा दुहसेज्जा ३ अहावरा चउत्था दुहसेज्जा-से णं मुंडे जाव पव्वइए तस्स णमेवं भवति जया णं अहमगारवासमावसामि तदा णमहं संवाहणपरिमद्दणगातब्भंगगातुच्छोलणाइं लभामि जप्पभिइं च णं अहं मुंडे जाव पव्वतिते तप्पभिइं च णमहं संवाहण जाव गातुच्छोलणाइं णो लभामि, से णं संवाहण जाव गातुच्छोलणाइं आसाएति जाव अभिलसति से णं संवाहण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org
मुनि दीपरत्नसागर

जाव गातुच्छोलणाइं आसाएमाणे जाव मणं उच्चावतं नियच्छति विणिघायमावज्जति, चउत्था दुहसेज्जा ४। चत्तारि सुहसेज्जाओ पं०, तत्थ खलु इमा पढमा सुहसेज्जा-से णं मुंडे भवित्ता आगारातो अणगारियं पव्वतिए निग्गंथे पावयणे निस्संकिते णिक्कंखिते निव्वितिगिच्छिए नो भेदसमावन्ने नो कलुससमावन्ने निग्गंथं पावयणं सद्दहइ पत्तियइ रोतेति निग्गंथं पावयणं सद्दहमाणे पत्तितेमाणे रोएमाणे नो मणं उच्चावतं नियच्छति णो विणिघातमावज्जति, पढमा सुहसेज्जा १ अहावरा दोच्चा सुहसेज्जा-से णं मुंडे जाव पव्वतिते सतेणं लाभेणं तुस्सति परस्स लाभं णो आसाएति णो पीहेति णो पत्थेइ णो अभिलसति परस्स लाभमणासाएमाणे जाव अणभिलसमाणे नो मणं उच्चावतं णियच्छति णो विणिघातमा-वज्जति. दोच्चा सुहसेज्जा २ अहावरा तच्चा सुहसेज्जा-से णं मुंडे जाव पव्वइए दिव्वमाणुस्सए कामभोगे णो आसाएति जाव नो अभिलस्सति दिव्वमाणुस्सए कामभोगे अणासाएमाणे जाव अणभिलसमाणे नो मणं उच्चावतं नियच्छति णो विणिघातमावज्जति, तच्चा सुहसेज्जा ३ अहावरा चउत्था सुहसेज्जा-से णं मुंडे जाव पव्वतिते तस्स णं एवं भवति- जइ ताव अरहंता भगवंतो हट्ठा आरोग्गा बलिया कल्लसरीरा अन्नयराइं ओरालाइं कल्लाणाइं विउलाइं पयताइं पग्गहिताइं महाणुभागाइं कम्मक्खयकारणाइं तवोकम्माइं पडिवज्जंति किमंग पुण अहं अब्भोवगमिओवक्कमियं वेयणं नो सम्मं सहामि खमामि तितिक्खेमि अहियासेमि? ममं च णं अब्भोवगमिओवक्कमियं० सम्ममसहमाणस्स अक्खममाणस्स अतितिक्खमाणस्स अणहियासेमाणस्स किं मन्ने कज्जति ?, एगंतसो मे पावे कम्मे कज्जति, ममं च णं अब्भोवगमिओ जाव सम्मं सहमाणस्स जाव अहियासेमाणस्स किं मन्ने कज्जति ?, एगंतसो मे निज्जरा कज्जति. चउत्था सुहसेज्जा ४ ।३२५। चत्तारि अवायणिज्जा पं० तं०-अविणीए विगईपडिबद्धे अविओसवितपाहुडे माई, चत्तारि वातणिज्जा पं० तं०-विणीते अविगतीपडिबद्धे वितोसवितपाहुडे अमाती ।३२६। चत्तारि पुरिसजाया पं०तं०-आतंभरे नाममेगे नो परंभरे परंभरे नाममेगे नो आतंभरे एगे आतंभरेऽवि परंभरेऽवि एगे नो आयंभरे नो परंभरे. चत्तारि पुरिस-जाया पं०तं०-दुग्गए नाममेगे दुग्गए दुग्गए नाममेगे सुग्गते सुग्गते नाममेगे दुग्गए सुग्गए नाममेगे सुग्गए. चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-दुग्गते नाममेगे दुव्वए दुग्गए नाममेगे सुव्वए सुग्गए नाममेगे दुव्वते सुग्गए नाममेगे सुव्वए ४. चत्तारि पुरिसजाया पं०तं०-दुग्गते नाममेगे दुप्पडिताणंदे दुग्गते नाममेगे सुप्पडिताणंदे० ४. चत्तारि पुरिसजाया पं०तं०-दुग्गते नाममेगे दुग्गतिगामी दुग्गए नाममेगे सुग्गतिगामी० ४, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-दुग्गते नागमेगे दुग्गतिं गते दुग्गते नाममेगे सुगतिं गते० ४. चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-तमे नाममेगे तमे तमे नाममेगे जोती जोती णाममेगे तमे जोती णाममेगे जोती ४. चत्तारि पुरिसजाता पं०तं०-तमे नाममेगे तमबले तमे नाममेगे जोतिबले जोती नाममेगे तमबले जोती नाममेगे जोतीबले, चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-तमे नाममेगे तमबलपलज्जणे (पज्जलणे पा०) तमे नाममेगे जोतीबलपलज्जणे०४. चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-परिन्नायकम्मे नाममेगे नो परिन्नातसन्ने परिन्नातसन्ने णाममेगे णो परिन्नातकम्मे एगे परिन्नातकम्मेवि० ४. चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-परिण्णातकम्मे नाममेगे नो परिन्नातगिहावासे परिन्नातगिहावासे णामं एगे णो परिन्नातकम्मे० ४, चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-परिण्णायसन्ने णाममेगे नो परिन्नातगिहावासे परिन्नातगिहावासे णामं एगे० ४, चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-इहत्थे णाममेगे नो परत्थे परत्थे नाममेगे नो इहत्थे० ४, चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-एगेणं णाममेगे वड्ढति एगेणं हायति एगेणं णाममेगे वड्ढइ दोहिं हायति दोहिं णाममेगे वड्ढति एगेणं हायति एगे दोहिं नाममेगे वड्ढति दोहिं हायति, चत्तारि कंथका (पकंथका पा०) पं० तं०-आइन्ने नाममेगे आइन्ने आइन्ने नाममेगे खलुंके खलुंके नाममेगे आइन्ने खलुंके नाममेगे खलुंके ४. एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-आइन्ने नाममेगे आइन्ने० चउभंगो, चत्तारि कंथगा पं० तं०-आतिन्ने नाममेगे आतिन्नताते विहरति (वहइ पा०) आइन्ने नाममेगे खलुंकताए विहरति०४. एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं०तं०-आइन्ने नाममेगे आइन्नताए विहरइ० चउभंगो, चत्तारि पकंथगा पं०तं०-जातिसंपन्ने नाममेगे णो कुलसंपन्ने० ४. एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-जातिसंपन्ने नाममेगे चउभंगो, चत्तारि कंथगा पं० तं०-जातिसंपन्ने नाममेगे णो बलसंपन्ने० ४. एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-जातिसंपन्ने नाममेगे णो बलसंपण्णे० ४, चत्तारि कंथगा पं० तं०-जातिसंपन्ने णाममेगे णो रूवसंपन्ने० ४, एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-जातिसंपन्ने नाममेगे णो रूवसंप्पण्णे० ४. चत्तारि कंथगा पं० तं०-जाइसंपन्ने णाममेगे णो जयसंपण्णे० ४, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-जातिसंपन्ने० ४, एवं कुलसंपन्नेण य बलसंपण्णेण त ४. कुलसंपन्नेण य रूवसंपण्णेण त ४ कुलसंपण्णेण त जयसंपन्नेण त ४ एवं बलसंपन्नेण त रूवसंपन्नेण त ४ बलसंपन्नेण त जयसंपण्णेण त ४, सव्वत्थ पुरिसजाया पडिवक्खो. चत्तारि कंथगा पं० तं०-रूवसंपन्ने णाममेगे णो जयसंपन्ने० ४, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-रूवसंपण्णे नाममेगे णो जयसंपण्णे० ४, चत्तारि पुरिसजाया पं० तंजहा-सीहत्ताते णाममेगे निक्खंते सीहत्ताते विहरइ सीहत्ताते नाममेगे निक्खंते सियालत्ताए विहरइ सियालत्ताए नाममेगे निक्खंते सीहत्ताए विहरइ सियालत्ताए नाममेगे निक्खंते सियालत्ताए विहरइ ।३२७। चत्तारि लोगे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समा पं० तं०-अपइट्ठाणे नरए १ जंबुद्दीवे दीवे २ पालते जाणविमाणे ३ सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे ४, चत्तारि लोगे समा सपक्खिं सपडिदिसिं पं० तं०-सीमंतए नरए समयक्खेत्ते उडुविमाणे ईसीपब्भारा पुढवी ।३२८। उड्ढलोगे णं चत्तारि बिसरीरा पं० तं०-पुढवीकाइया आउ० वणस्सइ० उराला तमा पाणा १ अहोलोगे णं चत्तारि बिसरीरा पं० तं०-एवं चेव. एवं तिरियलोएवि ।३२९। चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-हिरिसत्ते हिरिमणसत्ते चलसत्ते थिरसत्ते ।३३०। चत्तारि सिज्जपडिमाओ पं०, चत्तारि वत्थपडिमाओ पं०, चत्तारि पायपडिमाओ पं०. चत्तारि ठाणपडिमाओ पं० ।३३१। चत्तारि सरीरगा जीवफुडा पं० तं०-वेउव्विए आहारए तेयए कम्मए, चत्तारि सरीरगा कम्मुम्मीसगा पं० तं०-ओरालिए वेउव्विए आहारते तेउते ।३३२। चउहिं अत्थिकाएहिं लोगे फुडे पं० तं०-धम्मत्थिकाएणं अधम्मत्थिकाएणं जीवत्थिकाएणं पुग्गलत्थिकाएणं, चउहिं बादरकातेहिं उववज्जमाणेहिं लोगे फुडे पं० तं०-पुढविकाइएहिं आउ० वाउ० वणस्सइकाइएहिं।३३३। चत्तारि पएसग्गेणं तुल्ला पं० तं०-धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए लोगागासे एगजीवे ।३३४। चउण्हमेगं सरीरं नो सुप्पस्सं (पस्सं पा०) भवइ. तं०-पुढविकाइयाणं आउ० तेउ० वणस्सकाइयाणं ।३३५। चत्तारि इंदियत्था पुट्ठा वेदेंति, तं०-सोतिंदियत्थे घाणिंदियत्थे जिब्भिदियत्थे फासिंदियत्थे ।३३६। चउहिं ठाणेहिं जीवा य पोग्गला य णो संचातेंति बहिया लोगंता गमणताते, तं०-गतिअभावेणं णिरुवग्गहताते लुक्खताते लोगाणुभावेणं ।३३७। चउव्विहे णाते पं० तं०-आहरणे आहरणतद्देसे आहरणतद्दोसे उवन्नासोवणए १, आहरणे चउव्विहे पं० तं०-अवाते उवाते ठवणाकम्मे पडुप्पन्नविणासी २, आहरणतद्देसे चउव्विहे पं० तं०-अणुसिट्ठी उवालंभे पुच्छा निस्सावयणे ३. आहरणतद्दोसे चउव्विहे पं० तं०-अधम्मजुत्ते पडिलोमे अत्तोवणीते दुरुवणीते ४, उवन्नासोवणए चउव्विहे पं० तं०-तव्वत्थुते तदन्नवत्थुते पडिनिभे हेतू ५. हेऊ चउव्विहे पं० तं०-जावते थावते वंसते लूसते, अथवा हेऊ चउव्विहे पं० तं०-पच्चक्खे अणुमाणे ओवम्मे आगमे, अहवा हेऊ चउव्विहे पं० तं०-अत्थित्तं अत्थि सो हेऊ १ अत्थित्तं णत्थि सो हेऊ २ णत्थित्तं अत्थि सो हेऊ ३ णत्थित्तं णत्थि सो हेऊ ४ ।३३८। चउव्विहे संखाणे पं० तं०-पडिकम्मं १ ववहारे २ रज्जू ३ रासी ४। अहोलोगे णं चत्तारि अंधगारं करेंति, तं०-नरगा णेरइया पावाइं कम्माइं असुभा पोग्गला १ तिरियलोगे णं चत्तारि उज्जोतं करेंति. तं०-चंदा सूरा मणी जोती २ उड्ढलोगे णं चत्तारि उज्जोतं करेंति. तं०-देवा देवीओ विमाणा आभरणा ३ ।३३९॥ अ०४उ०३॥ चत्तारि पसप्पगा पं० तं०-अणुप्पन्नाणं भोगाणं उप्पाएत्ता एगे पसप्पए पुव्वुपन्नाणं (पच्चुप्पन्नाणं पा०) भोगाणं अविप्पतोगेणं एगे पसप्पते अणुप्पन्नाणं सोक्खाणं उप्पाइत्ता एगे पसप्पए पुव्वुप्पन्नाणं सोक्खाणं अविप्पओगेणं एगे पसप्पए ।३४०। णेरतिताणं चउव्विहे आहारे पं० तं०-इंगालोवमे मुम्मुरोवमे सीतले हिमसीतले. तिरिक्खजोणियाणं चउव्विहे आहारे पं० तं०-कंकोवमे बिलोवमे पाणमंसोवमे पुत्तमंसोवमे. मणुस्साणं चउव्विहे आहारे पं० तं०-असणे जाव सातिमे. देवाणं चउव्विहे आहारे पं० तं०-वन्नमंते गंधमंते रसमंते फासमंते।३४१। चत्तारि जातिआसीविसा पं० तं०-विच्छुतजातीयासीविसे मंडुक्कजातीयासीविसे उरगजातीयासीविसे मणुस्सजातिआसीविसे. विच्छुयजातिआसीविसस्स णं भंते ! केवइए विसए पन्नत्ते ?. पभू णं विच्छुयजातिआसीविसे अद्धभरहप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिणयं विसट्टमाणिं करित्तए विसए से विसट्ठताए नो चेव णं संपत्तीए करेंसु वा करेंति वा करिस्संति वा. मंडुक्कजातिआसीविसस्स पुच्छा, पभू णं मंडुक्कजातिआसीविसे भरहप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसट्टमाणिं सेसं तं चेव जाव करेस्संति वा. उरगजातिपुच्छा, पभू णं उरगजातिआसीविसे जंबुद्दीवपमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं सेसं तं चेव जाव करेस्संति वा. मणुस्सजातिपुच्छा. पभू णं मणुस्सजातिआसीविसे समतखेत्तपमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिण(ग पा०)तं विसट्टमाणिं करेत्तए, विसते से विसट्ठताते नो चेव णं जाव करिस्संति वा ।३४२। चउव्विहे वाही पं० तं०-वातिते पित्तिते सिंभिते सन्निवातिते. चउव्विहा तिगिच्छा पं० तं०-विज्जो ओसधाइं आउरे परिचारते १ ।३४३। चत्तारि तिगिच्छगा पं० तं०-आततिगिच्छते नाममेगे णो परतिगिच्छते १ परतिगिच्छए नाममेगे० ४. २. चत्तारि पुरिसजाया पं०तं०-वणकरे णाममेगे नो वणपरिमासी वणपरिमासी नाममेगे णो वणकरे एगे वणकरेऽवि वणपरिमासीऽवि एगे णो वणकरे णो वणपरिमासी १, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-वणकरे नाममेगे णो वणसारक्खी० ४.२, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-वणकरे नामं एगे णो वणसंरोही० ४.३. चत्तारि वणा पं० तं०-अंतोसल्ले नाममेगे णो बाहिंसल्ले० ४, १, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-अंतोसल्ले णाममेगे णो बाहिंसल्ले ४, २, चत्तारि वणा पं० तं०-अंतोदुट्ठे नामं एगे णो बाहिंदुट्ठे बाहिंदुट्ठे नामं एगे नो अंतो० ४, ३, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-अंतोदुट्ठे० णो बाहिंदुट्ठे० ४, ४, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-सेतंसे णाममेगे सेयंसे सेयंसे नाममेगे पावंसे पावंसे णामं एगे सेयंसे पावंसे णाममेगे पावंसे १, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-सेतंसे णाममेगे सेतंसेत्ति सालिसए सेतंसे णाममेगे पावंसेत्ति सालिसते० ४. २. चत्तारि पुरिसा पं० तं०-सेतंसेत्ति णाममेगे सेतंसेत्ति मण्णति सेतंसेत्ति णाममेगे पावंसेत्ति मण्णति० ४, ३, चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-सेयंसे णाममेगे सेयंसेत्ति सालिसते मन्नति सेतंसे णाममेगे पावंसेत्ति सालिसते मन्नति० ४. ४. चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-आघवतित्ता णाममेगे णो परिभावइत्ता परिभावइत्ता णाममेगे णो आघवतित्ता० ४,५, चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-आघवतित्ता णाममेगे नो उंछजीविसंपन्ने (२६)

Jain Education International · For Private & Personal Use Only · www.jainelibrary.org

उंछजीविसंपन्ने णाममेगे णो आघवइत्ता० ४, ६, चउव्विहा रुक्खविगुव्वणा पं० तं०-पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए । ३४४। चत्तारि वातिसमोसरणा पं० तं०-किरियावादी अकिरियावादी अन्नाणितवादी वेणतियवादी । णेरइयाणं चत्तारि वादिसमोसरणा पं० तं०-किरियावादी जाव वेणतितवादी, एवमसुरकुमाराणऽवि जाव थणियकुमाराणं, एवं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं । ३४५। चत्तारि मेहा पं० तं०-गज्जित्ता णाममेगे णो वासित्ता वासित्ता णाममेगे णो गज्जित्ता एगे गज्जित्तावि वासित्तावि एगे णो गज्जित्ता णो वासित्ता १, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० गं०-गज्जित्ता णाममेगे णो वासित्ता० ४,२, चत्तारि मेहा पं० तं०-गज्जित्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता विज्जुयाइत्ता णाममेगे० ४, ३, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-गज्जित्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता० ४,४, चत्तारि मेहा पं० तं०-वासित्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता० ४,५, एवामेव चत्तारि पुरिस० वासित्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता० ४,६, चत्तारि मेहा पं० तं०-कालवासी णाममेगे णो अकालवासी० ४,७, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-कालवासी णाममेगे नो अकालवासी० ४,८, चत्तारि मेहा पं०तं०-खेत्तवासी णाममेगे णो अखित्तवासी० ४, ९, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-खेत्तवासी णागमेगे णो अखेत्तवासी० ४, १०, चत्तारि मेहा पं० तं०-जणतित्ता णाममेगे णो णिम्मवइत्ता णिम्मवइत्ता णाममेगे णो जणतित्ता० ४, ११, एवामेव चत्तारि अम्मापियरो पं० तं०-जणइत्ता णाममेगे णो णिम्मवइत्ता० ४, १२, चत्तारि मेहा पं० तं०-देसवासी णाममेगे णो सव्ववासी० ४, १३, एवामेव चत्तारि रायाणो पं० तं०-देसाधिवती णाममेगे णो सव्वाधिवती० ४, १४ ।३४६। चत्तारि मेहा पं० तं०-पुक्खलसंवट्टते पज्जुन्ने जीमूते जिम्हे, पुक्खलसंवट्टए णं महामेहे एगेणं वासेणं दस वाससहस्साइं भावेति, पज्जुन्ने णं महामेहे एगेणं वासेणं दस वाससयाइं भावेति, जीमूते णं महामेहे एगेणं वासेणं दस वासाइं भावेति, जिम्हे णं महामेहे बहूहिं वासेहिं एगं वासं भावेति वा ण वा भावेइ १५ ।३४७। चत्तारि करंडगा पं० तं०-सोवागकरंडते वेसिताकरंडते गाहावतिकरंडते रायकरंडते १६, एवामेव चत्तारि आयरिया पं० तं०-सोवागकरंडगसमाणे वेसिताकरंडगसमाणे गाहावइकरंडगसमाणे रायकरंडगसमाणे १७ ।३४८। चत्तारि रुक्खा पं०तं०-साले नाममेगे सालपरियाते साले नाममेगे एरंडपरियाए एरंडे० ४, १८ एवामेव चत्तारि आयरिया पं० तं०-साले णाममेगे सालपरियाते साले णाममेगे एरंडपरियाए एरंडे णाममेगे० ४, १९ चत्तारि रुक्खा पं० तं०-साले णाममेगे सालपरिवारे० ४, २० एवामेव चत्तारि आयरिया पं० तं०-साले नाममेगे सालपरिवारे० ४, २१ 'सालदुममज्झयारे जह साले णाम होइ दुमराया । इय सुंदरआयरिए सुंदरसीसे मुणेयव्वे ॥२१॥ एरंडमज्झयारे जह साले णाम होइ दुमराया। इय सुंदरआयरिए मंगुलसीसे मुणयव्वे ॥२२॥ सालदुममज्झयारे एरंडे णाम होति दुमराया। इय मंगुलआयरिए सुंदरसीसे मुणेयव्वे ॥२३॥ एरंडमज्झयारे एरंडे णाम होइ दुमराया। इय मंगुलआयरिए मंगुलसीसे मुणेयव्वे ॥२४॥ चत्तारि मच्छा पं० तं०-अणुसोयचारी पडिसोयचारी अंतचारी मज्झचारी, २२ एवामेव चत्तारि भिक्खागा पं० तं०-अणुसोयचारी पडिसोयचारी अंतचारी मज्झचारी, २३ चत्तारि गोला पं० तं०-मधुसित्थगोले जउगोले दारुगोले मट्टियागोले, २४ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-मधुसित्थगोलसमाणे० ४, २५ चत्तारि गोला पं०तं०-अयगोले तउगोले तंबगोले सीसगोले, २६एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं०तं०-अयगोलसमाणे जाव सीसगोलसमाणे, २७ चत्तारि गोला पं० तं०-हिरण्णगोले सुवन्नगोले रयणगोले वयरगोले, २८ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-हिरण्णगोलसमाणे जाव वइरगोलसमाणे, २९ चत्तारि पत्ता पं० तं०-असिपत्ते करपत्ते खुरपत्ते कलम्बचीरितापत्ते, ३० एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-असिपत्तसमाणे जाव कलंबचीरितापत्तसमाणे, ३१ चत्तारि कडा पं० तं०-सुंबकडे विदलकडे चम्मकडे कंबलकडे, ३२ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-सुंबदलकडसमाणे जाव कंबलकडसमाणे ३३। ३४९। चउव्विहा चउप्पया पं० तं०-एगखुरा दुखुरा गंडीपदा सणप्फदा, ३४ चउव्विहा पक्खी पं० तं०-चम्मपक्खी लोमपक्खी समुग्गपक्खी विततपक्खी, ३५ चउव्विहा खुड्डपाणा पं० तं०-बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया ३६ ।३५०। चत्तारि पक्खी पं० तं०-णिवत्तित्ता णाममेगे नो परिवतित्ता परिवइत्ता नामं एगे नो निवइत्ता एगे निवतित्तावि परिवतित्तावि एगे नो निवतित्ता नो परिवतित्ता, ३७ एवामेव चत्तारि भिक्खागा पं० तं०-णिवतित्ता णाममेगे नो परिवतित्ता० ४, ३८ । ३५१। चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-णिक्कट्ठे णाममेगे णिक्कट्ठे निक्कट्ठे नाममेगे अणिक्कट्ठे० ४. ३९ चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-णिक्कट्ठे नाममेगे निक्कट्ठप्पा निक्कट्ठे नाममेगे अनिक्कट्ठप्पा० ४, ४० चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-बुहे नाममेगे बुहे बुहे नाममेगे अबुहे० ४, ४१ चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-बुधे नाममेगे बुधहियए ४, ४२ चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-आयाणुकंपते णाममेगे नो पराणुकंपते ४, ४३ । ३५२। चउव्विहे संवासे पं० तं०-दिव्वे आसुरे रक्खसे माणुसे १, चउव्विधे संवासे पं० तं०-देवे णाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छति देवे नाममेगे असुरीए सद्धिं संवासं गच्छति असुरे णाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छइ असुरे नाममेगे असुरीए सद्धिं संवासं गच्छति २, चउव्विधे संवासे पं० तं०-देवे नाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छति देवे नाममेगे रक्खसीए सद्धिं संवासं

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गच्छति रक्खसे नाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छति रक्खसे नाममेगे रक्खसीए सद्धिं संवासं गच्छति ४, ३, चउव्विधे संवासे पं० तं०-देवे नाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छति देवे नाममेगे मणुस्सीहिं सद्धिं संवासं गच्छति मणुस्से नाममेगे देवीहिं सद्धिं संवासं गच्छति मणुस्से नाममेगे मणुस्सीइ सद्धिं संवासं गच्छति ४, ४, चउव्विधे संवासे पं० तं०-असुरे णाममेगे असुरीए सद्धिं संवासं गच्छति असुरे नाममेगे रक्खसीए सद्धिं संवासं गच्छति० ४, ५, चउव्विधे संवासे पं० तं०-असुरे नाममेगे असुरीए सद्धिं संवासं गच्छति असुरे णाममेगे मणुस्सीए सद्धिं संवासं गच्छति० ४. ६. चउव्विधे संवासे पं० तं०-रक्खसे नाममेगे रक्खसीए सद्धिं संवासं गच्छति रक्खसे नाममेगे माणुसीए सद्धिं संवासं गच्छति० ४, ७।३५३। चउव्विहे अवद्धंसे पं० तं०-आसुरे आभिओगे संमोहे देवकिब्बिसे, चउहिं ठाणेहिं जीवा आसुरत्ताते कम्मं पगरेंति, तं०-कोवसीलताते पाहुडसीलयाते संसत्ततवोकम्मेणं निमित्ताजीवयाते, चउहिं ठाणेहिं जीवा आभिओगत्ताते कम्मं पगरेंति तं०-अत्तुक्कोसेणं परपरिवातेणं भूतिकम्मेणं कोउयकरणेणं, चउहिं ठाणेहिं जीवा सम्मोहत्ताते कम्मं पगरेंति, तं०-उम्मग्गदेसणाए मग्गंतरगएणं कामासंसपओगेणं भिज्जानियाणकरणेणं, चउहिं ठाणेहिं जीवा देवकिब्बिसियत्ताते कम्मं पगरेंति तं०-अरहंताणं अवन्नं वयमाणे अरहंतपन्नत्तस्स धम्मस्स अवन्नं वयमाणे आयरियउवज्झायाणमवन्नं वदमाणे चाउवन्नस्स संघस्स अवन्नं वदमाणे।३५४। चउव्विहा पव्वज्जा पं० तं०-इहलोगपडिबद्धा परलोगपडिबद्धा दुहतोलोगपडिबद्धा अप्पडिबद्धा १, चउव्विहा पव्वज्जा पं० तं०-पुरओपडिबद्धा मग्गओपडिबद्धा दुहतोपडिबद्धा अपडिबद्धा २, चउव्विहा पव्वज्जा पं० तं०-ओवायपव्वज्जा अक्खातपव्वज्जा संगारपव्वज्जा विहगगइपव्वज्जा (विहगपव्वज्जा पा०) ३ चउव्विहा पव्वज्जा पं० तं०-तुयावइत्ता (उयावइत्ता पा०) पुयावइत्ता बुयावइत्ता (मोयावइत्ता पा०) परिपूयावइत्ता ४, चउव्विहा पव्वज्जा पं० तं०-नडखइया भडखइया सीहखइया सियालक्खइया ५, चउव्विहा किसी पं० तं०-वाविया परिवाविया णिंदिता परिणिंदिता ६, एवामेव चउव्विहा पव्वज्जा पं० तं०-वाविता परिवाविता णिंदिता परिणिंदिता ७, चउव्विहा पव्वज्जा पं० तं०-धन्नपुंजितसमाणा धन्नविरल्लितसमाणा धन्नविक्खित्तसमाणा धन्नसङ्कट्टितसमाणा ८।३५५। चत्तारि सन्नाओ पं० तं०-आहारसन्ना भयसन्ना मेहुणसन्ना परिग्गहसन्ना १, चउहिं ठाणेहिं आहारसन्ना समुप्पज्जति, तं०-ओमकोट्ठताते १ छुहावेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं २ मतीते ३ तदट्ठोवओगेणं ४, २ चउहिं ठाणेहिं भयसन्ना समुप्पज्जति. तं०-हीणसत्तत्ताते भयवेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं मतीते तदट्ठोवओगेणं ३ चउहिं ठाणेहिं मेहुणसन्ना समुप्पज्जति, तं०-चितमंससोणियययाए मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं मतीते तदट्ठोवओगेणं ४ चउहिं ठाणेहिं परिग्गहसन्ना समुप्पज्जइ, तं०-अविमुत्तयाए लोभवेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं मतीते तदट्ठोवओगेणं ५।३५६। चउव्विहा कामा पं० तं०-सिंगारा कलुणा बीभत्सा रोद्दा, सिंगारा कामा देवाणं कलुणा कामा मणुयाणं बीभत्सा कामा तिरिक्खजोणियाणं रोद्दा कामा णेरइयाणं।३५७। चत्तारि उदगा पं० तं०-उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोदए उत्ताणे णाममेगे गंभीरोदए गंभीरे णाममेगे उत्ताणोदए गंभीरे णाममेगे गंभीरोदए १, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-उत्ताणे नाममेगे उत्ताणहिदए उत्ताणे णाममेगे गंभीरहिदए० ४, २ चत्तारि उदगा पं० तं०-उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोभासी उत्ताणे णाममेगे गंभीरोभासी० ४,३ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोभासी उत्ताणे नाममेगे गंभीरोभासी० ४, ४ चत्तारि उदही पं० तं०-उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोदही उत्ताणे णाममेगे गंभीरोदही० ४.५ एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पं० तं०-उत्ताणे णाममेगे उत्ताणहियए० ४, ६ चत्तारि उदही पं० तं०-उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोभासी उत्ताणे णाममेगे गंभीरोभासी० ४, ७ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोभासी० ४, ८।३५८। चत्तारि तरगा पं० तं०-समुद्दं तरामीतेगे समुद्दं तरइ समुद्दं तरामीतेगे गोप्पतं तरति गोप्पतं तरातीतेगे० ४. १ चत्तारि तरगा पं० तं०-समुद्दं तरित्ता नाममेगे समुद्दे विसीतते समुद्दं तरेत्ता णाममेगे गोप्पते विसीतति गोपतं० ४, २।३५९। चत्तारि कुंभा पं० तं०-पुन्ने नाममेगे पुन्ने पुन्ने नाममेगे तुच्छे तुच्छे णाममेगे पुन्ने तुच्छे णाममेगे तुच्छे, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-पुन्ने नाममेगे पुन्ने० ४, चत्तारि कुंभा पं० तं०-पुन्ने नाममेगे पुन्नोभासी पुन्ने नाममेगे तुच्छोभासी तुच्छे नाममेगे पुन्नोभासी तुच्छे नाममेगे तुच्छोभासी, एवं चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-पुन्ने णाममेगे पुन्नोभासी० ४, चत्तारि कुंभा पं० तं०-पुन्ने नाममेगे पुन्नरूवे पुन्ने नाममेगे तुच्छरूवे० ४, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-पुन्ने नाममेगे पुन्नरूवे० ४, चत्तारि कुंभा पं० तं०-पुन्नेऽवि एगे पितट्टे पुन्नेऽवि एगे अवदले तुच्छेऽवि एगे पियट्टे तुच्छेऽवि एगे अवदले, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं०तं०-पुन्नेऽवि एगे पितट्टे० ४, तहेव चत्तारि कुंभा पं०तं०-पुन्नेऽवि एगे विस्संदति पुन्नेऽवि एगे णो विस्संदति तुच्छेऽवि एगे विस्संदति तुच्छेऽवि एगे नो विस्संदइ, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-पुन्नेऽवि एगे विस्संदति० ४, तहेव चत्तारि कुंभा पं० तं०-भिन्ने जज्जरिए परिस्साई अपरिस्साई, एवामेव चउव्विहे चरित्ते पं० तं०-भिन्ने जाव अपरिस्साई, चत्तारि कुंभा पं०तं०-महुकुंभे नामं एगे महुप्पिहाणे महुकुंभे णामं एगे विसपिहाणे विसकुंभे नामं एगे महुपिहाणे विसकुंभे णाममेगे विसपिहाणे,

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-महुकुंभे नाम एगे मधुपिहाणे० ४-'हिययमपावमकलुसं जीहाडवि य महुरभासिणी निच्चं। जंमि पुरिसंमि विज्जति से मधुकुंभे मधुपिहाणे ॥ २५॥ हिययमपावमकलुसं जीहाडवि य कडुयभासिणी निच्चं। जंमि पुरिसंमि विज्जति से मधुकुंभे विसपिहाणे ॥ २६॥ जं हिययं कलुसमयं जीहाडवि य मधुरभासिणी निच्चं। जंमि पुरिसंमि विज्जति से विसकुंभे महुपिहाणे ॥ २७॥ जं हिययं कलुसमयं जीहाडवि य कडुयभासिणी निच्चं। जंमि पुरिसंमि विज्जति से विसकुंभे विसपिहाणे ॥ २८॥ ३६०। चउव्विहा उवसग्गा पं० तं०-दिव्वा माणुस्सा तिरिक्खजोणिया आयसंचेयणीया १, दिव्वा उवसग्गा चउव्विहा पं०तं०-हासा पओसा वीमंसा पुढोविमाता २, माणुस्सा उवसग्गा चउव्विधा पं० तं०-हासा पओसा वीमंसा कुसीलपडिसेवणया ३, तिरिक्खजोणिया उवसग्गा चउव्विहा पं० तं०-भता पदोसा आहारहेउं अवच्चलेणसारक्खणया ४, आतसंचेयणिज्जा उवसग्गा चउव्विहा पं० तं०-घट्टणता पवडणता थंभणता लेसणता ५। ३६१। चउव्विहे कम्मे पं०तं०-सुभे नाममेगे सुभे सुभे नाममेगे असुभे असुभे नाम० ४, १ चउव्विहे कम्मे पं० तं०-सुभे नाममेगे सुभविभागे सुभे णाममेगे असुभविवागे असुभे नाममेगे सुभविवागे असुभे नाममेगे असुभविवागे ४, २ चउव्विहे कम्मे पं० तं०-पगडीकम्मे ठितीकम्मे अणुभावकम्मे पदेसकम्मे ४, ३ ।३६२। चउव्विहे संघे पं० तं०-समणा समणीओ सावगा साविआओ ।३६३। चउव्विहा बुद्धी पं०तं०-उप्पत्तिता वेणतिता कम्मिया परिणामिया, चउव्विधा मई पं० तं०-उग्गहमती ईहामती अवायमई धारणामती. अथवा चउव्विहा मती पं० तं०-अरंजरोदगसमाणा वियरोदयसमाणा सरोदगसमाणा सागरोदगसमाणा। ३६४। चउव्विहा संसारसमावन्नगा जीवा पं० तं०-णेरइता तिरिक्खजोणीया मणुस्सा देवा. चउव्विहा सव्वजीवा पं० तं०-मणजोगी वइजोगी कायजोगी अजोगी, अहवा चउव्विहा सव्वजीवा पं० तं०-इत्थिवेयगा पुरिसवेदगा णपुंसकवेदगा अवेदगा. अथवा चउव्विहा सव्वजीवा पं० तं०-चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी ओहिदंसणी केवलदंसणी, अहवा चउव्विहा सव्वजीवा पं० तं०-संजया असंजया संजयासंजया णोसंजयाणोअसंजया। ३६५। चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-मित्ते नाममेगे मित्ते मित्ते नाममेगे अमित्ते अमित्ते नाममेगे मित्ते अमित्ते णाममेगे अमित्ते १ चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-मित्ते णाममेगे मित्तरूवे० चउभंगो. ४. २ चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-मुत्ते णाममेगे मुत्ते मुत्ते णाममेगे अमुत्ते० ४, ३ चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-मुत्ते णाममेगे मुत्तरूवे ४. ४। ३६६। पंचिंदियतिरिक्खजोणिया चउगईआ चउआगईया पं० तं०-पंचिंदियतिरिक्खजोणिया पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जमाणा णेरइएहिंतो वा तिरिक्खजोणिएहिंतो वा मणुस्सेहिंतो वा देवेहिंतो वा उववज्जेज्जा, से चेव णं से पंचिंदियतिरिक्खजोणिए पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्तं विप्पजहमाणे णेरइयत्ताए वा जाव देवत्ताते वा उवागच्छेज्जा, मणुस्सा चउगईआ चउआगनिता. एवं चेव मणुस्सावि ।३६७। बेइंदिया णं जीवा असमारभमाणस्स चउविहे संजमे कज्जति, तं०-जिब्भामयातो सोक्खातो अववरोवित्ता भवति, जिब्भामएणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवति. फासमयातो सोक्खातो अववरोवेत्ता भवइ, एवं चेव ४, बेइंदिया णं जीवा समारभमाणस्स चउविधे असंजमे कज्जति, तं०-जिब्भामयातो सोक्खाओ ववरोवित्ता भवति, जिब्भामतेणं दुक्खेणं संजोगित्ता भवति, फासामयातो सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवइ०।३६८। सम्मद्दिट्ठिताणं णेरइयाणं चत्तारि किरियाओ पं०तं०-आरंभिता परिग्गहिता मायावत्तिया अपच्चक्खाणकिरिया, सम्मद्दिट्ठिताणमसुरकुमाराणं चत्तारि किरियाओ पं०तं०-एवं चेव, एवं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं।३६९। चउहिं ठाणेहिं संते गुणे नासेज्जा, तं०-कोहेणं पडिनिवेसेणं अकयण्णुयाए मिच्छत्ताभिनिवेसेणं, चउहिं ठाणेहिं संते (असंते पा०) गुणे दीवेज्जा तंजहा-अब्भासवत्तितं परच्छंदाणुवत्तितं कज्जहेउं कतपडिकतिते वा, ।३७०। णेरइयाणं चउहिं ठाणेहिं सरीरुप्पत्ती सिता तंजहा-कोहेणं माणेणं मायाए लोभेणं, एवं जाव वेमाणियाणं. णेरइयाणं चउहिं ठाणेहिं निव्वत्तिते सरीरे पं० तं०-कोहनिव्वत्तिए जाव लोभणिव्वत्तिए एवं जाव वेमाणियाणं। ३७१। चत्तारि धम्मदारा पन्नत्ता, तंजहा-खंती मुत्ती अज्जवे मद्दवे। ३७२। चउहिं ठाणेहिं जीवा णेरतियत्ताए कम्मं पकरेंति, तंजहा-महारंभताते महापरिग्गहयाते पंचिंदियवहेणं कुणिमाहारेणं १ चउहिं ठाणेहिं जीवा तिरिक्खजोणियत्ताए कम्मं पगरेंति. तं०-माइल्लताते णियडिल्लताते अलियवयणेणं कूडतुलकूडमाणेणं २ चउहिं ठाणेहिं जीवा मणुस्सत्ताते कम्मं पगरेंति, तं०-पगतिभद्दताते पगतिविणीययाए साणुक्कोसयाते अमच्छरिताते ३ चउहिं ठाणेहिं जीवा देवाउयत्ताए कम्मं पगरेंति, तं०-सरागसंजमेणं संजमासंजमेणं बालतवोकम्मेणं अकामणिज्जराए ४ ।३७३। चउव्विहे वज्जे पं० तं०-तते वितते घणे झुसिरे १ चउव्विहे नट्टे पं० तं०-अंचिए रिभिए आरभडे भसोले २ चउव्विहे गेए पं० तं०-उक्खित्तए पत्तए मंदए रोविंदए ३ चउव्विहे मल्ले पं० तं०-गंथिमे वेढिमे पूरिमे संघातिमे ४ चउव्विहे अलंकारे पं० तं०-केसालंकारे वत्थालंकारे मल्लालंकारे आभरणालंकारे ५ चउव्विहे अभिणते पं०तं०-दिट्टंतिते पांडु(पाडं)सुते सामंतोवणिवातणिते लोगमज्झावसिते ६ ।३७४। सणंकुमारमाहिंदेसु णं कप्पेसु विमाणा चउवन्ना पं०तं०-णीला लोहिता हालिद्दा सुक्किल्ला, महासुक्कसहस्सारेसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जा सरीरगा उक्कोसेणं चत्तारि रयणीओ उड्ढंउच्चत्तेणं पन्नत्ता। ३७५। चत्तारि उदकगब्भा पं० तं०-उस्सा महिया

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सीता उसिणा, चत्तारि उदकगब्भा पं० तं०-हेमगा अब्भसंथडा सीतोसिणा पंचरूविता-'माहे उ हेमगा गब्भा, फग्गुणे अब्भसंथडा। सीतोसिणा उ चित्ते, वतिसाहे पंचरूविता॥२९॥ ३७६। चत्तारि माणुस्सीगब्भा पं० तं०-इत्थित्ताए पुरिसत्ताए णपुंसगत्ताते बिंबत्ताए-'अप्पं सुक्कं बहुं ओयं, इत्थी तत्थ पजातति। अप्पं ओयं बहुं सुक्कं, पुरिसो तत्थ पजातति॥३०॥ दोण्हंपि रत्तसुक्काणं, तुल्लभावे णपुंसओ। इत्थीतोतसमाओगे, बिंबं तत्थ पजायति॥३१॥ ३७७। उप्पायपुव्वस्स णं चत्तारि चूलवत्थू प०। ३७८। चउव्विहे कव्वे पं० तं०-गज्जे पज्जे कत्थे गेए। ३७९। णेरतिताणं चत्तारि समुग्घाता पं० तं०-वेयणासमुग्घाते कसायसमुग्घाते मारणंतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए, एवं वाउक्काइयाणवि। ३८०। अरिहतो णं अरिट्ठनेमिस्स चत्तारि सया चोद्दसपुव्वीणमजिणाणं जिणसंकासाणं सव्वक्खरसन्निवाईणं जिणो इव अवितथं वागरमाणाणं उक्कोसिता चउद्दसपुव्विसंपया हुत्था। ३८१। समणस्स णं भगवओ महावीरस्स चत्तारि सया वादीणं सदेवमणुयासुराते परिसाते अपराजियाणं उक्कोसिता वातिसंपया हुत्था। ३८२। हेट्ठिल्ला चत्तारि कप्पा अद्धचंदसंठाणसंठिया पं० तं०-सोहम्मे ईसाणे सणंकुमारे माहिंदे, मज्झिल्ला चत्तारि कप्पा पडिपुन्नचंदसंठाणसंठिया पं०तं०-बंभलोगे लंतते महासुक्के सहस्सारे, उवरिल्ला चत्तारि कप्पा अद्धचंदसंठाणसंठिता पं० तं०-आणते पाणते आरणे अच्चुते। ३८३। चत्तारि समुद्दा पत्तेयरसा पं० तं०-लवणे (लवणोदे पा०) वरुणोदे खीरोदे घतोदे। ३८४। चत्तारि आवत्ता पं० तं०-खरावत्ते उन्नतावत्ते गूढावत्ते आमिसावत्ते, एवामेव चत्तारि कसाया पं० तं०-खरावत्तसमाणे कोहे उन्नतावत्तसमाणे माणे गूढावत्तसमाणा माता आमिसावत्तसमाणे लोभे, खरावत्तसमाणं कोहं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेति णेरइएसु उववज्जति, उन्नतावत्तसमाणं माणं एवं चेव गूढावत्तसमाणं मातमेवं चेव आमिसावत्तसमाणं लोभमणुपविट्ठे जीवे कालं करेति नेरइएसु उववज्जेति। ३८५। अणुराहानक्खत्ते चउत्तारे पं० पुव्वासाढे एवं चेव उत्तरासाढे एवं चेव। ३८६। जीवाणं चउठाणनिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताते चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा (तं०-) नेरतियनिव्वत्तिते तिरिक्खजोणितनिव्वत्तिते मणुस्स० देवनिव्वत्तिते, एवं उवचिणिंसु वा उवचिणंति वा उवचिणिस्संति वा, एवं चिय उवचिय बंध उदीर वेत तह निज्जरे चेव। ३८७। चउपदेसिया खंधा अणंता पन्नत्ता चउपदेसोगाढा पोग्गला अणंता० चउसमयठितिया पोग्गला अणंता० चउगुणकालगा पोग्गला अणंता० जाव चउगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता। ३८८॥ उ०४ चतुःस्थानकाध्ययनम् ४॥ पंच महव्वया पं० तं०-सव्वातो पाणातिवायाओ वेरमणं जाव सव्वातो परिग्गहातो वेरमणं, पंचाणुव्वता पं० तं०-थूलातो पाणाइवायातो वेरमणं थूलातो मुसावायातो वेरमणं थूलातो अदिन्नादाणातो वेरमणं सदारसंतोसे इच्छापरिमाणे। ३८९। पंच वन्ना पं० तं०-किण्हा नीला लोहिता हालिद्दा सुक्किल्ला १ पंच रसा पं०तं०-तित्ता जाव मधुरा २ पंच कामगुणा पं० तं०-सद्दा रूवा गंधा रसा फासा ३ पंचहिं ठाणेहिं जीवा सज्जंति तं०-सद्देहिं जाव फासेहिं ४ एवं रज्जंति ५ मुच्छंति ६ गिज्झंति ७ अज्झोववज्जंति ८ पंचहिं ठाणेहिं जीवा विणिघायमावज्जंति, तं०-सद्देहिं जाव फासेहिं ९ पंच ठाणा अपरिण्णाता जीवाणं अहिताते असुभाते अखमाते अणिस्सेयसत्ताते अणाणुगामितत्ताते भवंति, तं०-सद्दा जाव फासा १० पंच ठाणा सुपरिन्नाता जीवाणं हिताते सुभाते जाव आणुगामियत्ताए भवंति, तं०-सद्दा जाव फासा ११ पंच ठाणा अपरिण्णाता जीवाणं दुग्गतिगमणाए भवंति तं०-सद्दा जाव फासा १२ पंच ठाणा परिण्णाया जीवाणं सुग्गतिगमणाए भवंति तं०-सद्दा जाव फासा १३। ३९०। पंचहिं ठाणेहिं जीवा दोग्गतिं गच्छंति, तं०-पाणातिवातेणं जाव परिग्गहेणं, पंचहिं ठाणेहिं जीवा सोगतिं गच्छंति, तं०-पाणातिवातवेरमणेणं जाव परिग्गहवेरमणेणं। ३९१। पंच पडिमातो पं० तं०-भद्दा सुभद्दा महाभद्दा सव्वतोभद्दा भद्दुत्तरपडिमा। ३९२। पंच थावरकाया पं० तं०-इंदे थावरकाए बंभे० सिप्पे० सं(प्र० सु)मती थावरकाए पाजावच्चे थावरकाए, पंच थावरकायाधिपती पं० तं०-इंदे थावरकाताधिपती जाव पातावच्चे थावरकाताहिपती। ३९३। पंचहिं ठाणेहिं ओहिदंसणे समुप्पज्जिउकामेऽवि तप्पढमयाते खंभातेज्जा, तं०-अप्पभूतं वा पुढविं पासित्ता तप्पढमयाते खंभातेज्जा कुंथुरासिभूतं वा पुढविं पासित्ता तप्पढमयाते खंभातेज्जा महतिमहालतं वा महोरगसरीरं पासित्ता तप्पढमताते खंभातेज्जा देवं वा महड्ढियं जाव महेसक्खं पासित्ता तप्पढमताते खंभातेज्जा पुरेसु वा पोराणाइं (ओरालाइं पा०) महतिमहालताणि महानिहाणाइं पहीणसामितातिं पहीणसेउयातिं पहीणगुत्तागाराइं उच्छिन्नसामियाइं उच्छिन्नसेउयाइं उच्छिन्नगुत्तागाराइं जाइं इमाइं गामागरणगरखेडकब्बडदोणमुहपट्टणासमसंबाहसन्निवेसेसु सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु णगरणिद्धमणेसु सुसाणसुन्नागारगिरिकंदरसन्तिसेलोवट्ठावणभवणगिहेसु संनिक्खित्ताइं चिट्ठंति ताइं वा पासित्ता तप्पढमताते खंभातेज्जा, इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं ओहिदंसणे समुप्पज्जिउकामेऽवि तप्पढमताते खंभाएज्जा, पंचहिं ठाणेहिं केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिउकामे तप्पढमताते नो खंभातेज्जा, तं०-अप्पभूतं वा पुढविं पासित्ता तप्पढमताते णो खंभेज्जा सेसं तहेव जाव भवणगिहेसु संनिक्खित्ताइं चिट्ठंति ताइं वा पासित्ता तप्पढमताते णो खंभातेज्जा, इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं जाव नो खंभातेज्जा। ३९४। णेरइयाणं सरीरगा पंचवन्ना पंचरसा पं० तं०-किण्हा जाव सुक्किल्ला, तित्ता जाव मधुरा, एवं निरंतरं जाव वेमाणियाणं, पंच सरीरगा पं०तं०-ओरालिते वेउव्विते आहारते तेयते कम्मते, ओरालितसरीरे पंचवन्ने पंचरसे पं० तं०-किण्हे जाव सुक्किल्ले, तित्ते जाव महुरे, एवं जाव कम्मगसरीरे, सव्वेऽवि णं बादरबोंदिधरा कलेवरा पंचवन्ना (२७)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org
मुनि दीपरत्नसागर

पंचरसा दुगंधा अट्ठफासा। ३९५। पंचहिं ठाणेहिं पुरिमपच्छिमगाणं जिणाणं दुग्गमं भवति, तं०-दुआइक्खं दुविभज्जं (दुविभवं पा०) दुपस्सं दुतितिक्खं दुरणुचरं, पंचहिं ठाणेहिं मज्झिमगाणं जिणाणं सुगमं भवति, तं०-सुआतिक्खं सुविभज्जं सुपस्सं सुतितिक्खं सुरणुचरं, पंच ठाणाइं समणेणं भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णिच्चं वन्नियाइं निच्चं कित्तियाइं णिच्चं बुतियाइं णिच्चं पसत्थाइं निच्चमब्भणुन्नायाइं भवंति, तं०-खंती मुत्ती अज्जवे मद्दवे लाघवे, पंच ठाणाइं समणेणं भगवता महावीरेणं जाव अब्भणुन्नायाइं भवंति, तं०-सच्चे संजमे तवे चियाते बंभचेरवासे, पंच ठाणाइं समणाणं जाव अब्भणुन्नाइं भवंति, तं०-उक्खित्तचरते निक्खित्तचरते अंतचरते पंतचरते लूहचरते, पंच ठाणाइं जाव अब्भणुण्णायाइं भवंति, तं०-अन्नातचरते अन्नइलायचरे (अन्नवेलाचरे पा०) मोणचरे संसट्ठकप्पिते तज्जातसंसट्ठकप्पिते, पंच ठाणाइं जाव अब्भणुन्नाताइं भवंति, तं०-उवनिहिते सुद्धेसणिते संखादत्तिते दिट्ठलाभिते पुट्ठलाभिते, पंच ठाणाइं जाव अब्भणुण्णाताइं भवंति, तं०-आयंबिलिते निव्वियते पुरमड्ढिते परिमितपिंडवातिते भिन्नपिंडवातिते, पंच ठाणाइं० अब्भणुन्नायाइं भवंति, तं०-अरसाहारे विरसाहारे अंताहारे पंताहारे लूहाहारे, पंच ठाणाइं० अब्भणुन्नायाइं भवंति, तं०-अरसजीवी विरसजीवी अंतजीवी पंतजीवी लूहजीवी, पंच ठाणाइं० भवंति, तं०-ठाणातिते उक्कडुआसणिए पडिमट्ठाती वीरासणिए णेसज्जिए, पंच ठाणाइं० भवंति, तं०-दंडायतिते लगंडसाती आतावते अवाउडते अकंडूयते। ३९६। पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवति, तं०-अगिलाते आयरियवेयावच्चं करेमाणे एवं उवज्झायवेयावच्चं करेमाणे थेरवेयावच्चं० तवस्सिवेयावच्चं० गिलाणवेयावच्चं करेमाणे, पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवति, तं०-अगिलाते सेहवेयावच्चं करेमाणे, अगिलाते कुलवेया०, अगिलाए गणवे०, अगिलाए संघवे०, अगिलाते साहम्मियवेयावच्चं करेमाणे।३९७। पंचहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे साहम्मितं संभोतितं विसंभोतितं करेमाणे णातिक्कमति, तं०-सकिरितट्ठाणं पडिसेवित्ता भवति, पडिसेवित्ता णो आलोएइ, आलोइत्ता णो पट्ठवेति, पट्ठवेत्ता णो णिव्विसति, जाइं इमाइं थेराणं ठितिपकप्पाइं भवंति ताइं अतियंचिय२ पडिसेवेति से हंदऽहं पडिसेवामि किं मं थेरा करिस्संति?, पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे साहंमितं पारंचितं करेमाणे णातिक्कमति, तं०-कुले वसति सकुलस्स भेदाते अब्भुट्टित्ता भवति, गणे वसति सगणस्स भेताते अब्भुट्टेत्ता भवति, हिंसप्पेही, छिद्दप्पेही, अभिक्खणं२ पसिणातातणाइं पउंजित्ता भवति।३९८। आयरियउवज्झायस्स णं गणंसि पंच वुग्गहट्ठाणा पं० तं०-आयरियउवज्झाए णं गणंसि आणं वा धारणं वा नो सम्मं पउंजेत्ता भवति, आयरियउवज्झाए णं गणंसि आधारातिणियाते कितिकम्मं नो सम्मं पउंजित्ता भवति, आयरियउवज्झाते गणंसि जे सुत्तपज्जवजाते धारेति ते काले२ णो सम्ममणुप्पवातित्ता भवति, आयरियउवज्झाए गणंसि गिलाणसेहवेयावच्चं नो सम्ममब्भुट्टित्ता भवति, आयरियउवज्झाते गणंसि अणापुच्छितचारी यावि हवइ, नो आपुच्छियचारी आयरियउवज्झायस्स णं गणंसि पंचावुग्गहट्ठाणा पं० तं०-आयरियउवज्झाए गणंसि आणं वा धारणं वा सम्मं पउंजित्ता भवति, एवमधारायणिताते सम्मं किइकम्मं पउंजित्ता भवइ, आयरियउवज्झाए णं गणंसि जे सुतपज्जवजाते धारेति ते काले२ सम्मं अणुपवाइत्ता भवइ, आयरियउवज्झाए गणंसि गिलाणसेहवेतावच्चं सम्मं अब्भुट्टित्ता भवति, आयरियउवज्झाते गणंसि आपुच्छियचारी यावि भवति णो अणापुच्छियचारी। ३९९। पंच निसिज्जाओ पं० तं०-उक्कुडुती गोदोहिता समपायपुता पलितंका अद्धपलितंका, पंच अज्जवट्ठाणा पं० तं०-साधुअज्जवं साधुमद्दवं साधुलाघवं साधुखंती साधुमुत्ती। ४००। पंचविहा जोइसिया पं० तं०-चंदा सूरा गहा नक्खत्ता ताराओ, पंचविहा देवा पं० तं०-भवितदव्वदेवा णरदेवा धम्मदेवा देवातिदेवा भावदेवा। ४०१। पंचविहा परितारणा पं० तं०-कातपरिचारणा फासपरितारणा रूवपरितारणा सद्दपरितारणा मणपरितारणा। ४०२। चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो पंच अग्गमहिसीओ पं० तं०-काले राती रतणी विज्जू मेहा, बलिस्स णं वतिरोतणिंदस्स वतिरोतणरन्नो पंच अग्गमहिसीओ पं० तं०-सुभा णिसुभा रंभा णिरंभा मतणा। ४०३। चमरस्स णमसुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो पंच संगामिता अणिता पंच संगामिया अणियाधिवती पं० तं०-पायत्ताणिते पीढाणिते कुंजराणिते महिसाणिते रहाणीते, दुमे पायत्ताणिताधिवती सोदामी आसराया पीढाणियाधिवती कुंथू हत्थिराया कुंजराणिताधिवती लोहितक्खे महिसाणिताधिवती किन्नरे रधाणिताधिवती, बलिस्स णं वतिरोतणिंदस्स वतिरोतणरन्नो पंच संगामिताणिता पंच संगामिताणीयाधिवती पं० तं०-पायत्ताणिते जाव रधाणिते, महद्दुमे पायत्ताणिताधिवती महासोतामो आसराता पीढाणिताधिवती मालंकारो हत्थिराया कुंजराणिताधिपती महालोहिअक्खो महिसाणिताधिवती किंपुरिसे रधाणिताधिपती, धरणस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररन्नो पंच संगामिता अणिता पंच संगामिताणीयाधिपती पं०तं०-पायत्ताणिते जाव रहाणीए, भद्दसेणे पायत्ताणिताधिपती जसोधरे आसराया पीठाणिताधिपती सुदंसणे हत्थिराया कुंजराणिताधिपती नीलकंठे महिसाणियाधिपती आणंदे रहाणिताहिवई, भूयाणंदस्स नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो पंच संगामियाणिया पंच संगामियाणीयाहिवई पं० तं०-पायत्ताणीए जाव रहाणीए, दक्खे पायत्ताणियाहिवई सुग्गीवे आसराया पीढा-

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णियाहिवई सुविक्कमे हत्थिराया कुंजराणिताहिवई सेयकंठे महिसाणियाहिवई नंदुत्तरे रहाणियाहिवई, वेणुदेवस्स णं सुवन्निंदस्स सुवन्नकुमाररन्नो पंच संगामियाणिता पंच संगामिताणिताहिपती पं० तं०-पायत्ताणीते एवं जधा धरणस्स तधा वेणुदेवस्सवि, वेणुदालियस्स जहा भूताणंदस्स, जधा धरणस्स तहा सव्वेसिं दाहिणिल्लाणं जाव घोसस्स, जधा भूताणंदस्स तधा सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं जाव महाघोसस्स, सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो पंच संगामिता अणिता पंच संगामिताणिताधिवती पं० तं०-पायत्ताणिते जाव उसभाणिते, हरिणेगमेसी पायत्ताणिताधिवती वाऊ आसराता पीढाणिताधिवई एरावणे हत्थिराया कुंजराणिताधिपई दामड्ढी उसभाणिताधिपती माढरो रधाणिताधिपती, ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो पंच संगामिया अणिता जाव पायत्ताणिते पीढाणिए कुंजराणिए उसभाणिए रधाणिते, लहुपरक्कमे पायत्ताणिताधिवती महावाऊ आसराया पीढाणियाहिवई पुप्फदंते हत्थिराया कुंजराणियाहिवती महादामड्ढी उसभाणियाहिवई महामाढरे रधाणियाहिवती, जधा सक्कस्स तहा सव्वेसिं दाहिणिल्लाणं जाव आरणस्स, जधा ईसाणस्स तहा सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं जाव अच्चुतस्स ।४०४। सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो अब्भंतरपरिसाए देवाणं पंच पलिओवमाइं ठिती पं०, ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो अब्भंतरपरिसाते देवीणं पंच पलिओवमाइं ठिती पं० ।४०५। पंचविहा पडिहा पं० तं०-गतिपडिहा ठितीपडिहा बंधणपडिहा भोगपडिहा बलवीरियपुरिसयारपरक्कमपडिहा ।४०६। पंचविधे आजीविते पं० तं०-जातिआजीवे कुलाजीवे कम्माजीवे सिप्पाजीवे लिंगाजीवे ।४०७। पंच रातककुहा पं० तं०-खग्गं छत्तं उप्फेसं उवाणहाओ वालवीअणी ।४०८। पंचहिं ठाणेहिं छउमत्थे णं उदिन्ने परिस्सहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा खमेज्जा तितिक्खेज्जा अहियासेज्जा, तं०-उदिन्नकम्मे खलु अयं पुरिसे उम्मत्तभूते तेण मे एस पुरिसे अक्कोसति वा अवहसति वा णिच्छोडेति वा णिब्भंछेति वा बंधति वा रुंभति वा छविच्छेतं करेति वा पमारं वा नेति उद्दवेइ वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणम(णं वा आ)च्छिंदति वा विच्छिंदति वा भिंदति वा अवहरति वा १ जक्खातिट्ठे खलु अयं पुरिसे तेण मे एस पुरिसे अक्कोसति वा तहेव जाव अवहरति वा २ ममं च णं तब्भववेयणिज्जे कम्मे उतिन्ने भवति तेण मे एस पुरिसे अक्कोसति वा जाव अवहरति वा ३ ममं च णं सम्ममसहमाणस्स अखममाणस्स अतितिक्खमाणस्स अणधितासेमाणस्स किं मन्ने कज्जति ?, एगंतसो मे पावे कम्मे कज्जति ४ ममं च णं सम्मं सहमाणस्स जाव अहियासेमाणस्स किं मन्ने कज्जति ?, एगंतसो मे णिज्जरा कज्जति ५ इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं छउमत्थे उदिन्ने परीसहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा जाव अहियासेज्जा। पंचहिं ठाणेहिं केवली उदिन्ने परीसहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा जाव अहियासेज्जा, तं०-खित्तचित्ते खलु अतं पुरिसे तेण मे एस पुरिसे अक्कोसति वा तहेव जाव अवहरति वा १ दित्तचित्ते खलु अयं पुरिसे तेण मे एस पुरिसे जाव अवहरति वा २ जक्खातिट्ठे खलु अयं पुरिसे तेण मे एस पुरिसे जाव अवहरति वा ३ ममं च णं तब्भववेयणिज्जे कम्मे उदिन्ने भवति तेण मे एस पुरिसे जाव अवहरति वा ४ ममं च णं सम्मं सहमाणं खममाणं तितिक्खमाणं अहियासेमाणं पासेत्ता बहवे अन्ने छउमत्था समणा णिग्गंथा उदिन्ने २ परीसहोवसग्गे एवं सम्मं सहिस्संति जाव अहियासिस्संति ५, इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं केवली उदिन्ने परीसहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा जाव अहियासेज्जा ।४०९। पंच हेऊ पं० तं०-हेउं न जाणति हेउं ण पासति हेउं ण बुज्झति हेउं णाभिगच्छति हेउं अन्नाणमरणं मरति १ पंच हेऊ पं० तं०-हेउणा ण जाणति जाव हेउणा अन्नाणमरणं मरति २ पंच हेऊ पं० तं०-हेउं जाणइ जाव हेउं छउमत्थमरणं मरइ ३ पंच हेऊ पं० तं०-हेउणा जाणइ जाव हेउणा छउमत्थमरणं मरइ ४ पंच अहेऊ पं० तं०-अहेउं ण याणति जाव अहेउं छउमत्थमरणं मरति ५ पंच अहेऊ पं० तं०-अहेउणा न जाणति जाव अहेउणा छउमत्थमरणं मरति ६ पंच अहेऊ पं० तं०-अहेउं जाणति जाव अहेउं केवलिमरणं मरति ७ पंच अहेऊ पं० तं०-अहेउणा ण जाणति जाव अहेउणा केवलिमरणं मरति ८ केवलिस्स णं पंच अणुत्तरा पं०तं०-अणुत्तरे नाणे अणुत्तरे दंसणे अणुत्तरे चरित्ते अणुत्तरे तवे अणुत्तरे वीरिते ९ ।४१०। पउमप्पहे णमरहा पंचचित्ते हुत्था, तं०-चित्ताहिं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते चित्ताहिं जाते चित्ताहिं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारितं पव्वइए चित्ताहिं अणंते अणुत्तरे णिव्वाघाए णिरावरणे कसिणे पडिपुन्ने केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने चित्ताहिं परिणिव्वुते, पुप्फदंते णं अरहा पंचमूले हुत्था, तं०-मूलेणं चुते चइत्ता गब्भं वक्कंते एवं चेव एवमेतेणं अभिलावेणं इमातो गाहातो अणुगंतव्वातो 'पउमप्पभस्स चित्ता १ मूले पुण होइ पुप्फदंतस्स २। पुव्वाइं असाढा ३ सीयलस्सुत्तर विमल भद्दवता ४ ॥३२॥ रेवतिता ऽणंतजिणो ५ पूसो धम्मस्स ६ संतिणो भरणी ७। कुंथुस्स कत्तियाओ ८ अरस्स तह रेवतीतो य ९॥ ३३ ॥ मुणिसुव्वयस्स सवणो १० आसिणि णमिणो ११ य नेमिणो चित्ता १२। पासस्स विसाहाओ १३ पंचयहत्थुत्तरो वीरो १४ ॥३४॥ समणे भगवं महावीरे पंचहत्थुत्तरे होत्था तं०-हत्थुत्तराहिं चुए चइत्ता गब्भं वक्कंते हत्थुत्तराहिं गब्भाओ गब्भं साहरिए हत्थुत्तराहिं जाते हत्थुत्तराहिं मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए हत्थुत्तराहिं अणंते अणुत्तरे जाव केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने ।४११॥अ०५ उ०१॥ नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा इमाओ उद्दिट्ठाओ गणियाओ वितंजितातो पंच महण्णवातो महाणदीओ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरित्तए वा संतरित्तए वा,

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं०-गंगा जउणा सरऊ एरावती मही, पंचहिं ठाणेहिं कप्पति, तं०-भतंसि वा १ दुब्भिक्खंसि वा २ पव्वहेज्ज व णं कोई ३ दओघंसि वा एज्जमाणंसि ४ महता वा अणारिएसु ५।४१२। णो कप्पइ णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा पढमपाउसंसि गामाणुगामं दूइज्जित्तए, पंचहिं ठाणेहिं कप्पइ, तं०-भयंसि वा दुब्भिक्खंसि वा जाव महता वा अणारितेहिं ५. वासावासं पज्जोसवियाणं णो कप्पइ णिग्गंथाण वा २ गामाणुगामं दूइज्जित्तए, पंचहिं ठाणेहिं कप्पइ, तं०-णाणट्ठयाए दंसणट्ठयाए चरित्तट्ठयाए आयरियउवज्झाया वा से वीसुंभेज्जा आयरियउज्झायाण वा बहिता वेआवच्चं करणताते।४१३। पंच अणुग्घातिता पं० तं०-हत्थाकम्मं करेमाणे मेहुणं पडिसेवेमाणे गतीभोयणं भुंजेमाणे सागारितपिंडं भुंजेमाणे रायपिंडं भुंजेमाणे।४१४। पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे रायंतेउरमणुपविसमाणे नाइक्कमति, तं०-नगरं सिता सव्वतो समंता गुत्ते गुत्तदुवारे, बहवे समणमाहणा णो संचाएंति भत्ताते वा पाणाते वा निक्खमित्तते वा पविसित्तते वा तेसिं विन्नवणट्ठताते गतंतेउरमणुपविसेज्जा १ पाडिहारितं वा पीढफलगसेज्जासंथारगं पच्चप्पिणमाणे रायंतेउरमणुपवेसेज्जा २ हतस्स वा गयस्स वा दुट्ठस्स आगच्छमाणस्स भीते रायंतेउरमणुपवेसिज्जा ३ परो व णं सहसा वा बलसा वा बाहाते गहाय अंतेउरमणुपवेसेज्जा ४ बहिता व णं आगमगयं वा उज्जाणगयं वा रायंतेउरजणो सव्वतो समंता संपरिक्खित्ताणं निवेसिज्जा ५ इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे जाव णातिक्कमइ।४१५। पंचहिं ठाणेहिमित्थी पुरिसेण सद्धिं असंवसमाणीवि गब्भं धरेज्जा, तं०-इत्थी दुब्बियडा दुच्चिमण्णा सुक्कपोग्गले अधिट्ठिज्जा, सुक्कपोग्गलसंसिट्ठे व से वत्थे अंतो जोणीते अणुपवेसेज्जा, सयं वा सा सुक्कपोग्गले अणुपवेसेज्जा, परो व से सुक्कपोग्गले अणुपवेसेज्जा, सीओदगवियडेण वा से आयममाणीते सुक्कपोग्गला अणुपवेसेज्जा, इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं जाव धरेज्जा १, पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणीवि गब्भं नो धरेज्जा, तं०-अप्पत्तजोवणा १ अतिक्कंतजोवणा २ जातिवंझा ३ गेलन्नपुट्ठा ४ दोमणंसिया ५ इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं जाव नो धरेज्जा २, पंचहिं ठाणेहिमित्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणीवि नो गब्भं धरेज्जा, तं०-निच्चोउया अणोउया वावन्नसोया वाविद्धसोया अणंगपडिसेवणा, इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिमित्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणीवि गब्भं णो धरेज्जा ३, पंचहिं ठाणेहिं इत्थी० तं०-उउंमि णो णिगामपडिसेविणी तावि भवति १ समागता वा से सुक्कपोग्गला पडिविद्धंसंति २ उदिन्ने वा से पित्तसोणिते ३ पुरा वा देवकम्मणा ४ पुत्तफले वा नो निहिट्ठे भवति ५ इच्चेतेहिं जाव नो धरेज्जा ४।४१६। पंचहिं ठाणेहिं निग्गंथा निग्गंथीओ य एगतओ ठाणं वा सिज्जं वा निसीहियं वा चेतेमाणा णातिक्कमंति, तं०-अत्थेगइया निग्गंथा निग्गंथीओ य एगं महं अगामितं छिन्नावायं दीहमद्धमडविमणुपविट्ठा तत्थेगयतो ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेतेमाणा णातिक्कमंति १ अत्थेगइआ णिग्गंथा० गामंसि वा णगरंसि वा जाव रायहाणिंसि वा वासं उवागता एगतिया यऽत्थ उवस्सयं लभंति एगतिता णो लभंति तत्थेगतितो ठाणं वा जाव नातिक्कमंति २ अत्थेगतिता निग्गंथा य० नागकुमारावासंसि वा (सुवण्णकुमारावासंसि वा) वासं उवागता तत्थेगयओ जाव णातिक्कमंति ३ आमोसगा दीसंति ते इच्छंति निग्गंथीओ चीवरपडिताते पडिगाहित्तते तत्थेगयओ ठाणं वा जाव णातिक्कमंति ४ जुवाणा दीसंति ते इच्छंति निग्गंथीओ मेहुणपडिताते पडिगाहित्तते तत्थेगयओ ठाणं वा जाव णातिक्कमंति ५, इच्चेतेहिं पंचहिं ठाणेहिं जाव नातिक्कमंति, पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे अचेलए सचेलियाहिं निग्गंथीहिं सद्धिं संवसमाणे नाइक्कमति, तं०-खित्तचित्ते समणे णिग्गंथे निग्गंथेहिमविज्जमाणेहिं अचेलए सचेलियाहिं निग्गंथीहिं सद्धिं संवसमाणे णातिक्कमति १ एवमेतेण गमएणं दित्तचित्ते जक्खातिट्ठे उम्मायपत्ते निग्गंथीपव्वावियते समणे णिग्गंथेहिं अविज्जमाणेहिं अचेलए सचेलियाहिं णिग्गंथीहिं सद्धिं संवसमाणे णातिक्कमंति।४१७। पंच आसवदारा पं० तं०-मिच्छत्तं अविरती पमादे कसाया जोगा, पंच संवरदारा पं० तं०-सम्मत्तं विरती अपमादो अकसातित्तमजोगित्तं, पंच दंडा पं० तं०-अट्ठादंडे अणट्ठादंडे हिंसादंडे अकम्हा(स्मात्)दंडे दिट्ठीविप्परियासितादंडे।४१८। मिच्छादिट्ठियाणं पंच किरियाओ पं० तं०-आरंभिता १ परिग्गहिता २ मायावत्तिता ३ अपच्चक्खाणकिरिया ४ मिच्छादंसणवत्तिता ५. मिच्छादिट्ठियाणं नेरइयाणं पंच किरियाओ पं०तं०-जाव मिच्छादंसणवत्तिया, एवं सव्वेसिं निरन्तरं जाव मिच्छादिट्ठिताणं वेमाणिताणं. नवरं विगलिंदिता मिच्छदिट्ठी ण भन्नंति. सेसं तहेव. पंच किरियातो पं० तं०-कातिता १ अहिगरणिता २ पातोसिया ३ पारितावणिया ४ पाणातिवातकिरिया ५, णेरइयाणं पंच किरियाओ एवं चेव निरन्तरं जाव वेमाणियाणं १, पंच किरिताओ पं०तं०-आरंभिता जाव मिच्छादंसणवत्तिता, णेरइयाणं पंच किरिता, निरंतरं जाव वेमाणियाणं २ पंच किरियातो पं० तं०-दिट्ठिता १ पुट्ठिता २ पाडोचि(डुचि)ता ३ सामंतोवणिवाइया ४ साहत्थिता ५, एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं २४, ३ पंच किरियातो पं० तं०-णेसत्थिता १ आणवणिता २ वेयारणिया ३ अणाभोगवत्तिता ४ अणवकंखवत्तिता ५, एवं जाव वेमाणियाणं २४, ४, पंच किरियाओ पं० तं०-पेज्जवत्तिता १ दोसवत्तिया २ पओगकिरिया ३, समुदाणकिरिया ४ ईरियावहिया ५, एवं मणुस्साणवि, सेसाणं नत्थि ५।४१९। पंचविहा परिन्ना पं० तं०-उवहिपरिन्ना उवस्सयपरिण्णा कसायपरिन्ना जोगपरिन्ना भत्तपाणपरिन्ना।४२०। पंचविहे ववहारे पं० तं०-आगमे सुते आणा धारणा जीते, जहा

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से तत्थ आगमे सिता आगमेणं ववहारं पट्टवेज्जा, णो से तत्थ आगमे सिया जहा से तत्थ सुते सिता सुतेणं ववहारं पट्टवेज्जा णो से तत्थ सुते सिता एवं जाव जहा से तत्थ जीए सिया जीतेणं ववहारं पट्टवेज्जा. इच्चेतेहिं पंचहिं ववहारं पट्टवेज्जा आगमेणं जाव जीतेणं. जधा २ से तत्थ आगमे जाव जीते तहा २ ववहारं पट्टवेज्जा. से किमाहु भंते ?. आगमबलिया समणा निग्गंथा, इच्चेतं पंचविधं ववहारं जता जता जहिं जहिं तया तता तहिं तहिं अणिस्सितोवस्सितं सम्मं ववहरमाणे समणे णिग्गंथे आणाते आराधते भवति। ४२१। संजतमणुस्साणं सुत्ताणं पंच जागरा पं० तं०-सद्दा जाव फासा, संजतमणुस्साणं जागराणं पंच सुत्ता पं० तं०-सद्दा जाव फासा. असंजयमणुस्साणं सुत्ताणं वा जागरगणं वा पंच जागरा पं० तं०-सद्दा जाव फासा। ४२२। पंचहिं ठाणेहिं जीवा रतं आदिज्जंति. तं०-पाणातिवातेणं जाव परिग्गहेणं. पंचहिं ठाणेहिं जीवा रतं वमंति. तं०-पाणातिवातवेरमणेणं जाव परिग्गहवेरमणेणं। ४२३। पंचमासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स कप्पंति पंच दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहेत्तते पंच पाणगस्स। ४२४। पंचविधे उवघाते पं० तं०-उग्गमोवघाते उप्पायणोवघाते एमणोवघाते परिकम्मोवघाते परिहरणोवघाते. पंचविहा विसोही पं० तं०-उग्गमविसोही उप्पायणविसोधी एसणाविसोही परिकम्मविसोही परिहरणविसोधी। ४२५। पंचहिं ठाणेहिं जीवा दुल्लभबोधियत्ताए कम्मं पकरेंति. तं०-अरहंताणं अवन्नं वदमाणे १ अरहंतपन्नत्तस्स धम्मस्स अवन्नं वदमाणे २ आयरियउवज्झायाणं अवन्नं वदमाणे ३ चाउवन्नस्स संघस्स अवन्नं वयमाणे ४ विवक्कतवबंभचेराणं देवाणं अवन्नं वदमाणे ५. पंचहिं ठाणेहिं जीवा सुलभबोधियत्ताए कम्मं पगरेंति. तं०-अरहंताणं वन्नं वदमाणे जाव विवक्कतवबंभचेराणं देवाणं वन्ने वदमाणे। ४२६। पंच पडिसंलीणा पं० तं०-सोइंदियपडिसंलीणे जाव फासिंदियपडिसंलीणे. पंच अप्पडिसंलीणा पं० तं०-सोतिंदियअप्पडिसंलीणे जाव फासिंदियअप्पडिसंलीणे, पंचविधे संवरे पं० तं०-सोतिंदियसंवरे जाव फासिंदियसंवरे. पंचविहे असंवरे पं० तं०-सोइंदियअसंवरे जाव फासिंदियअसंवरे। ४२७। पंचविधे संजमे पं० तं०-सामातितसंजमे छेदोवट्ठावणियसंजमे परिहारविसुद्धितसंजमे सुहुमसंपरागसंजमे अहक्खायचरित्तसंजमे। ४२८। एगिंदिया णं जीवा असमारभमाणस्स पंचविधे संजमे कज्जति, तं०-पुढविकातियसंजमे जाव वणस्सतिकातितसंजमे, एगिंदिया णं जीवा समारभमाणस्स पंचविहे असंजमे कज्जति. तं०-पुढविकातितअसंजमे जाव वणस्सतिकातितअसंजमे।४२९। पंचिंदिया णं जीवा असमारभमाणस्स पंचविधे संजमे कज्जति. तं०-सोतिंदितसंजमे जाव फासिंदियसंजमे. पंचिंदिया णं जीवा समारंभमाणस्स पंचविधे असंजमे कज्जति. तं०-सोतिंदियअसंजमे जाव फासिंदियअसंजमे. सव्वपाणभूयजीवसत्ता णं असमारभमाणस्स पंचविधे संजमे कज्जति. तं०-एगिंदितसंजमे जाव पंचिंदियसंजमे. सव्वपाणभूतजीवसत्ता णं समारंभमाणस्स पंचविधे असंजमे कज्जति. तं०-एगिंदितअसंजमे जाव पंचिंदियअसंजमे। ४३०। पंचविधा तणवणस्सतिकाइता पं०तं०-अग्गबीया मूलबीया पोरबीया खंधबीया बीयरुहा। ४३१। पंचविधे आयारे पं० तं०-णाणायारे दंसणायारे चरित्तायारे तवायारे वीरियायारे। ४३२। पंचविधे आयारपकप्पे पं० तं०-मासिते उग्घातिते मासिए अणुग्घाइए चाउम्मासिए उग्घाइए चाउम्मासिए अणुग्घातीते आरोवणा, आरोवणा पंचविहा पं० तं०-पट्ठविया ठविया कसिणा अकसिणा हाडहडा। ४३३। जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं सीयाए महानईए उत्तरेणं पंच वक्खारपव्वता पं० तं०-मालवंते चित्तकूडे पम्हकूडे णलिणकूडे एगसेले १ जंबूमंदरस्स पुरओ सीताए महानदीए दाहिणेणं पंच वक्खारपव्वता पं० तं०-तिकूडे वेसमणकूडे अंजणे मायंजणे सोमणसे २ जंबूमंदरस्स पच्चत्थिमेणं सीओताते महाणदीए दाहिणेणं पंच वक्खारपव्वता पं० तं०-विज्जुप्पभे अंकावती पम्हावती आसीविसे सुहावहे ३ जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं सीतोताते महानदीते उत्तरेणं पंच वक्खारपव्वता पं० तं०-चंदपव्वते सूरपव्वते णागपव्वते देवपव्वते गंधमादणे ४ जंबूमंदरदाहिणेणं देवकुराए कुराए पंच महद्दहा पं० तं०-निसहद्दहे देवकुरुद्दहे सूरद्दहे सुलसद्दहे विज्जुप्पभद्दहे ५ जंबूमंदरउत्तरेणं उत्तरकुराते कुराए पंच महद्दहा पं० तं०-नीलवंतद्दहे उत्तरकुरुद्दहे चंददहे एरावणद्दहे मालवंतद्दहे ६ सव्वेऽवि णं वक्खारपव्वया सीयासीओयाओ महाणईओ मंदरं वा पव्वतंतेणं पंच जोयणसताइं उड्ढंउच्चत्तेणं पंच गाउयसताइं उव्वेहेणं ७। धायइसंडे दीवे पुरच्छिमद्धेणं मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं सीताते महाणतीते उत्तरेणं पंच वक्खारपव्वता पं० तं०-मालवंते एवं जधा जंबुद्दीवे तधा जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे वक्खारा दहा य उच्चत्तं भाणियव्वं। समयक्खेत्ते णं पंच भरहाइं पंच एरवताइं एवं जधा चउट्ठाणे बितीयउद्देसे तहा एत्थवि भाणियव्वं जाव पंच मंदरा पंच मंदरचूलिताओ, णवरं उसुयारा णत्थि। ४३४। उसभे णं अरहा कोसलिए पंच धणुसताइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था १ भरहे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी पंच धणुसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं हुत्था २ बाहुबली णमणगारे एवं चेव ३ बंभीणामज्जा एवं चेव ४ एवं सुंदरीवि ५। ४३५। पंचहिं ठाणेहिं सुत्ते विबुज्झेज्जा, तं०-सद्देणं फासेणं भोयणपरिणामेणं णिद्दक्खएणं सुविणदंसणेणं। ४३६। पंचहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे णिग्गंथिं गिण्हमाणे वा अवलंबमाणे वा णातिक्कमति, तं०-निग्गंथिं च णं अन्नयरे पसुजातिए वा पक्खिजातिए वा ओहातेज्जा तत्थ णिग्गंथे णिग्गंथिं गिण्हमाणे वा अवलंबमाणे वा नातिक्कमति १ णिग्गंथे णिग्गंथिं दुग्गंसि वा विसमंसि वा पक्खलमाणिं वा पवडमाणिं वा गिण्हमाणे वा अवलंबमाणे वा णातिक्कमति २ णिग्गंथे णिग्गंथिं सेतंसि वा पंकंसि वा पणगंसि वा उदगंसि वा उक्कसमाणीं वा (२८)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org
मुनि दीपरत्नसागर

उवुज्झमार्णी वा गिण्हमाणे वा अवलंबमाणे वा णातिक्कमति ३ निग्गंथे निग्गंथिं नावं आरुभमाणे वा ओरोहमाणे वा णातिक्कमति ४ खेत्तइत्तं दित्तइत्तं जक्खाइट्ठं उम्मायपत्तं उवसग्गपत्तं साहिगरणं सपायच्छित्तं जाव भत्तपाणपडियातिक्खियं अट्ठजायं वा निग्गंथे निग्गंथिं गेण्हमाणे वा अबलंबमाणे वा णातिक्कमति ५ ।४३७। आयरियउवज्झायस्स णं गणंसि पंच अतिसेसा पं० तं०-आयरियउवज्झाए अंतो उवस्सगस्स पाए निगिज्झिय २ पप्फोडेमाणे वा पमज्जेमाणे वा णातिकमति १ आयरियउवज्झाए अंतो उवस्सगस्स उच्चारपासवणं विगिंचमाणे वा विसोधेमाणे वा णातिक्कमति २ आयरियउवज्झाए पभू इच्छा वेयावडियं करेज्जा इच्छा णो करेज्जा ३ आयरियउवज्झाए अंतो उवस्सगस्स एगरायं वा दुरातं वा एगागी वसमाणे णा० ४ आयरियउवज्झाए बाहिं उवस्सगस्स एगरातं वा दुरातं वा वसमाणे णातिक्कमति ५ ।४३८। पंचहिं ठाणेहिं आयरियउवज्झायस्स गणावक्कमणे पं० तं०-आयरियउवज्झाए गणंसि आणं वा धारणं वा नो सम्मं पउंजित्ता भवति १ आयरियउवज्झाए गणंसि अधारायणियाते कितिकम्मं वेणइयं णो सम्मं पउंजित्ता भवति २ आयरियउवज्झाते गणंसि जे सुयपज्जवजाते धारिंति ते काले नो सम्ममणुपवादेत्ता भवति ३ आयरियउवज्झाए गणंसि सगणिताते वा परगणियाते वा निग्गंथीते बहिल्लेसे भवति ४ मित्ते णातीगणे वा से गणातो अवक्कमेज्जा तेसिं संगहोवग्गहट्टयाते गणावक्कमणे पन्नत्ते ५ ।४३९। पंचविहा इड्ढीमंता मणुस्सा पं० तं०-अरहंता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा भावियप्पाणो अणगारा ।४४०॥ अ० ५ उ० २॥ पंच अत्थिकाया पं० तं०-धम्मत्थिकाते अधम्मत्थिकाते आगासत्थिकाते जीवत्थिकाते पोग्गलत्थिकाए, धम्मत्थिकाए अवन्ने अगंधे अरसे अफासे अरूवी अजीवे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे, से समासओ पंचविधे पं० तं०-दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ गुणओ, दव्वओ णं धम्मत्थिकाए एगं दव्वं खेत्ततो लोगपमाणमेत्ते कालओ ण कयाति णासी न कयाइ न भवति ण कयाइ ण भविस्सइत्ति भुविं च भवति य भविस्सति त धुवे णितिते सासते अक्खए अव्वते अवट्ठिते णिच्चे भावतो अवन्ने अगंधे अरसे अफासे गुणतो गमणगुणे य १ अधम्मत्थिकाए अवन्ने एवं चेव, णवरं गुणतो ठाणगुणो २ आगासत्थिकाए अवन्ने एवं चेव णवरं खेत्तओ लोगालोगपमाणमित्ते गुणतो अवगाहणागुणे, सेसं तं चेव ३ जीवत्थिकाए णं अवन्ने एवं चेव णवरं दव्वओ णं जीवत्थिगाते अणंताइं दव्वाइं अरूवी जाव सासते, गुणतो उवओगगुणे सेसं तं चेव ४ पोग्गलत्थिगाते पंचवन्ने पंचरसे दुग्गंधे अट्ठफासे रूवी अजीवे सासते जाव दव्वओ णं पोग्गलत्थिकाए अणंताइं दव्वाइं खेत्तओ लोगपमाणमेत्ते कालतो ण कयाइ णासि जाव णिच्चे भावतो वन्नमंते गंधमंते रसमंते फासमंते गुणतो गहणगुणे ।४४१। पंच गतीतो पं० तं०-निरयगती तिरियगती मणुयगती देवगती सिद्धिगती ।४४२। पंच इंदियत्था पं० तं०-सोतिंदियत्थे जाव फासिंदियत्थे १ पंच मुंडा पं० तं०-सोतिंदियमुंडे जाव फासिंदियमुंडे २ अहवा पंच मुंडा पं० तं०-कोहमुंडे माणमुंडे मायामुंडे लोभमुंडे सिरमुंडे ३ ।४४३। अहेलोगे णं पंच बायरा पं० तं०-पुढवीकाइगा आउ० वाउ० वणस्सइ० ओराला तसा पाणा १ उड्ढलोगे णं पंच बायरा पं० तं०-एवं तं चेव २ तिरियलोगे णं पंच बायरा पं० तं०-एगिंदिया जाव पंचिंदिता ३ पंचविधा बायरतेउकाइया पं० तं०-इंगाले जाला मुम्मुरे अच्ची अलाते १ पंचविधा बादरवाउकाइया पं० तं०-पाईणवाते पडीणवाते दाहिणवाते उदीणवाते विदिसवाते २ पंचविधा अचित्ता वाउकाइया पं० तं०-अक्कंते धंते पीलिए सरीराणुगते संमुच्छिमे ३ ।४४४। पंच निग्गंथा पं० तं०-पुलाते बउसे कुसीले णिग्गंथे सिणाते १ पुलाए पंचविहे पं० तं०-णाणपुलाते दंसणपुलाते चरित्तपुलाते लिंगपुलाते अहासुहुमपुलाते नामं पंचमे २ बउसे पंचविधे पं० तं०-आभोगबउसे अणाभोगबउसे संवुडबउसे असंवुडबउसे अहासुहुमबउसे नामं पंचमे ३ कुसीले पंचविधे पं० तं०-णाणकुसीले दंसणकुसीले चरित्तकुसीले लिंगकुसीले अहासुहुमकुसीले नामं पंचमे ४ नियंठे पंचविहे पं० तं०-पढमसमयनियंठे अपढमसमयनियंठे चरिमसमयनियंठे अचरिमसमयनियंठे अहासुहुमनियंठे नामं पंचमे ५ सिणाते पंचविधे पं०तं०-अच्छवी १ असबले २ अकम्मंसे ३ संसुद्धणाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली ४ अपरिस्सावी ५, ६ ।४४५। कप्पंति (प्र० कप्पइ) णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा पंच वत्थाइं धारित्तए वा परिहरित्तते वा, तं०-जंगिते भंगिते साणते पोत्तिते तिरीडपट्टते णामं पंचमए, कप्पंति निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा पंच रयहरणाइं धारित्तए वा परिहरित्तते वा, 'तंजहा-उण्णिए उट्टिते साणते पच्चापिच्चियते मुंजापिच्चियते नामं पंचमए ।४४६। धम्मं चरमाणस्स पंच णिस्साठाणा पं० तं०-छक्काए गणे राया गिहवती सरीरं ।४४७। पंच णिही पं० तं०-पुत्तनिही मित्तनिही सिप्पनिही धणणिही धन्नणिही ।४४८। पंचविहे सोए पं० तं०-पुढवीसोते आउसोते तेउसोते मंतसोते बंभसोते ।४४९। पंच ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं ण जाणति ण पासति, तं०-धम्मत्थिकातं अधम्मत्थिकातं आगासत्थिकायं जीवं असरीरपडिबद्धं परमाणुपोग्गलं, एयाणि चेव उप्पन्ननाणंदसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेणं जाणति पासति धम्मत्थिकातं जाव परमाणुपोग्गलं ।४५०। अधोलोगे णं पंच अणुत्तरा महतिमहालता महानिरया पं० तं०-काले महाकाले रोरुते महारोरुते अप्पतिट्ठाणे १ उड्ढलोगे णं पंच अणुत्तरा महतिमहालता महाविमाणा पं० तं०-विजये विजयंते जयंते अपराजिते सव्वट्ठसिद्धे २ ।४५१। पंच पुरिसजाता पं० तं०-हिरिसत्ते हिरिमणसत्ते चलसत्ते थिरसत्ते उदतणसत्ते।४५२। पंच मच्छा पं० तं०-अणुसोतचारी पडिसोतचारी अंतचारी मज्झचारी सव्वचारी, एवामेव पंच भिक्खागा पं० तं०-अणुसोयचारी जाव सव्वसोयचारी ।४५३। पंच वणीमगा पं० तं०-अतिहिवणीमते किविणवणीमते माहणवणीमते साणवणीमते समणवणीमते ।४५४। पंचहिं ठाणेहिं अचेलए पसत्थे भवति, तं०-अप्पा पडिलेहा १ लाघविए पसत्थे २ रूवे वेसासिते ३ तवे अणुन्नाते ४ विउले इंदियनिग्गहे ५ ।४५५। पंच उक्कला पं० तं०-दंडुक्कले रज्जुक्कले तेणुक्कले देसुक्कले सव्वुक्कले ।५५६। पंच समितीतो पं० तं०-ईरियासमिती भासा० जाव पारिठावणियासमिती ।४५७। पंचविधा संसारसमावन्नगा जीवा पं० तं०-एगिंदिता जाव पंचिंदिता १ एगिंदिया पंचगतिया पंचागतिता पं० तं०-एगिंदिए एगिंदितेसु उववज्जमाणे एगिंदितेहिंतो जाव पंचिंदिएहिंतो वा उववज्जेज्जा, से चेव णं से एगिंदिए एगिंदितत्तं विप्पजहमाणे एगिंदितत्ताते वा जाव पंचिंदितत्ताते वा गच्छेज्जा २ बेंदिया पंचगतिता पंचागइया एवं चेव ३ एवं जाव पंचिंदिया पंचगतिता पंचागइया पं० तं०-पंचिंदिया जाव गच्छेज्जा ४-५-६ पंचविधा सव्वजीवा पं० तं०-कोहकसाई जाव लोभकसाई अकसाती ७ अहवा पंचविधा सव्वजीवा पं० तं०-नेरइया जाव देवा सिद्धा ८ ।४५८। अह भंते! कलमसूरतिलमुग्गमासणिप्फावकुलत्थआ(प्र०अ)लिसंदगसतीणपलिमंथगाणं एतेसिं णं धन्नाणं कुट्ठाउत्ताणं

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
मुनि दीपरत्नसागर
www.jainelibrary.org

जघा सालीणं जाव केवतितं कालं जोणी संचिट्ठति?, गोयमा! (प्र० सा) जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पंच संवच्छराइं, तेण परं जोणी पमिलायति जाव तेण परं जोणीवोच्छेदे पण्णत्ते।४५९। पंच संवच्छरा पं० तं०-णक्खत्त-संवच्छरे जुगसंवच्छरे पमाणसंवच्छरे लक्खणसंवच्छरे सणिंचरसंवच्छरे १ जुगसंवच्छरे पंचविहे पं० तं०-चंदे चंदे अभिवड्ढिते चंदे अभिवड्ढिते चेव २ पमाणसंवच्छरे पंचविहे पं० तं०-नक्खत्ते चंदे ऊऊ आदिच्चे अभिवड्ढिते ३ लक्खणसंवच्छरे पंचविहे पं० तं०-समगं नक्खत्ता जोगं जोयंति समगं उदू परिणमंति। णचुण्ह णातिसीतो बहूदतो होति नक्खत्ते १॥३५॥ ससिसगलपुण्णमासी जोतेती विसमचारणक्खत्ते। कडुतो बहूदतो (या) तमाहु संवच्छरं चंदं २॥३६॥ विसमं पवालिणो परिणमंति अणुदूसु देंति पुप्फफलं। वासं न सम्म वासति तमाहु संवच्छरं कम्मं ३॥३७॥ पुढविदगाणं तु रसं पुप्फफलाणं तु देइ आदिच्चो। अप्पेणवि वासेणं सम्मं णिप्फज्जए सस्सं (प्र० सासं) ४॥३८॥ आदिच्चतेयतविता खणलवदित्ता उऊ परिणमंति। पूरिंति रेणुथलताइं (प्र० पूरेइ य थलयाइं) तमाहु अभिवड्ढितं जाण ५॥३९॥४६०। पंचविधे जीवस्स णिज्जाणमग्गे पं० तं०-पातेहिं ऊरूहिं उरेणं सिरेणं सव्वंगेहिं, पाएहिं णिज्जा-णमाणे निरयगामी भवति, ऊरूहिं णिज्जाण(प्र० य)माणे तिरियगामी भवति उरेणं निज्जायमाणे मणुयगामी भवति सिरेणं णिज्जायमाणे देवगामी भवति सव्वे(व्वंगे)हिं निज्जायमाणे सिद्धिगतिपज्जवसाणे पण्णत्ते।४६१। पंचविहे छेयणे पं० तं०-उप्पाछेयणे वियच्छेयणे बंधच्छेयणे पएसच्छेयणे (पंथच्छेयणे पा०) दोधारच्छेयणे, पंचविधे आणंतरिए पं० तं०-उप्पातणंतरिते वितणंतरिते पतेसाणंतरिते समताणंतरिए सामण्णाणंतरिते, पंचविधे अणंते पं०तं०-णामणंतते ठवणाणंतते दव्वाणंतते गणणाणंतते पदेसाणंतते, अहवा पंचविहे अणंतते पं० तं०-एगतोऽणंतते दुहतोऽणंतए देसवित्थारणंतए सव्ववित्थाराणंतते सासयाणंतते।४६२। पंचविहे णाणे पं० तं०-आभिणिबोहियणाणे सुयनाणे ओहि-णाणे मणपज्जवणाणे केवलणाणे।४६३। पंचविहे णाणावरणिज्जे कम्मे पं० तं०-आभिणिबोहियणाणावरणिज्जे जाव केवलनाणावरणिज्जे।४६४। पंचविहे सज्झाए पं० तं०-वायणा पुच्छणा परियट्टणा अणुप्पेहा धम्मकहा।४६५। पंचविहे पच्चक्खाणे पं० तं०-सद्दहणसुद्धे विणयसुद्धे अणुभासणासुद्धे अणुपालणासुद्धे भावसुद्धे।४६६। पंचविहे पडिक्कमणे पं० तं०-आसवदारपडिक्कमणे मिच्छत्तपडिक्कमणे कसायपडिक्कमणे जोगपडिक्कमणे भावपडिक्कमणे।४६७। पंचहिं ठाणेहिं सुत्तं वाएज्जा. तं०-संगहट्ठयाते उवग्गहणट्ठयाते णिज्जरणट्ठयाते सुत्ते वा मे पज्जवयाते भविस्सति सुत्तस्स वा अवोच्छित्तिणयाते, पंचहिं ठाणेहिं सुत्तं सिक्खिज्जा, तं०-णाणट्ठयाते दंसणट्ठयाते चरित्तट्ठयाते वुग्गह-विमोतणट्ठयाते अहत्थे वा भावे जाणिस्सामीतिकट्टु।४६८। सोहम्मीसाणेसु णं कप्पेसु विमाणा पंचवण्णा पं० तं०-किण्हा जाव सुक्किला १ सोहम्मीसाणेसु णं कप्पेसु विमाणा पंच जोयणसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं पन्नत्ता २ बंभलोग-लंततेसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जसरीरगा उक्कोसेणं पंचरयणी उड्ढंउच्चत्तेणं पं० ३ नेरइया णं पंचवन्ने पंचरसे पोग्गले बंधेंसु वा बंधंति वा बंधिस्संति वा तं०-किण्हा जाव सुक्किल्ले, तित्ते जाव मधुरे, एवं जाव वेमाणिता २४,४।४६९। जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं गंगा महानदी पंच महानदीओ समप्पेंति, तं०-जउणा सरऊ आदी कोसी मही १ जंबूमंदरस्स दाहिणेणं सिंधुमहाणदी पंच महानदीओ समप्पेंति तं०-सतद्दू विभासा वितत्था एगवती चंदभागा २ जंबूमंदस्स उत्तरेणं रत्ता महानई पंच महानईओ समप्पेंति तं०-किण्हा महाकिण्हा नीला महानीला महातीरा ३ जंबूमंदरस्स उत्तरेणं रत्तावती महानई पंच महानईओ समप्पेंति तं०-इंदा इंदसेणा सुसेणा वा-रिसेणा महाभोया ४।४७०। पंच तित्थगरा कुमारवासमज्झे वसित्ता (ज्झावसित्ता) मुंडा जाव पव्वतिता, तं०-वासुपुज्जे मल्ली अरिट्ठनेमी पासे वीरे।४७१। चमरचंचाए रायहाणीए पंच सभा पं० तं०-सभा सुधम्मा उववातसभा अभिसेयसभा अलंकारितसभा ववसातसभा, एगमेगेणं इंदट्ठाणेणं पंच सभाओ पं० तं०-सभा सुहम्मा जाव ववसातसभा।४७२। पंच णक्खत्ता पंचतारा पं० तं०-धणिट्ठा रोहिणी पुणव्वसू हत्थो विसाहा।४७३। जीवाणं पंचट्ठाण-णिव्वित्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताते चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा, तं०-एगिंदितनिव्वत्तिते जाव पंचिंदितनिव्वत्तिते, एवं चिण उवचिण बंध उदीर वेद तह णिज्जरा चेव। पंचपतेसिता खंधा अणंता पण्णत्ता पंचपतेसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता जाव पंचगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता।४७४॥ उ० ३ **पञ्चस्थानाध्ययनं ५**॥ छहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहति गणं धारित्तते, तं०-सड्ढी पुरिसजाते १ सच्चे पुरिसजाते २ मेहावी पुरिसजाते ३ बहुस्सुते पुरिसजाते ४ सत्तिमं ५ अप्पाधिकरणे ६।४७५। छहिं ठाणेहिं निग्गंथे निग्गंथिं गिण्हमाणे वा अवलंबमाणे नाइक्कमइ, तं०-खित्तचित्तं दित्तचित्तं जक्खातिट्ठं उम्मायपत्तं उवसग्गपत्तं साहिकरणं।४७६। छहिं ठाणेहिं निग्गंथा निग्गंथीओ य साहम्मितं कालगतं समायरमाणा णाइक्कमंति, तं०-अंतोहिंतो वा बाहिं णीणेमाणा १ बाहीहिंतो वा निव्बाहिं णीणेमाणा २ उवेहमाणा वा ३ उवासमाणा वा (भयमाणा वा उवसामेमाणा वा पा०) ४ अणुन्नवेमाणा वा ५ तुसिणीते वा संपव्वयमाणा ६।४७७। छ ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं ण जाणति ण पासति, तं०-धम्मत्थिकायमधम्मत्थिकातं आयासं जीवमसरीरपडिबद्धं परमाणुपोग्गलं सद्दं, एताणि चेव उप्पन्ननाणदंसणधरे अरहा जिणे जाव सव्वभावेणं जाणति पासति तं०-धम्मत्थिकातं जाव सद्दं।४७८। छहिं ठाणेहिं सव्वजीवाणं णत्थि इड्ढीति वा जुत्तीति वा० परक्कमेति वा, तं०-जीवे वा अजीवं करणताते १ अजीवं वा जीवं करणताते २ एगसमएणं वा दो भासातो भासित्तते ३ सयं कडं वा कम्मं वेदेमि वा मा वा वेएमि ४ परमाणुपोग्गलं वा छिंदित्तए वा भिंदित्तए वा अगणिकातेणं वा समोदहित्तते ५ बहिता वा लोगंता गमणताते ६।४७९। छ जीवनिकाया पं० तं०-पुढवीकाइया जाव तसकाइया।४८०। छ तारग्गहा, पं० तं०-सुक्के बुहे बहस्सती अंगारते सनिच्चरे केतू।४८१। छव्विहा संसारसमावन्नगा जीवा पं० तं०-पुढवीकाइया जाव तसकाइया, पुढवीकाइया छगइया छआगतिता पं० तं०-पुढवीकातिते पुढवीकाइएसु उववज्जमाणे पुढवीकाइएहिंतो वा जाव तसकाइएहिंतो वा उववज्जेज्जा, सो चेव णं से पुढवीकातिते पुढवीकातितत्तं विप्पजहमाणे पुढवीकातितत्ताते वा जाव तसकातितत्ताते वा गच्छेज्जा, आउकातियावि छगतिता छआगतिता, एवं चेव जाव तसकातिता।४८२। छव्विहा सव्वजीवा पं० तं०-आभिणिबोहियणाणी जाव केवलणाणी अन्नाणी, अहवा छव्विधा सव्वजीवा पं० तं०-एगिंदिया जाव पंचिंदिया अणिंदिया, अहवा छव्विहा सव्वजीवा पं० तं०-ओरालियसरीरी वेउव्वियसरीरी आहारगसरीरी तेअगसरीरी कम्मगसरीरी असरीरी।४८३। छव्विहा तणवणस्सतिकातिता पं० तं०-अग्गबीया मूलबीया पोरबीया खंधबीया बीयरुहा संमुच्छिमा।४८४। छट्ठाणाइं सव्वजीवाणं

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णो सुलभाइं भवंति. तं०-माणुस्सए भवे १ आयरिए (प्र० आरिए) खित्ते जम्मं २ सुकुले पच्चायाती ३ केवलिपन्नत्तस्स धम्मस्स सवणता ४ सुयस्स वा सद्दहणता ५ सद्दहितस्स वा पत्तितस्स वा रोइतस्स वा सम्मं काएणं फासणया ६ ।४८५। छ इंदियत्था पं० तं०-सोइंदियत्थे जाव फासिंदियत्थे नोइंदियत्थे ।४८६। छव्विहे संवरे पं० तं०-सोतिंदियसंवरे जाव फासिंदियसंवरे अणिंदियसंवरे, छव्विहे असंवरे पं० तं०-सोइंदिअसंवरे जाव फासिंदितअसंवरे णोइंदितअसंवरे।४८७। छव्विहे साते पं०तं०-सोइंदियसाते जाव नोइंदियसाते, छव्विहे असाते पं० तं०-सोतिंदितअसाते जाव नोइंदितअसाते ।४८८। छव्विहे पायच्छित्ते पं० तं०-आलोयणारिहे पडिक्कमणारिहे तदुभयारिहे विवेगारिहे विउस्सग्गारिहे तवारिहे ।४८९। छव्विहा मणुस्सगा पं० तं०-जंबूदीवगा धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धगा धाततिसंडदीवपच्चत्थिमद्धगा पुक्खरवरदीवड्ढपुरत्थिमद्धगा पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धगा अंतरदीवगा. अहवा छव्विहा मणुस्सा पं० तं०-संमुच्छिममणुस्सा कम्मभूमगा १ अकम्मभूमगा २ अंतरदीवगा ३, गब्भवक्कंतिअमणुस्सा कम्मभूमिगा १ अकम्मभूमगा २ अंतरदीवगा ३ । ४९० । छव्विहा इड्ढीमंता मणुस्सा पं० तं०-अरहंता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा चारणा विज्जाहरा, छव्विहा अणिड्ढीमंता मणुस्सा पं० तं०-हेमवंतगा हेरन्नवंतगा हरिवंसगा रम्मगवंसगा कुरुवासिणो अंतरदीवगा ।४९१। छव्विहा ओसप्पिणी पं० तं०-सुसमसुसमा जाव दूसमदूसमा. छव्विहा उस्सप्पिणी पं० तं०-दुस्समदुस्समा जाव सुसमसुसमा ।४९२। जंबुद्दीवे २ भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीते सुसमसुसमाते समाए मणुया छच्च धणुसहस्साइं उड्ढमुच्चत्तेणं हुत्था, छच्च अद्धपलिओवमाइं परमाउं पालयित्था १ जंबुद्दीवे २ भरहेरवतेसु वासेसु इमीसे ओसप्पिणीते सुसमसुसमाते समाए एवं चेव २ जंबू० भरहेरवते आगमेस्साते उस्सप्पिणीते सुसमसुसमाते समाए एवं चेव जाव छच्च अद्धपलिओवमाइं परमाउं पालतिस्संति ३ जंबुद्दीवे २ देवकुरु-उत्तरकुरासु मणुया छ धणुस्सहस्साइं उड्ढंउच्चत्तेणं पं० छच्च अद्धपलिओवमाइं परमाउं पालेंति ४ एवं धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धे चत्तारि आलावगा जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चच्छिमद्धे चत्तारि आलावगा ।४९३। छव्विहे संघयणे पं० तं०-वतिरोसभणारातसंघयणे उसभणारायसंघयणे नारायसंघयणे अद्धनारायसंघयणे खीलितासंघयणे छेवट्टसंघयणे । ४९४ । छव्विहे संठाणे पं० तं०-समचउरंसे णग्गोहपरिमंडले साती खुज्जे वामणे हुंडे । ४९५ । छ ठाणा अणत्तवओ अहिताते असुभाते अखमाते अनीसेयसाए अणाणुगामियत्ताते भवंति, तं० परिताते परिताले सुते तवे लाभे पूतासक्कारे, छट्ठाणा अत्तवतो हिताते जाव आणुगामियत्ताते भवंति. तं०-परिताते परिताले जाव पूता-सक्कारे । ४९६ । छव्विहा जाइआरिया मणुस्सा पं० तं०-अंबट्ठा य कलंदा य, वेदेहा वेदिगातिता । हरिता चुंचुणा चेव, छप्पेता इब्भजातिओ ॥४०॥ छव्विधा कुलारिता मणुस्सा पं० तं०-उग्गा भोगा राइन्ना इक्खागा णाता कोरव्वा ।४९७। छव्विधा लोगट्ठिती पं० तं०-आगासपतिट्ठिते वाए वायपतिट्ठिए उदही उदधिपतिट्ठिता पुढवी पुढवीपइट्ठिया तसा थावरा पाणा अजीवा जीवपइट्ठिया जीवा कम्मपतिट्ठिया ।४९८। छद्दिसाओ पं० तं०-पाईणा पडीणा दाहिणा उदीणा उड्ढा अधा, छहिं दिसाहिं जीवाणं गती पवत्तति, तं०-पाईणाते जाव अधाते १ एवमागई २ वक्कंती ३ आहारे ४ वुड्ढी ५ निवुड्ढी ६ विगुव्वणा ७ गतिपरियाते ८ समुग्घाते ९ कालसंजोगे १० दंसणाभिगमे ११ णाणाभिगमे १२ जीवाभिगमे १३ अजीवाभिगमे १४. एवं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणवि मणुस्साणवि ।४९९। छहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे आहारमाहारमाणे णातिक्कमति, तं०-वेयण वेयावच्चे ईरियट्ठाए य संजमट्ठाए। तह पाणव-त्तियाए छट्ठं पुण धम्मचिंताए ॥४१॥ छहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे आहारं वोच्छिंदमाणे णातिक्कमति, तं०-आतंके उवसग्गे तितिक्खणे बंभचेरगुत्तीते। पाणिदया तवहेउं सरीरवुच्छेयणट्ठाए ॥४२॥५००। छहिं ठाणेहिं आया उम्मायं (उम्मायपमायं पा०) पाउणेज्जा, तं०-अरहंताणमवण्णं वदमाणे १ अरहंतपन्नत्तस्स धम्मस्स अवन्नं वदमाणे २ आयरियउवज्झायाणमवन्नं वदमाणे ३ चाउव्वन्नस्स संघस्स अवन्नं वदमाणे ४ जक्खावेसेण चेव ५ मोहणिज्जस्स चेव कम्मस्स उदएणं ६ ।५०१। छव्विहे पमाते पं० तं०-मज्जपमाए णिद्दपमाते विसयपमाते कसायपमाते जूतपमाते पडिलेहणापमाए ।५०२। छव्विधा पमायपडिलेहणा पं० तं०-आरभडा संमद्दा वज्जेयव्वा य मोसली ततिता (अठाणठवणाय पा०)। पप्फोडणा चउत्थी वक्खित्ता वेतिया छट्ठी ॥४३॥ छव्विहा अप्पमायपडिलेहणा पं० तं०-अणच्चावितं अवलितं अणाणुबंधिं अमोसलिं चेव। छप्पुरिमा नव खोडा पाणी पाणविसोहणी ॥ ४४ ॥ ५०३। छ लेसाओ पं० तं०-कण्हलेसा जाव सुक्कलेसा, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं छ लेसाओ पं० तं०-कण्हलेसा जाव सुक्कलेसा, एवं मणुस्सदेवाणवि।५०४। सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सोमस्स महारन्नो छ अग्गमहिसीतो पं०. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारन्नो छ अग्गमहिसीओ पं०।५०५। ईसाणस्स णं देविंदस्स मज्झिमपरिसाए देवाणं छ पलिओवमाइं ठिती पं० (सक्क० म० देवाणं०)।५०६। छ दिसिकुमारिमहत्तरितातो पं० तं०-रूता रूतंसा सुरूवा रूपवती रूपकंता रूतप्पभा, छ विज्जुकुमारिमहत्तरितातो पं० तं०-आला (प्र० अल्ला) सक्का (प्र० मक्का) सतेरा सोतामणी इंदा घणविज्जुया।५०७। धरणस्स णं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो छ अग्गमहिसीओ पं०तं०-आला सक्का सतेरा सोतामणी इंदा घणविज्जुया, भूताणंदस्स णं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो छ अग्गमहिसीओ पं० तं०-रूवा रूवंसा सुरूवा रूववती रूवकंता रूवप्पभा, जधा धरणस्स तधा सव्वेसिं दाहिणिल्लाणं जाव घोसस्स. जधा भूताणंदस्स तधा सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं जाव महाघोसस्स ।५०८। धरणस्स णं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो छस्सामाणियसाहस्सीओ पं० एवं भूताणंदस्सवि जाव महाघोसस्स ।५०९। छव्विहा उग्गहमती पं० तं०-खिप्पमोगिण्हति बहुमोगिण्हति बहु-विधमोगिण्हति धुवमोगिण्हति अणिस्सियमोगिण्हइ असंदिद्धमोगिण्हइ, छव्विहा ईहामती पं० तं०-खिप्पमीहति बहुमीहति जाव असंदिद्धमीहति, छव्विधा अवायमती पं० तं०-खिप्पमवेति जाव असंदिद्धं अवेति, छव्विधा धारणा पं० तं०-बहुं धारेइ बहुविहं धारेइ पोराणं धारेति दुद्धरं धारेति अणिस्सितं धारेति असंदिद्धं धारेति ।५१०। छव्विहे बाहिरते तवे पं० तं०-अणसणं ओमोदरिया भिक्खातरिता रसपरिच्चाते कायकिलेसो पडिसंलीनता. छव्विधे अब्भंतरिते तवे पं० तं०-पायच्छित्तं विणओ वेयावच्चं तहेव सज्झाओ। झाणं विउस्सगो ।५११। छव्विहे विवादे पं० तं०-ओसक्कतित्ता (ओसक्कवइत्ता पा०) उस्सक्कइत्ता (उस्सक्कावइत्ता पा०) अणुलोमइत्ता पडिलोमतित्ता भइत्ता भेलतित्ता (भेयइत्ता पा०)।५१२। छव्विहा खुड्डा पाणा पं० तं०-बेंदिता तेइंदिता चउरिंदिता संमुच्छिमपंचिंदिततिरिक्खजोणिता तेउकातिता वाउकातिता ।५१३। छव्विधा गोयरचरिता पं० तं०-पेडा अद्धपेडा गोमुत्तिता पतंगविहिता

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संबुक्कवट्टा गंतुंपच्चागता।५१४। जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स य दाहिणेणमिमीसे रतणप्पभाते पुढवीए छ अवक्कं(क्कं)तमहानिरता पं० तं०-लोले लोलुए उदड्ढे निदड्ढे जरते पज्जरते, चउत्थीए णं पंकप्पभाए पुढवीते छ अवक्कंता महानिरता पं०तं०-आरे वारे मारे रोरे रोरुते खाडखडे।५१५। बंभलोगे णं कप्पे छ विमाणपत्थडा पं०तं०-अरते विरते णीरते निम्मले वितिमिरे विसुद्धे।५१६। चंदस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरन्नो छ णक्खत्ता पुव्वंभागा समखेत्ता तीसतिमुहुत्ता पं० तं०-पुव्वाभद्दवया कत्तिता महा पुव्वाफग्गुणी मूलो पुव्वासाढा, चंदस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो छ णक्खत्ता णत्तंभागा अवड्ढक्खेत्ता पन्नरसमुहुत्ता पं० तं०-सयभिसता भरणी अद्दा अस्सेसा माती जेट्ठा, चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोतिसरन्नो छ नक्खत्ता उभयंभागा दिवड्ढखेत्ता पणयालीसमुहुत्ता पं० तं०-रोहिणी पुणव्वसू उत्तराफग्गुणी विसाहा उत्तरासाढा उत्तराभद्दवया।५१७। अभिचंदे णं कुलकरे छ धणुसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं हुत्था।५१८। भरहे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी छ पुव्वसतसहस्साइं महाराया हुत्था।५१९। पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स छ सता वादीणं सदेवमणुयासुराते परिसाते अपराजियाणं० संपया होत्था. वासुपुज्जे णं अरहा छहिं पुरिससतेहिं सद्धिं मुंडे जाव पव्वइते, चंदप्पभे णं अरहा छम्मासे छउमत्थे हुत्था।५२०। तेतिंदियाणं जीवाणं असमारभमाणस्स छव्विहे संजमे कज्जति, तं०-घाणामातो सोक्खातो अवरोवेत्ता भवति घाणामएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवति जिब्भामातो सोक्खातो अवरोवेत्ता भवइ० एवं चेव फासामातोऽवि। तेइंदियाणं जीवाणं समारभमाणस्स छव्विहे असंजमे कज्जति, तं०-घाणामातो सोक्खातो ववरोवेत्ता भवति घाणामएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवति, जाव फासमतेणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवति।५२१। जंबुद्दीवे २ छ अकम्मभूमीओ पं० तं०-हेमवते हेरण्णवते हरिवस्से रम्मगवासे देवकुरा उत्तरकुरा १ जंबुद्दीवे २ छव्वासा पं० तं०-भरहे एरवते हेमवते हेरन्नवए हरिवासे रम्मगवासे २ जंबुद्दीवे २ छ वासहरपव्वता पं० तं०-चुल्लहिमवंते महाहिमवंते निसढे नीलवंते रूप्पि सिहरी ३ जंबूमंदरदाहिणेणं छ कूडा पं०तं०-चुल्लहिमवंतकूडे वेसमणकूडे महाहिमवंतकूडे वेरुलितकूडे निसढकूडे रुयगकूडे ४ जंबूमंदरउत्तरेणं छ कूडा पं० तं०-नेलवंतकूडे उवदंसणकूडे रुप्पिकूडे मणिकंचणकूडे सिहरिकूडे तिगिच्छकूडे ५ जंबुद्दीवे २ छ महद्दहा पं०तं०-पउमदहे महापउमद्दहे तिगिच्छद्दहे केसरिद्दहे महापोंडरीयदहे पुंडरीयदहे६ तत्थ णं छ देवयाओ महड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठितीता परिवसंति, तं०-सिरि हिरि धिति कित्ति बुद्धि लच्छी ७ जंबूमंदरदाहिणेणं छ महानईओ पं० तं०-गंगा सिंधू रोहिया रोहितंसा हरी हरिकंता ८ जंबूमंदरउत्तरेणं छ महानतीतो पं० तं०-नरकंता नारीकंता सुवन्नकूला रुप्पकूला रत्ता रत्तवती ९ जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीताते महानदीते उभयकूले छ अंतरनईओ पं० तं०-गाहावती दहावती पंकवती तत्तजला मत्तजला उम्मत्तजला १० जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं सीतोदाते महानतीते उभयकूले छ अंतरनदीओ पं० तं०-खीरोदा सीहसोता अंतोवाहिणी उम्मिमालिणी फेणमालिणी गंभीरमालिणी ११ धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धेणं छ अकम्मभूमीओ पं० तं०-हेमवए एवं जहा जंबुद्दीवे २ तहा नदी जाव अंतरणदीतो २२ जाव पुक्खरवरदीवद्धपच्चत्थिमद्धे भाणितव्वं ५५।५२२। छ उदू पं० तं०-पाउसे वरिसारत्ते सरए हेमंते वसंते गिम्हे १।५२३। छ ओमरत्ता पं० तं०-ततिते पव्वे सत्तमे पव्वे एक्कारसमे पव्वे पन्नरसमे पव्वे एगूणवीसइमे पव्वे तेवीसइमे पव्वे २ छ अइरत्ता पं० तं०-चउत्थे पव्वे अट्ठमे पव्वे दुवालसमे पव्वे सोलसमे पव्वे वीसइमे पव्वे चउवीसइमे पव्वे ३।५२४। आभिणिबोहियणाणस्स णं छव्विहे अत्थोग्गहे पं० तं०-सोइंदियत्थोग्गहे जाव नोइंदियत्थोग्गहे।५२५। छव्विहे ओहिणाणे पं० तं०-आणुगामिए अणाणुगामिते वड्ढमाणते हीयमाणते पडिवाती अपडिवाती।५२६। नो कप्पइ निग्गंथाण वा २ इमाइं छ अवतणाइं वदित्तते तं०-अलियवयणे हीलिअवयणे खिंसितवयणे फरुसवयणे गारत्थियवयणे विउसवितं वा पुणो उदीरित्तते।५२७। छ कप्पस्स पत्थारा पं० तं०-पाणातिवायस्स वायं वयमाणे १ मुसावायस्स वादं वयमाणे २ अदिन्नादाणस्स वादं वयमाणे ३ अविरतिवायं वयमाणे ४ अपुरिमवातं वयमाणे ५ दासवायं वयमाणे ६ इच्चेते छ कप्पस्स पत्थारे पत्थारेत्ता सम्ममपरिपूरेमाणो तट्ठाणपत्ते।५२८। छ कप्पस्स पलिमंथू पं० तं०-कोकुतिते संजमस्स पलिमंथू १ मोहरिते सच्चवयणस्स पलिमंथू २ चक्खुलोलुते ईरितावहिनाते पलिमंथू (परिमंथा पा०) ३ तिंतिणिते एसणागोतरस्स पलिमंथू ४ इच्छालोभिते मोत्तिमग्गस्स पलिमंथू ५ भिज्जाणिताणकरणे मोक्खमग्गस्स पलिमंथू ६ सव्वत्थ भगवता अणिताणता पसत्था।५२९। छव्विहा कप्पठिती पं० तं०-सामातितकप्पठिती छेतोवट्ठावणितकप्पठिती निव्विसमाणकप्पठिती णिव्विट्ठकप्पट्ठिती जिणकप्पठिती थिविर(प्र० थेर)कप्पठिती।५३०। समणे भगवं महावीरे छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं मुंडे जाव पव्वइए. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं अणंते अणुत्तरे जाव समुप्पन्ने, समणे भगवं महावीरे छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं सिद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे।५३१। सणंकुमारमाहिंदेसु णं कप्पेसु विमाणा छ जोयणसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं पं०. सणंकुमारमाहिंदेसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जगा सरीरगा उक्कोसेणं छ रतणीओ उड्ढंउच्चत्तेणं पं०।५३२। छव्विहे भोयणपरिणामे पं० तं०-मणुन्ने रसिते पीणणिज्जे विंहणिज्जे मयणिज्जे (दीवणिज्जे पा०) दप्पणिज्जे. छव्विहे विसपरिणामे पं० तं०-डक्के भुत्ते निवतिते मंसाणुसारी सोणिताणुसारी अट्ठिमिंजाणुसारी।५३३। छव्विहे पट्टे (छव्विहे अट्ठे पा०) पं० तं०-संसयपट्टे वुग्गहपट्टे अणुजोगी अणुलोमे तहणाणे अतहणाणे।५३४। चमरचंचा णं रायहाणी उक्कोसेणं छम्मासा विरहिता उववातेणं. एगमेगे णं इंदट्ठाणे उक्कोसेणं छम्मासा विरहिते उववातेणं, अधेसत्तमा णं पुढवी उक्कोसेणं छम्मासा विरहिता उववातेणं, सिद्धिगती णं उक्कोसेणं छम्मासा विरहिता उववातेणं।५३५। छव्विधे आउयबंधे पं० तं०-जातिणामनिधत्ताउते गतिणामणिधत्ताउए ठितिनामनिधत्ताउते ओगाहणाणामनिधत्ताउते पएसणामनिधत्ताउए अणुभावनामनिहत्ताउते, नेरतियाणं छव्विहे आउयबंधे पं० तं०-जातिणामनिहत्ताउते जाव अणुभावनामणिहत्ताउए एवं जाव वेमाणियाणं. नेरइया णियमा छम्मासावसेसाउता परभवियाउयं पगरेंति, एवामेव असुरकुमारावि जाव थणियकुमारा, असंखेज्जवासाउता सन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणिया णियमं छम्मासावसेसाउया परभवियाउयं पगरेंति, असंखेज्जवासाउया सन्निमणुस्सा नियमं जाव पगरिंति, वाणमंतरा जोतिसवासिता वेमाणिता जहा णेरतिता।५३६। छव्विधे भावे पं०तं०-ओदतिते उवसमिते खतिते खतोवसमिते पारिणामिते सन्निवाइए।५३७। छव्विहे पडिक्कमणे पं० तं०-उच्चारपडिक्कमणे पासवणपडिक्कमणे इत्तरिते आवकहिते जंकिंचिमिच्छा सोमणंतिते।५३८। कत्तिताणक्खत्ते छतारे पं०, असिलेसाणक्खत्ते छत्तारे पं०।५३९। जीवाणं छट्ठाणनिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताते चिणिंसु वा ३ तं०-पुढवीकाइयनिव्वत्तिते जाव तसकायणिव्वत्तिते, एवं चिण उवचिण बंध उदीर वेय तह निज्जरा चेव ४, छप्पतेसिया णं खंधा अणंता पं० छप्पतेसोगाढा पोग्गला अणंता पं० छसमयट्ठितीता (२९)

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पोग्गला अणंता० छगुणकालगा पोग्गला जाव छगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता ।५४०॥ षट्स्थानकाध्ययनं ६॥ सत्तविहे गणावक्कमणे पं० तं०-सव्वधम्मा रोतेमि (सव्वधम्मं जाणामि पा०) १ एगतिना रोएमि एगइया णो रोएमि २ सव्वधम्मा वितिगिच्छामि ३ एगतिया वितिगिच्छामि एगतिया नो वितिगिच्छामि ४ सव्वधम्मा जुहुणामि ५ एगतिया जुहुणामि एगतिया णो जुहुणामि ६ इच्छामि णं भंते! एगल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तते ७।५४१। सत्तविहे विभंगणाणे पं० तं०-एगदिसिलोगाभिगमे १ पंचदिसिलोगाभिगमे २ किरियावरणे जीवे ३ मुदग्गे जीवे ४ अमुदग्गे जीवे ५ रूवी जीवे ६ सव्वमिणं जीवा ७, तत्थ खलु इमे पढमे विभंगणाणे-जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा विभंगणाणे समुप्पज्जति से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं पासति पातीणं वा पडीणं वा दाहिणं वा उदीणं वा उड्ढं वा जाव सोहम्मे कप्पे, तस्स णमेवं भवति-अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने एगदिसिं लोगाभिगमे, संतेगतिया समणा वा माहणा वा एवमाहंसु-पंचदिसिं लोगाभिगमे, जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु, पढमे विभंगनाणे १, अहावरे दोच्चे विभंगनाणे, जता णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा विभंगणाणे समुप्पज्जति से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं पासति पातीणं वा पडीणं वा दाहिणं वा उदीणं वा उड्ढं जाव सोहम्मे कप्पे तस्स णमेवं भवति-अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने पंचदिसिं लोगाभिगमे, संतेगतिता समणा वा माहणा वा एवमाहंसु-एगदिसिं लोयाभिगमे, जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु, दोच्चे विभंगणाणे २ अहावरे तच्चे विभंगणाणे, जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा विभंगणाणे समुप्पज्जति. से णं तेणं विभंगणाणेण समुप्पन्नेणं पासति पाणे अतिवातेमाणे मुसं वतेमाणे अदिन्नमादितमाणे मेहुणं पडिसेवमाणे परिग्गहं परिगिण्हमाणे राइभोयणं भुंजमाणे वा पावं च णं कम्मं कीरमाणं णो पासति, तस्स णमेवं भवति-अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने किरितावरणे जीवे, संतेगतिता समणा वा माहणा वा एवमाहंसु-नो किरितावरणे जीवे, जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु, तच्चे विभंगणाणे ३ अहावरे चउत्थे विभंगणाणे जया णं तथारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा जाव समुप्पज्जति से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं देवामेव पासति बाहिरब्भंतरते पोग्गले परितादितित्ता पुढेगत्तं णाणत्तं फुसिया फुरेत्ता फुट्टित्ता (संवट्टिय निवट्टिय पा०) विकुव्वित्ताणं विउव्वित्ताणं चिट्टिए, तस्स णमेवं भवति-अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने मुदग्गे जीवे, संतेगतिता समणा वा माहणा वा एवमाहंसु-अमुदग्गे जीवे, जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु, चउत्थे विभंगनाणे ४ अहावरे पंचमे विभंगणाणे, जया णं तधारूवस्स समणस्स जाव समुप्पज्जति से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं देवामेव पासति बाहिरब्भंरए पोग्गलए अपरितादितित्ता पुढेगत्तं णाणत्तं जाव विउव्वित्ताणं चिट्टिते तस्स णमेवं भवति-अत्थि जाव समुप्पन्ने अमुदग्गे जीवे, संतेगतिता समणा वा माहणा वा एवमाहंसु-मुदग्गे जीवे, जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु, पंचमे विभंगणाणे ५ अहावरे छट्ठे विभंगणाणे, जया णं तधारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा जाव समुप्पज्जति से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं देवामेव पासति बाहिरब्भंतरते पोग्गले परितातित्ता वा अपरियातित्ता वा पुढेगत्तं णाणत्तं फुसेत्ता जाव विकुव्वित्ता चिट्टिते, तस्स णमेवं भवति-अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने. रूवी जीवे, संतेगतिता समणा वा माहणा वा एवमाहंसु-अरूवी जीवे, जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु, छट्ठे विभंगणाणे ६, अहावरे सत्तमे विभंगणाणे, जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा विभंगणाणे समुप्पज्जति से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं पासइ सुहुमेणं वायुकातेणं फुडं पोग्गलकायं एततं वेततं चलंतं खुब्भंतं फंदंतं घट्टंतं उदीरेंतं तं तं भावं परिणमंतं, तस्स णमेवं भवति-अत्थि णं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने, सव्वमिणं जीवा, संतेगतिता समणा वा माहणा वा एवमाहंसु-जीवा चेव अजीवा चेव, जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु, तस्स णमिमं चत्तारि जीवनिकाया णो सम्ममुवगता भवंति, तं०-पुढवीकाइया आऊ० तेऊ० वाउकाइया. इच्चेतेहिं चउहिं जीवनिकाएहिं मिच्छादंडं पवत्तेइ, सत्तमे विभंगणाणे ७।५४२। सत्तविधे जोणिसंगधे पं० तं०-अंडजा पोतजा जराउजा रसजा संसत्तगा (प्र० संसेइया) संमुच्छिमा उब्भिगा, अंडगा सत्तगतिता सत्तागतित्ता पं० तं०-अंडगे अंडगेसु उववज्जमाणे अंडतेहिंतो वा पोतजेहिंतो वा जाव उब्भिएहिंतो वा उववज्जेज्जा, से चेव णं से अंडते अंडगत्तं विप्पजहमाणे अंडगत्ताते वा पोतगत्ताते वा जाव उब्भियत्ताते वा गच्छेजा, पोत्तगा सत्तगतिता सत्तागतिता एवं चेव सत्तण्हवि गतिरागती भाणियव्वा जाव उब्भियत्ति।५४३। आयरियउवज्झायस्स णं गणंसि सत्त संगहठाणा पं० तं०-आयरियउवज्झाए गणंसि आणं वा धारणं वा सम्मं पउंजित्ता भवति, एवं जधा पंचट्ठाणे जाव आयरियउवज्झाए गणंसि आपुच्छियचारी यावि भवति नो अणापुच्छियचारी यावि भवति, आयरियउवज्झाए गणंसि अणुप्पन्नाइं उवगरणाइं सम्मं उप्पाइत्ता भवति, आयरियउवज्झाए गणंसि पुव्वुप्पन्नाइं उवकरणाइं सम्मं सारक्खेत्ता संगोवित्ता भवति. णो असम्मं सारक्खेत्ता संगोवित्ता भवइ, आयरियउवज्झायस्स गणंसि सत्त असंगहठाणा पं० तं-०आयरियउवज्झाए गणंसि आणं वा धारणं वा नो सम्मं पउंजित्ता भवति, एवं जाव उवगरणाणं नो सम्मं सारक्खेत्ता संगोवेत्ता भवति ।५४४। सत्त पिंडेसणाओ पं० सत्त पाणेसणाओ पं० सत्त उग्गहपडिमातो पं० सत्तसत्तिक्कया पं० सत्त महज्झयणा पं० सत्तसत्तमिया णं भिक्खुपडिमा एकूणपण्णताते रातिंदिएहिमेगेण य छण्णउएणं भिक्खासतेणं अहासुत्तं जाव आगहिया यावि भवति ।५४५। अहेलोगे णं सत्त पुढवीओ पं० सत्त घणोदधीतो पं० सत्त घणवाता सत्त तणुवाता पं० सत्त उवासंतरा पं०, एतेसु णं सत्तसु उवासंतरेसु सत्त तणुवाया पइट्ठिया, एतेसु णं सत्तसु तणुवातेसु सत्त घणवाता पइट्ठिया, एएसु णं सत्तसु घणवातेसु सत्त घणोदधी पतिट्ठिता, एतेसु णं सत्तसु घणोदधीसु पिंडलगपिहुणसंठाणसंठिआओ (छत्तातिच्छत्तसंठाणसंठिआओ । पिहुणपिहुणसंठाणसंठिआओ पा०) सत्त पुढवीओ पं० तं०-पढमा जाव सत्तमा, एतासिं णं सत्तण्हं पुढवीणं सत्त णामधेज्जा पं० तं०-घम्मा वंसा सेला अंजणा रिट्ठा मघा माघवती, एतासिं णं सत्तण्हं पुढवीणं सत्त गोत्ता पं० तं०-रयणप्पभा सक्करप्पभा वालुअप्पभा पंकप्पभा धूमप्पभा तमा तमतमा ।५४६। सत्तविहा बायरवाउकाइया पं० तं०-पातीणवाते पडीणवाते दाहिणवाते उदीणवाते उड्ढवाते अहोवाते विदिसिवाते।५४७। सत्त संठाणा पं० तं०-दीहे रहस्से वट्टे तंसे चउरंसे पिहुले परिमंडले।५४८। सत्त भयट्ठाणा पं० तं०-इहलोगभते परलोगभते आदाणभते अकम्हाभते वेयणभते मरणभते असिलोगभते।५४९। सत्तहिं ठाणेहिं छउमत्थं जाणेज्जा, तं०-पाणे अइवाएत्ता भवति मुसं वइत्ता भवति अदिन्नमादित्ता भवति सद्दफरिसरसरूवगंधे आसा-

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देत्ता भवति पूतासक्कारमणुवूहेत्ता भवति इमं सावज्जंति पण्णवेत्ता पडिसेवेत्ता भवति णो जधावादी तधाकारी यावि भवति, सत्तहिं ठाणेहिं केवली जाणेज्जा, तं०-णो पाणे अइवाइत्ता भवति जाव जधावाती तधाकारी यावि भवति ।५५०। सत्त मूलगोत्ता पं० तं०-कासवा गोतमा वच्छा कोच्छा कोसिता मंडवा वासिट्ठा, जे कासवा ते सत्तविधा पं० तं०-ते कासवा ते संडेल्ला ते गोल्ला ते वाला ते मुंजतिणो ते पव्वपेच्छतिणो (प्र० पव्वइणो) ते वरिसकण्हा, जे गोयमा ते सत्तविधा पं० तं०-ते गोयमा ते गग्गा ते भारद्दा ते अंगिरसा ते सक्कराभा ते भक्खराभा ते उदगत्ताभा (प्र० उदत्ताभा), जे वच्छा ते सत्तविधा पं० तं०-ते वच्छा ते अग्गेया ते मित्तिया ते सामि(प्र० म)लिणो ते सेलतता ते अट्ठिसेणा ते वीयकम्हा, जे कोच्छा ते सत्तविधा पं० तं०-ते कोच्छा ते मोग्गलायणा ते पिंगला(प्र० गा)यणा ते कोंडीणा ते मंडलिणो ते हारिता ते सोमया (प्र० सोमलि), जे कोसिआ ते सत्तविधा पं० तं०-ते कोसिता ते कच्चातणा ते सालंकातणा ते गोलिंकातणा ते पक्खिकायणा ते अग्गिच्चा ते लोहिच्चा, जे मंडवा ते सत्तविहा पं० तं०-ते मंडवा ते अरिट्ठा ते समुता ते तेला ते एलावच्चा ते कंडिल्ला (प्र० कडेल्ला) ते खारातणा (प्र० खातणा), जे वासिट्ठा ते सत्तविहा पं० तं०-ते वासिट्ठा ते उंजायणा ते जारे(प्र० रु)कण्हा ते वग्घावच्चा ते कोडिन्ना ते सण्णी ते पारासरा ।५५१। सत्त मूलनया पं० तं०-नेगमे संगहे ववहारे उज्जुसुते सद्दे समभिरूढे एवंभूते ।५५२। सत्त सरा पं० तं०-सज्जे रिसभे गंधारे, मज्झिमे पंचमे सरे। धेवते (रेवते पा०) चेव णिसाते, सरा सत्त वियाहिता ॥४५॥ एएसिं णं सत्तण्हं सराणं सत्त सरट्ठाणा पं० तं०-सज्जं तु अग्गजिब्भाते, उरेणं रिसभं सरं। कंठुग्गतेण गंधारं, मज्झजिब्भाते मज्झिमं ॥४६॥ णासाए पंचमं बूया, दंतोट्ठेण य धेवतं। मुद्धाणेण य णेसातं, सरठाणा वियाहिता ॥४७॥ सत्त सरा जीवनिस्सिता पं० तं०-सज्जं रवति मयूरो, कुक्कुडो रिसहं सरं। हंसो णदति गंधारं, मज्झिमं तु गवेलगा ॥४८॥ अह कुसुमसंभवे काले, कोइला पंचमं सरं। छट्ठं च सारसा कोंचा, णिसायं सत्तमं गता ॥४९॥ सत्त सरा अजीवनिस्सिता पं० तं०-सज्जं रवति मुइंगो, गोमुही रिसभं सरं। संखो णदति गंधारं, मज्झिमं पुण झल्लरी ॥५०॥ चउचलणपतिट्ठाणा, गोहिया पंचमं सरं। आडंबरो रेवततं, महाभेरी य सत्तमं ॥५१॥ एतेसिं णं सत्तसराणं सत्त सरलक्खणा पं० तं०-सज्जेण लभति वित्तिं, कतं च ण विणस्सति। गावो मित्ता य पुत्ता य. णारीणं चेव वल्लभो ॥५२॥ रिसभेण उ एसज्जं, सेणावच्चं धणाणि य। वत्थगंधमलंकारं, इत्थिओ सयणाणि व ॥५३॥ गंधारं गीतिजुत्तिण्णा, वज्जवित्ती कलाहिता। भवंति कतिणो पन्ना, जे अन्ने सत्थपारगा ॥५४॥ मज्झिमसरसंपन्ना, भवंति सुहजीविणो। खायती पीयती देती, मज्झिमं सरमस्सितो ॥५५॥ पंचमसरसंपन्ना, भवंति पुढवीपती। सूरा संगहकत्तारो, अणेगगणणातगा ॥५६॥ रेवतसरसंपन्ना, भवंति कलहप्पिया। साउणिता वग्गुरिया, सोयरिया मच्छबंधा य ॥५७॥ चंडाला मुट्ठियाऽनेया, जे अन्ने पावकम्मिणो। गोघातगा य जे चोरा, णिसायं सरमस्सिता ॥५८॥ एतेसिं सत्तण्हं सराणं तओ गामा पण्णत्ता, तं०-सज्जगामे मज्झिमगामे गंधारगामे, सज्जगामस्स णं सत्त मुच्छणातो पं० तं०-मंगी कोरव्वीया हरी य रतणी य सारकंता य। छट्ठी य सारसी णाम सुद्धसज्जा य सत्तमा ॥५९॥ मज्झिमगामस्स णं सत्त मुच्छणातो पं० तं०-उत्तरमंदा रयणी, उत्तरा उत्तरासमा। आसोकता य सोवीरा. अभिरु हवति सत्तमा ॥६०॥ गंधारगामस्स णं सत्त मुच्छणातो पं० तं०-णंदी त खुद्दिमा पूरिमा य चउत्थी य सुद्धगंधारा। उत्तरगंधाराविं त पंचमिता हवति मुच्छा उ ॥६१॥ सुट्ठुतरमायामा सा छट्ठी णियमसो उ णायव्वा। अह उत्तरायता कोडीमातसा सत्तमी मुच्छा ॥६२॥ सत्त सराओ कओ संभवंति? गेयस्स का भवति जोणी ?। कतिसमता उस्सासा? कति वा गेयस्स आगारा ?॥६३॥ सत्त सरा णाभीतो भवंति गीतं च रुय(प्र० रुण्ण) जोणीतं। पादसमा ऊसासा तिन्नि य गेयस्स आगारा ॥६४॥ आइमिउ आरभंता समुव्वहंता य मज्झगारंमि। अवसाणे तज्जविंतो तिन्नि य गेयस्स आगारा ॥६५॥ छद्दोसे अट्ठ गुणे तिन्नि य वित्ताइं दो य भणितीओ। जाणाहिति सो गाहिइ सुसिक्खिओ रंगमज्झम्मि ॥६६॥ भीतं दुतं रहस्सं (उप्पिच्छं पा०) गायंतो मा त गाहि उत्तालं। काकस्सरमणुनासं च होंति गेयस्स छद्दोसा ॥६७॥ पुन्नं १ रत्तं २ च अलंकियं ३ च वत्तं ४ तहा अविघुट्ठं ५। मधुरं ६ सम ७ सुकुमारं ८ अट्ठ गुणा होंति गेयस्स ॥६८॥ उरकंठसिरपसत्थं च गेज्जंते मउरिभिअपदबद्धं। समतालपडुक्खेवं सत्तसरसीहरं गीयं ॥६९॥ निद्दोसं सारवंतं च, हेउजुत्तमलंकियं। उवणीयं सोवयारं च, मियं मधुरमेव य ॥७०॥ सममद्धसमं चेव, सव्वत्थ विसमं च जं। तिन्नि वित्तप्पयाराइं, चउत्थं नोवलब्भती ॥७१॥ सक्कता पागता चेव, दुहा भणितीओ आहिया। सरमंडलंमि गिज्जंते, पसत्था इसिभासिता ॥७२॥ केसी गातति मधुरं? केसी गातति खरं च रुक्खं च?। केसी गायति चउरं? केसि विलंबं? दुतं केसी?॥७३॥ विस्सरं पुण केरिसी?, सामा गायइ मधुरं काली गायइ खरं च रुक्खं च। गोरी गातति चउरं काण विलंबं दुतं अंधा ॥७४॥ विस्सरं पुण पिंगला॥ तंतिसमं तालसमं पादसमं लयसमं गहसमं च। नीससिऊससियसमं संचारसमा सरा सत्त ॥७५॥ सत्त सरा य ततो गामा, मुच्छणा एक्कवीसती। ताणा एगूणपण्णासा, समत्तं सरमंडलं ॥७६॥ ५५३। स्वरप्रकरणं ॥ सत्तविधे कायकिलेसे पं० तं०-ठाणातिते उक्कुडुयासणिते पडिमठाती वीरासणिते णेसज्जिते दंडातिते लगंडसाती ।५५४। जंबुद्दीवे २ सत्त वासा पं० तं०-भरहे एरवते हेमवते हेरन्नवते हरिवासे रम्मगवासे महाविदेहे, जंबुद्दीवे २ सत्त वासहरपव्वता पं० तं०-चुल्लहिमवंते महाहिमवंते निसढे नीलवंते रुप्पी सिहरी मंदरे, जंबुद्दीवे २ सत्त महानदीओ पुरत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति, तं०-गंगा रोहिता हरी सीता णरकंता सुवण्णकूला रत्ता, जंबुद्दीवे २ सत्त महानतीओ पच्चत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति, तं०-सिंधू रोहितंसा हरिकंता सीतोदा णारीकंता रुप्पकूला रत्तवती, धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धेणं सत्त वासा पं० तं०-भरहे जाव महाविदेहे, धायइसंडदीवपुरच्छिमेणं सत्त वासहरपव्वता पं० तं०-चुल्लहिमवंते जाव मंदरे, धायइसंडदीवपुर० सत्त महानतीओ पुरच्छाभिमुहीतो कालो-यसमुद्दं समप्पेंति, तं०-गंगा जाव रत्ता, धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धेणं सत्त महानतीओ पच्चत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति, तं०-सिंधू जाव रत्तवती, धायइसंडदीवे पच्चत्थिमद्धेणं सत्त वासा एवं चेव, णवरं पुरत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति पच्चत्थाभिमुहीओ कालोदं सेसं तं चेव, पुक्खरवरदीवड्ढपुरच्छिमद्धेणं सत्त वासा तहेव, णवरं पुरत्थाभिमुहीओ पुक्खरोदं समुद्दं समप्पेंति पच्चत्थाभिमुहीतो कालोदं समुद्दं समप्पेंति सेसं तं चेव, एवं पच्च-त्थिमद्धेऽवि, णवरं पुरत्थाभिमुहीओ कालोदं समुद्दं सम० पच्चत्थाभिमुहीओ पुक्खरोदं० समप्पेंति, सव्वत्थ वासा वासहरपव्वता णतीतो य भाणितव्वाणि ।५५५। जंबुद्दीवे २ भारहे वासे तीताते उस्स(ओस प्र०)प्पिणीते सत्त कुलगरा हुत्था,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं०-मित्तदामे सुदामे य, सुपासे य सयंपभे । विमलघोसे सुघोसे त, महाघोसे य सत्तमे ॥७७॥ जंबुद्दीवे २ भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए सत्त कुलगरा हुत्था-पढमित्थ विमलवाहण १ चक्खुम २ जसमं ३ चउत्थमभिचंदे ४। तत्तो
य पसेणइ ५ पुण मरुदेवे चेव ६ नाभी य ७ ॥७८॥ एएसिं णं सत्तण्हं कुलगराणं सत्त भारियाओ होत्था, तं०-चंदजस १ चंदकांता २ सुरूव ३ पडिरूव ४ चक्खुकंता ५ य। सिरिकंता ६ मरुदेवी ६ कुलकरइत्थीण नामाइं ॥७९॥
जंबुद्दीवे २ भारहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए सत्त कुलकरा भविस्संति-मित्तवाहण सुभोमे य, सुप्पभे य सयंपभे । दत्ते सुहुमे सुबंधू य, आगमेस्सेण होक्खती ॥ ८० ॥ विमलवाहणे णं कुलकरे सत्तविधा रुक्खा उवभोग-
त्ताते हव्वमागच्छिसु, तं०-मत्तंगता त भिंगा चित्तंगा चेव होंति चित्तरसा। मणियंगा त अणियणा सत्तमगा कप्परुक्खा य॥ ८१ ॥ ५५६ । सत्तविधा दंडनीती पं० तं०-हक्कारे मक्कारे धिक्कारे परिभासे मंडलबंधे चारते छविच्छेदे ।५५७।
एगमेगस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स णं सत्त एगिंदियरतणा पं० तं०-चक्करयणे १ छत्तरयणे २ चम्मरयणे ३ दंडरयणे ४ असिरयणे ५ मणिरयणे ६ काकणिरयणे ७, एगमेगस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स सत्त पंचिंदियरतणा
पं० तं०-सेणावर्तारयणे १ गाहावतिरयणे २ वड्ढतिरयणे ३ पुरोहितरयणे ४ इत्थिरयणे ५ आसरयणे ६ हत्थिरयणे ७ ।५५८। सत्तहिं ठाणेहिं ओगाढं दुस्समं जाणेज्जा, तं०-अकाले वरिसइ १ काले ण वरिसइ २ असाधू पुज्जंति ३
साधू ण पुज्जंति ४ गुरूहिं जणो मिच्छं पडिवन्नो ५ मणोदुहता ६ वतिदुहता ७, सत्तहिं ठाणेहिं ओगाढं सुसमं जाणेज्जा, तं०-अकाले न वरिसइ १ काले वरिसइ २ असाधू ण पुज्जंति ३ साधू पुज्जंति ४ गुरूहिं जणो सम्मं पडिवन्नो
५ मणोसुहता ६ वतिसुहता ७।५५९। सत्तविहा संसारसमावन्नगा जीवा पं० तं०-नेरतिता तिरिक्खजोणिता तिरिक्खजोणिणीतो मणुस्सा मणुस्सीओ देवा देवीओ ।५६०। सत्तविधे आउभेदे पं० तं०-अज्झवसाण निमित्ते आहारे
वेयणा पराघाते । फासे आणापाणू सत्तविधं भिज्जए आउं ॥८२॥ ५६१ । सत्तविधा सव्वजीवा पं० तं०-पुढवीकाइया आउ० तेउ० वाउ० वणस्सति० तसकातिता अकातिता, अहवा सत्तविहा सव्वजीवा पं० तं०-कण्हलेसा जाव
सुक्कलेसा अलेसा ।५६२। बंभदत्ते णं राया चाउरंतचक्कवट्टी सत्त धणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं सत्त य वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा अधे सत्तमाए पुढवीए अप्पतिट्ठाणे णरए णेरतितत्ताए उववन्ने।५६३। मल्ली णं अरहा
अप्पसत्तमे मुंडे भवित्ता अगारातो अणगारियं पव्वइए, तं०-मल्ली विदेहरायवरकन्नगा १ पडिबुद्धी इक्खागराया २ चंदच्छाये अंगराया ३ रुप्पी कुणालाधिपती ४ संखे कासीराया ५ अदीणसत्तू कुरुराता ६ जितसत्तू पंचालराया
।५६४। सत्तविहे दंसणे पं० तं०-सम्मद्दंसणे मिच्छादंसणे सम्मामिच्छादंसणे चक्खुदंसणे अचक्खुदंसणे ओहिदंसणे केवलदंसणे।५६५। छउमत्थवीयरागे णं मोहणिज्जवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ वेयेति. तं०-णाणावरणिज्जं दंसणा-
वरणिज्जं वेयणीयं आउयं नामं गोतमंतराततिं ।५६६। सत्त ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं न याणति न पासति, तं०-धम्मत्थिकायं अधम्मत्थिकायं आगासत्थिकायं जीवं असरीरपडिबद्धं परमाणुपोग्गलं सद्दं गंधं, एयाणि चेव उप्पन्न-
णाणे(ण) जाव जाणति पासति, तं०-धम्मत्थिगातं जाव गंधं।५६७। समणे भगवं महावीरे वयरोसभणारायसंघयणे समचउरंससंठाणसंठिते सत्त रयणीओ उड्ढंउच्चत्तेणं हुत्था।५६८। सत्त विकहाओ पं० तं०-इत्थिकहा भत्तकहा
देसकहा रायकहा मिउकालुणिता दंसणभेयणी चरित्तभेयणी ।५६९। आयरियउवज्झायस्स णं गणंसि सत्त अइसेसा पं० तं०-आयरिउवज्झाए अंतो उवस्सगस्स पाते णिगिज्झिय २ पप्फोडेमाणे वा पमज्जेमाणे वा णातिक्कमति, एवं
जधा पंचट्ठाणे जाव बाहिं उवस्सगस्स एगरातं वा दुरातं वा वसमाणे नातिक्कमति, उवकरणातिसेसे भत्तपाणातिसेसे ।५७०। सत्तविधे संजमे पं० तं०-पुढवीकातितसंजमे जाव तसकातितसंजमे अजीवकायसंजमे, सत्तविधे असंजमे
पं० तं०-पुढवीकातितअसंजमे जाव तसकातितअसंजमे अजीवकायअसंजमे, सत्तविहे आरंभे पं० तं०-पुढवीकातितआरंभे जाव अजीवकातआरंभे, एवमणारंभेऽवि, एवं सारंभेऽवि, एवमसारंभेऽवि, एवं समारंभेऽवि, एवं असमारं-
भेऽवि, जाव अजीवकायअसमारंभे ।५७१। अथ भंते ! अदसिकुसुंभकोद्दवकंगुरालगसणसरिसवमूला(प्र० मूलग)बीयाणं एतेसिं णं धन्नाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं जाव पिहियाणं केवतितं कालं जोणी संचिट्ठति ?, (× गो० ! ×)
जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सत्त संवच्छराइं, तेण परं जोणी पमिलायति जाव जोणीवोच्छेदे पण्णत्ते १ ।५७२। बायरआउकाइयाणं उक्कोसेणं सत्त वाससहस्साइं ठिती पं० २, तच्चाए णं वालुयप्पभाते पुढवीए उक्कोसेणं नेरइयाणं
सत्त सागरोवमाइं ठिती पं० ३. चउत्थीतेणं पंकप्पभाते पुढवीते जह० नेरइयाणं सत्त सागरोवमाइं ठिती पं० ४ ।५७३। सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो वरुणस्स महारन्नो सत्त अग्गमहिसीतो पं०, ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो
सोमस्स महारन्नो सत्त अग्गमहिसीतो पं०, ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो जमस्स महारन्नो सत्त अग्गमहिसीओ पं० ।५७४। ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो अब्भिंतरपरिसाते देवाणं सत्त पलिओवमाइं ठिती पं०, सक्कस्स णं
देविंदस्स देवरन्नो अग्गमहिसीणं देवीणं सत्त पलिओवमाइं ठिती पं०, सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाणं देवीणं उक्कोसेणं सत्त पलिओवमाइं ठिती पं० ।५७५। सारस्सयमाइच्चाणं सत्त देवा सत्त देवसता पं०, गद्दतोयतुसियाणं देवाणं
सत्त देवा सत्त देवसहस्सा पं० ।५७६। सणंकुमारे कप्पे उक्कोसेणं देवाणं सत्त सागरोवमाइं ठिती पं०, माहिंदे कप्पे उक्कोसेणं देवाणं सातिरेगाइं सत्त सागरोवमाइं ठिती पं०, बंभलोगे कप्पे जहण्णेणं देवाणं सत्त सागरोवमाइं ठिती
पं० ।५७७। बंभलोयलंततेसु णं कप्पेसु विमाणा सत्त जोयणसताइं उड्ढंउच्चत्तेणं पं० ।५७८। भवणवासीणं देवाणं भवधारणिज्जा सरीरगा उक्कोसेणं सत्त रयणीओ उड्ढंउच्चत्तेणं, एवं वाणमंतराणं, एवं जोइसियाणं, सोहम्मी-
साणेसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जगा सरीरा सत्त रयणीओ उड्ढंउच्चत्तेणं पं० । ५७९ । णंदिस्सरवरस्स णं दीवस्स अंतो सत्त दीवा पं० तं०-जंबुद्दीवे दीवे १ धायइसंडे दीवे २ पोक्खरवरे २ वरुणवरे ४ खीरवरे ५ घयवरे ६
खोयवरे ७। णंदीसरवरस्स णं दीवस्स अंतो सत्त समुद्दा पं० तं०-लवणे कालोते पुक्खरोदे वरुणोदे खीरोदे घओदे खोतोदे ।५८०। सत्त सेढीओ पं० तं०-उज्जुआयता एगतोवंका दुहतोवंका एगतोखुहा दुहतोखुहा चक्कवाला
अद्धचक्कवाला।५८१। चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सत्त अणिता सत्त अणिताधिपती पं० तं०-पायत्ताणीए १ पीढाणिए २ कुंजराणिए ३ महिसाणिए ४ रहाणिए ५ नट्टाणिए ६ गंधव्वाणिए ७ दुमे पायत्ताणिताधिपती
एवं जहा पंचट्ठाणे जाव किंनरे रधाणिताधिपती रिट्ठे णट्टाणियाहिवती गीतरती गंधव्वाणिताधिपती, बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सत्ताणीया सत्त अणीयाधिपती पं०तं०-पायत्ताणिते जाव गंधव्वाणिते, महद्दुमे पायत्ताणि-

Jain Education International

For Private & Personal Use Only

www.jainelibrary.org

ताधिपती जाव किंपुरिसे रधाणिताधिपती महारिट्ठे णट्टाणिताधिपती गीतजसे गंधव्वाणिताधिपती, धरणस्स णं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो सत्त अणीता सत्त अणिताधिपती पं० तं०-पायत्ताणिते जाव गंधव्वाणिए दुद्दमसेणे पायत्ताणिताधिपती जाव आणंदे रधाणिताधिपती नंदणे णट्टाणियाधिपती तेतली गंधव्वाणियाधिपती, भूताणंदस्स सत्त अणिया सत्त अणियाहिवई पं० तं०-पायत्ताणिते जाव गंधव्वाणीए दक्खे पायत्ताणीयाहिवती जाव णंदुत्तरे रहाणि० रती णट्टाणि० माणसे गंधव्वाणियाहिवई, एवं जाव घोसमहाघोसाणं नेयव्वं, सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सत्त अणिया सत्त अणियाहिवती पं० तं०-पायत्ताणिए जाव गंधव्वाणिए, हरिणेगमेसी पायत्ताणीयाधिवती जाव माढरे रधाणिताधिपती सेते णट्टाणिताहिवती तुंबुरू गंधव्वाणिताधिपती, ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सत्त अणीया सत्त अणियाहिवइणो पं० तं०-पायत्ताणिते जाव गंधव्वाणिते लहुपरक्कमे पायत्ताणियाहिवती जाव महासेते णट्टाणि० रते गंधव्वाणिताधिपती सेसं जहा पंचट्ठाणे, एवं जाव अच्चुतस्सवि नेतव्वं।५८२। चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो दुमस्स पायत्ताणिताहिवतिस्स सत्त कच्छाओ पं० तं०-पढमा कच्छा जाव सत्तमा कच्छा, चमरस्स णमसुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो दुमस्स पायत्ताणिताधिपतिस्स पढमाए कच्छाए चउसट्ठिं देवसहस्सा पं० जावतिता पढमा कच्छा तव्विगुणा दोच्चा कच्छा तव्विगुणा तच्चा कच्छा एवं जाव जावतिता छट्ठा कच्छा तव्विगुणा सत्तमा कच्छा, एवं बलिस्सवि, णवरं महद्दुमे सट्ठिदेवसाहस्सीतो, सेसं तं चेव, धरणस्स एवं चेव, णवरमट्ठावीसं देवसहस्सा, सेसं तं चेव, जधा धरणस्स एवं जाव महाघोसस्स, नवरं पायत्ताणिताधिपती अन्ने ते पुव्वभणिता, सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो हरिणेगमेसिस्स सत्त कच्छाओ पं० तं०-पढमा कच्छा एवं जहा चमरस्स तहा जाव अच्चुतस्स, णाणत्तं पायत्ताणिताधिपतीणं ते पुव्वभणिता, देवपरीमाणमिमं सक्कस्स चउरासीतिं देवसहस्सा, ईसाणस्स असीती देवमहस्साइं, देवा इमाते गाथाते अणुगंतव्वा-'चउरासीति असीति बावत्तरि सत्तरी य सट्ठी या। पन्ना चत्तालीसा तीसा वीसा दससहस्सा॥ ८३॥ जाव अच्चुतस्स लहुपरक्कमस्स दस देवसहस्सा जाव जावतिता छट्ठा कच्छा तव्विगुणा सत्तमा कच्छा।५८३। सत्तविहे वयणविकप्पे पं० तं०-आलावे अणालावे उल्लावे अणुल्लावे (अणुलावे पा०) संलावे पलावे विप्पलावे।५८४। सत्तविहे विणए पं० तं०-णाणविणए दंसणविणए चरित्तविणए मणविणए वतिविणए कायविणए लोगोवयारविणए, पसत्थमणविणए सत्तविधे पं० तं०-अपावते असावज्जे अकिरिते निरुवक्केसे अणण्हकरे अच्छविकरे अभूताभिसंकणे, अप्पसत्थमणविणए सत्तविधे पं० तं०-पावते सावज्जे सकिरिते सउवक्केसे अण्हकरे छविकरे भूताभिसंकणे, पसत्थवइविणए सत्तविधे पं० तं०-अपावते असावज्जे जाव अभूताभिसंकणे, अपसत्थवइविणते सत्तविधे पं० तं०-पावते जाव भूताभिसंकणे, पसत्थकातविणए सत्तविधे पं० तं०-आउत्तं गमणं आउत्तं ठाणं आउत्तं निसीयणं आउत्तं तुअट्टणं आउत्तं उल्लंघणं आउत्तं पल्लंघणं आउत्तं सव्विंदितजोगजुंजणता, अपसत्थकातविणते सत्तविधे पं० तं०-अणाउत्तं गमणं जाव अणाउत्तं सव्विंदितजोगजुंजणता, लोगोवतारविणते सत्तविधे पं० तं०-अब्भासवत्तितं परच्छंदाणुवत्तितं कज्जहेउं कतपडिकिितिता अत्तगवेसणता देसकालण्णुता सव्वत्थेसु यापडिलोमता।५८५। सत्त समुग्घाता पं० तं०-वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाते तेजससमुग्घाए आहारगसमुग्घाते केवलिसमुग्घाते, मणुस्साणं सत्त समुग्घाता पं० एवं चेव।५८६। समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तित्थंसि सत्त पवतणनिण्हगा पं० तं०-बहुरता जीवपतेसिता अवत्तिता सामुच्छेइता दोकिरिता तेरासिता अबद्धिता, एएसिं णं सत्तण्हं पवयणनिण्हगाणं सत्त धम्मातरिता हुत्था, तं०-जमालि तीसगुत्ते आसाढे आसमित्ते गंगे छलुए गोट्ठामाहिले, एतेसिं णं सत्तण्हं पवयणनिण्हगाणं सत्तुप्पत्तिनगरा होत्था, तं०-सावत्थी उसभपुरं सेतविता मिहिलमुल्लगातीरं। पुरिमंतरंजि दसपुर णिण्हगउप्पत्तिनगराइं॥ ८४॥ ५८७। सातावेयणिज्जस्स कम्मस्स सत्तविधे अणुभावे पं० तं०-मणुन्ना सद्दा मणुण्णा रूवा जाव मणुन्ना फासा मणोसुहता वतिसुहता, असातावेयणिज्जस्स णं कम्मस्स सत्तविधे अणुभावे पं० तं०-अमणुन्ना सद्दा जाव वतिदुहता।५८८। महाणक्खत्ते सत्ततारे पं०, अभितीयादिता सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिता पं० तं०-अभिती सवणो धणिट्ठा सतभिसता पुव्वाभद्दवता उत्तराभद्दवता रेवती, अस्सणितादिता णं सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिता पं० तं०-अस्सिणी भरणी कित्तिता रोहिणी मिगसिरे अद्दा पुणव्वसू, पुस्सादिता णं सत्त णक्खत्ता अवरदारिता पं० तं०-पुस्सो असिलेसा मघा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्था चित्ता, सातितातिया णं सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिता पं० तं०-साति विसाहा अणुराहा जेट्ठा मूला पुव्वासाढा उत्तरासाढा।५८९। जंबुद्दीवे दीवे सोमणसे वक्खारपव्वते सत्त कूडा पं० तं०-सिद्धे १ सोमणसे २ तह बोद्धव्वे मंगलावतीकूडे ३। देवकुरु ४ विमल ५ कंचण ६ विसिट्ठकूडे ७ त बोद्धव्वे॥ ८५॥ जंबूदीवे २ गंधमायणे वक्खारपव्वते सत्त कूडा पं० तं०-सिद्धे त गंधमातण बोद्धव्वे गंधिलावतीकूडे। उत्तरकुरु फलिहे लोहितक्ख आणंदणे चेव॥८६॥५९०। बितिंदिताणं सत्त जातीकुलकोडिजोणीपमुहसयसहस्सा पं०।५९१। जीवा णं सत्तट्ठाणनिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताते चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा तं०-नेरतियनिव्वत्तिते जाव देवनिव्वत्तिए. एवं चिण जाव णिज्जरा चेव।५९२। सत्तपतेसिता खंधा अणंता पं० सत्तपतेसोगाढा पोग्गला जाव सत्तगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पं०।५९३। सप्तस्थानकाध्ययनं ७॥ अट्ठहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहति एगल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तते, तं०-सड्ढी पुरिसजाते सच्चे पुरिसजाए मेहावी पुरिसजाते बहुस्सुते पुरिसजाते सत्तिमं अप्पाहिकरणे धितिमं वीरितसंपन्ने।५९४। अट्ठविधे जोणिसंगहे पं० तं०-अंडगा पोतगा जाव उब्भिगा उववातिता, अंडगा अट्ठगतिता अट्ठागइआ पं० तं०-अंडए अंडएसु उववज्जमाणे अंडएहिंतो वा पोतएहिंतो वा जाव उववातितेहिंतो वा उववज्जेज्जा, से चेव णं से अंडते अंडगत्तं विप्पजहमाणे अंडगत्ताते वा पोतगत्ताते वा जाव उववातितत्ताते वा गच्छेज्जा, एवं पोतगावि, जराउजावि, सेसाणं गतीरागती णत्थि।५९५। जीवा णमट्ठ कम्मपगडीतो चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा, तं०-णाणावरणिज्जं दरिसणावरणिज्जं वेयणिज्जं मोहणिज्जं आउयं नामं गोत्तं अंतगतितं, नेरइया णं अट्ठ कम्मपगडीओ चिणिंसु वा ३, एवं निरंतरं जाव वेमाणियाणं २४, जीवा णमट्ठ कम्मगडीओ उवचिणिंसु वा ३ एवं चेव, 'एवं चिण १ उवचिण २ बंध ३ उदीर ४ वेय ५ तह णिज्जरा ६ चेव।' एते छ चउवीसा २४ दंडगा भाणियव्वा।५९६। अट्ठहिं ठाणेहिं माती मायं कट्टु नो आलोतेज्जा नो पडिक्कमेज्जा जाव नो पडिवज्जेज्जा, तं०-करिंसु वाऽहं १ करेमि वाऽहं २ करिस्सामि वाऽहं ३ अकित्ती वा मे सिया ४ अवण्णे वा मे सिया ५ अवि(व)णए वा मे सिया ६ कित्ती वा मे परिहाइस्सइ ७ जसे वा मे परिहाइस्सइ ८, अट्ठहिं ठाणेहिं माई मायं कट्टु आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा, तं०-मातिस्स णं अस्सिं लोए गरहिते भवति १ उववाए गरहिते (३०)

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

भवति २ आजाती गरहिता भवति ३ एगमवि माती मातं कट्टु नो आलोएज्जा जाव नो पडिवज्जेज्जा णत्थि तस्स आराहणा ४ एगमवि मायी मायं कट्टु आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा अत्थि तस्स आराहणा ५ बहुतोवि माती मायं कट्टु नो आलोएज्जा जाव नो पडिवज्जेज्जा नत्थि तस्स आराधणा ६ बहुओवि माती मायं (प्र० मायाओ) कट्टु आलोएज्जा जाव अत्थि तस्स आराहणा ७ आयरियउवज्झायस्स वा मे अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पज्जेज्जा, से त ममालोएज्जा माती णं एसे ८, माती णं मातं कट्टु से जहानामए अयागरेति वा तंबागरेति वा तउआगरेति वा सीसागरेति वा रुप्पागरेति वा सुवन्नागरेति वा तिलागणीति वा तुसागणीति वा बुसागणीति वा णलागणीति वा दलागणीति वा सोंडितालिच्छाणि वा भंडितालिच्छाणि वा गोलियालिच्छाणि वा कुंभारावातेति वा कवेल्लुवावातेति वा इट्टावातेति वा जंतवाडचुल्लीति वा लोहारंबरिसाणि वा तत्ताणि समजोतिभूताणि किंसुकफुल्लसमाणाणि उक्कासहस्साइं विणिम्मुतमाणाइं २ जालासहस्साइं पमुंचमाणाइं इंगालसहस्साइं परिकीरमाणाइं अंतो २ झियायंति एवामेव माती मायं कट्टु अंतो २ झियायइ जतिवि त णं अन्ने केति वदति तंपि त णं माती जाणति अहमेसे अभिसङ्किज्जामि २, माती णं मातं कट्टु (से णं तस्स पा०) अणालोतितपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोगेसु देवदत्ताते उववत्तारो भवंति, तं०-नो महिड्ढिएसु जाव नो दूरंगतितेसु नो चिरट्ठितीएसु, से णं तत्थ देवे भवति णो महिड्ढिए जाव नो चिरठितीते, जाऽवित से तत्थ बाहिरब्भंतरिया परिसा भवति साऽविय णं नो आढाति नो परियाणाति णो महरिहेणमासणेणं उवनिमंतेति, भासंपि य से भासमाणस्स जाव चत्तारि पंच देवा अवुत्ता चेव अब्भुट्टंति-मा बहुं देवे! भासउ २ से णं ततो देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठितिक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता इहेव माणुस्सए भवे जाइं इमाइं कुलाइं भवंति, तं०-अंतकुलाणि वा पंतकुलाणि वा तुच्छकुलाणि वा दरिद्दकुलाणि वा भिक्खागकुलाणि वा किवणकुलाणि वा तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताते पच्चायाति, से णं तत्थ पुमे भवति दुरूवे दुवन्ने दुग्गंधे दुरसे दुफासे अणिट्ठे अकंते अप्पिते अमणुण्णे अमणामे हीणस्सरे दीणस्सरे अणिट्ठसरे अकंतसरे अप्पितस्सरे अमणुण्णस्सरे अमणामस्सरे अणाएज्जवयणे पच्चायाते, जाऽविय से तत्थ बाहिरब्भंतरिता परिसा भवति साऽवि तं णं णो आढाति णो परिताणाति नो महरिहेणं आसणेणं उवणिमंतेति, भासंपि त से भासमाणस्स जाव चत्तारि पंच जणा अवुत्ता चेव अब्भुट्टेंति-मा बहुं अज्जउत्तो! भासउ २, माती णं मातं कट्टु आलोचितपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तं०-महिड्ढिएसु जाव चिरट्ठितीएसु, से णं तत्थ देवे भवति महिड्ढीए जाव चिरट्ठितीते हारविरातितवच्छे कडकतुडितथंभितभुते अंगदकुंडलमउडगंडतलकन्नपीढधारी विचित्तहत्थाभरणे विचित्तवत्थाभरणे विचित्तमालामउली कल्लाणगपवरवत्थपरिहिते कल्लाणगपवरगंध(मल्लाणु पा०)लेवणधरे भासुरबोंदी पलंबवणमालधरे दिव्वेणं वन्नेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं रसेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघातेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीते दिव्वाते जुतीते (जुत्तीते पा०) दिव्वाते पभाते दिव्वाते छायाते दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाते लेस्साए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा महयाऽहतणट्टगीतवातिततंतीतलतालतुडितघणमुतिंगपडुप्पवातितरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ, जाऽवित से तत्थ बाहिरब्भंतरिता परिसा भवति साऽवित णमाढाइ परियाणाति महारिहेण आसणेण उवनिमंतेति भासंपि त से भासमाणस्स जाव चत्तारि पंच देवा अवुत्ता चेव अब्भुट्टिंति-बहुं देव! भासउ २ से णं तओ देवलोगातो आउक्खएणं जाव चइत्ता इहेव माणुस्सए भवे जाइं इमाइं कुलाइं भवंति अड्ढाइं जाव बहुजणस्स अपरिभूताइं तहप्पगारेसु पुमत्ताते पच्चाताति, से णं तत्थ पुमे भवति सुरूवे सुवन्ने सुगंधे सुरसे सुफासे इट्ठे कंते जाव मणामे अहीणस्सरे जाव मणामस्सरे आदेज्जवतणे पच्चायाते, जाऽविय से तत्थ बाहिरब्भंतरिता परिसा भवति साऽवि त णं आढाति जाव बहुमज्जउत्ते! भासउ २।५९७। अट्ठविहे संवरे पं० तं०-सोइंदियसंवरे जाव फासिंदियसंवरे मणसंवरे वतिसंवरे कायसंवरे, अट्ठविहे असंवरे पं० तं०-सोतिंदिअअसंवरे जाव कायअसंवरे ।५९८। अट्ठ फासा पं० तं०-कक्कडे मउते गरुते लहुते सीते उसिणे निद्धे लुक्खे ।५९९। अट्ठविधा लोगठिती पं० तं०-आगासपतिट्ठिते वाते वातपतिट्ठिते उदही एवं जधा छट्ठाणे जाव जीवा कम्मपतिट्ठिता अजीवा जीवसंगहीता जीवा कम्मसंगहीता ।६००। अट्ठविहा गणिसंपता पं० तं०-आचारसंपया १ सुयसंपता २ सरीरसंपता ३ वतणसंपता ४ वातणासंपता ५ मतिसंपता ६ पतोगसंपता ७ संगहपरिण्णा णाम अट्ठमा ८।६०१। एगमेगे णं महानिही अट्ठचक्कवालपतिट्ठाणे अट्ठट्ठ जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं पं०।६०२। अट्ठ समितीतो पं० तं०-ईरियासमिति भासासमिति एसणा० आयाणभंडमत्त० उच्चारपासवण० मणस० वइस० कायसमिती ।६०३। अट्ठहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहति आलोतणा पडिच्छित्तए, तं०-आतारवं आहारवं ववहारवं ओवीलए पकुव्वते अपरिस्साती निज्जावते अवातदंसी, अट्ठहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहति अत्तदोसमालोइत्तते, तं०-जातिसंपन्ने कुलसंपन्ने विणयसंपन्ने णाणसंपन्ने दंसणसंपन्ने चरित्तसंपन्ने खंते दंते ।६०४। अट्ठविहे पायच्छित्ते पं० तं०- आलोयणारिहे पडिक्कमणारिहे तदुभयारिहे विवेगारिहे विउस्सग्गारिहे तवारिहे छेयारिहे मूलरिहे।६०५। अट्ठ मतट्ठाणा पं० तं०-जातिमते कुलमते बलमते रूवमते तव० सुत० लाभ० इस्सरितमते ।६०६। अट्ठ अकिरियावाती पं० तं०-एगावाती १ अणेगावाती २ मितवादी ३ निम्मितवादी ४ सायावाती ५ समुच्छेदवाती ६ णितावादी ७ ण संति परलोगवाती ८ ।६०७। अट्ठविहे महानिमित्ते पं०तं०-भोमे उप्पाते सुविणे अंतलिक्खे अंगे सरे लक्खणे वंजणे। ६०८। अट्ठविधा वयणविभत्ती पं०तं०-निद्देसे पढमा होती, बीतीया उवतेसणे। ततिता करणंमि कता, चउत्थी संपदावणे ॥८७॥ पंचमी त अवाताणे, छट्ठी सस्सामिवायणे। सत्तमी सन्निहाणत्थे, अट्ठमी आमंतणी भवे ॥ ८८॥ तत्थ पढमा विभत्ती निद्देसे सो इमो अहं वत्ति १। बितीता उण उवतेसे भण कुण व तिमं व तं वत्ति २॥८९॥ ततिता करणंमि कया णीतं च कतं च तेण व मते वा ३। हंदि णमो साहाते हवति चउत्थी पदाणंमि ४॥९०॥ अवणे गिण्हसु तत्तो इत्तोत्ति व पंचमी अवादाणे ५। छट्ठी तस्स इमस्स व गतस्स वा सामिसंबंधे ६॥९१॥ हवइ पुण सत्तमी तंमिमंमि आहारकालभावे त ७। आमंतणी भवे अट्ठमी उ जह हे जुवाणत्ती ८॥९२॥ ६०९। अट्ठ ठाणाइं छउमत्थेणं सव्वभावेणं ण याणति न पासति, तं०-धम्मत्थिगातं जाव गंधं वातं, एताणि चेव उप्पन्ननाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली जाणइ पासइ जाव गंधं वातं ।६१०। अट्ठविधे आउवेदे पं० तं०-कुमारभिच्चे कायतिगिच्छा सालाती सल्लहत्ता जंगोली भूतवेज्जा खारतंते रसातणे। ६११। सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो अट्ठग्गमहिसीओ

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पं० तं०-पउमा सिवा सती (प्र० सूती) अंजू अमला अच्छरा णवमिया रोहिणी १ ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो अट्ठग्गमहिसीओ पं० तं०-कण्हा कण्हराती रामा रामरक्खिता वसू वसुगुत्ता वसुमित्ता वसुंधरा २ सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सोमस्स महारन्नो अट्ठग्गमहिसीओ पं० ३ ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो वेसमणस्स महारन्नो अट्ठग्गमहिसीओ पं० ४ अट्ठ महग्गहा पं० तं०-चंदे सूरे सुक्के बुहे बहस्सती अंगारे सणिंचरे केऊ ५।६१२। अट्ठविधा तणवणस्सतिकातिया पं० तं०-मूले कंदे खंधे तया साले पवाले पत्ते पुप्फे।६१३। चउरिंदिया णं जीवा असमारभमाणस्स अट्ठविधे संजमे कज्जति, तं०-चक्खुमातो सोक्खातो अवरोवित्ता भवति, चक्खुमतेणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवति, एवं जाव फासामातो सोक्खातो अवरोवेत्ता भवति फासमाएणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवति, चउरिंदिया णं जीवा समारभमाणस्स अट्ठविधे असंजमे कज्जति, तं०-चक्खुमातो सोक्खातो ववरोवेत्ता भवति चक्खुमतेणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवति, एवं जाव फासामातो सोक्खातो० ।६१४। अट्ठ सुहुमा पं० तं०-पाणसुहुमे १ पणगसुहुमे २ बीयसुहुमे ३ हरितसुहुमे ४ पुप्फसुहुमे ५ अंडसुहुमे ६ लेणसुहुमे ७ सिणेहसुहुमे ८।६१५। भरहस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अट्ठ पुरिसजुगाइं अणुबद्धं सिद्धाइं जाव सव्वदुक्खप्पहीणाइं, तं०-आदिच्चजसे महाजसे अतिबले महाबले तेतवीरिते कित्तवीरिते दंडवीरिते जलवीरिते।६१६। पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीतस्स अट्ठ गणा अट्ठ गणहरा होत्था, तं०-सुभे अज्जघोसे वसिट्ठे बंभचारी सोमे सिरिधरिते वीरिते भद्दजसे।६१७। अट्ठविधे दंसणे पं० तं०-सम्मद्दंसणे मिच्छद्दंसणे सम्मामिच्छदंसणे चक्खुदंसणे जाव केवलदंसणे सुविणदंसणे ।६१८। अट्ठविधे अद्धोवमिते पं० तं०-पलितोवमे सागरोवमे उस्सप्पिणी ओसप्पिणी पोग्गलपरियट्टे तीतद्धा अणागतद्धा सव्वद्धा।६१९। अरहतो णं अरिट्ठनेमिस्स जाव अट्ठमातो पुरिसजुगातो जुगंतकरभूमी दुवासपरियाते अंतमकासी।६२०। समणेणं भगवता महावीरेणं अट्ठ रायाणो मुंडे भवेत्ता अगारातो अणगारितं पव्वाविता, तं०-वीरंगय वीरजसे संजय एणिज्जते य रायरिसी। सेयसिवे उदायणे संखे कासिवद्धणे।६२१। अट्ठविहे आहारे पं० तं०-मणुण्णे असणे पाणे खाइमे साइमे अमणुण्णे जाव साइमे।६२२। उप्पिं सणंकुमारमाहिंदाणं कप्पाणं हेट्ठिं बंभलोगे कप्पेरिट्ठविमाणे पत्थडे एत्थ णमक्खाडगसमचउरंससंठाणसंठितातो अट्ठ कण्हरातीतो पं० तं०-पुरच्छिमेणं दो कण्हरातीतो दाहिणेणं दो कण्हराईओ पच्चच्छिमेणं दो कण्हराईओ उत्तरेणं दो कण्हराईओ, पुरच्छिमा अब्भंतरा कण्हराती दाहिणं बाहिरं कण्हराइं पुट्ठा, दाहिणा अब्भंतरा कण्हराती पच्चच्छिमगं बाहिरं कण्हराइं पुट्ठा, पच्चच्छिमा अब्भंतरा कण्हराती उत्तरं बाहिरं कण्हराइं पुट्ठा, उत्तरा अब्भंतरा कण्हराती पुरच्छिमं बाहिरं कण्हरातीं पुट्ठा, पुरच्छिमपच्चच्छिमिल्लाओ बाहिराओ दो कण्हरातीतो छलंसातो, उत्तरदाहिणाओ बाहिराओ दो कण्हरातीतो तंसाओ, सव्वाओऽवि णं अब्भंतरकण्हरातीतो चउरंसाओ १, एतासिं णं अट्ठण्हं कण्हरातीणं अट्ठ नामधेज्जा पं० तं०-कण्हरातीति वा मेहरातीति वा मघाति वा माघवतीति वा वातफलिहेति वा वातपलिक्खोभेति वा देवपलिहे वा देवपलिक्खोभेति वा २ एतासिं णं अट्ठण्हं कण्हरातीणं अट्ठसु उवासंतरेसु अट्ठ लोगंतितविमाणा पं० तं०-अच्ची अच्चिमाली वतिरोअणे पभंकरे चंदाभे सूराभे सुपइट्ठाभे अग्गिच्चाभे ३ एतेसु णं अट्ठसु लोगंतितविमाणेसु अट्ठविधा लोगंतिता देवा पं० तं०-'सारस्सतमाइच्चा वण्ही वरुणा य गद्दतोया य। तुसिता अव्वाबाहा अग्गिच्चा चेव बोद्धव्वा ॥'९३॥ ४ एतेसिं णमट्ठण्हं लोगंतितदेवाणं अजहण्णमणुक्कोसेणं अट्ठ सागरोवमाइं ठिती पं० ५।६२३। अट्ठ धम्मत्थिगातमज्झपतेसा पं० अट्ठ अधम्मत्थिगात० एवं चेव अट्ठ आगासत्थिगा० एवं चेव अट्ठ जीवमज्झपएसा पं०।६२४। अरहंता णं महापउमे अट्ठ रायाणो मुंडा भवित्ता आगारातो अणगारितं पव्वावेस्सति, तं०-पउमं पउमगुम्मं नलिणं नलिनगुम्मं पउमद्धतं धणुद्धतं कणगरहं भरहं १।६२५। कण्हस्स णं वासुदेवस्स अट्ठ अग्गमहिसीओ अरहतो णं अरिट्ठनेमिस्स अंतिते मुंडा भवेत्ता अगारातो अणगारितं पव्वतिता सिद्धाओ जाव सव्वदुक्खप्पहीणाओ, तं०-पउमावती गोरी गंधारी लक्खणा सुसीमा जंबवती सच्चभामा रुप्पिणी कण्हअग्गमहिसीओ २।६२६। वीरितपुव्वस्स णं अट्ठ वत्थू अट्ठ चूलिआ(प्र०चूल)वत्थू पं०।६२७। अट्ठ गतितो पं० तं०-णिरतगती तिरियगई जाव सिद्धिगती गुरुगती पणोल्लणगती पब्भारगती।६२८। गंगासिंधुरत्तारत्तवतीदेवीणं दीवा अट्ठ २ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं पं०।६२९। उक्कामुहमेहमुहविज्जुमुहविज्जुदंतदीवाणं दीवा अट्ठ २ जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं पं०।६३०। कालोते णं समुद्दे अट्ठ जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पं०।६३१। अब्भंतरपुक्खरद्धे णं अट्ठ जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पं०, एवं बाहिरपुक्खरद्धेऽवि।६३२। एगमेगस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अट्ठसोवन्निते काकिणिरयणे छत्तले दुवालसंसिते अट्ठकण्णिते अधिकरणिसंठिते पं०।६३३। मागधस्स णं जोयणस्स अट्ठ धणुसहस्साइं निधत्ते (निहत्ते, निहारे, पा०) पं०।६३४। जंबू० णं सुदंसणा अट्ठ जोयणाइं उद्धंउच्चत्तेणं बहुमज्झदेसभाए अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं सातिरेगाइं अट्ठ जोयणाइं सव्वग्गेणं पं० १, कूडसामली णं अट्ठ जोयणाइं एवं चेव २।६३५। तिमिसगुहा णमट्ठ जोयणाइं उद्धंउच्चत्तेणं ३ खंडप्पवातगुहा णं अट्ठ जोयणाइं उद्धंउच्चत्तेणं एवं चेव ४।६३६। जंबूमंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं सीताते महानतीते उंभतोकूले अट्ठ वक्खारपव्वया पं० तं०-चित्तकूडे पम्हकूडे नलिणकूडे एगसेले तिकूडे वेसमणकूडे अंजणे मायंजणे १ जंबूमंदरपच्चच्छिमेणं सीतोताते महानतीते उभतोकूले अट्ठ वक्खारपव्वता पं० तं०-अंकावती पम्हावती आसीविसे सुहावहे चंदपव्वते सूरपव्वते णागपव्वते देवपव्वते २ जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीताते महानतीते उत्तरेणं अट्ठ चक्कवट्टिविजया पं० तं०-कच्छे सुकच्छे महाकच्छे कच्छगावती आवत्ते जाव पुक्खलावती ३ जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीताते महानतीते दाहिणेणमट्ठ चक्कवट्टिविजया पं० तं०-वच्छे सुवच्छे जाव मंगलावती ४ जंबूमंदरपच्चच्छिमेणं सीतोतामहानदीते दाहिणेणं अट्ठ चक्कवट्टिविजया पं० तं०-पम्हे जाव सलिलावती ५ जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं सीतोताए महानदीए उत्तरेणं अट्ठ चक्कवट्टिविजया पं० तं०-वप्पे सुवप्पे जाव गंधिलावती ६ जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीताते महानतीते उत्तरेणमट्ठ रायहाणीतो पं० तं०-खेमा खेमपुरी चेव जाव पुंडरीगिणी ७ जंबूमंदरपुर० सीताए महाणईए दाहिणेणं अट्ठ रायहाणीतो पं० तं०-सुसीमा कुंडला चेव जाव रयणसंचया ८ जंबूमंदरपच्चच्छिमेणं सीओदाते महाणदीते दाहिणेणं अट्ठ रायहाणीओ पं० तं०-आसपुरा जाव वीतसोगा ९ जंबूमंदरपच्च० सीतोताते महानतीते उत्तरेणमट्ठ रायहाणीओ पं० तं०-विजया वेजयंती जाव अउज्झा १०।६३७। जंबूमंदरपुर० सीताते महाणदीए उत्तरेणं उक्कोसपए अट्ठ अरहंता अट्ठ चक्कवट्टी अट्ठ बलदेवा अट्ठ

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वासुदेवा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा ११, जंबूमंदरपुरच्छि० सीताए महाणदीए दाहिणेणं उक्कोसपए एवं चेव १२ जंबूमंदरपच्चत्थि० सीओयाते महाणदीए दाहिणेणं उक्कोसपए एवं चेव १३ एवं उत्तरेणवि १४ ।६३८। जंबुमंदरपुर० सीताते महानईए उत्तरेणं अट्ठ दीहवेयड्ढा अट्ठ तिमिसगुहाओ अट्ठ खंडगप्पवातगुहा अट्ठ कयमालगा देवा अट्ठ णट्टमालगा देवा अट्ठ गंगाकुंडा अट्ठ सिंधुकुंडा अट्ठ गंगातो अट्ठ सिंधूओ अट्ठ उसभकूडा पव्वता अट्ठ उसभकूडा देवा पं० १५ जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीताते महानतीते दाहिणेणं अट्ठ दीहवेअड्ढा एवं चेव जाव अट्ठ उसभकूडा देवा पं०, नवरमेत्थ रत्तारत्तावतीतो तासिं चेव कुंडा १६ जंबूमंदरपच्चच्छिमेणं सीतोताए महानदीते दाहिणेणं अट्ठ दीहवेयड्ढा जाव अट्ठ नट्टमालगा देवा अट्ठ गंगाकुंडा अट्ठ सिंधुकुंडा अट्ठ गंगातो अट्ठ सिंधूओ अट्ठ उसभकूडपव्वता अट्ठ उसभकूडा देवा पं० १७ जंबूमंदरपच्चत्थि० सीओताते महानतीते उत्तरेणं अट्ठ दीहवेयड्ढा जाव अट्ठ नट्टमालगा देवा अट्ठ रत्तकुंडा अट्ठ रत्तावतीकुंडा अट्ठ रत्ताओ जाव अट्ठ उसभकूडा देवा पं० १८। ६३९। मंदरचूलिया णं बहुमज्झदेसभाते अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं पं० १९ ।६४०। धायइसंडदीवे पुरत्थिमद्धेणं धायतिरुक्खे अट्ठ जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं पं० बहुमज्झदेसभाए अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं साइरेगाइं अट्ठ जोयणाइं सव्वग्गेणं पं० एवं धायइरुक्खातो आढवेत्ता सच्चेव जंबुदीववत्तव्वता भाणियव्वा जाव मंदरचूलियत्ति, एवं पच्चच्छिमद्धेऽवि महाधातितिरुक्खातो आढवेत्ता जाव मंदरचूलियत्ति, एवं पुक्खरवरदीवड्ढपुरच्छिमद्धेऽवि पउमरुक्खाओ आढवेत्ता जाव मंदरचूलियत्ति, एवं पुक्खरवरदीवपच्चत्थि० महापउमरुक्खातो जाव मंदरचूलितत्ति ।६४१। जंबुदीवे २ मंदरे पव्वते भद्दसालवणे अट्ठ दिसाहत्थिकूडा पं०तं०-पउमुत्तर नीलवंते सुहत्थि अंजणागिरी कुमुते य। पलासते वडिंसे (अट्ठमए) रोयणागिरी ॥९४॥ १ जंबूदीवस्स णं दीवस्स जगती अट्ठ जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं बहुमज्झदेसभाते अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं २।६४२। जंबूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं महाहिमवंते वासहरपव्वते अट्ठ कूडा पं० तं०-सिद्ध महाहिमवंते हिमवंते रोहिता हरीकूडे। हरिकंता हरिवासे वेरुलिते चेव कूडा उ ॥९५॥ ३, जंबूमंदरउत्तरेणं रुप्पिमि वासहरपव्वते अट्ठ कूडा पं० तं०-सिद्ध य रुप्पी रम्मग नरकंता बुद्धि रुप्पकूडे या। हिरण्णवते मणिकंचणे त रुप्पिमि कूडा उ ॥९६॥ ४, जंबूमंदरपुरच्छिमेणं रुयगवरे पव्वते अट्ठ कूडा पं० तं०-रिट्ठे तवणिज्ज कंचण रयत दिसासोत्थिते पलंबे य। अंजण अंजणपुलते रुयगस्स पुरच्छिमे कूडा ॥९७॥ १, तत्थ णं अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरितातो महिड्ढियातो जाव पलिओवमट्ठितीतातो परिवसंति तं०-णंदुत्तरा य णंदा, आणंदा णंदिवद्धणा। विजया य वेजयंती, जयंती अपराजिया ॥९८॥ २, जंबूमंदरदाहिणेणं रुतगवरे पव्वते अट्ठ कूडा पं० तं०-कणते कंचणे पउमे नलिणे ससि दिवायरे चेव। वेसमणे वेरुलिते रुयगस्स उ दाहिणे कूडा ॥९९॥ ३, तत्थ णं अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियातो महिड्ढियातो जाव पलिओवमट्ठितीतातो परिवसंति तं०-समाहारा सुप्पतिण्णा, सुप्पबुद्धा जसोहरा। लच्छिवती सेसवती, चित्तगुत्ता वसुंधरा ॥१००॥ ४, जंबूमंदरपच्च० रुयगवरे पव्वते अट्ठ कूडा पं० तं०-सोत्थिते त अमोहे य, हिमवं मंदरे तहा। रुअगे रुतगुत्तमे चंदे, अट्ठमे त सुदंसणे ॥१०१॥ ५, तत्थ णमट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ महिड्ढियातो जाव पलिओवमट्ठितीतातो परिवसंति तं०-इलादेवी सुरादेवी, पुढवी पउमावती। एगनासा णवमिता, सीता भद्दा त अट्ठमा ॥१०२॥ ६, जंबूमंदरउत्तररुअगवरे पव्वते अट्ठ कूडा पं० तं०-रयणे रयणुच्चते ता सव्वरयण रयणसंचते चेव। विजये य विजयंते जयंते अपराजिते ॥१०३॥ ७, तत्थ णं अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियातो महड्ढिताओ जाव पलिओवमट्ठितीताओ परिवसंति तं०-अलंबुसा मितकेसी, पोंडरी गीतवारुणी। आसा य सव्वगा चेव, सिरि हिरि चेव उत्तरतो ॥१०४॥ ८, अट्ठ अहेलोगवत्थव्वातो दिसाकुमारिमहत्तरितातो पं० तं०-भोगंकरा भोगवती, सुभोगा भोगमालिणी। सुवच्छा वच्छमित्ता य, वारिसेणा बलाहगा ॥१०५॥ १, अट्ठ उड्ढलोगवत्थव्वाओ दिसाकुमारिमहत्तरितातो पं० तं०-मेघंकरा मेघवती, सुमेघा मेघमालिणी। तोयधारा विचित्ता य, पुप्फमाला अणिंदिता ॥१०६॥ २।६४३। अट्ठ कप्पा तिरितमिस्सोववन्नगा पं० तं०-सोहम्मे जाव सहस्सारे ३, एतेसु णमट्ठसु कप्पेसु अट्ठ इंदा पं० तं० सक्के जाव महस्सारे ४, एतेसिं णं अट्ठण्हमिंदाणं अट्ठ परियाणिया विमाणा पं० तं०-पालते पुप्फते सोमणसे सिरिवच्छे णंदा (प्र० दिया) वत्ते कामकमे पीतिमणे विमले ५।६४४। अट्ठहमियाणं भिक्खुपडिमाणं चउसट्ठीते राइंदिएहिं दोहि य अट्ठासीतेहिं भिक्खासतेहिं अहासुत्ता जाव अणुपालितायावि भवति ।६४५। अट्ठविधा संसारसमावन्नगा जीवा पं० तं०-पढमसमयनेरतिता अपढमसमयनेरतिता एवं जाव अपढमसमयदेवा १ अट्ठविधा सव्वजीवा पं० तं०-नेरतिता तिरिक्खजोणिता तिरिक्खजोणिणीओ मणुस्सा मणुस्सीओ देवा देवीओ सिद्धा २ अथवा अट्ठविधा सव्वजीवा पं० तं०-आभिणिबोहितनाणी जाव केवलनाणी मतिअन्नाणी सुतअण्णाणी विभंगणाणी ३।६४६। अट्ठविधे संजमे पं० तं०-पढमसमयसुहुमसंपरागसरागसंजमे अपढमसमयसुहुमसंपरायसरागसंजमे पढमसमयबादरसंजमे अपढमसमयबादरसंयमे पढमसमयउवसंतकसायवीतरायसंजमे अपढमसमयउवसंतकसायवीतरागसंजमे पढमसमयखीणकसायवीतरागसंजमे अपढमसमयखीण० ।६४७। अट्ठ पुढवीओ पं० तं०-रयणप्पभा जाव अहे सत्तमा ईसिपब्भारा १ ईसीपब्भाराते णं पुढवीते बहुमज्झदेसभागे अट्ठजोयणिए खेत्ते अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं पं० २ ईसिपब्भाराते णं पुढवीते अट्ठ नामधेज्जा पं० तं०-ईसिति वा ईसिपब्भाराति वा तणूति वा तणुतणूइ वा सिद्धीति वा सिद्धालतेति वा मुत्तीति वा मुत्तालतेति वा ३।६४८। अट्ठहिं ठाणेहिं संमं संघडितव्वं जतितव्वं परक्कमितव्वं अस्सिं च णं अट्ठे णो पमातेतव्वं भवति-असुयाणं धम्माणं सम्मं सुणणताते अब्भुट्टेतव्वं भवति १ सुताणं धम्माणं ओगिण्हणयाते उवधारणयाते अब्भुट्टेतव्वं भवति २ पा(ण पा०)वाणं कम्माणं संजमेणमकरणताते अब्भुट्टेयव्वं भवति ३ पोराणाणं कम्माणं तवसा विगिंचणताते विसोहणताते अब्भुट्टेतव्वं भवइ ४ असंगिहीतपरितणस्स संगिण्हणताते अब्भुट्टेयव्वं भवति ५ सेहं आयारगोयरगहणताते अब्भुट्टेयव्वं भवति ६ गिलाणस्स अगिलाते वेयावच्चकरणताए अब्भुट्ठेयव्वं भवति ७ साहम्मिताणमधिकरणंसि उप्पण्णंसि तत्थ अनिस्सितोवस्सितो अपक्खग्गाही मज्झत्थभावभूते कह णु साहम्मिता अप्पसद्दा अप्पझंझा अप्पतुमंतुमा उवसामणताते अब्भुट्ठेयव्वं भवति ८ ।६४९। महासुक्कसहस्सारेसु णं कप्पेसु विमाणा अट्ठ जोयणसताइं उड्ढंउच्चत्तेणं पं० ।६५०। अरहतो णं अरिट्ठनेमिस्स अट्ठ सया वादीणं सदेवमणुयासुराते परिसाते वादे अपराजिताणं उक्कोसिया वादिसंपया हुत्था ।६५१।

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठसमतिए केवलिसमुग्घाते पं० तं०-पढमे समए दंडं करेति बीए समए कवाडं करेति ततिए समते मंथानं करेति चउत्थे समते लोगं पूरेति पंचमे समए लोगं पडिसाहरति छट्ठे समए मंथं पडिसाहरति सत्तमे समए कवाडं पडिसाहरति अट्ठमे समए दंडं पडिसाहरति ।६५२। समणस्स णं भगवतो महावीरस्स अट्ठ सया अणुत्तरोववातियाणं गतिकल्लाणाणं जाव आगमेसिभद्दाणं उक्कोसिता अणुत्तरोववातितसंपया हुत्था १ ।६५३। अट्ठविधा वाणमंतरा देवा पं० तं०-पिसाया भूता जक्खा रक्खसा किन्नरा किंपुरिसा महोरगा गंधव्वा २, एतेसिं णं अट्ठण्हं (प्र० विहाणं) वाणमंतरदेवाणं अट्ठ चेतितरुक्खा पं० तं०-कलंबो अ पिसायाणं, वडो जक्खाण चेतितं। तुलसी भूयाणं भवे, रक्खसाणं च कंडओ ॥१०७॥ असोओ किन्नराणं च, किंपुरिसाण य चंपतो। नागरुक्खो भुयंगाणं, गंधव्वाण य तेंदुओ ॥१०८॥ ३।६५४। इमीसे रयणप्पभाते पुढवीते बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठजोयणसते उड्ढमाबाहाते सूरविमाणे चारं चरति ४।६५५। अट्ठ नक्खत्ता चंदेणं सद्धिं पमद्दं जोगं जोतेंति तं०-कत्तिता रोहिणी पुणव्वसू महा चित्ता विसाहा अणुराधा जेट्ठा ५।६५६। जंबुदीवस्स णं दीवस्स दारा अट्ठ जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं पं० १ सव्वेसिंपि दीवसमुद्दाणं दारा अट्ठ जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं पं० २।६५७। पुरिसवेयणिज्जस्स णं कम्मस्स जहन्नेणं अट्ठ संवच्छराइं बंधठिती पं० १ जसोकित्तीनामएणं कम्मस्स जहण्णेणं अट्ठ मुहुत्ताइं बंधठिती पं० २ उच्चगोयस्स णं कम्मस्स एवं चेव ३।६५८। तेइंदियाणमट्ठ जातीकुलकोडीजोणीपमुहसतसहस्सा पं०।६५९। जीवा णं अट्ठठाणणिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताते चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा, तं०-पढमसमयनेरतितनिव्वत्तिते जाव अपढमसमयदेवनिव्वत्तिते, एवं चिण उवचिण जाव निज्जरा चेव, अट्ठपतेसिता खंधा अणंता पं० अट्ठपतेसोगाढा पोग्गला अणंता पं० जाव अट्ठगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता।६६०॥ अष्टमस्थानकाध्ययनं ८॥ नवहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे संभोतितं विसंभोतितं करेमाणे णातिक्कमति, तं०-आयरियपडिणीयं उवज्झायपडिणीयं थेरपडिणीयं कुल० गण० संघ० नाण० दंसण० चरित्तपडिणीयं।६६१। णव बंभचेरा पं० तं०-सत्थपरिन्ना लोगविजओ जाव उवहाणसुयं महापरिण्णा।६६२। नव बंभचेरगुत्तीतो पं० तं०-विवित्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता भवति, णो इत्थिसंसत्ताइं नो पसुसंसत्ताइं नो पंडगसंसत्ताइं० १ नो इत्थीणं कहं कहेत्ता २ नो इत्थिठाणाइं सेवित्ता भवति ३ णो इत्थीणमिंदिताइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता भवइ ४ णो पणीतरसभोती० ५ णो पाणभोयणस्स अतिमत्तं (प्र० मातं) आहारते सता भवति ६ णो पुव्वरतं पुव्वकीलियं समरेत्ता भवति ७ णो सद्दाणुवाती णो रूवाणुवाती णो सिलोगाणुवाती० ८ णो सातसोक्खपडिबद्धे यावि भवति ९, णव बंभचेरअगुत्तीओ पं० तं०-णो विवित्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता भवइ, इत्थीसंसत्ताइं पसुसंसत्ताइं पंडगसंसत्ताइं० इत्थीणं कहं कहेत्ता भवइ इत्थीणं ठाणाइं सेवित्ता भवति इत्थीणं इंदियाइं जाव निज्झाइत्ता भवति पणीयरसभोई० पाणभोयणस्स अइमायमाहारए सया भवइ पुव्वरयं पुव्वकीलियं सरित्ता भवइ, सद्दाणुवाई रूवाणुवाई सिलोगाणुवाई जाव सायासुक्खपडिबद्धे यावि भवति।६६३। अभिणंदणाओ णं अरहओ सुमती अरहा नवहिं सागरोवमकोडीसयसहस्सेहिं विइक्कंतेहिं समुप्पन्ने।६६४। नव सब्भावपयत्था पं० तं०-जीवा अजीवा पुण्णं पावो आसवो संवरो निज्जरा बंधो मोक्खो ।६६५। णवविहा संसारसमावन्नगा जीवा पं० तं०-पुढवीकाइया जाव वणस्सइकाइया बेइंदिया जाव पंचिंदितत्ति १ पुढवीकाइया नवगइया नवआगतिता पं० तं०-पुढवीकाइए पुढवीकाइएसु उववज्जमाणे पुढवीकाइएहिंतो वा जाव पंचिंदिएहिंतो वा उववज्जेज्जा, से चेव णं से पुढवीकातिते पुढवीकाइयत्तं विप्पजहमाणे पुढवीकाइयत्ताए जाव पंचिंदियत्ताते वा गच्छेज्जा २ एवमाउकाइयावि ३ जाव पंचिंदियत्ति १० णवविधा सव्वजीवा पं० तं०-एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया नेरतिता पंचेंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा देवा सिद्धा ११ अथवा णवविहा सव्वजीवा पं० तं०-पढमसमयनेरतिता अपढमसमयनेरतिता जाव अपढमसमयदेवा सिद्धा १२ नवविहा सव्वजीवोगाहणा पं० तं०-पुढवीकाइओगाहणा आउकाइओगाहणा जाव वणस्सइकाइओगाहणा बेइंदियओगाहणा तेइंदियओगाहणा चउरिंदियओगाहणा पंचिंदियओगाहणा १३ जीवाणं नवहिं ठाणेहिं संसारं वत्तिंसु वा वत्तंति वा वत्तिस्संति वा, तं०-पुढवीकाइत्ताए जाव पंचिंदियत्ताए १४।६६६। णवहिं ठाणेहिं रोगुप्पत्ती सिया तं०-अच्चासणाते अहितासणाते अतिणिद्दाए अतिजागरितेण उच्चारनिरोहेणं पासवणनिरोहेणं अद्धाणगमणेणं भोयणपडिकूलताते इंदियत्थविकोवणयाते १५।६६७। णवविधे दरिसणावरणिज्जे कम्मे पं० तं०-निद्दा निद्दानिद्दा पयला पयलापयला थीणगिद्धी चक्खुदंसणावरणे अचक्खुदंसणावरणे अवधिदंसणावरणे केवलदंसणावरणे।६६८। अभिती णं णक्खत्ते सातिरेगे नव मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोगं जोतेति, अभीतिआतिआ णं णव नक्खत्ता णं चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोतेंति, तं०-अभीती सवणो धणिट्ठा जाव भरणी।६६९। इमीसे णं रयणप्पभाते पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ णव जोअणसताइं उड्ढं अबाहाते उवरिल्ले (प्र० अवरिल्ले) तारारूवे चारं चरति।६७०। जंबूदीवे णं दीवे णवजोणिआ मच्छा पविसिंसु वा पविसंति वा पविसिस्संति वा।६७१। जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीते णव बलदेववासुदेवपियरो हुत्था तं०-पयावती त बंभे य, रोद्दे सोमे सिवेतिता। महासीहे अग्गिसीहे, दसरह नवमे य वसुदेवे ॥१०९॥ इत्तो आढत्तं जधा समवाये निरवसेसं जाव एगा से गब्भवसही सिज्झिस्सति आगमेस्सेणं। जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आगमेस्साए उस्सप्पिणीते नव बलदेववासुदेवपितरो भविस्संति, नव बलदेव० मायरो भविस्संति एवं जधा समवाते निरवसेसं जाव महाभीमसेण सुग्गीवे य अपच्छिमे। एए खलु पडिसत्तू कित्तीपुरिसाण वासुदेवाणं। सव्वेवि चक्कजोही हम्मेहंती सचक्केहिं ॥११०॥ ६७२। एगमेगे णं महानिधी णं णव णव जोयणाइं विक्खंभेणं पं०, एगमेगस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स नव महानिहओ पं० तं०-'णेसप्पे १ पंडुयए २ पिंगलते ३ सव्वरयण ४ महापउमे ५। काले य ६ महाकाले ७ माणवग ८ महानिही संखे ९ ॥१११॥ णेसप्पंमि निवेसा गामागरनगरपट्टणाणं च। दोणमुहमडंबाणं खंधाराणं गिहाणं च ॥११२॥ गणियस्स य बीयाणं माणुम्माणुस्स जं पमाणं च। धन्नस्स य बीयाणं उप्पत्ती पंडुते भणिया ॥११३॥ सव्वा आभरणविही पुरिसाणं जा य होइ महिलाणं। आसाण य हत्थीण य पिंगलगनिहिंमि सा भणिया ॥११४॥ रयणाइं सव्वरयणे चोद्दस पवराइं चक्कवट्टिस्स। उप्पज्जंति एगिंदियाइं पंचिंदियाइं च ॥११५॥ वत्थाण य उप्पत्ती निप्फत्ती चेव सव्वभत्तीणं। रंगाण य धोयाण य सव्वा एसा महापउमे ॥११६॥ काले कालण्णाणं भव्वपुराणं च तीसु वासेसु। सिप्पसतं कम्माणि य तिन्नि पयाहियकराइं ॥११७॥ लोहस्स य उप्पत्ती होइ महाकालि आगराणं च। रुप्पस्स सुवन्नस्स य मणिमोत्तिसिलप्पवालाणं ॥११८॥ जोधाण य उप्पत्ती आवरणाणं च पहरणाणं च। सव्वा य जुद्धनीती माणवते दंडनीती य ॥११९॥ (३१)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org
मुनि दीपरत्नसागर

नट्टविही नाडगविही कव्वस्स चउव्विहस्स उप्पत्ती। संखे महानिहिम्मी तुडियंगाणं च सव्वेसिं॥ १२० ॥ चक्कट्ठपइट्ठाणा अट्ठुस्सेहा य नव य विक्खंभे। बारसदीहा मंजूससंठिया जहनवीई मुहे ॥ १२१ ॥ वेरुलियमणिकवाडा कणगमया विविधरयणपडिपुन्ना। ससिसूरचक्कलक्खण अणुसमजुगबाहुवतणा त ॥ १२२ ॥ पलिओवमट्ठितीया णिहिसरिणामा य तेसु खलु देवा। जेसिं ते आवासा अक्किज्जा आहिवच्चा वा ॥ १२३ ॥ एए ते नवनिहओ पभूतधणरयणसंचयसमिद्धा। जे वसमुवगच्छंती सव्वेसिं चक्कवट्टीणं ॥ १२४ ॥ ६७३। णव विगतीतो पं० तं०-खीरं दधिं णवणीतं सप्पिं तेलं गुलो महुं मज्जं मंसं। ६७४। णवसोतपरिस्सवा बोंदी पं० तं०-दो सोत्ता दो णेत्ता दो घाणा मुहं पोसे पाऊ। ६७५। णवविधे पुन्ने पं० तं०-अन्नपुन्ने १ पाणपुण्णे २ वत्थपुन्ने ३ लेणपुण्णे ४ सयणपुन्ने ५ मणपुन्ने ६ वतिपुण्णे ७ कायपुण्णे ८ नमोक्कारपुण्णे ९। ६७६। णव पावस्सायतणा पं० तं०-पाणातिवाते मुसावाते जाव परिग्गहे कोहे माणे माया लोभे। ६७७। नवविधे पावसुयपसंगे पं० तं०-उप्पाते १ निमित्ते २ मंते ३, आतिक्खिते ४ तिगिच्छते ५। कला ६ आवरणे ७ऽन्नाणे ८, मिच्छापावतणेति त ९ ॥ १२५ ॥ ६७८। नव णेउणिता वत्थू पं० तं०-संखाणे निमित्ते कातिते पोराणे पारिहत्थिते परपंडिते वातिते भूतिकम्मे तिगिच्छिते। ६७९। समणस्स णं भगवतो महावीरस्स णव गणा हुत्था, तं०-गोदासे गणे उत्तरबलिस्सहगणे उद्देहगणे चारणगणे उड्डुवातितगणे विसवातितगणे कामड्ढितगणे माणवगणे कोडितगणे। ६८०। समणेणं भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णवकोडिपरिसुद्धे भिक्खे पं० तं०-ण हणइ ण हणावइ हणंतं णाणुजाणइ ण पतति ण पतावेति पतंतं णाणुजाणति ण किणति ण किणावेति किणंतं णाणुजाणति। ६८१। ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारन्नो णव अग्गमहिसीओ पं०। ६८२। ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अग्गमहिसीणं णव पलिओवमाइं ठिती पं०, ईसाणे कप्पे उक्कोसेणं देवीणं णव पलिओवमाइं ठिती पं०। ६८३। नव देवनिकाया पं० तं०-'सारस्सयमाइच्चा वण्ही वरुणा य गद्दतोया य। तुसिया अव्वाबाहा अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य ॥ १२६ ॥' अव्वाबाहाणं देवाणं नव देवा नव देवसया पं०, एवं अग्गिच्चावि. एवं रिट्ठावि। ६८४। णव गेवेज्जविमाणपत्थडा पं० तं०-हेट्ठिमहेट्ठिमगेविज्जविमाणपत्थडे हेट्ठिममज्झिमगेविज्जविमाणपत्थडे हेट्ठिमउवरिमगेविज्जविमाणपत्थडे मज्झिमहेट्ठिमगेविज्जविमाणपत्थडे मज्झिममज्झिमगेविज्जविमाणपत्थडे मज्झिमउवरिमगेविज्जविमाणपत्थडे उवरिमहेट्ठिमगेवे० उवरिममज्झिम० उवरिम२गेविज्जविमाणपत्थडे, एतेसिं णं णवण्हं गेविज्जविमाणपत्थडाणं णव नामधिज्जा पं० तं०-भद्दे सुभद्दे सुजाते, सोमणसे पितदरिसणे। सुदंसणे अमोहे य, सुप्पबुद्धे जसोधरे ॥ १२७ ॥ ६८५। नवविहे आउपरिणामे पं० तं०-गतिपरिणामे गतिबंधणपरिणामे ठिइपरिणामे ठितिबंधणपरिणामे उड्ढंगारवपरिणामे अहेगारवपरिणामे तिरितंगारवपरिणामे दीहंगारवपरिणामे रहस्संगारवपरिणामे। ६८६। णवणवमिता णं भिक्खुपडिमा एगासीते रातिंदिएहिं चउहि य पंचुत्तरेहिं भिक्खासतेहिं अधासुत्ता जाव आराहिता तावि भवति। ६८७। णवविधे पायच्छित्ते पं० तं०-आलोयणारिहे जाव मूलारिहे अणवठप्पारिहे। ६८८। जंबूमंदरदाहिणेणं भरहे दीहवेतड्ढे नव कूडा पं० तं०-सिद्धे १ भरहे २ खंडग ३ माणी ४ वेयड्ढ ५ पुन्न ६ तिमिसगुहा ७। भरहे ८ वेसमणे ९ या भरहे कूडाण णामाइं ॥ १२८ ॥ जंबूमंदिरदाहिणेणं निसभे वासहरपव्वते णव कूडा पं० तं०-सिद्धे १ निसहे २ हरिवास ३ विदेह ४ हरि ५ धिती ६ अ सीतोता ७। अवरविदेहे ८ रुयगे ९ निसभे कूडाण नामाणि ॥ १२९ ॥ जंबूमंदरपव्वते णंदणवणे णव कूडा पं० तं०-णंदणे १ मंदरे २ चेव निसहे ३ हेमवते ४ रयय ५ रुयए ६ य। सागरचित्ते ७ वइरे ८ बलकूडे ९ चेव बोद्धव्वे ॥ १३० ॥ जंबूमालवंतवक्खारपव्वते णव कूडा पं० तं०-सिद्धे १ य मालवंते २ उत्तरकुरु ३ कच्छ ४ सागरे ५ रयते ६। सीता ७ तह पुण्णणामे ८ हरिस्सहकूडे ९ य बोद्धव्वे ॥ १३१ ॥ जंबू० कच्छे दीहवेयड्ढे नव कूडा पं० तं०-सिद्धे १ कच्छे २ खंडग ३ माणी ४ वेयड्ढ ५ पुण्ण ६ तिमिसगुहा ७। कच्छे ८ वेसमणे या ९ कच्छे कूडाण णामाइं ॥ १३२ ॥ जंबू० सुकच्छे दीहवेयड्ढे णव कूडा पं० तं०-सिद्ध १ सुकच्छे २ खंडग ३ माणी ४ वेयड्ढ ५ पुन्न ६ तिमिसगुहा ७। सुकच्छे ८ वेसमणे ९ ता सुकच्छि कूडाण णामाइं ॥ १३३ ॥ एवं जाव पोक्खलावतिंमि दीहवेयड्ढे, एवं वच्छे दीहवेयड्ढे, एवं जाव मंगलावतिंमि दीहवेहड्ढे, जंबूविज्जुप्पभे वक्खारपव्वते नव कूडा पं० तं०-सिद्धे १ अ विज्जुणामे २ देवकूडा ३ पम्ह ४ कणग ५ सोवत्थी ६। सीतोता य ७ सयजले ८ हरिकूडे ९ चेव बोद्धव्वे ॥ १३४ ॥ जंबू० पम्हे दीहवेयड्ढे णव कूडा पं० तं०-सिद्धे १ पम्हे २ खंडग ३ माणी ४ वेयड्ढ ५ एवं चेव जाव सलिलावतिंमि दीहवेयड्ढे, एवं वप्पे दीहवेयड्ढे, एवं जाव गंधिलावतिंमि दीहवेयड्ढे नव कूडा पं० तं०-सिद्धे १ गंधिल २ खंडग ३ माणी ४ वेयड्ढ ५ पुन्न ६ तिमिमगुहा ७। गंधिलावति ८ वेसमण ९ कूडाणं होंति णामाइं ॥ १३५ ॥ एवं सव्वेसु दीहवेयड्ढेसु दो कूडा सरिसणामगा सेसा ते चेव, जंबूमंदरउत्तरेणं नेलवंते वासहरपव्वते णव कूडा पं० तं०-सिद्धे १ निलवंत २ विदेह ३ मीता ४ कित्ती त ५ नारिकंता ६ य। अंवरविदेहे रम्मगकूडे ८ उवदंसणे ९ चेव ॥ १३६ ॥ जंबूमंदरउत्तरेणं एरवते दीहवेतड्ढे नव कूडा पं० तं०-सिद्धे १ रयणे २ खंडग ३ माणी ४ वेयड्ढ ५ पुण्ण ६ तिमिसगुहा ७। एरवते ८ वेसमणे ९ एरवते कूडणामाइं ॥ १३७ ॥ ६८९। पासे णं अरहा पुरिसादाणीए वज्जरिसहणारातसंघयणे समचउरंससंठाणसंठिते नव रयणीओ उड्ढंउच्चत्तेणं हुत्था। ६९०। समणस्स णं भगवतो महावीरस्स तित्थंमि णवहिं जीवेहिं तित्थगरणामगोत्ते कम्मे णिव्वत्तिते-सेणितेणं सुपासेणं उदातिणा पोट्टिलेणं अणगारेणं दढाउणा संखेणं सततेणं सुलसाए सावितात रेवतीते। ६९१। एस णं अज्जो! कण्हे वासुदेवे १ रामे बलदेवे २ उदये पेढालपुत्ते ३ पुट्टिले ४ सतते गाहावती ५ दारुते नितंठे ६ सच्चती नितंठीपुत्ते ७ सावितबुद्धे अम्बडे परिव्वायते ८ अज्जाविणं सुपासा पासावच्चिज्जा ९ आगमेस्साते उस्सप्पिणीते चाउज्जामं धम्मं पन्नवतित्ता सिज्झिहिन्ति जाव अंतं काहिंति। ६९२। एस णं अज्जो! सेणिए राया भिंभिसारे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीते सीमंतते नरए चउरासीतिवाससहस्सट्ठितीयंसि निरयंसि णेरइयत्ताए उववज्जिहिति से णं तत्थ णेरइए भविस्सति काले कालोभासे जाव परमकिण्हे वन्नेणं, से णं तत्थ वेयणं वेदिहिती उज्जलं (विउलं पा०) जाव दुरहियासं, से णं ततो नरतातो उव्वट्टेत्ता आगमेसाते उस्सप्पिणीते इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढगिरिपायमूले पुंडेसु जणवतेसु सतदुवारे णगरे संमुइस्स कुलकरस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि पुमत्ताए पच्चायाहिती, तए णं सा भद्दा भारिया नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वीतिक्कंताणं सुकुमालपाणिपातं अहीणप-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागर

डिपुन्नपंचिंदियसरीरं लक्खणवंजणजाव सुरूवं दारगं पयाहिती, जं रयणिं च णं से दारए पयाहिती तं रयणिं च णं सतदुवारे णगरे सब्भिंतरबाहिरए भारग्गसो य कुंभग्गसो त पउमवासे त रयणवासे त वासे वासिहिति, तए णं तस्स दारयस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वइक्कंते जाव बारसाहे दिवसे अयमेयारूवं गोण्णं गुणनिप्फण्णं नामधिज्जं काहिंति जम्हा णं अम्हमिमंसि दारगंसि जातंसि समाणंसि सयदुवारे नगरे सब्भिंतरबाहिरए भारग्गसो य कुंभग्गसो य पउमवासे य रयणवासे य वासे वुट्ठे तं होऊ णमम्हमिमस्स दारगस्स नामधिज्जं महापउमे २ तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधिज्जं काहिंति-महापउमेत्ति (प्र० माति) २ तए णं महापउमं दारगं अम्मापितरो सातिरेगं अट्ठवासजातगं जाणित्ता महता रायाभिसेएणं अभिसिंचिहिंति, से णं तत्थ राया भविस्सति महताहिमवंतमहंतमलयमंदर०रायवन्नतो जाव रज्जं पसाहेमाणे विहरिस्सति, तते णं तस्स महापउमस्स रन्नो अन्नया कयाइ दो देवा महिड्ढिया जाव महेसक्खा सेणाकम्मं काहिंति, तं०-पुन्नभद्दते माणिभद्दते, तए णं सतदुवारे नगरे बहवे रातीसरतलवरमाडंबितकोडंबितइब्भसेट्ठिसेणावतिसत्थवाहप्पभितयो अन्नमन्नं सद्दावेहिंति २ एवं वतिस्संति-जम्हा णं देवाणुप्पिया ! अम्हं महापउमस्स रन्नो दो देवा महिड्ढिया जाव महेसक्खा सेणाकम्मं करेंति, तं०-पुन्नभद्दे त माणिभद्दे य, तं होऊ णमम्हं देवाणुप्पिया ! महापउमस्स रन्नो दोच्चेऽवि नामधेज्जे देवसेणे २ तते णं तस्स महापउमस्स दोच्चेऽवि नामधेज्जे भविस्सइ देवसेणेति (प्र० णाति) २ तए णं तस्स देवसेणस्स रन्नो अन्नता कताती सेये संखतलविमलसन्निकासे चउदंते हत्थिरयणे समुप्पज्जिहिति, तए णं से देवसेणे राया तं सेयं संखतलविमलसन्निकासं चउदंतं हत्थिरयणं दुरूढे समाणे सतदुवारं नगरं मज्झंमज्झेणं अभिक्खणं २ अतिज्जाहि (इ पा०) त णिज्जाहि त, तते णं सतदुवारे णगरे बहवे रातीसरतलवर जाव अन्नमन्नं सद्दाविंति २ एवं वइस्संति-जम्हा णं देवाणुप्पिया ! अम्हं देवसेणस्स रन्नो सेते संखतलविमलसन्निकासे चउदंते हत्थिरयणे समुप्पन्ने तं होऊ णमम्हं देवाणुप्पिया ! देवसेणस्स रन्नो तच्चेऽवि नामधेज्जे विमलवाहणे, तते णं तस्स देवसेणस्स रन्नो तच्चेऽवि णामधेज्जे भविस्सति विमलवाहणे २ तए णं से विमलवाहणे राया तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता अम्मापितीहिं देवत्तगतेहिं गुरुमहत्तरतेहिं अब्भणुन्नाते समाणे उदुंमि सरए संबुद्धे अणुत्तरे मोक्खमग्गे पुणरवि लोगंतितेहिं जीयकप्पितेहिं देवेहिं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं उरालाहिं कल्लाणाहिं धन्नाहिं सिवाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीआहिं वग्गूहिं अभिणंदिज्जमाणे अभिथुवमाणे य बहिया (प्र० संबोहिए) सुभूमिभागे उज्जाणे एगं देवदूसमादाय मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयाहिति, तस्स णं भगवंतस्स साइरेगाइं दुवालस वासाइं निच्चं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे जे केई उवसग्गा उप्पज्जंति तं०-दिव्वा वा माणुसा वा तिरिक्खजोणिया वा ते उप्पन्ने सम्मं सहिस्सइ खमिस्सइ तितिक्खिस्सइ अहियासिस्सइ, तए णं से भगवं ईरियासमिए भासासमिए जाव गुत्तबंभयारी अममे अकिंचणे छिन्नगंथे (किन्नगंथे पा०) निरुवलेवे कंसपाईव मुक्कतोए जहा भावणाए जाव सुहुयहुयासणेविव तेयसा जलंते 'कंसे संखे जीवे गगणे वाते य सारए सलिले । पुक्खरपत्ते कुंभे विहगे खग्गे य भारंडे ॥१३८॥ कुंजर वसहे सीहे नगराया चेव सागरमखोभे । चंदे सूरे कणगे वसुंधरा चेव सुहुयहुए ॥१३९॥ नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंधे भवइ, से य पडिबंधे चउव्विहे पं० तं०-अंडएइ वा पोयएइ वा उग्गहिएइ वा पग्गहिएइ वा, जंणं जंणं दिसं इच्छइ तंणं तंणं दिसं अपडिबद्धे सुचिभूए लहुभूए अणप्पगंथे संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरिस्सइ, तस्स णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेणं चरिएणं एवं आलएणं विहारेणं अज्जवेमद्दवेलाघवेखंतीमुत्तीगुत्तीसच्चसंजमतवगुणसुचरियसोवचियफलपरिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए जाव केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिहिंति, तए णं से भगवं अरहा जिणे भविस्सइ, केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी सदेवमणुआसुरस्स लोगस्स परियागं जाणइ पासइ सव्वलोए सव्वजीवाणं आगइं गतिं ठियं चयणं उववायं तक्कं मणोमाणसियं भुत्तं कडं पडिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्स भागी तं तं कालं मणसवयसकाइए जोगे वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरइ, तए णं से भगवं तेणं अणुत्तरेणं केवलवरनाणदंसणेणं सदेवमणुआसुरं लोगं अभिसमिच्चा समणाणं निग्गंथाणं (प्र० से णं भगवं जं चेव दिवसं मुंडे भवित्ता जाव पव्वयाहि तं चेव दिवसं सयमेतारूवमभिग्गहं अभिगिण्हिहिति जे केइ उवसग्गा उप्पज्जंति, तं०-दिव्वा वा माणुसा वा तिरिक्खजोणिया वा ते उप्पन्ने सम्मं सहिस्सइ खमिस्सइ तितिक्खिस्सइ अहियासिस्सइ, तते णं से भगवं अणगारे भविस्सति ईरियासमिते भास० एवं जहा वद्धमाणसामी तं चेव निरवसेसं जाव अव्वावारविउसजोगजुत्ते, तस्स णं भगवंतस्स एतेणं विहारेणं विहरमाणस्स दुवालसहिं संवच्छरेहिं वीतिक्कंतेहिं तेरसहि य पक्खेहिं तेरसमस्स णं संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अणुत्तरेणं णाणेणं जहा भावणाते केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिहिन्ति जिणे भविस्सति केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी सणेरइए जाव) पंच महव्वयाइं सभावणाइं छच्च जीवनिकायधम्मं देसेमाणे विहरिस्सति, से जहाणामते अज्जो ! मते समणाणं निग्गंथाणं एगे आरंभठाणे प०, एवामेव महापउमेऽवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं एगं आरंभट्ठाणं पण्णवेहिति, से जहाणामते अज्जो ! मते समणाणं निग्गंथाणं दुविहे बंधणे पं० तं०-पेज्जबंधणे दोसबंधणे, एवामेव महापउमेऽवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं दुविहं बंधणं पन्नवेहिती, तं०-पेज्जबंधणं च दोसबंधणं च, से जहानामते अज्जो ! मते समणाणं निग्गंथाणं तओ दंडा पं० तं०-मणदंडे ३ एवामेव महापउमेऽवि० समणाणं निग्गंथाणं ततो दंडे पण्णवेहिति, तं०-मणोदंडं ३, से जहानामए एएणं अभिलावेणं चत्तारि कसाया पं० तं०-कोहकसाए ४ पंच कामगुणे पं० तं०-सद्दे ५ छज्जीवनिकाता पं० तं०-पुढविकाइया जाव तसकाइया, एवामेव जाव तसकाइया, से जहाणामते एएण अभिलावेणं सत्त भयट्ठाणा पं० तं० एवामेव महापउमेऽवि अरहा समणाणं निग्गंथाणं सत्त भयट्ठाणा पन्नवेहिति, एवमट्ठ मयट्ठाणे णव बंभचेरगुत्तीओ दसविधे समणधम्मे एवं जाव तेत्तीसमासातणाउत्ति, से जहानामते अज्जो ! मते समणाणं निग्गंथाणं नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणते अदंतवणे अच्छत्तए अणुवाहणते भूमिसेज्जा फलगसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोए बंभचेरवासे परघरपवेसे (× जाव) लद्धावलद्धवित्तीउ पन्नत्ताओ एवामेव महापउमेऽवि अरहा समणाणं निग्गंथाणं णग्गभावं जाव लद्धावलद्धवित्ती पण्णवेहिती, से जहाणामए अज्जो ! मए समणाणं नि० आधाकम्मिएति वा उद्देसितेतिवा मीसज्जाएति वा अज्झोयरएति वा पूतिए० कीते० पामिच्चे० अच्छेज्जे० अणिसट्ठे० अभिहडेति वा कंतारभत्तेति वा दुब्भिक्खभत्ते० गिलाणभत्ते० वद्दलिताभत्तेइ वा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाहुणभत्तेइ वा मूलभोयणेति वा कंदभो० फलभो० बीयभो०हरियभोयणेति वा पडिसिद्धे एवामेव महापउमेऽवि अरहा समणाणं० आधाकम्मितं वा जाव हरितभोयणं वा पडिसेहिस्सति, से जहानामते अज्जो! मए समणाणं० पंचमहव्वतिए सपडिक्कमणे अचेलते धम्मे पण्णत्ते एवामेव महापउमेऽवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं पंचमहव्वतितं जाव अचेलगं धम्मं पण्णवेहिती, से जहानामए अज्जो! मए पंचाणुव्वतिते सत्तसिक्खावतिते दुवालसविधे सावगधम्मे पं० एवामेव महापउमेऽवि अरहा पंचाणुव्वतितं जाव सावगधम्मं पण्णवेस्सति, से जहानामते अज्जो! मए समणाणं० सेज्जातरपिंडेति वा रायपिंडेति वा पडिसिद्धे एवामेव महापउमेऽवि अरहा समणाणं० सेज्जातरपिंडेति वा० पडिसेहिस्सति, से जधाणामते अज्जो! मम णव गणा इगारस गणधरा एवामेव महापउमस्सऽवि अरिहतो णव गणा एगारस गणधरा भविस्संति, से जहानामते अज्जो! अहं तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता जाव पव्वतिते दुवालस संवच्छराइं तेरस पक्खा छउमत्थपरियागं पाउणित्ता तेरसहिं पक्खेहिं ऊणगाइं तीसं वासाइं केवलिपरियागं पाउणित्ता बायालीसं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता बावत्तरि वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिज्झिस्सं जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेस्सं एवामेव महापउमेऽवि अरहा तीसं वासाइं आगारवासमज्झे वसित्ता जाव पव्वइहिती दुवालस संवच्छाराइं जाव बावत्तरि वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिज्झिहिती जाव सव्वदुक्खाणमंतं काहिती-"जंसीलसमायारो अरहा तित्थंकरो महावीरो। तस्सीलसमायारो होहि उ अरहा महापउमे ॥ १४० ॥" ६९३। श्री महापद्मचरित्रं ॥ णव णक्खत्ता चंदस्स पच्छंभागा पं० तं०-अभिती समणो धणिट्ठा रेवति अस्सिणि मग्गसिर पूसो। हत्थो चित्ता य तहा पच्छंभागा णव हवंति ॥ १४१ ॥ ६९४। आणतपाणतआरणच्चुतेसु कप्पेसु विमाणा णव जोयणसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं पं०।६९५। विमलवाहणे णं कुलकरे णव धणुसताइं उड्ढंउच्चत्तेणं हुत्था।६९६। उसभे णं अरहा कोसलिते णं इमीसे ओसप्पिणीए णवहिं सागरोवमकोडाकोडीहिं विईक्कंताहिं तित्थे पवत्तिते।६९७। घणदंतलट्ठदंतगूढदंतसुद्धदंतदीवाणं दीवा णवणवजोयणसताइं आयामविक्खंभेणं पं०।६९८। सुक्कस्स णं महागहस्स णव वीहीओ पं० तं०-हयवीही गतवीही णागवीही वसहवीही गोवीही उरगवीही अयवीही मितवीही वेसाणरवीही। ६९९। नवविधे नोकसायवेयणिज्जे कम्मे पं० तं०-इत्थिवेते पुरिसवेते णपुंसगवेते हासे रती अरई भये सोगे दुगुंछे। ७००। चउरिंदियाणं णव जाइकुलकोडीजोणिपमुहसयसहस्सा पं०, भुयपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं नव जाइकुलकोडिजोणिपमुहसयसहस्सा पं०। ७०१। जीवा णं णवट्ठाणनिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताते चिणिंसु वा ३ पुढवीकाइयनिव्वत्तिते जाव पंचिंदितनिव्वत्तिते, एवं चिण उवचिण जाव णिज्जरा चेव। ७०२। णवपएसिता खंधा अणंता पं० नवपएसोगाढा पोग्गला अणंता पं० जाव णवगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पं०। ७०३॥ नवस्थानकाध्ययनं ९॥ दसविधा लोगट्ठिती पं० तं०-जण्णं जीवा उद्दाइत्ता २ तत्थेव २ भुज्जो २ पच्चायंति एवं एगा लोगट्ठिती पं० १ जण्णं जीवाणं सता समियं पावे कम्मे कज्जति एवंप्पेगा लोगट्ठिती पं० २ जण्णं जीवा सया समितं मोहणिज्जे पावे कम्मे कज्जति एवंप्पेगा लोगट्ठिती पं० ३ ण एवं भूतं वा भव्वं वा भविस्सति वा जं जीवा अजीवा भविस्संति अजीवा वा जीवा भविस्संति एवंप्पेगा लोगट्ठिती पं० ४ ण एवं भूतं ३ जं तसा पाणा वोच्छिज्जिस्संति थावरा पाणा (प्र० भविस्संति थावरा पाणा) वोच्छिज्जिस्संति तसा पाणा भविस्संति वा एवंप्पेगा लोगट्ठिती पं० ५ ण एवं भूतं ३ जं लोगे अलोगे भविस्सति अलोगे वा लोगे भविस्सति एवंप्पेग्गा लोगट्ठिती पं० ६ ण एवं भूतं वा ३ जं लोए अलोए पविसति अलोए वा लोए पविसति एवंप्पेगा लोगट्ठिती ७ जाव ताव लोगे ताव ताव जीवा जाव ताव जीवा ताव ताव लोए एवंप्पेगा लोगट्ठिती ८ जाव ताव जीवाण त पोग्गलाण त गतिपरिताते ताव ताव लोए जाव ताव लोगे ताव ताव जीवाण य पोग्गलाण त गतिपरिताते एवंप्पेगा लोगट्ठिती ९ सव्वेसुवि णं लोगंतेसु अबद्धपासपुट्ठा पोग्गला लुक्खत्ताते कज्जति जेणं जीवा त पोग्गला त नो संचायंति बहिता लोगंता गमणयाते एवंप्पेगा (एवमेगा पा०) लोगट्ठिती पं० १०। ७०४। दसविहे सद्दे पं० तं०-नीहारि १ पिंडिमे २ लुक्खे ३, भिन्ने ४ जज्जरिते ५ इत। दीहे ६ रहस्से ७ पुहुत्ते ८ त, काकणी ९ खिंखिणिस्सरे १० ॥ १४२॥ ७०५। दस इंदियत्था तीता पं० तं०-देसेणवि एगे सद्दाइं सुणिंसु सव्वेणवि एगे सद्दाइं सुणिंसु देसेणवि एगे रूवाइं पासिंसु सव्वेणवि एगे रूवाइं पासिंसु, एवं गंधाइं रसाइं फासाइं जाव सव्वेणवि एगे फासाइं पडिसंवेदेंसु, दस इंदियत्था पडुप्पन्ना पं० तं०-देसेणवि एगे सद्दाइं सुणेंति सव्वेणवि एगे सद्दाइं सुणेंति, एवं जाव फासाइं, दस इंदियत्था अणागता पं० तं०-देसेणवि एगे सद्दाइं सुणिस्संति सव्वेणवि एगे सद्दाइं सुणेस्संति एवं जाव सव्वेणवि एगे फासाइं पडिसंवेदेस्संति।७०६। दसहिं ठाणेहिमच्छिन्ने पोग्गले चलेज्जा तं०-आहारिज्जमाणे वा चलेज्जा परिणामेज्जमाणे वा चलेज्जा उस्ससिज्जमाणे वा चलेज्जा निस्ससिज्जमाणे वा चलेज्जा वेदेज्जमाणे वा चलेज्जा णिज्जरिज्जमाणे वा चलेज्जा विउव्विज्जमाणे वा चलेज्जा परियारिज्जमाणे वा चलेज्जा जक्खातिट्ठे वा चलेज्जा वातपरिगते (प्र० परिग्गहे) वा चलेज्जा। ७०७। दसहिं ठाणेहिं कोधुप्पत्ती सिया तं०-मणुन्नाइं मे सद्दफरिसरसरूवगंधाइमवहरिंसु १ अमणुन्नाइं मे सद्दफरिसरसरूवगंधाइं उवहरिंसु २ मणुण्णाइं मे सद्दफरिसरसरूवगंधाइं अवहरइ ३ अमणुन्नाइं मे सद्दफरिसजावगंधाइं उवहरति ४ मणुण्णाइं मे सद्द जाव अवहरिस्सति ५ अमणुण्णाइं मे सद्द जाव उवहरिस्सति ६ मणुण्णाइं मे सद्दजावगंधाइं अवहरिंसु वा अवहरइ वा अवहरिस्सति वा ७ अमणुण्णाइं मे सद्द जाव उवहरिंसु वा उवहरति वा उवहरिस्सति वा ८ मणुण्णामणुण्णाइं सद्द जाव अवहरिंसु अवहरति अवहरिस्सइ उवहरिंसु उवहरति उवहरिस्सति ९ अहं च णं आयरियउवज्झायाणं सम्मं वट्टामि ममं च णं आयरियउवज्झाया मिच्छं पडिवन्ना १०।७०८। दसविधे संजमे पं० तं०-पुढवीकातितसंजमे जाव वणस्सतिकाइयसंजमे बेइंदितसंजमे तेंदितसंजमे चउरिंदितसंजमे पंचिंदियसंजमे अजीवकायसंजमे, दसविधे असंजमे पं० तं०-पुढवीकातितअसंजमे आउ० तेउ० वाउ० वणस्सति० जाव अजीवकायअसंजमे, दसविधे संवरे पं० तं०-सोतिंदियसंवरे जाव फासिंदितसंवरे मण० वय० काय० उवकरणसंवरे सूचीकुसग्गसंवरे, दसविधे असंवरे पं० तं०-सोतिंदितअसंवरे जाव सूचीकुसग्गअसंवरे।७०९। दसहिं ठाणेहिं अहमंतीति थंभिज्जा, तं०-जातिमतेण वा कुलमएण वा जाव इस्सरियमतेण वा णागसुवन्ना वा मे अंतितं हव्वमागच्छंति पुरिसधम्मातो वा मे उत्तरिते अहोधिते णाणदंसणे समुप्पन्ने।७१०। दसविधा समाधी पं० तं०-पाणातिवायवेरमणे मुसा० अदिन्ना० मेहुण० परिग्गहा० ईरितासमिती भासासमिती एसणासमिती आयाण० उच्चारपासवणखेलसिंघाणगपारिट्ठावणितासमिती,

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दसविधा असमाधी पं० तं०-पाणातिवाते जाव परिग्गहे ईरिताऽसमिती जाव उच्चारपासवणखेलसिंघाणगपारिट्ठावणियाऽसमिती ।७११। दसविधा पव्वज्जा पं० तं०-छंदा १ रोसा २ परिजुन्ना ३ सुविणा ४ पडिस्सुता ५ चेव। सारणिता ६ रोगिणीता ७ अणाढिता ८ देवसन्नत्ती ९ ॥ १४३॥ वच्छाणुबंधिता १०, दसविधे समणधम्मे पं० तं०-खंती मुत्ती अज्जवे मद्दवे लाघवे सच्चे संजमे तवे चिताते बंभचेरवासे, दसविधे वेयावच्चे पं० तं०-आयरियवेयावच्चे उवज्झायवेयावच्चे थेरवेयावच्चे तवस्सि० गिलाण० सेह० कुल० गण० संघवेयावच्चे साहम्मियवेयावच्चे ।७१२। दसविधे जीवपरिणामे पं० तं०-गतिपरिणामे इंदितपरिणामे कसायपरिणामे लेसा० जोगपरिणामे उवओग० णाण० दंसण० चरित्त० वेतपरिणामे, दसविधे अजीवपरिणामे पं० तं०-बंधणपरिणामे गति० संठाणपरिणामे भेद० वण्ण० रस० गंध० फास० अगुरुलहु० सद्दपरिणामे ।७१३। दसविधे अंतलिक्खिते असज्झाइए पं० तं०-उक्कावाते दिसिदाघे गज्जिते विज्जुते निग्घाते जूयते जक्खालित्ते धूमिता महिता रतउग्घाते, दसविहे ओरालिते असज्झातिते पं० तं०-अट्ठिं मंसं सोणिते असुतिसामंते सुसाणसामंते चंदोवराते सूरोवराए पडणे रायवुग्गहे उवस्सयस्स अंतो ओरालिए सरीरगे ।७१४। पंचिंदिया णं जीवा णं असमारभमाणस्स दसविधे संजमे कज्जति, तं०-सोयामताओ सुक्खाओ अववरोवेत्ता भवति सोतामतेणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवति एवं जाव फासामतेणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवति, एवं असंयमोऽवि भाणितव्वो ।७१५। दस सुहुमा पं० तं०-पाणसुहुमे पणगसुहुमे जाव सिणेहसुहुमे गणियसुहुमे भंगसुहुमे ।७१६। जंबूमंदिरदाहिणेणं गंगासिंधुमहानदीओ दस महानतीओ समप्पेंति, तं०-जउणा सरऊ आवी कोसी मही सतद्दु विवच्छा विभासा एरावती चंद्रभागा, जंबूमंदरउत्तरेणं रत्तारत्तवतीओ महानदीओ दस महानदीओ समप्पेंति, तं०-किण्हा महाकिण्हा नीला महानीला तीरा महातीरा इंदा जाव महाभोगा ।७१७। जंबुद्दीवे २ भरहवासे दस रायहाणीओ पं० तं०-चंपा महुरा वाणारसी य सावत्थी तहत सातेतं। हत्थिणउर कंपिल्लं मिहिला कोसंबि रायगिहं ॥ १४४॥ एयासु णं दसरायहाणीसु दस रायाणो मुंडा भवेत्ता जाव पव्वतिता, तं०-भरहे सगरो मघवं सणंकुमारो संती कुंथू अरे महापउमे हरिसेणो जयणामे ।७१८। जंबुद्दीवे २ मंदरे पव्वए दस जोयणसयाइं उव्वेहेणं धरणितले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं उवरिं दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं दसदसाइं जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं पं० ।७१९। जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स बहुमज्झदेसभागे इमीसे रयणप्पभाते पुढवीते उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डगपतरेसु एत्थ णमट्ठपतेसिते रुयगे पं०, जओ णमिमातो दस दिसाओ पवहंति, तं०-पुरच्छिमा पुरच्छिमदाहिणा दाहिणा दाहिणपच्चत्थिमा पच्चत्थिमा पच्चत्थिमुत्तरा उत्तरा उत्तरपुरच्छिमा उड्ढा अहो, एतासिं णं दसण्हं दिसाणं दस नामधिज्जा पं० तं०-इंदा अग्गीइ जमा णेरती वारुणी य वायव्वा। सोमा ईसाणावि य विमला य तमा य बोद्धव्वा ॥ १४५॥ लवणस्स णं समुद्दस्स दस जोयणसहस्साइं गोतित्थविरहिते खेत्ते पं०, लवणस्स णं समुद्दस्स दस जोयणसहस्साइं उदगमाले पन्नत्ते, सव्वेऽवि णं महापाताला दसदसाइं जोयणसहस्साइमुव्वेहेणं पं०. मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पं०, बहुमज्झदेसभागे एगपएसिताते सेढीए दसदसाइं जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पं०, उवरिं मुहमूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पं०, तेसि णं महापातालाणं कुड्डा सव्ववइरामया सव्वत्थ समा दस जोयणसयाइं बाहल्लेणं पं०, सव्वेऽवि णं खुद्दा पाताला दस जोयणसताइं उव्वेहेणं पं०, मूले दसदसाइं जोयणाइं विक्खंभेणं, बहुमज्झदेसभागे एगपएसिताते सेढीते दस जोयणसताइं विक्खंभेणं पं०. उवरिं मुहमूले दसदसाइं जोयणाइं विक्खंभेणं पं०, तेसिं णं खुड्डागपातालाणं कुड्डा सव्ववइरामता सव्वत्थ समा दस जोयणाइं बाहल्लेणं पं० ।७२०। धायतिसंडगा णं मंदरा दसजोयणसयाइं उव्वेहेणं धरणितले देसूणाइं दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं उवरिं दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं पं०, पुक्खरवरदीवड्ढगा णं मंदरा दस जोयण एवं चेव ।७२१। सव्वेऽवि णं वट्टवेयड्ढपव्वता दस जोयणसयाइं उद्धंउच्चत्तेणं दस गाउयसयाइमुव्वेहेणं सव्वत्थ समा पल्लगसंठाणसंठिता दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं पं० ।७२२। जंबुद्दीवे २ दस खेत्ता पं० तं०-भरहे एरवते हेमवते हेरन्नवते हरिवस्से रम्मगवस्से पुव्वविदेहे अवरविदेहे देवकुरा उत्तरकुरा ।७२३। माणुसुत्तरे णं पव्वते मूले दसबावीसे जोयणसते विक्खंभेणं पं० ।७२४। सव्वेऽवि णमंजणगपव्वता दस जोयणसयाइमुव्वेहेणं मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं उवरिं दस जोयणसताइं विक्खंभेणं पं०, सव्वेऽवि णं दहिमुहपव्वता दस जोयणसताइं उव्वेहेणं सव्वत्थ समा पल्लगसंठाणसंठिता दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पं०, सव्वेऽवि णं रतिकरगपव्वता दस जोयणसताइं उद्धंउच्चत्तेणं दसगाउयसताइं उव्वेहेणं सव्वत्थ समा झल्लरिसंठाणसंठिता दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पं० ।७२५। रुयगवरे णं पव्वते दस जोयणसयाइं उव्वेहेणं मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं उवरिं दस जोयणसताइं विक्खंभेणं पं०, एवं कुंडलवरेऽवि ।७२६। दसविहे दवियाणुओगे पं० तं०-दवियाणुओगे माउयाणुओगे एगट्ठियाणुओगे करणाणुओगे अप्पितऽणप्पिते भावियाभाविते बाहिराबाहिरे सासयासासते तहणाणे अतहणाणे ।७२७। चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो तिगिच्छिकूडे उप्पातपव्वते मूले दसबावीसे जोयणसते विक्खंभेणं पं०, चमरस्स णं असुरिन्दस्स असुरकुमाररन्नो सोमस्स महारन्नो सोमप्पभे उप्पातपव्वते दस जोयणसयाइं उद्धंउच्चत्तेणं दस गाउयसताइं उव्वेहेणं मूले दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं पं०, चमरस्स णमसुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो जमस्स महारन्नो जमप्पभे उप्पातपव्वते एवं चेव, एवं वरुणस्सवि, एवं वेसमणस्सवि, बलिस्स णं वयरोयणिंदस्स वतिरोतणरन्नो रुयगिंदे उप्पातपव्वते मूले दसबावीसे जोयणसते विक्खंभेणं पं०, बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स० सोमस्स एवं चेव जधा चमरस्स लोगपालाणं तं चेव बलिस्सवि, धरणस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररन्नो धरणप्पभे उप्पातपव्वते दस जोयणसयाइं उद्धंउच्चत्तेणं दस गाउयसताइं उव्वेहेणं मूले दस जोयणसताइं विक्खंभेणं, धरणस्स नागकुमारिंदस्स णं नागकुमाररण्णो कालवालस्स महारण्णो महाकालप्पभे उप्पातपव्वते दस जोयणसयाइं उद्धं एवं चेव, एवं जाव संखवालस्स, एवं भूताणंदस्सवि, एवं लोगपालाणंपि से, जहा धरणस्स एवं जाव थणितकुमाराणं सलोगपालाणं भाणियव्वं. सव्वेसिं उप्पायपव्वया भाणियव्वा सरिसणामगा, सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सक्कप्पभे उप्पातपव्वते दस जोयणसहस्साइं उद्धंउच्चत्तेणं दस गाउयसहस्साइं उव्वेहेणं मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पं०, सक्कस्स णं देविंदस्स देव० सोमस्स महारन्नो० जधा सक्कस्स तधा सव्वेसिं लोगपालाणं सव्वेसिं च इंदाणं जाव अच्चुयत्ति, सव्वेसिं पमाणमेगं ।७२८। बायरवणस्सतिकातिताणं उक्कोसेणं दस जोयणसयाइं सरीरोगाहणा पं०, जलचरपंचेंदियतिरिक्खजोणिताणं उक्कोसेणं दस जोयणसताइं सरीरोगाहणा पं० उरपरिसप्पथलचरपंचिंदितितिरिक्खजोणिताणं उक्कोसेणं एवं चेव ।७२९। संभवाओ णमरहातो अभिनंदणे अरहा दसहिं सागरोवमकोडिसतसहस्सेहिं (३२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org
मुनि दीपरत्नसागर

वीतिक्कंतेहिं समुप्पन्ने । ७३० । दसविहे अणंतते पं० तं०-णामाणंतते ठवणाणंतते दव्वाणंतते गणणाणंतते पएसाणंतते एगतोऽणंतते दुहतोऽणंतते देसवित्थाराणंतते सव्ववित्थाराणंतते सासयाणंतते । ७३१ । उप्पायपुव्वस्स णं दस वत्थू पं० अत्थिणत्थिप्पवातपुव्वस्स णं दस चूलवत्थू पं० । ७३२ । दसविहा पडिसेवणा पं० तं०-दप्प १ पमाय २ णाभोगे ३, आउरे ४ आवतीसु ५ त। संकिते ६ सहसक्कारे ७, भय ८-प्पयोसा ९ य वीमंसा १० ॥ १४६ ॥ दस आलोयणादोसा पं० तं०-आकंपइत्ता १ अणुमाणइत्ता २ जंदिट्ठं ३ बायरं ४ च सुहुमं वा ५ । छण्णं ६ सद्दाउलगं ७ बहुजण ८ अव्वत्त ९ तस्सेवी १० ॥ १४७ ॥ दसहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहति अत्तदोसमालोएत्तते, तं०-जाइसंपन्ने कुलसंपन्ने एवं जधा अट्ठट्ठाणे जाव खंते दंते अमाती अपच्छाणुतावी, दसहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहति आलोयणं पडि-च्छित्तए, तंजहा-आयारवं अवहारवं जाव अवातदंसी पितधम्मे दढधम्मे, दसविधे पायच्छित्ते पं० तं०-आलोयणारिहे जाव अणवट्ठप्पारिहे पारंचियारिहे । ७३३ । दसविधे मिच्छत्ते पं० तं०-अधम्मे धम्मसण्णा धम्मे अधम्मसण्णा अम(उम्म)ग्गे मग्गसण्णा मग्गे उम्म(अम)ग्गसन्ना अजीवेसु जीवसन्ना जीवेसु अजीवसन्ना असाहुसु साहुसन्ना साहुसु असाहुसण्णा अमुत्तेसु मुत्तसन्ना मुत्तेसु अमुत्तसण्णा । ७३४ । चंदप्पभे णं अरहा दस पुव्वसतसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे, धम्मे णमरहा दस वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे, णमी णमरहा दस वाससहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जाव पहीणे, पुरिससीहे णं वासुदेवे दस वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता छट्ठीते तमाए पुढवीए नेरतियत्ताते उववन्ने, णेमी णं अरहा दस धणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं दस य वाससयाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे, कण्हे णं वासुदेवे दस धणूइं उद्धंउच्चत्तेणं दस य वाससयाइं सव्वाउयं पालइत्ता तच्चाते वालुयप्पभाते पुढवीते नेरतियत्ताते उववन्ने । ७३५ । दसविहा भवणवासी देवा पं० तं०-असुरकुमारा जाव थणियकुमारा, एएसिं णं दसविधाणं भवणवासीणं देवाणं दस चेतितरुक्खा पं० तं०-आसत्थ सत्तिवन्ने सामलि उंबर सिरीस दहिवन्ने । वंजुल पलास वप्पे ततो त कणितारुक्खे य ॥ १४८ ॥ ७३६ । दसविधे सोक्खे पं० तं०-आरोग्ग दीहमाउ अड्ढेज्जं काम भोग संतोसे । अत्थि सुहभोग निक्खम्ममेव तत्तो अणाबाहे ॥ १४९ ॥ ७३७ । दसविधे उवघाते पं० तं०-उग्गमोवघाते उप्पायणोवघाते जह पंचठाणे जाव परिहरणोवघाते णाणोवघाते दंसणोवघाते चरित्तोवघाते अचियत्तोवघाते सारक्खणोवघाते, दसविधा विसोही पं० तं०-उग्गमविसोही उप्पायणविसोही जाव सारक्खणविसोही । ७३८ । दसविधे संकिलेसे पं० तं०-उवहिसंकिलेसे उवस्सयसंकिलेसे कसायसंकिलेसे भत्तपाणसंकिलेसे मणसंकिलेसे वतिसंकिलेसे कायसंकिलेसे णाणसंकिलेसे दंसणसंकिलेसे चरित्तसंकिलेसे, दसविहे असंकिलेसे पं० तं०-उवहि-असंकिलेसे जाव चरित्तअसंकिलेसे । ७३९ । दसविधे बले पं० तं०-सोतिंदितबले जाव फासिंदितबले णाणबले दंसणबले चरित्तबले तवबले वीरितबले । ७४० । दसविहे सच्चे पं०-जणवय सम्मय ठवणा नामे रूवे पडुच्चसच्चे य । ववहार भाव जोगे दसमे ओवम्मसच्चे य ॥ १५० ॥ दसविधे मोसे पं० तं०-कोधे माणे माया लोभे पिज्जे तहेव दोसे य । हास भते अक्खातित उवघातनिस्सिते दसमे ॥ १५१ ॥ दसविधे सच्चामोसे पं० तं०-उप्पन्नमीसते विगतमीसते उप्पण्णविगतमीसते जीवमीसए अजीवमीसए जीवाजीवमीसए अणंतमीसए परित्तमीसए अद्धामीसए अद्धद्धामीसए । ७४१ । दिट्ठिवायस्स णं दस नामधेज्जा पं० तं०-दिट्ठिवातेति वा हेउवातेति वा भूयवातेति वा तच्चावातेति वा सम्मावातेति वा धम्मावातेति वा भासाविजतेति वा पुव्वगतेति वा अणुजोगगतेति वा सव्वपाणभूतजीवसत्तसुहावहेति वा । ७४२ । दस-विधे सत्थे पं० तं०-सत्थमग्गी विसं लोणं, सिणेहो खारमंबिलं। दुप्पउत्तो मणो वाया, काया भावो त अविरती ॥ १५२ ॥ दसविहे दोसे पं० तं०-तज्जातदोसे मतिभंगदोसे, पसत्थारदोसे परिहरणदोसे । सलक्खण क्कारण हेउदोसे, संकामणं निग्गह वत्थुदोसे ॥ १५३ ॥ दसविधे विसेसे पं० तं०-वत्थु तज्जातदोसे त, दोसे एगट्ठितेति त । कारणे त पडुप्पण्णे, दोसे निव्वे (निज्जे) हिअट्ठमे ॥ १५४ ॥ अत्तणा उवणीते त, विसेसेतित ते दस । ७४३ । दसविधे सुद्धावाताणुओगे पं० तं०-चंकारे मंकारे पिंकारे सेतंकारे सातंकरे एगत्ते पुधत्ते संजूहे संकामिते भिन्ने । ७४४ । दसविहे दाणे पं० तं०-अणुकंपा संगहे चेव, भये कालुणितेति य । लज्जाते गारवेणं च, अहम्मे उण सत्तमे ॥ १५५ ॥ धम्मे त अट्ठमे वुत्ते, काहीति त कतंति त । दसविधा गती पं० तं०-निरयगती निरयविग्गहगई तिरियगती तिरियविग्गहगई एवं जाव सिद्धिगई सिद्धिविग्गहगती । ७४५ । दस मुंडा पं० तं०-सोतिंदितमुंडे जाव फासिंदितमुंडे कोहमुंडे जाव लोभमुंडे दसमे सिरमुंडे । ७४६ । दसविधे संवाणे पं० तं०-परिकम्मं ववहारो रज्जू रासी कलासवन्ने य । जावतितावति वग्गो घणो त तह वग्गवग्गोऽवि ॥ १५६ ॥ कप्पो त । ७४७ । दसविधे पच्चक्खाणे पं० तं०-अणागयमतिक्कंतं कोडीसहियं नियंटितं चेव । सागारमणागारं परिमाणकडं निरवसेसं ॥ १५७ ॥ संकेयं चेव अद्धाए पच्चक्खाणं दसविहं तु । ७४८ । दसविहा सामायारी पं० तं०-इच्छा मिच्छा तहक्कारो, आवस्सिता निसीहिता । आपुच्छणा य पडिपुच्छा, छंदणा य निमंतणा ॥ १५८ ॥ उवसंपया य काले सामा-यारी भवे दसविहा उ ॥ ७४९ ॥ समणे भगवं महावीरे छउमत्थकालिताते अंतिमरातितंसी इमे दस महासुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे तंजहा-एगं च णं महाघोररूवदित्तधरं तालपिसायं सुमिणे पराजितं पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगं च णं महं सुक्किलपक्खगं पुंसकोइलगं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगं च णं महं चित्तविचित्तपक्खगं पुंसकोइलं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगं च णं महं दामदुगं सव्वरयणामयं सुमिणे पासि-त्ताणं पडिबुद्धे, एगं च णं महं सेतं गोवग्गं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगं च णं महं पउमसरं सव्वओ समंता कुसुमितं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगं च णं महासागरं उम्मी(× वीची)सहस्सकलितं भुयाहिं तिण्णं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगं च णं महं दिणयरं तेयसा जलंतं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगं च णं (गेण पा०) महं हरिवेरुलितवन्नाभेणं नियतेणमंतेणं माणुसुत्तरं पव्वतं सव्वतो समंता आवेढियं परिवेढियं

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगं च णं महं मंदरे पव्वते मंदरचूलियातो उवरिं सीहासणवरगयमत्ताणं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, जण्णं समणे भगवं महावीरे एग महं घोररूवदित्तधरं तालपिसातं सुमिणे परातितं पासित्ताणं पडिबुद्धे तन्नं समणेणं भगवता महावीरेणं मोहणिज्जे कम्मे मूलाओ उग्घाइते, जं नं समणे भगवं महावीरे एगं महं सुक्किट्ठपक्खगं जाव पडिबुद्धे तं णं समणे भगवं महावीरे सुक्कज्झाणोवगए विहरइ, जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं चित्तविचित्तपक्खगं जाव पडिबुद्धे तं णं समणे भगवं महावीरे ससमतपरसमयिनं चित्तविचित्तं दुवालसंगं गणिपिडगं आघवेति पण्णवेति परूवेति दंसेति निदंसेति उवदंसेति तं०-आयारं जाव दिट्ठीवायं, जं नं समणे भगवं महावीरे एगं महं दामदुगं सव्वरयणा जाव पडिबुद्धे तं नं समणे भगवं महावीरे दुविहं धम्मं पण्णवेति, तं०-अगारधम्मं च अणगारधम्मं च, जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं सेतं गोवग्गं सुमिणे जाव पडिबुद्धे तं णं समणस्स भगवओ महावीरस्स चाउव्वण्णाइण्णे संघे तं०-समणा समणीओ सावगा सावियाओ, जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं पउमसरं जाव पडिबुद्धे तं णं समणे भगवं महावीरे चउव्विहे देवे पण्णवेति, तं०-भवणवासी वाणमंतरा जोइसवासी वेमाणवासी, जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं उम्मीवीचीजाव पडिबुद्धे तं णं समणेणं भगवता महावीरेणं अणातीते अणवदग्गे दीहमद्धे चाउरंतसंसारकंतारे तिन्ने, जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं दिणकरं जाव पडिबुद्धे तन्नं समणस्स भगवतो महावीरस्स अणंते अणुत्तरे जाव समुप्पन्ने, जण्णं समणे भगवं एगं महं हरिवेरुलित जाव पडिबुद्धे तण्णं समणस्स भगवतो महावीरस्स सदेवमणुयासुरे लोगे उराला कित्तिवन्नसद्दसिलोगा परिगुव्वंति-इति खलु समणे भगवं महावीरे इति०, जण्णं समणे भगवं महावीरे मंदरे पव्वते मंदरचूलिताए उवरिं जाव पडिबुद्धे तं णं समणे भगवं महावीरे सदेवमणुयासुराते परिसाते मज्झगते केवलिपन्नत्तं धम्मं आघवेति पण्णवेति जाव उवदंसेति।७५०। दसविधे सरागसम्मद्दंसणे पं० तं०-निसग्गुवतेसरुई आणरुती सुत्त बीतरुतिमेव। अभिगम वित्थाररुती किरिया संखेव धम्मरुती॥१५९॥७५१। दस सण्णाओ पं० तं०-आहारसण्णा जाव परिग्गहसण्णा कोहसण्णा जाव लोभसण्णा लोगसण्णा ओहसण्णा, नेरतिताणं दस सण्णातो एवं चेव, एवं निरंतरं जाव वेमाणियाणं २४।७५२। नेरइया णं दसविधं वेयणं पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं०-सीतं उसिणं खुधं पिवासं कंडुं परज्झं भयं सोगं जरं वाहिं।७५३। दस ठाणाइं छउमत्थे णं सव्वभावेणं न जाणति ण पासति, तं०-धम्मत्थिगातं जाव वातं, अयं जिणे भविस्सति वा ण वा भविस्सति, अयं सव्वदुक्खाणमंतं करेस्सति वा ण वा करेस्सति, एताणि चेव उप्पन्ननाणदंसणधरे जाव अयं सव्वदुक्खाणमंतं करेस्सति वा ण वा करेस्सति।७५४। दस दसाओ पं० तं०-कम्मविवागदसाओ उवासगदसाओ अंतगडदसाओ अणुत्तरोववाइयदसाओ आयारदसाओ पण्हावागरणदसाओ बंधदसाओ दोगिद्धिदसाओ दीहदसाओ संखेवितदसाओ, कम्मविवागदसाणं दस अज्झयणा पं० तं०-मियापुत्ते त गोत्तासे, अंडे सगडेति यावरे। माहणे णंदिसेणे त, सोरियत्ति उदुंबरे॥१६०॥ सहसुद्दाहेआमलते कुमारेलेच्छतीति त, उवासगदसाणं दस अज्झयणा पं० तं०-आणंदे कामदेवे अ, गाहावति चूलणीपिता। सुरादेवे चुल्लसतते, गाहावति कुंडकोलिते॥१६१॥ सद्दालपुत्ते महासतते णंदिणीपिया सालतियापिता, अंतगडदसाणं दस अज्झयणा पं० तं०-णमि मातंगे सोमिले रामगुत्ते सुदंसणे चेव। जमाली त भगाली त किंकंमे पल्लतेतिय॥१६२॥ फालेअंबडपुत्ते त, एमेते दस आहिता, अणुत्तरोववातियदसाणं दस अज्झयणा पं० तं०-इसिदासे य धण्णे त, सुणक्खत्ते य कातिते। संठाणे सालिभद्दे त, आणंदे तेतलीतित॥१६३॥ दसन्नभद्दे अतिमुत्ते एमेते दस आहिया, आयारदसाणं दस अज्झयणा पं० तं०-वीसं असमाहिट्ठाणा एगवीसं सबला तेत्तीसं आसायणातो अट्ठविहा गणिसंपया दस चित्तसमाहिट्ठाणा एगारस उवासगपडिमातो बारस भिक्खुपडिमातो पज्जोसवणाकप्पो तीसं मोहणिज्जट्ठाणा आजाइट्ठाणं, पण्हावागरणदसाणं दस अज्झयणा पं० तं०-उवमा संखा इसिभासियाइं आयरियभासिताइं महावीरभासिआइं खोमगपसिणाइं कोमलपसिणाइं अद्दागपसिणाइं अंगुट्ठपसिणाइं बाहुपसिणाइं, बंधदसाणं दस अज्झयणा पं० तं०-बंधे य मोक्खे य देवद्धि दसारमंडलेऽवित आयरियविप्पडिवत्ती उवज्झातविप्पडिवत्ती भावणा विमुत्ती सासते कम्मे, दोगेहिदमाणं दस अज्झयणा पं० तं०-वाते विवाते उववाते सुक्खित्ते कसिणे बायालीसं सुमिणे तीसं महासुमिणा बावत्तरिं सव्वसुमिणा हारे रामे गुत्ते एमेते दस आहिता, दीहदसाणं दस अज्झयणा पं० तं०-चंदे सूरते सुक्के त सिरिदेवी पभावती दीवसमुद्दोववत्ती बहुपुत्ती मंदरेति त थेरे संभूतविजते ८ थेरे पम्हऊसासनीसासे, संखेवितदसाणं दस अज्झयणा पं० तं०-खुड्डिया विमाणपविभत्ती महल्लिया विमाणपविभत्ती अंगचूलिया वग्गचूलिया विवाहचूलिया अरुणोववाते वरुणोववाए गरुलोववाते वेलंधरोववाते वेसमणोववाते।७५५। दस सागरोवमकोडाकोडीओ कालो उस्सप्पिणीए दस सागरोवमकोडाकोडी कालो ओसप्पिणीते।७५६। दसविधा नेरइया पं० तं०-अणंतरोववन्ना परंपरोववन्ना अणंतरावगाढा परंपरावगाढा अणंतराहारगा परंपराहारगा अणंतरपज्जत्ता परंपरपज्जत्ता चरिमा अचरिमा, एवं निरंतरं जाव वेमाणिया २४, चउत्थीतेणं पंकप्पभाते पुढवीते दस निरतावाससतसहस्सा पं० १ रयणप्पभाते पुढवीते जहन्नेणं नेरतिताणं दसवाससहस्साइं ठिती पं० २ चउत्थीतेणं पंकप्पभाते पुढवीते उक्कोसेणं नेरतिताणं दस सागरोवमाइं ठिती पं० ३ पंचमातेणं धूमप्पभाते पुढवीते जहन्नेणं नेरइयाणं दस सागरोवमाइं ठिती पं० ४ असुरकुमाराणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं ठिती पं०, एवं जाव थणियकुमारागणं १४ बायरवणस्सतिकातिताणं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं ठिती पं० १५ वाणमंतरदेवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिई पं० १६ बंभलोगे कप्पे उक्कोसेणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिती पं० १७ लंतते कप्पे देवाणं जहण्णेणं दस सागरोवमाइं ठिती पं० १८।७५७। दसहिं ठाणेहिं जीवा आगमेसिभद्दत्ताए कम्मं पगरेंति, तं०-अणिदाणताते दिट्ठिसंपन्नयाए जोगवाहियत्ताते खंतिखमणताते जितिं-

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दियताते अमाइल्लताते अपासत्थताते सुसामण्णताते पवयणवच्छल्लयाते पवयणउब्भावणताए । ७५८। दसविहे आससप्पओगे पं० तं०-इहलोगासंसप्पओगे परलोगासंसप्पओगे दुहतोलोगासंसप्पतोगे जीवियासंसप्पतोगे मरणासंसप्पतोगे कामासंसप्पतोगे भोगासंसप्पतोगे लाभासंसप्पतोगे पूयासंसप्पतोगे सक्कारासंसप्पतोगे । ७५९। दसविधे धम्मे पं० तं०-गामधम्मे नगरधम्मे रट्ठधम्मे पासंडधम्मे कुलधम्मे गणधम्मे संघधम्मे सुयधम्मे चरित्तधम्मे अत्थिकायधम्मे । ७६०। दस थेरा पं० तं०-गामथेरा नगरथेरा रट्ठथेरा पसत्थारथेरा कुलथेरा गणथेरा संघथेरा जातिथेरा सुअथेरा परियायथेरा । ७६१। दस पुत्ता पं० तं०-अत्तते खेत्तते दिन्नते विण्णते उरसे मोहरे सोंडीरे संबुद्धे उवयातिते धम्मंतेवासी । ७६२। केवलिस्स णं दस अणुत्तरा पं० तं०-अणुत्तरे णाणे अणुत्तरे दंसणे अणुत्तरे चरित्ते अणुत्तरे तवे अणुत्तरे वीरिते अणुत्तरा खंती अणुत्तरा मुत्ती अणुत्तरे अज्जवे अणुत्तरे मद्दवे अणुत्तरे लाघवे । ७६३। समतखेत्ते णं दस कुरातो पं० तं०-पंच देवकुरातो पंच उत्तरकुरातो, तत्थ णं दस महतिमहालया महादुमा पं०तं०-जंबू सुदंसणा धायतिरुक्खे महाधायतिरुक्खे पउमरुक्खे महापउमरुक्खे पंच कूडसामलीओ, तत्थ णं दस देवा महिड्ढिया जाव परिवसंति, तं०-अणाढिते जंबुद्दीवाधिपती सुदंसणे पियदंसणे पोंडरीते महापोंडरीते पंच गरुला वेणुदेवा । ७६४। दसहिं ठाणेहिं ओगाढं दुस्समं जाणेज्जा, तं०-अकाले वरिसइ काले ण वरिसइ असाहू पूइज्जंति साहू ण पूइज्जंति गुरुसु जणो मिच्छं पडिवन्नो अमणुण्णा सद्दा जाव फासा, दसहिं ठाणेहिं ओगाढं सुसमं जाणेज्जा तं०-अकाले न वरिसति तं चेव विपरीतं जाव मणुण्णा फासा । ७६५। सुसमसुसमाए णं समाए दसविहा रुक्खा उवभोगत्ताए हव्वमागच्छंति, तं०-मत्तंगता य भिंगा तुडितंगा दीव जोति चित्तंगा। चित्तरसा मणियंगा गेहागारा अणितणा त ॥ १६४॥ ७६६। जंबूदीवे २ भरहे वासे तीताते उस्सप्पिणीते दस कुलगरा हुत्था, तं०-मयज्जले मयाऊ य अणंतसेणे त अभि(प्र०जि)तसेणे त। तक्कसेणे भीमसेणे महाभीमसेणे त सत्तमे ॥ १६५॥ दढरहे दसरहे सयरहे । जंबूदीवे २ भारहे वासे आगमीसाते उस्सप्पिणीए दस कुलगरा भविस्संति, तं०-सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे विमलवाहणे संमुती पडिसुते दढधणू दसधणू सतधणू । ७६७। जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं सीताते महानतीते उभतो कूले दस वक्खारपव्वता पं० तं०-मालवंते चित्तकूडे विचित्तकूडे बंभकूडे जाव सोमणसे, जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं सीओताते महानतीते उभतो कूले दस वक्खारपव्वता पं० तं०-विज्जुप्पभे जाव गंधमातणे, एवं धायइसंडपुरच्छिमद्धेऽवि वक्खारा भाणिअव्वा जाव पुक्खरवरदीवद्धपच्चत्थिमद्धे । ७६८। दस कप्पा इंदाहिट्ठिया पं० तं०-सोहम्मे जाव सहस्सारे पाणते अच्चुए, एतेसु णं दससु कप्पेसु दस इंदा पं० तं०-सक्के ईसाणे जाव अच्चुते, एतेसु णं दसण्हं इंदाणं दस परिजाणितविमाणा पं० तं०-पालते पुप्फए जाव विमलवरे सव्वतोभद्दे । ७६९। दसदसमिता णं भिक्खुपडिमा णं एगेण रातिंदियसतेणं अद्धछट्ठेहि य भिक्खासतेहिं अहासुत्ता जाव आराधिता यावि भवति । ७७०। दसविधा संसारसमावन्नगा जीवा पं० तं०-पढमसमयएगिंदिता अपढमसमयएगिंदिता एवं जाव अपढमसमयपंचिंदिता १, दसविधा सव्वजीवा पं० तं०-पुढवीकाइया जाव वणस्सइकातिता बेंदिया जाव पंचेंदिता अणिंदिता, अथवा दसविधा सव्वजीवा पं० तं०-पढमसमयनेरतिया अपढमसमयनेरतिता जाव अपढमसमयदेवा पढमसमयसिद्धा अपढमसमयसिद्धा । ७७१। वाससताउस्स णं पुरिसस्स दस दसाओ पं० तं०-बाला किड्डा य मंदा य, बला पन्ना य हायणी। पवंचा पब्भारा य, मुंमुही सावणी तधा ॥ १६६ ॥ ७७२। दसविधा तणवणस्सतिकातिता पं० तं०-मूले कंदे जाव पुप्फे फले बीये । ७७३। सव्वतोऽवि णं विज्जाहरसेढीओ दस दस जोयणाइं विक्खंभेणं पं० सव्वतोऽवि णं अभिओगसेढीओ दस दस जोयणाइं विक्खंभेणं पं० । ७७४। गेविज्जगविमाणाणं दस जोयणसयाइं उद्धंउच्चत्तेणं पं० । ७७५। दसहिं ठाणेहिं सह तेतसा भासं कुज्जा, तं०-केति तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा से य अच्चासातिते समाणे परिकुविते तस्स तेतं निसिरेज्जा से तं परितावेति सेत्तं परितावेत्ता तमेव सह तेतसा भासं कुज्जा. केति तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा से य अच्चासातिते समाणे देवे परिकुविए तस्स तेयं निसिरेज्जा सेत्तं परितावेति सेत्तं परितावेत्ता तमेव सह तेतसा भासं कुज्जा, केति तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा से य अच्चासातिते समाणे परिकुविए देवे त परिकुविते दुहतो पडिण्णा तस्स तेयं निसिरेज्जा ते तं परितावेंति ते तं परितावेत्ता तमेव सह तेतसा भासं कुज्जा, केति तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासादेज्जा से य अच्चासातिते परिकुविए तस्स तेयं निसिरेज्जा तत्थ फोडा संमुच्छंति ते फोडा भिज्जंति ते फोडा भिन्ना समाणा तमेव सह तेतसा भासं कुज्जा, केति तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा से य अच्चासादिते देवे परिकुविए तस्स तेयं निसिरेज्जा तत्थ फोडा संमुच्छंति ते फोडा भिज्जंति ते फोडा भिन्ना समाणा तमेव सह तेतसा भासं कुज्जा, केति तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासाएज्जा से त अच्चासातिते परिकुविए देवेऽवि य परिकुविए ते दुहतो पडिण्णा ते तस्स तेतं निसिरेज्जा तत्थ फोडा संमुच्छंति सेसं तहेव जाव भासं कुज्जा, केति तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेज्जा से य अच्चासातिते परिकुविए तस्स तेतं निसिरेज्जा तत्थ फोडा संमुच्छंति ते फोडा भिज्जंति तत्थ पुला संमुच्छंति ते पुला भिज्जंति ते पुला भिन्ना समाणा तमेव सह तेयसा भासं कुज्जा. एते तिन्नि आलावगा भाणितव्वा, केति तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासातेमाणे तेतं निसिरेज्जा से त तत्थ णो कम्मइ णो पकम्मति अंचियं २ करेति करेत्ता आताहिणपयाहिणं करेति २ त्ता उड्ढं वेहासं उप्पतति २ से णं ततो पडिहते पडिणियत्तति २ त्ता तमेव सरीरगमणुदहमाणे २ सह तेतमा भासं कुज्जा, जहा वा गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवेतेते । ७७६। दस अच्छेरगा पं० तं०-उवसग्ग गब्भहरणं इत्थीतित्थं अभाविया परिसा। कण्हस्स अवरकंका उत्तरणं चंदसूराणं ॥ १६७॥ हरिवंसकुलुप्पत्ती चमरुप्पातो त अट्ठसयसिद्धा। अस्संजतेसु पूआ दसवि अणंतेणं कालेण ॥१६८॥ ७७७। इमीसे णं रयणप्पभाते पुढवीए रयणे कंडे दस जोअणसयाइं बाहल्लेणं

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पं०. इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए वतरे कंडे दस जोयणसताइं बाहल्लेणं पं०, एवं वेरुलिते लोहितक्खे मसारगल्ले हंसगब्भे पुलते सोगंधिते जोतिरसे अंजणे अंजणपुलते रतते जातरूवे अंके फलिहे रिट्ठे. जहा रयणे तहा सोलसविधा भाणितव्वा।७७८। सव्वेऽवि णं दीवसमुद्दा दस जोयणसताइं उव्वेहेणं पं०, सव्वेऽवि णं महादहा दस जोयणाइं उव्वेहेणं पं०, सव्वेऽवि णं सलिलकुंडा दस जोयणाइं उव्वेहेणं पं०. सीयासीओया णं महानदीओ मुहमूले दस दस जोयणाइं उव्वेहेणं पं० ।७७९। कत्तियाणक्खत्ते सव्वबाहिरातो मंडलातो दसमे मंडले चारं चरति, अणुराधानक्खत्ते सव्वब्भंतरातो मंडलातो दसमे मंडले चारं चरति ।७८०। दस णक्खत्ता णाणस्स विद्धिकरा पं० तं०-मिगसिरमद्दा पुस्सो तिन्नि य पुव्वाइं मूलमस्सेसा। हत्थो चित्ता य तहा दस वुद्धिकराइं णाणस्स ॥ १६९॥ ७८१। चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिताणं दस जातिकुलकोडिजोणिपमुहसतसहस्सा पं०, उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिताणं दस जातिकुलकोडिजोणिपमुहसतसहस्सा पं० ।७८२। जीवाणं दसठाणनिव्वत्तिता पोग्गला पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा० तं०-पढमसमयएगिंदियनिव्वत्तिए जाव फासिंदियनिव्वत्तिते, एवं चिण उवचिण बंध उदीर वेय तह णिज्जरा चेव। दसपतेसिता खंधा अणंता पं० दसपतेसोगाढा पोग्गला अणंता पं० दससमयठितीता पोग्गला अणंता पं० दसगुणकालगा पोग्गला अणंता पं०, एवं वन्नेहिं गंधेहिं रसेहिं फासेहिं दसगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पं० ।७८३॥ दशस्थानकाध्ययनं १०॥ इति श्रीस्थानांगसूत्रं समाप्तं २४६७ दीपालिकायां॥